Hazrate Sayyiduna Umar Bin Abdul Aziz Ki 425 Hikayat (Hindi)

ख़लीफ़ए राशिद के हालाते ज़िन्दगी का म-दनी गुलदस्ता



عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की 425 हिकायात





421, उर्दू मार्केट, मटया महल,
जामेअ़ मस्जिद, देहली -6
फ़ोन : (011) 23284560



اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इ़ल्म** ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इ़ल्म** ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)

(تاريخ دمشق لابن عساكر، ج ٥١ ص ١٣٨ دار الفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां **ख़राबी** हो या **सफ़ह़ात** कम हों या **बाइन्डिंग** में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की 425 हि़कायात

اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** ने येह किताब "उर्दू" ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब को हिन्द की **राष्ट्रिय भाषा "हिन्दी"** में रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (TRANSLATION) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (TRANSLITERATION) या'नी ज़बान तो उर्दू ही है जब कि लीपि हिन्दी रखी है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए SMS या E-MAIL) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

Mo. + 91 9327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ का लीपियांतर चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ

अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	' = ءُ
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
ॅ = ـَ	ु = ـُ	ـِ	– = ـٓ	ि = ئ	ू = وُ	ा = آ

"ख़लीफ़ए राशिद के ह़ालाते ज़िन्दगी का म-दनी गुलदस्ता"

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز की 425 ह़िकायात

पेशकश

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

(शो'बए इस्लाही कुतुब)

नाशिर

मक-त-बतुल मदीना

421, उर्दू मार्केट, मटया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली - **6**

फ़ोन : (**011**) **23284560**

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

नाम किताब : हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की 425 हिकायात

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (शो'बए इस्लाही कुतुब)

सिने तबाअ़त : र-जबुल मुरज्जब, सि. 1433 हि. ब मुताबिक़ जून, सि. 2012 ई.

नाशिर : मक-त-बतुल मदीना, देहली

तस्दीक़ नामा

الحمد للّٰہ رب العٰلمين والصلوة و السلام على سيد المرسلين وعلى اله واصحابه اجمعين

तारीख़ : 21, र-मज़ानुल मुबारक, 1432 हि. हवाला : 172

तस्दीक़ की जाती है कि येह किताब

"हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की 425 हिकायात"

(मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे षानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्या इ़बारात, अख़्लाक़िय्यात, फ़िक़्ही मसाइल और अ़-रबी इ़बारात वग़ैरा के ह़वाले से मक़्दूर भर मुला-ह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोंज़िंग या किताबत की ग़-लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल (दा'वते इस्लामी)

22-8-2011

E.mail : ilmia@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

"उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़" के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "14 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلّى الله تعالٰى عليه واله وسلّم : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ ٥

"मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।"

(المعجم الكبير للطبراني،الحديث:٥٩٤٢،ج٦،ص١٨٥)

दो म-दनी फूल :

﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का षवाब नहीं मिलता।

﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना षवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़्हे पर ऊपर दी हुई दो अ़-रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा।) ﴾5﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और ﴾6﴿ क़िब्ला रू मुत़ा-लआ़ करूंगा ﴾7﴿ क़ुरआनी आयात और ﴾8﴿ अह़ादीषे मुबा-रका की ज़ियारत करूंगा ﴾9﴿ जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾10﴿ जहां जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। ﴾11﴿शरई मसाइल सीखूंगा। ﴾12﴿अगर कोई बात समझ न आई तो उ़-लमा से पूछ लूंगा ﴾13﴿ दूसरों को **येह किताब** पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा ﴾14﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़-लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा।

(मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : **बानिये दा'वते इस्लामी, आशिके़ आ'ला ह़ज़रत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा** मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक **"दा'वते इस्लामी"** नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते **इ़ल्मे शरीअ़त** को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मु-तअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** भी है जो **दा'वते इस्लामी** के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छ शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाही़ कुतुब ﴾4﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब ﴾6﴿ शो'बए तख़रीज

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ **सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा**

ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُالرَّحۡمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम **इस्लामी भाई** और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **म-दनी काम** में हर मुम्किन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **"दा'वते इस्लामी"** की तमाम मजालिस ब शुमूल **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़-मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए ।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم



र-मज़ानुल मुबारक 1425 हि.

फ़ेहरिस

वोह जिन को लोग याद रखते हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस दुन्या में रोज़ाना शायद हज़ारों लोग आते हैं, अपने हिस्से की ज़िन्दगी गुज़ारते और यहां से चले जाते हैं, कुछ अ़र्से बा'द लोग भी उन्हें भूल भाल जाते हैं लेकिन बा'ज़ हज़रात ऐसे अ़ज़ीमुश्शान अन्दाज़ से ज़िन्दगी गुज़ारते हैं कि सदियों बा'द आने वाले लोग भी उन को याद करते और उन से महब्बत रखते हैं हालांकि उन्हें देखा भी नहीं होता। हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز तारीख़े इस्लाम की ऐसी ही ताबनाक शख़्सिय्यत हैं। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰى عَلَيْه ने 61 हि. या 63 हि. में ख़ानदाने बनू उमय्या में **मदीनए मुनव्वरा** زادَهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيماً وَّ تَكْرِيماً में आंख खोली और मदीने शरीफ़ ही में इ़ल्म व अ़मल की मन्ज़िलें तै करने के बा'द सिर्फ़ 25 साल की उ़म्र में मक्कतुल मुकर्रमा, **मदीनतुल मुनव्वरा** और ताइफ़ के गवर्नर बने और 6 साल येह ख़िदमत शानदार त़रीक़े से अन्जाम देने के बा'द मुस्ता'फ़ी हो कर ख़लीफ़ा के मुशीरे ख़ास बन गए और सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक की वफ़ात के बा'द 10 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 99 हि. को तक़रीबन 36 साल की उ़म्र में जुमुअ़तुल मुबारक के दिन ख़लीफ़ा मुक़र्रर हुए और इस शान से ख़िलाफ़त की ज़िम्मादारियों को निभाया कि तारीख़ में उन का नाम सुनहरे हुरूफ़ से लिखा गया, कमो बेश अढ़ाई साल ख़लीफ़ा रहने के बा'द हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز ने 25 रजब 101 हि. बुध के दिन तक़रीबन 39 साल की उ़म्र में अपना सफ़रे ह़यात मुकम्मल कर लिया और अपने ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी से जा मिले। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰى عَلَيْه को ह़लब के क़रीब दैरे सिमआ़न में सिपुर्दे ख़ाक किया गया जो मुल्के शाम में है।

हम्बलियों के अ़ज़ीम पेशवा ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं

اِذَارَأَیْتَ الرَّجُلَ یُحِبُّ عُمَرَ بْنَ عَبْدِ الْعَزِیْزِ وَیَذْکُرُ مَحَاسِنَہٗ وَیَنْشُرُھَا فَاعْلَمْ اَنَّ مِنْ وَّرَاءِ ذٰلِکَ خَیْرًا اِنْ شَاءَ اللّٰہُ

या'नी जब तुम देखो कि कोई शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز से मह़ब्बत रखता है और उन की ख़ूबियों को बयान करने और उन्हें आ़म करने का एहतिमाम करता है तो इस का नतीजा ख़ैर ही ख़ैर है, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ (سیرت ابن جوزی ص ۷۴) ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز की इ़बादत गुज़ारी पर नज़र दोड़ाएं तो आ़बिदों के सरदार, ज़ोहदो तक़्वा को देखें तो سُبْحٰنَ اللّٰہ उन का ख़ौफ़े ख़ुदा देख कर रश्क आए, ज़ौक़े तिलावत के बारे में पढ़ कर आंखों से आंसू जारी हो जाएं, इ़ल्मी वुस्अ़तों को मापना चाहे तो बड़े बड़े उ़-लमा उन के सामने ज़ानूए तलम्मुज़ बिछाते दिखाई दें, तजदीदी कारनामों का शुमार करने जाएं तो इस्लाम का पहला मुजद्दिद सब से मुन्फ़रिद दिखाई दे, तर्ज़े हुकूमत का मुशा-हदा करें तो काम्याब तरीन हुक्मरान और ऐसे काम्याब कि ख़ु-लफ़ाए राशिदीन में उन का शुमार होता है, बत़ौरे ख़लीफ़ा उन्हों ने वोह कुछ कर दिखाया जिस का सोचना भी मुश्किल था। 590 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल ज़ेरे नज़र किताब **"ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की 425 ह़िकायात"** इन्ही की सीरते मुबा-रका की झल्कियों पर मुश्तमिल है। बिला शुबा आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उन अ़ज़ीम शख़्सिय्यात में से है जिन की अ़-ज़-मतों का बयान करने वाला तरद्दुद का शिकार हो जाता है कि कहां से शुरूअ़ करे और कहां ख़त्म ? कौन सी ह़िकायत पहले बयान करे और कौन सी बा'द में ? फिर भी ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز की ज़िन्दगी को दो बड़े हिस्सों में तक़्सीम कर

के बयान करने की कोशिश की गई है : (1) ख़िलाफ़त से पहले की ज़िन्दगी और (2) ख़िलाफ़त के बा'द वाली ज़िन्दगी । यूं तक़रीबन 456 हि़कायात (जिस में कम अज़ कम 425 हि़कायात हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز की हैं) का म-दनी गुलदस्ता आप के सामने पेश कर दिया है मुमकिन है कि कोई वाक़िआ़ पहले रू नुमा हुवा लेकिन इस किताब में उस का ज़िक्र बा'द में किया गया हो यूं हि़कायात की तरतीब आगे पीछे हो गई हो लेकिन इस से कोई ख़ास फ़र्क़ नहीं पड़ेगा क्योंकि गुलदस्ते की ख़ुश्बू इस बात की मोह़ताज नहीं कि कौन सा फूल कहां रखा गया है ! इस ख़ुश्बू को सूंघिये और अपने मशामे जां मुअ़त्तर व मुअ़म्बर कीजिये । इस किताब में शामिल अकषर रिवायात व हि़कायात हज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى की किताब "सीरते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़" और हज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्दुल ह़कम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की किताब "सीरते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़" से ली गई है येह दोनों किताबें हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز की सीरत के ह़वाले से मआख़ज़ की हैषिय्यत रखती है, उन के इ़लावा तारीख़े दिमिश्क़, ह़िल्यतुल औलिया, त़बक़ाते इब्ने सा'द, तारीख़े त़-बरी और एह़याउल उ़लूम वग़ैरा से भी मवाद लिया गया है मगर क़ारेईन की दिल चस्पी के पेशे नज़र लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ तर्जमे के बजाए मक़सूद को पेशे नज़र रखा गया है ।

शायद येह किताब पढ़ने के बा'द आप के दिल में दो ही ह़सरतें पैदा हों : **एक** येह कि काश ! मैं भी ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز जैसा बन जाउं, और **दूसरी** : काश ! मैं उन के दौर में पैदा हुवा होता । उन के दौर में पैदा होना तो मुमकिन नहीं

लेकिन उन जैसा बनने की कोशिश ज़रूर की जा सकती है। चूंकि सिरते अस्लाफ़ का मुता़-लआ़ महूज़ ज़ौक़ अफ़ज़ाई के लिये नहीं बल्कि अपनी इस्लाह़ के लिये भी होना चाहिये इस लिये ह़त्तल मक्दूर इस किताब में दर्ज रिवायात व हि़कायात से मिलने वाले म-दनी फूलों और दर्सों को तह़रीरी शक्ल दे दी गई है अगर्चे इन की वजह से किताब कुछ त़वील हो गई है मगर येह त़वालत बे जा नहीं क्यूंकि हर एक इन दर्सों को निकालने की सलाहि़य्यत नहीं रखता। बा'ज़ मक़ामात पर शैखे़ त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی की कुतुब व रसाईल से ज़रूरतन लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ मवाद नक़्ल किया गया है जिस का ह़त्तल मक्दूर ह़वाला भी दे दिया गया है। इस किताब में शामिल अकषर अश्आ़र भी आप دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ना'तिय्या दीवान "वसाइले बख़्शिश" से लिये गए हैं।

"हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की 425 हि़कायात" को खुद भी मुकम्मल पढ़िये और दीगर इस्लामी भाइयों को भी पढ़ने की तरग़ीब दे कर नेकी की दा'वत को आ़म करने का षवाब कमाइये। **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ है कि हमें **"अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश"** करने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल और **म-दनी क़ाफ़िलों** का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और **दा'वते इस्लामी** की तमाम मजालिस ब शुमूल **मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

शो'बए इस्लाही़ कुतुब मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

21, र-मज़ानुल मुबारक, सि. 1423 हि. ब मुत़ाबिक़ 22 अगस्त 2011 ई.

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

ह़दीष बयान करने से पहले दुरूदे पाक पढ़ते

जलीलुल क़द्र मोह़द्दिष ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़रूबा ह़र्रानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जब किसी के सामने ह़दीषे पाक बयान करते तो पहले दुरूदे पाक पढ़ते और फ़रमाया करते थे कि ह़दीष की ब-र-कत से दुन्या में सरवरे काएनात, शहनशाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते अक़्दस पर कषरत से दुरूदे पाक पढ़ने की सआ़दत मिलती है और اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आख़िरत में जन्नत की ने'मतें नसीब होंगी।

(مسالک الحنفاء للقسطلانی ص ۳۰۵)

पड़ोसी ख़ुल्द में या रब बना दे अपने प्यारे का
येही है आरज़ू मेरी येही दिल से दुआ़ निकले

(वसाइले बख़्शिश, स. 262)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इब्तिदाई ह़ालाते ज़िन्दगी

ख़लीफ़ए आ़दिल **अमीरुल मोअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़फ़्स उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ العزیز ने 61 या 63 हि. में **मदीनए मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّ تَعظِیْماً وَّ تَکْرِیماً में आंख खोली।

(سیرت اِبن جوزی، ص۹)

वालिदे गिरामी

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز के वालिदे माजिद हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ सर ज़मीने अ़रब के मुअ़ज़्ज़ज़ तरीन ख़ानदान "क़ुरैश" की शाख़ "बनू उमय्या" की मुम्ताज़ शख़्सिय्यत थे, 20 बरस से ज़ाइद अ़र्सा मिस्र के गवर्नर रहे [1] और बहुत से यादगार काम किये म-षलन "हुल्वान" में बहुत सी नई मस्जिदें ता'मीर करवाई, मिस्र की जामेअ़ मस्जिद को अज़ सरे नौ (या'नी नए सिरे से) बनवाया [2], लोगों की आसानी केलिये ख़लीजे मिस्र पर दो पुल बनवाएं [3] उ़-लमाए किराम के हुक़ूक़ व एह़तिराम को बड़ी अहम्मिय्यत दी, उन के बेश बहा वज़ीफ़े मुक़र्रर किये। जब शादी करना चाही तो अपने ख़ज़ान्ची को फ़रमाया : मुझे मेरे माल से ख़ालिस ह़लाल के 400 दीनार ला दो, मैं नेक घराने में निकाह़ करना चाहता हूं [4] जुमादिल ऊला 85 हि. में उन का विसाल हो गया [5] वक़्ते इन्तिक़ाल येह अल्फ़ाज़ ज़बान पर थे

یَالَیْتَنِی لَمْ اَکُنْ شَیْئًا مَّذْکُوْرًا اَلَا لَیْتَنِی کُنْتُ کَھٰذَا الْمَاءِ الْجَارِی اَوْ کَنَبَاتَۃِ الْاَرْضِ

"काश ! मैं कोई क़ाबिले ज़िक्र चीज़ न होता, काश ! मैं कोई शै न होता, काश मैं जारी पानी की त़रह़ होता या एक तिन्का होता "

काश ! कि मैं दुन्या में पैदा न हुवा होता — क़ब्रो ह़श्र का हर ग़म ख़त्म हो गया होता
आह ! सल्बे ईमां का ख़ौफ़ खाए जाता है — काश ! मेरी मां ने ही मुझ को न जना होता

(वसाइले बख़्शिश, स. 256)

۱: تاریخ دمشق ج۳۶ص۳۵۱ ۲: حسن المحاضرۃ،ج۱،ص۱۰۷ ۳: حسن المحاضرۃ،ج۲،ص۳۲۷
۴: سیرت ابن جوزی ص۲۸۷ ۵: البدایۃ والنھایۃ،ج۶ص۱۷۹ ۶: تاریخ دمشق ج۳۶ص۳۵۹

ऐ दुन्या ! हम धोके में रहे

जब हज़रते अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन मरवान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَّان की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो फ़रमाया : "मुझे वोह कफ़न दिखाओ जिस में तुम मुझे कफ़नाओगे।" जब कफ़न सामने आया तो उसे देख कर फ़रमाने लगे : मेरे इतने सारे माल में सिर्फ़ येह मेरे साथ जाएगा ! और मुंह फैर कर रोने लगे फिर फ़रमाया : ऐ दुन्या ! तुझ पर अफ़सोस है कि तेरा माल अगर बहुत ज़ियादा हो तो कम पड़ता है और अगर थोड़ा हो तो काफ़ी हो जाता है, आह ! हम तेरी त़रफ़ से धोके में रहे।

(درمنثور ج۴ص ۱۹۳)

मेरे दिल से दुन्या की चाहत मिटा कर
कर उल्फ़त में अपनी फ़ना या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स.78)

ख़्वाब में वालिदे गिरामी की ज़ियारत

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللهِ العزيز फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने वालिदे मोह़तरम को उन की वफ़ात के बा'द ख़्वाब में देखा कि एक बाग़ में चेहल क़दमी कर रहे हैं, मैं ने पूछा : اَیُّ الْاَعْمَالِ وَجَدْتَّ اَفْضَلَ؟ *या'नी आप ने किस अ़मल को अफ़्ज़ल पाया ?* फ़रमाया : "इस्तिग़फ़ार को" (سیرت ابن جوزی ص ۲۸۷)

दिलों के ज़ंग की सफ़ाई

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे म-दनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने कई मरतबा इस्तिग़फ़ार की फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई है चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत

है कि ख़ा-तमुन्नबिय्यीन, साहि़बे कुरआने मुबीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : اِنَّ لِلْقُلُوْبِ صَدَاءٌ كَصَدَاءِ الْحَدِيْدِ وَجَلَاؤُهَا الْاِسْتِغْفَارُ *बेशक लोहे की त़रह़ दिलों को भी ज़ंग लग जाता है और उस की सफ़ाई इस्तिग़्फ़ार करना है ।*

(مَجْمَعُ الزَّوَائِد ج ١٠ ص ٣٤٦ حديث ١٧٥٧٥)

हर ख़त़ा तू दर गुज़र कर बे कसो मजबूर की
या इलाही ! मग़्फ़िरत कर बे कसो मजबूर की

(वसाइले बख़्शिश, 76)

वालिदए मोह़तरमा

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز की वालिदा हज़रते सय्यिदतुना उम्मे आ़सिम رحمۃ اللہ تعالی علیہا हज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की साहिब ज़ादी और **अमीरुल मोअमिनीन** हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की पोती थीं, इस लिहाज़ से हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز की रगों में फ़ारूक़ी ख़ून था शायद इसी वजह से आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالی عَلَیْہ के किरदार व अत़वार पर हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का गहरा अषर दिखाई देता है ।

ख़ुश नसीब मुबल्लिग़ा हज़रते फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बहू कैसे बनी ?

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز की नानी जान का **अमीरुल मोअमिनीन**, इमामुल आ़दिलीन, हज़रते सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बहू बनने का वाके़आ भी

बहुत दिल चस्प है। चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ अपनी रिआ़या की ख़बर गीरी व ह़ाजत रवाई के लिये अकषर रात के वक़्त **मदीनए मुनव्वरा** زَادَھَااللّٰہُ شَرَفًاوَّ تَعظِیۡماً وَّ تَکۡرِیۡماً का **दौरा** फ़रमाया करते थे कि कहीं कोई मुसीबत ज़दा या मज़्लूम मदद का मुन्तज़िर तो नहीं। हज़रते सय्यिदुना असलम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का बयान है कि एक रात में भी म-दनी दौरे में **अमीरुल मोअमिनीन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के हम राह था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ थक कर एक जगह बैठ गए और एक मकान की दीवार से टेक लगा ली। अचानक एक आवाज़ सन्नाटे को चीरती हुई आप के कानों से टकराई, ब ज़ाहिर वोह खुसर फुसर ही थी मगर माह़ोल की ख़ामोशी की वजह से साफ़ सुनाई दे रही थी। इसी घर में एक औ़रत अपनी बेटी को बेदार करते हुए कह रही थी : "**बेटी**! उठो और **दूध** में थोड़ा सा **पानी** मिला दो।" कुछ वक़्फ़े के बा'द लड़की की आवाज़ सुनाई दी : "अम्मी जान ! क्या आप को मा'लूम नहीं कि **अमीरुल मोअमिनीन** ने येह ए'लान करवाया है कि कोई भी **दूध** में पानी न मिलाए।" मां ने कहा : इस वक़्त **अमीरुल मोअमिनीन** और ए'लान करने वाले तुम्हें कहां देख रहे हैं ! जाओ और दूध में पानी मिला दो। मगर बेटी साफ़ इन्कार करते हुए कहने लगी : अम्मी जान ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह मुझ से नहीं हो सकता कि मैं लोगों के सामने तो **अमीरुल मोअमिनीन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की इताअ़त गुज़ारी करूं और तन्हाई में ना फ़रमानी !" हज़रते सय्यिदुना असलम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि **अमीरुल मोअमिनीन** हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने मां बेटी की गुफ़्त-गू

सुन कर मुझ से फ़रमाया : "असलम ! इस मकान को अच्छी त़रह़ पहचान लो।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ सारी रात इसी त़रह़ गलियों में दौरा फ़रमाते रहे, जब सुब्ह़ हुई तो मुझे उस मकान के मकीनों (रहने वालों) की मा'लूमात के लिये भेजा। मैं ने मा'लूमात कीं तो पता चला कि इस घर में एक बेवा औ़रत अपनी कंवारी बेटी के साथ रहती है , मैं ने बारगाहे ख़िलाफ़त में ह़ाज़िर हो कर अपनी कार कर्दगी पेश कर दी। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने तमाम बेटों को जम्अ़ कर के दरयाफ़्त फ़रमाया : क्या तुम में से कोई शादी करना चाहता है ? ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह और सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने अ़र्ज़ की : "हम तो शादी शुदा हैं।" लेकिन तीसरे बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ शादी के लिये राज़ी हो गए। चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस लड़की के घर अपने शहज़ादे से शादी के लिये पैग़ाम भेजा जो क़बूल कर लिया गया, शादी ख़ाना आबादी हो गई, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के करम से उन के यहां एक ख़ुश क़िस्मत बेटी पैदा हुई, फिर जब उस की शादी हुई तो उस के बत़न से "उ़-मरे षानी" या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز की विलादत हुई। (سیرت ابن جوزی ص ۱۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने कि दूध में पानी मिलाने से इन्कार करने वाली ख़ुश नसीब मुबल्लिग़ा को इस नेकी का कैसा उ़म्दा सिला मिला कि एक त़रफ़ **अमीरुल मोअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बहू और दूसरी जानिब उ़-मरे षानी **अमीरुल मोअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर

बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز की नानी होने का शरफ़ ह़ासिल हुवा। *अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।* اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

बना दे मुझे नेक नेकों का सदक़ा गुनाहों से हर दम बचा या इलाही
इबादत में गुज़रे मेरी ज़िन्दगानी करम हो करम या ख़ुदा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

ख़िलाफ़े शरीअ़त कामों में मां बाप की इत़ाअ़त जाइज़ नहीं

इस सबक़ आमोज़ ह़िकायत से एक म-दनी फूल येह भी मिला कि अगर वालिदैन ख़िलाफ़े शरीअ़त हुक्म दें म-षलन झूट बोलने, ह़राम रोज़ी कमा कर लाने या दाढ़ी मुन्डाने का कहें तो येह बातें न मानी जाएं, चाहे वोह कितने ही नाराज़ हों, आप ना फ़रमान नहीं ठहरेंगे, बल्कि अगर उन की ख़िलाफ़े शरीअ़त बातें मान लेंगे तो ख़ुदाए ह़न्नान व मन्नान عَزَّوَجَلَّ के ना फ़रमान क़रार पाएंगे, सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : لَا طَاعَةَ فِيۡ مَعۡصِيَةِ اللّٰهِ اِنَّمَا الطَّاعَةُ فِي الۡمَعۡرُوۡفِ *या'नी अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *की ना फ़रमानी में किसी की इत़ाअ़त जाइज़ नहीं इत़ाअ़त तो सिर्फ़ नेकी के कामों में है।* (مُسلِم ص١٠٢٣ حديث ١٨٤٠) आ'ला ह़ज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, इमामे अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّحۡمٰن फ़रमाते हैं : जाइज़ बातों में वालिदैन की इत़ाअ़त फ़र्ज़ है और अगर वोह किसी ना जाइज़ बात का हुक्म दें तो इस में उन की इत़ाअ़त जाइज़ नहीं। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 21, स. 157)

गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही बुरी आदतें भी छुडा या इलाही
मुतीअ़ अपने मां बाप का कर मैं उन का हर इक हुक्म लाऊं बजा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 79-80)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

दूध में पानी मिलाना

मज़्कूरा हिकायत में दूध में पानी मिलाने का भी तज़्किरा है, अगर दूध बेचने वाला गाहक को खुद साफ़ साफ़ बता दे कि हम इस में इतनी मिक्दार (म-षलन 10%) पानी मिलाते हैं तो ऐसा दूध बेचना जाइज़ है, या उस अ़लाके़ का उ़र्फ़ हो कि दूध में दस फ़ी सद पानी मिलाया जाता है और ख़रीदार भी इस बात को जानता है तो भी जाइज़ है, लेकिन अगर उ़र्फ़ दस फ़ी सद का है या गाहक को दस फ़ी सद बताया मगर पानी ज़ियादा मिला दिया तो अब बेचना ना जाइज़ होगा क्यूंकि फ़रेब व धोका पाया गया, सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है :

“مَنْ غَشَّنَا فَلَیْسَ مِنَّا وَالْمَکْرُ وَالْخِدَاعُ فِی النَّارِ *या'नी जो हमारे साथ धोका बाज़ी करे वोह हम में से नहीं और मक्र और धोका बाज़ी जहन्नम से है।”*

(المعجم الکبیر حدیث ۱۰۲۳۴ ج ۱۰ ص ۱۳۸)

दूध में पानी की मिलावट के मस्अले को आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن के एक फ़तवा से समझने की कोशिश कीजिये : चुनान्चे आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मिलावट वाले घी की ख़रीदो फ़रोख़्त के बारे में सुवाल हुवा तो फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 17 सफ़्हा 150 पर फ़रमाया : अगर येह मसनूअ़ जा'ली (या'नी नक़्ली) घी वहां आ़म तौर पर बिकता है कि हर

शख़्स इस के जा'ल (या'नी नक़ली) होने पर मुत्तलअ़ है और बा वुजूदे इत्तेलाअ़ ख़रीदता है तो बशर्ते कि ख़रीदार इसी बलद (या'नी बस्ती) का हो, न ग़रीबुल वत़न ताज़ा वारिदे ना वाक़िफ़ (या'नी मुसाफ़िर, नया आने वाला और अन्जान न हो और घी में इस क़दर मैल (या'नी मिलावट) से जितना वहां आ़म तौ़र पर लोगों के ज़ेह्न में है अपनी त़रफ़ से और ज़ाइद न किया जाए न किसी त़रह़ इस का जा'ली (या'नी नक़ली) होना छुपाया जाए। ख़ुलासा येह कि जब ख़रीदारों पर इस की ह़ालत मकशूफ़ (या'नी ज़ाहिर) हो और फ़रेब व मुग़ा-लता राह न पाए (या'नी धोका देने की कोई सूरत न पाई जाए) तो इस (या'नी मिलावट वाले घी) की तिजारत जाइज़ है, घी बेचना भी जाइज़ और जो चीज़ इस में मिलाई गई उस का बेचना भी, जैसे बाज़ारी दूध कि सब जानते हैं कि इस में पानी है और बा व-सफ़े इल्म (या'नी जानने के बा वुजूद) ख़रीदते हैं, येह (या'नी ना जाइज़ होना तो) इस सूरत में है जब कि बाएअ़ (या'नी बेचने वाला) वक़्ते बैअ़ (या'नी बेचते वक़्त) अस्ली ह़ालत ख़रीदार पर ज़ाहिर न कर दे और अगर ख़ुद बता दे तो **ज़ाहिरुर्रिवायह**[1] व मज़हबे इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ में मुत़्लक़न जाइज़ है ख़्वाह (घी में) कितना ही मैल (या'नी मिलावट) हो, अगर्चे ख़रीदार ग़रीबुल वत़न (या'नी परदेसी) हो कि बा'दे बयान फ़रेब (या'नी धोका) न रहा। बिल जुम्ला मदारे कार ज़ुहूरे अम्र (या'नी हर चीज़ का दारो मदार मुआ़-मले के

---

1 : फ़िक़्हे ह़-नफ़ी में ज़ाहिरुर्रिवायह उन मसाइल को कहा जाता है जो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन ह़सन शैबानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی की छ किताबों (1)جامع صغیر (2)جامع کبیر (3)سیر کبیر (4)سیر صغیر (5)زیادات (6)مبسوط में मज़कूर हों।

ज़ाहिर होने) पर है ख़्वाह खुद ज़ाहिर हो जैसे गेहूं में जव (नुमाया हो जाते हैं), या ब जहते उ़र्फ़ व इश्तेहार (या'नी उ़र्फ़ व शोहरत के ए'तेबार से) मुश्तरी (या'नी ख़रीदार) पर वाज़ेह हो जैसे (कि) दूध का मा'मूली पानी, ख़्वाह येह (या'नी बेचने वाला) खुद ह़ालते वाक़ेई (या'नी ह़क़ीक़ते ह़ाल) तमाम व कमाल (या'नी अच्छी त़रह़) बयान करे"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 17, स.150)

म-दनी मश्वरा : वोह इस्लामी भाई जो दूध बेचने का या कोई और ऐसा कारोबार करते हैं जिस में मिलावट के एह़तिमालात व मुआ़-मलात होते हैं, उन्हें चाहिये कि वोह अपने कारोबार के ह़वाले से तफ़सीलात बता कर दारुल इफ़्ता से शरई हुक्म मा'लूम कर लें, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ पाकिस्तान में दा'वते इस्लामी के ज़ेरे इन्तेज़ाम "**दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत**" की कई शाखें क़ाइम हो चुकी हैं जहां राबेत़ा कर के फ़तावा लिया जा सकता है।

रिश्ता त़ै करते वक़्त क्या देखना चाहिये ?

एक म-दनी फूल येह भी मिला कि जब भी रिश्ता किया जाए तो तक़्वा व परहेज़ गारी को तरजीह़ दी जाए जैसा कि **अमीरुल मोअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने किया, **मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त**, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी हमें येही म-दनी फूल अ़त़ा फ़रमाया है कि "किसी औ़रत से निकाह़ करने के लिये चार चीज़ों को मद्दे नज़र रखा जाता है : (1) उस का माल (2) ह़सब व नसब (3) हुस्न व जमाल और (4) दीन।" फिर फ़रमाया : " فَاظْفَرْ بِذَاتِ الدِّیْنِ *या'नी तुम दीन दार औ़रत के हुसूल की कोशिश करो।"* (صحیح بخاری، کتاب النکاح، الحدیث ۵۰۹۰، ج۳، ص۴۲۹)

मगर अफ़सोस कि हमारे मुआशरे में आम तौर पर लड़के वालों की तमन्ना येह होती है कि माल दार की बेटी घर में आए ताकि हमारे बेटे के सारे अरमान निकालें, इस क़दर जहेज़ मिले कि घर भर जाए बल्कि अब तो हाथ झाड कर मुंह फाड कर मुता–लबा किया जाता है कि जहेज़ में फुलां फुलां चीज़ दोगे तो शादी होगी, उधर लड़की वालों के सामने अगर किसी नेक व परहेज़ गार इस्लामी भाई का रिश्ता पेश किया जाए तो बसा अवक़ात सिर्फ़ इस वजह से इन्कार कर देते हैं कि वोह बारिश (या'नी दाढ़ी वाला) और सुन्नतों का आमिल है जब कि उस के बर अक्स ऐसे नौ जवान के रिश्ते को तरजीह देने में ख़ुशी महसूस करते हैं जो मालदार हो चाहे वोह अपने बुरे आ'माल से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को नाराज़ कर के जहन्नम में जाने का सामान कर रहा हो, उस की सोहबत उन की बेटी को भी ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से बे नियाज़ और उस की इबादत से ग़ाफ़िल कर सकती हो। हमारे अस्लाफ़ इस हवाले से कैसी म–दनी सोच रखते थे, इस हिकायत से अन्दाज़ा कीजिये, चुनान्चे

तलाशे रिश्ता

हज़रते सय्यिदुना शैख़ किरमानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى शाही ख़ानदान से तअल्लुक़ रखते थे लेकिन आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه दुन्यावी मशाग़िल से बहुत दूर हो चुके थे। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की एक साहिब ज़ादी थी जो हुस्ने सूरत के साथ साथ हुस्ने सीरत से भी आरास्ता थी। एक दिन उसी साहिब ज़ादी के लिये शाहे किरमान ने निकाह का पैगाम भेजा। हज़रते सय्यिदुना शैख़ किरमानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى नहीं चाहते थे कि मलिका बन

कर मेरी बेटी दुन्या की त़रफ़ माइल हो। इस लिये आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने बादशाह को टाल दिया और मस्जिद मस्जिद घूम कर किसी मुत्तक़ी नौ जवान को तलाश करने लगे। दौराने तलाश एक नौ जवान पर आप की निगाह पड़ी जिस के चेहरे पर इ़बादत व परहेज़ गारी का नूर चमक रहा था। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने पूछा : "तुम्हारी शादी हो चुकी है?" उस ने नफ़ी में जवाब दिया। फिर पूछा : "क्या ऐसी लड़की से निकाह़ करना चाहते हो जो क़ुरआन मजीद पढ़ती है, नमाज़ रोज़े की पाबन्द है, खू़ब सूरत, पाक बाज़ और नेक है।" उस ने कहा : "मैं तो एक ग़रीब शख़्स हूं भला मुझ से इन पाकीज़ा सिफ़ात की ह़ामिल लड़की का रिश्ता कौन करेगा?" आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "मैं करता हूं, येह दराहिम लो और एक दिरहम की रोटी, एक दिरहम का सालन और एक दिरहम की ख़ुश्बू ख़रीद लाओ।" नौ जवान वोह चीज़ें ले आया। ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ किरमानी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی ने अपनी साह़िब ज़ादी का निकाह़ उस नेक व पारसा नौ जवान के साथ कर दिया। साह़िब ज़ादी जब रुख़्सत हो कर उस नौ जवान के घर आई तो उस ने देखा कि घर में पानी की एक सुराह़ी के सिवा कुछ नहीं है। उस सुराह़ी पर एक रोटी रखी हुई देखी तो पूछा : "येह रोटी कैसी है?" नौ जवान ने जवाब दिया : "येह कल की बासी रोटी है, मैं ने इफ़्तार के लिये रख ली थी।" येह सुन कर कहने लगी : मुझे मेरे घर छोड़ आइये। नौ जवान ने कहा : "मुझे तो पहले ही अंदेशा था कि शैख़ किरमानी की बेटी मुझ जैसे ग़रीब इन्सान के घर नहीं रुक सकती।" साह़िब ज़ादी ने पलट कर कहा : "मैं आप की मुफ़्लिसी के बाइ़ष नहीं लौट रही हूं बल्कि इस लिये कि मुझे आप का तवक्कुल कमज़ोर नज़र आ रहा है, मुझे अपने वालिद पर ह़ैरत

है कि उन्हों ने आप को पाकीज़ा ख़स्लत, अ़फ़ीफ़ और सालेह़ कैसे कहा जब कि आप का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसे का येह ह़ाल है कि रोटी बचा कर रखते हैं।'' येह बातें सुन कर नौ जवान बहुत मु-तअष्षिर हुवा और नदामत का इज़्हार किया। लड़की ने फिर कहा : ''मैं ऐसे घर में नहीं रुक सकती जहां एक वक़्त की ख़ूराक जम्अ़ कर के रखी हो, अब यहां मैं रहूंगी या रोटी !'' येह सुन कर नौ जवान फ़ौरन बाहर निकला और रोटी ख़ैरात कर दी। (روض الریاحین، الحکایۃ الثانیۃ والتسعون بعد المائۃ ص ۱۹۲)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّی اللهُ تعالٰی علٰی محمَّد

मैं इन जैसा बनना चाहता हूं

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز छोटी सी उ़म्र में अपनी वालिदा माजिदा के चचा जान ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تعالٰی عَنْهُمَا की ख़िदमत में ब कषरत ह़ाज़िर हुवा करते थे और अपनी वालिदा से अकषर इस ख़्वाहिश का इज़्हार किया करते कि मैं इन (या'नी सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تعالٰی عَنْهُمَا) जैसा बनना चाहता हूं।

(سیرت ابن عبدالحکم ص ۲۰)

बना दे मुझे नेक नेकों का सदक़ा
गुनाहों से हर दम बचा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

अपने नन्हियाल में रहे

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز कुछ बड़े हुए तो वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़

رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मिस्र के गवर्नर बन गए। वहां जा कर अपनी ज़ौजा "उम्मे आ़सिम" के नाम पैग़ाम भेजा कि बच्चे को ले कर मिस्र आ जाएं। हज़रते सय्यिदतुना उम्मे आ़सिम رحمۃاللہ تعالی علیہا अपने चचा जान हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अपने शोहर के पैग़ाम से आगाह किया। उन्हों ने फ़रमाया : "भतीजी ! तुम्हारे शोहर ने बुलाया है तो तुम्हें जाना ही चाहिये।" जब वोह रवाना होने लगीं तो हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने हिदायत की : इस म-दनी मुन्ने (या'नी उ़मर बिन अ़ब्दुल अज़ीज़) को हमारे पास छोड़ जाओ, येह तुम सब की ब निस्बत हमारे घराने से ज़ियादा मुशा-बहत रखता है। अपने चचा की बात टालना उन्हें अच्छा न लगा, चुनान्चे वोह हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ العزیز को वहीं छोड गईं। जब मिस्र पहुंचे तो हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ख़ुशी ख़ुशी अपने बेटे के इस्तिक़्बाल के लिये निकले जब उन्हें अपना लख़्ते जिगर दिखाई न दिया तो दरयाफ़्त किया : मेरा बेटा उ़मर कहां है ? हज़रते सय्यिदतुना उम्मे आ़सिम رحمۃاللہ تعالی علیہا ने हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के इसरार पर उन्हें **मदीनए मुनव्वरा** زادَھَااللّٰہُ شَرَفًاوَّ تَعظِیماً وَّ تَکْرِیماً छोड़ आने का सारा माजरा बयान किया तो वोह बहुत ख़ुश हुए और अपने भाई ख़लीफ़ा अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान को सारा वाक़िआ़ लिख कर भेजा जिन्हों ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ العزیز के अख़राजात के लिये एक हज़ार दीनार माहाना वज़ीफ़ा मुक़र्रर कर दिया। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۲۱)

मौत याद आने पर रो दिये

सहूलियात व आसाइशात के माहोल में सांस लेने के बा वुजूद हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز का दिल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़-ज़मत और ख़ौफ़ से लबरेज़ रहा। चुनान्चे त़बीअ़त बचपन ही से पाकीज़गी और ज़ोहदो तक़्वा की त़रफ़ राग़िब थी। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने जिस दिन हिफ़्ज़े कुरआन मुकम्मल किया तो अचानक रोने लगे, वालिदा माजिदा ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे आ़सिम رحمۃاللہ تعالی علیہا को पता चला और उन्हों ने रोने की वजह दरयाफ़्त की तो अ़र्ज़ की : *"ذَکَرْتُ الْمَوْتَ या'नी मुझे मौत याद आ गई थी।"* अपने छोटे से म-दनी मुन्ने की यादे आख़िरत देख कर उन का दिल भर आया और आंखों से अश्कों की बरसात होने लगी। (تاریخِ دِمشق،ج۴۵،ص۱۳۵)

ऐ काश! इन नुफ़ूसे कुदसिया के सदक़े में हमारी आंखों से भी ग़फ़लत के पर्दे हट जाएं और हम भी अपनी मौत को याद करने वाले बन जाएं, अगर्चे येह तै है कि "**एक दिन मरना है आख़िर मौत है**" मगर मौत को याद करना फ़ाएदे से ख़ाली नहीं, चुनान्चे

यादे मौत का फ़ाएदा

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "فَمَنْ اَثْقَلَهُ ذِكْرُ الْمَوْتِ وَجَدَ قَبْرَهُ رَوْضَةً مِنْ رِيَاضِ الْجَنَّةِ *या'नी जिसे मौत की याद ख़ौफ़ ज़दा करती है क़ब्र उस के लिये जन्नत का बाग़ बन जाएगी।"* (جمع الجوامع،الحدیث۳۵۷۶،ج۲،ص۱۴)

आह ! हर लम्हा गुनह की कषरत व भरमार है
ग़-ल-बए शैतान है और नफ़्से बद अत्वार है
ज़िन्दगी की शाम ढलती जा रही है हाए नफ़्स
गर्म रोज़ो शब गुनाहों का ही बस बाज़ार है

(वसाइले बख़्शिश, स. 128)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बिशारत

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक दिन कोई ख़्वाब देखा और बेदार होने के बा'द फ़रमाया : "मेरी अवलाद में से एक शख़्स जिस के चेहरे पर ज़ख़्म का निशान होगा, ज़मीन को अ़दलो इन्साफ़ से भर देगा । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साहिब ज़ादे हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا अकषर कहा करते :

لَیْتَ شَعْرِیْ مَنْ ھٰذَا الَّذِیْ مِنْ وَلَدِ عُمَرَ فِیْ وَجْھِهٖ عَلَامَةٌ یَمْلَؤُ الْاَرْضَ عَدْلًا

"या'नी काश ! मुझे मा'लूम हो जाए कि मेरे अब्बू जान (या'नी हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की अवलाद में से कौन होगा जिस के चेहरे पर निशान होगा और वोह ज़मीन को अ़दलो इन्साफ़ से भर देगा ?"

वक़्त गुज़रता रहा, दिन महीनों में और महीने साल में तब्दील होते रहे और "फ़ारूक़ी ख़ानदान" हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ख़्वाब की ता'बीर देखने का मुन्तज़िर रहा यहां तक कि हज़रते आ़सिम बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के नवासे हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز की विलादत हुई ।

(سیرت ابن جوزی ص ١٠،١١)

ख़्वाबे फ़ारूक़ी की ता'बीर

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز अपने वालिदे मोहतरम से मिलने मिस्र आए तो कुछ अ़र्सा वहां रहे। एक दिन दराज़ गोश (या'नी गधे) पर सुवार थे कि ज़मीन पर गिर गए। उन की पेशानी पर ज़ख़्म आया, उन के कमसिन सोतीले भाई असबग़ बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने जब उन की पेशानी से ख़ून बहता देखा तो ख़ुशी से उछलने लगे, जब उन के वालिद हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز को मा'लूम हुवा तो नाराज़ी का इज़्हार किया कि तुम अपने भाई के ज़ख़्मी होने पर हंसते हो ! असबग़ ने वज़ाहत पेश की : मैं उन की मुसीबत पर हरगिज़ ख़ुश नहीं हुवा और न उन के गिरने पर हंसा हूं बल्कि मेरी ख़ुशी का सबब येह था कि मैं देखता था कि उन में "अशज्जु बनी उमय्या" की सारी अ़लामतें मौजूद हैं मगर पेशानी पर ज़ख़्म का निशान नहीं, जब येह सुवारी से गिरे और पेशानी पर ज़ख़्म आया तो मैं बे इख़्तियार ख़ुशी के मारे झूमने लगा। येह सुन कर वालिद साहिब ख़ामोश हो गए और कहा : जिस से इस क़िस्म की उम्मीदें वाबस्ता हों उस की ता'लीम व तरबिय्यत **मदीनए मुनव्वरा** زادَهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيماً وَّ تَكرِيماً ही में होनी चाहिये। चुनान्चे उन्हें मदीने शरीफ़ भेज दिया। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۲۱) और वहां के मश्हूर आ़लिम और मुह़द्दिष हज़रते सय्यिदुना सालेह़ बिन कैसान رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه को आप का अतालीक़ (या'नी निगरान उस्ताज़) मुक़र्रर किया।

ख़ुद मदीने शरीफ़ जाने की दरख़्वास्त की

बा'ज़ रिवायात के मुताबिक़ हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز ने अपने वालिदे मोहतरम से दरख़्वास्त की थी

कि मुझे पढ़ने के लिये **मदीनए मुनव्वरा** زادَھَااللّٰہُ شَرَفاًوَّ تَعظِیماً وَّ تَکرِیماً भेज दिया जाए, चुनान्चे अल बिदाया वन्नहाया में है कि ह़ज़रते अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعالٰی عَلَیْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز को अपने साथ मिस्र से शाम ले जाना चाहा तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعالٰی عَلَیْہ ने अ़र्ज़ की : अब्बा जान ! मैं आप को ऐसा मश्वरा न दूं जिस में हम दोनों का फ़ाएदा हो ! फ़रमाया : वोह क्या ? अ़र्ज़ की : आप मुझे मदीने शरीफ़ की पुर बहार इ़ल्मी फ़ज़ा में भेज दीजिये ताकि मैं वहां के फु-क़हाए किराम व मशाइख़े उ़ज़्ज़ाम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السّلام से इ़ल्मो अ़मल के म-दनी फूल ह़ासिल कर सकूं। वालिद साहि़ब को येह तजवीज़ पसन्द आई और उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز को एक ख़ादिम के हमराह **मदीनए मुनव्वरा** زادَھَااللّٰہُ شَرَفاًوَّ تَعظِیماً وَّ تَکرِیماً भेज दिया। (البدایۃ والنہایۃ، ج٦،ص٣٣٢)

बाल मुन्डवा दिये

ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ बिन कैसान رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعالٰی عَلَیْہ ने जिस दियानत व मह़नत के साथ अपने शागिर्दे रशीद ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز के किरदार व गुफ़्तार की निगरानी की, उस का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز नमाज़ की जमाअ़त में शरीक न हो सके। उस्ताज़े मोह़तरम ने वजह पूछी तो बताया : "मैं उस वक़्त बालों में कंघी कर रहा था।" तड़प कर बोले : "बाल संवारने को नमाज़ पर तरजीह़ देते हो !" और इस बात की ख़बर मिस्र में आप के वालिदे मोह़तरम को कर दी, उन्हों ने उसी वक़्त अपना ख़ास

आदमी बेटे को सज़ा देने के लिये भेजा जिस ने मदीने शरीफ़ पहुंचते ही सब से पहले उन के बाल मुन्डवाए फिर कोई दूसरी बात की। (سیرت ابن جوزی ص ۱۴) इसी ता'लीम व तरबिय्यत का नतीजा था कि आप की शख़्सिय्यत उन तमाम अख़्लाक़ी बुराइयों से पाक थी जिन में बनू उमय्या के कई नौ जवान मुब्तला थे।

इस हिकायत में उन वालिदैन के लिये दर्स पोशीदा है जो अपनी अवलाद की म-दनी तरबिय्यत पर ख़ातिर ख़्वाह तवज्जोह नहीं देते, उन से दुन्यावी ता'लीम के बारे में तो पूछ गछ करते हैं मगर नमाज़ों की अदाई की तरग़ीब नहीं देते, याद रखिये कि तरबिय्यते अवलाद सिर्फ़ इस चीज़ का नाम नहीं कि उन्हें खाने पीने और लिबास जैसी ज़रूरियात और दीगर आसाइशात मुहय्या कर दी जाएं बल्कि उन्हें **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم का मुतीअ़ व फ़रमां बरदार बनाने की कोशिश करना भी वालिदैन की ज़िम्मादारियों में शामिल है।[1]

या रब बचा ले तू मुझे नारे जहीम से
अवलाद पे भी बल्कि जहन्नम ह़राम हो

(वसाइले बख़्शिश, स.189)

अ़-ज़-मते इलाही से मा'मूर सीना

जब हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ العزیز के वालिद हज के लिये आए और अपने बेटे के उस्ताज़े मोहतरम हज़रते सय्यिदुना सालेह़ बिन कैसान رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ से मुलाक़ात की तो उन्हों ने

मदीना

1 : अवलाद की बेहतरीन तरबिय्यत क्यूं कर की जाए, येह जानने के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ 188 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "तरबिय्यते अवलाद" का ज़रूर मुता-लआ़ फ़रमाइए।

म-दनी मुन्ने के बारे में ता'ष्षुरात देते हुए इर्शाद फ़रमाया : मैं ने आज तक कोई ऐसा बच्चा नहीं देखा जिस के दिल में अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इतनी अ़-ज़मत हो जितनी इस बच्चे के सीने में है। (تاریخ دِمشق،ج۴۵،ص۱۳۵)

हुल्या शरीफ़

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز का रंग सफ़ेद, चेहरा पतला, आंखें गहरी और चेहरे पर खूब सूरत दाढ़ी मुबारक थी, बचपन में दराज़ गोश (या'नी गधे) ने पेशानी पर लात मारी थी जिस का निशान बाक़ी था इस लिये वोह "**अशज्जु बनी उमय्या**" कहलाते थे। (سیرت ابن جوزی ص۱۷۳ملخصاً)

बुज़ुर्गाने दीन की बारगाहों में हाज़िरियां

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز बचपन ही में क़ुरआने पाक हि़फ़्ज़ करने की सआ़दत पा चुके थे, इस के साथ साथ आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक, साइब बिन यज़ीद और यूसुफ़ बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم जैसे जलीलुल क़द्र सहा़बा और ताबेईन के ह़ल्क़ए दर्स में भी शरीक हुए। यूं इन बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَھُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن की सोहबते बा ब-रकत में क़ुरआन व ह़दीष और फ़िक़्ह की ता'लीम मुकम्मल कर के ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز ने वोह मक़ाम ह़ासिल किया कि आप के हम अ़स्र बड़े बड़े मोह़द्दिषीन को भी आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के फ़ज़्ल व कमाल का ए'तिराफ़ रहा, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा ज़-हबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का तज़किरा इन अल्फ़ाज़ में लिखा है : "वोह बहुत बड़े इमाम, फ़क़ीह, मुज्तहिद, ह़दीष के बहुत माहिर और मो'तबर ह़ाफ़िज़ थे।" (تذکرۃ الحفاظ،ج۱،ص۹۰)

हज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡمَنَّان ने आप رَحۡمَةُ اللهِ تعالٰی عَلَیۡه को **मुअ़ल्लिमुल उ़-लमा** क़रार दिया और फ़रमाया : "हम इन के पास इस ख़याल से आए थे कि वोह हमारे मोह़ताज होंगे, लेकिन मा'लूम हुवा कि हम ख़ुद इन की शागिर्दी के लाइक़ हैं।" (سیرت ابن جوزی ص ۳۵) एक साहि़ब जो ह़ज़रते सय्यिदैना इब्ने उ़मर और इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تعالٰی عَنۡهُمَا जैसी क़द आवर इल्मी शख़्सिय्यत की सोह़बत में रह चुके थे, उन का बयान है कि हमें जब भी कोई मस्अला जानने की ज़रूरत पड़ी तो उस का जवाब ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡهِ رحمة اللهِ العزیز से मिला, वोह यक़ीनन सब से ज़ियादा इल्म रखने वाले थे। (البدایة والنهایة، ج۶،ص ۳۳۳)

रात भर म-दनी मुज़ाकरा जारी रहा

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन त़ाउस رَحۡمَةُ اللهِ تعالٰی عَلَیۡه फ़रमाते हैं कि एक मरतबा मैं ने देखा कि मेरे वालिदे गिरामी ह़ज़रते सय्यिदुना त़ाउस رَحۡمَةُ اللهِ تعالٰی عَلَیۡه नमाज़े इशा के बा'द एक शख़्स से मसरूफ़े गुफ़्त-गू हुए तो रात भर म-दनी मुज़ाकरा जारी रहा ह़त्ता कि फ़ज्र की अज़ानें होना शुरूअ़ हो गईं। मैं ने अपनी ह़ैरत दूर करने के लिये वालिदे मोह़तरम से उन के बारे में पूछा तो फ़रमाया : "येह ख़ानदाने बनू उमय्या के सब से नेक शख़्स ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (عَلَیۡهِ رحمة اللهِ العزیز) थे।" (البدایة والنهایة، ج۶،ص ۳۳۳)

हाथों हाथ जवाब

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡهِ رحمة اللهِ العزیز

ऐसे ज़बर दस्त फ़क़ीह व आ़लिम थे कि बड़े बड़े उ़-लमाए किराम मुश्किल तरीन सुवालात किया करते और आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ हाथों हाथ उन के जवाबात दे दिया करते थे। एक मरतबा ह़ज्जाज और शाम के मु-तअ़द्दद उ़-लमा जम्अ़ थे, उन्हों ने आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ के साहिब ज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْخَالِق से कहा कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمة اللّٰہِ العزیز से पारह 22 सूरए सबा की आयत 52 की तफ़्सीर पूछिये

اَنّٰى لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِنْ مَّكَانٍۭ بَعِيْدٍ ﴿۵۲﴾ (پ۲۲،سبا:۵۲)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : अब वोह उसे क्यूं कर पाएं इतनी दूर जगह से !

उन्हों ने जा कर पूछा तो फ़रमाया : "اَلتَّنَاوُشُ مِنْ مَّكَانٍۭ بَعِيْدٍ" से वोह तौबा मुराद है जिस की ऐसी ह़ालत में ख़्वाहिश की जाए जिस में इन्सान उस पर क़ादिर न हो। (سیرت ابن جوزی ص ۳۷)

इ़ल्मी मशाग़िल जारी न रख सके

उमूरे सल्त़नत में मसरूफ़िय्यत की वजह से ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمة اللّٰہِ العزیز इ़ल्मी मशाग़िल जारी न रख सके, ख़ुद आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ का बयान है :

خَرَجْتُ مِنَ الْمَدِيْنَةِ وَمَا مِنْ رَجُلٍ اَعْلَمُ مِنِّيْ ، فَلَمَّا قَدِمْتُ الشَّامَ نَسِيْتُ *या'नी मैं **मदीनए त़य्यिबा*** زَادَهَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا *से ज़बर दस्त आ़लिम बन कर निकला मगर शाम आ कर (मसरूफ़िय्यत की वजह से) भूल गया।*

(تذکرۃ الحفاظ للذھبی ج۱،ص۹۰)

आप ने याद रखा और मैं भूल गया

अ़ज़ीम मोह़द्दिष ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِى फ़रमाते हैं कि मैं ने एक रात ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز से मुलाक़ात की और दौराने गुफ़्त-गू कुछ अह़ादीष सुनाईं तो फ़रमाया : كُلَّ مَا حَدَّثْتَ بِهٖ فَقَدْ سَمِعْتُهٗ ، وَلٰكِنَّكَ حَفِظْتَ وَنَسِيْتُ *जो ह़दीषें आप ने बयान कीं वोह सब मैं ने भी सुनी थीं मगर आप ने उन्हें याद रखा और मैं भूल गया।* (سیرت ابن جوزی ص ۳۷)

आप ताबेई भी हैं

"ताबेई" उस ख़ुश नसीब को कहते हैं जिस ने किसी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ से मुलाक़ात की हो। (تدریب الراوی فی شرح تقریب النووی، ص ۳۹۲)

अपने वालिदे गिरामी की त़रह ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز भी ताबेई हैं क्यूं कि आप ने मु-तअ़द्दिद सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُم से मुलाक़ात का शर्फ़ पाया है।

ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز से मरवी अह़ादीषे मुबा-रका

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने कई सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان और अपने हम अ़स्र ताबेईने उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام से अह़ादीष रिवायत की हैं मगर आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ह़ुकूमती मसरूफ़िय्यात के बाइ़स रिवायते ह़दीष पर ज़ियादा तवज्जोह नहीं दे सके, येही वजह है कि आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه से बहुत कम अह़ादीष मरवी

हैं, हाफ़िज़ बाग़न्दी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی ने **"मुस्नदे उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़"** के नाम से एक मज्मूआ़ भी तरतीब दिया है। बहर हाल हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز से मरवी अहादीष में से 6 रिवायतें बतौरे ब-रकत यहां दर्ज की जा रही हैं :

(1) नेकी की दा'वत छोड़ने का अन्जाम

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز ने हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ से रिवायत की है कि उन्हों ने सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, शहनशाहे अबरार صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुए सुना :

لَتَاْمُرُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوُنَّ عَنِ الْمُنْكَرِ اَوْ لَيُسَلَّطَنَّ
عَلَيْكُمْ عَدُوٌّ مِنْ غَيْرِكُمْ تَدْعُوْنَهُ فَلَا يَسْتَجِيْبُ لَكُمْ

या'नी तुम ज़रूर भलाई की दा'वत दोगे और बुराई से मन्अ़ करोगे वरना तुम पर बाहर से ऐसा दुश्मन मुसल्लत़ कर दिया जाएगा कि तुम उस के ख़िलाफ़ दुआ़ करोगे मगर तुम्हारी दुआ़ क़बूल नहीं होगी। (سیرت ابن جوزی ص ١٨)

न "नेकी की दा'वत" में सुस्ती हो मुझ से
बना शाइक़े क़ाफ़िला या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 75)

(2) पसन्दीदा नौ जवान

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز ने हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُمَا से रिवायत की है कि **नबिय्ये अकरम, रसूले मुह़्तशम** صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الشَّابَّ الَّذِیْ يُفْنِیْ شَبَابَهٗ فِیْ طَاعَةِ اللّٰهِ

या'नी बेशक अल्लाह तआ़ला उस नौ जवान को पसन्द फ़रमाता है जिस ने अपनी जवानी अल्लाह तआ़ला की फ़रमां बरदारी में बसर की हो।"

(سیرت ابن جوزی ص١٩)

रियाज़त के येही दिन हैं बुढ़ापे में कहां हिम्मत
जो करना है अब कर लो अभी नूरी जवां तुम हो

(3) मह़ब्बते र-मज़ान

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز ने हज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत की, कि बेशक जब र-मज़ान आता तो रसूले हाशिमी, मक्की म-दनी, मुह़म्मदे अ़-रबी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم दुआ़ करते : "اَللّٰهُمَّ سَلِّمْنِىْ لِرَمَضَانَ وَسَلِّمْ لِىْ رَمَضَانَ وَتُسَلِّمه مِنِّىْ مُقَبَلًا" *या'नी ऐ अल्लाह मुझे र-मज़ान के लिये सलामत रख और र-मज़ान को मेरे लिये सलामती बना और मेरी त़रफ़ से उसे बत़ौरे ज़ामिन क़बूल फ़रमा।"* (سیرت ابن جوزی ص٢١)

तुझ पे सदक़े जाऊं र-मज़ां ! तू अ़ज़ीमुश्शान है *कि ख़ुदा ने तुझ में ही नाज़िल किया क़ुरआन है*
हर घड़ी रह़मत भरी है हर त़रफ़ हैं ब-र-करतें *माहे र-मज़ां रह़मतों और ब-र-कतों की कान है*

(वसाइले बख़्शिश, स. 553)

(4) ह़ालते जुनुब में सोना

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز ने हज़रते सय्यिदुना उ़र्वह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से और उन्हों ने उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत की : "كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِذَا اَرَادَ اَنْ يَّنَامَ وَهُوَ جُنُبٌ تَوَضَّاَ وُضُوْءَهٗ لِلصَّلَاةِ

"या'नी जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हालते जुनुब में सोने का इरादा फ़रमाते तो नमाज़ का सा वुज़ू करते।" (سیرت ابن جوزی ص۲۷)

(5) ज़िक्रुल्लाह न करने पर ह़सरत

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز ने हज़रते सय्यिदुना उ़र्वह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से और उन्हों ने उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत की, कि उन्हों ने **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ **के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुए सुना :

"مَامِنْ سَاعَةٍ تَمُرُّ بِابْنِ اٰدَمَ لَمْ يَكُنْ ذَاكِراً لِّلّٰهِ فِيهَا بِخَيْرٍاِلَّا حَسِرَ عَلَيْهَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ" *या'नी इब्ने आदम पर कोई ऐसी घड़ी नहीं गुज़रती जिस में वोह भलाई के साथ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का ज़िक्र न करे मगर क़ियामत के दिन इसी पर उसे नदामत होगी।"* (سیرت ابن جوزی ص۲۷)

रहे ज़िक्र आठों पहर मेरे लब पर
तेरा या इलाही तेरा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 77)

(6) इस्लाम का ख़ुल्क़ ह़या है

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز ने हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से, उन्हों ने हज़रते सय्यिदुना इब्ने मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत किया कि **रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम** صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

"اِنَّ لِكُلِّ دِيْنٍ خُلُقاً وَاِنَّ خُلُقَ الْاِسْلَامِ الْحَيَاءُ" *या'नी बेशक हर दीन का एक ख़ुल्क़ होता है और इस्लाम का ख़ुल्क़ ह़या है।"* (سیرت ابن جوزی ص۳۱)

उठे न आंख कभी भी गुनाह की जानिब

अता करम से हो ऐसी मुझे हया या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 99)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالیٰ علیٰ محمَّد

शादी ख़ाना आबादी

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز तबअन सालेह और नेक थे, शायद येही वजह थी कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के चाचा ख़लीफ़ा अब्दुल मलिक ने हमेशा उन को दीगर उ-मवी शहज़ादों की निस्बत ज़ियादा प्यार व महब्बत और क़द्रो मन्ज़िलत की निगाह से देखा और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के वालिद हज़रते सय्यिदुना अब्दुल अज़ीज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की वफ़ात के बा'द अपनी लाडली बेटी हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رحمۃاللہ تعالی علیہا की शादी आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से कर दी। (سیرت ابن جوزی ص ٣٦)

तारीख़ी ए'ज़ाज़

हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा बिन्ते अब्दुल मलिक رحمۃاللہ تعالی علیہا को एक मुन्फ़रिद तारीख़ी ए'ज़ाज़ हासिल है जिसे किसी शाइर ने एक शे'र में बयान किया है :

بِنْتُ الْخَلِيْفَةِ وَالْخَلِيْفَةُ جَدُّهَا أُخْتُ الْخَلَائِفِ وَالْخَلِيْفَةُ زَوْجُهَا

या'नी : वोह एक ख़लीफ़ा (या'नी अब्दुल मलिक) की बेटी थी, उस का दादा (या'नी मरवान) भी ख़लीफ़ा था, वोह ख़ु-लफ़ा (या'नी वलीद बिन अब्दुल मलिक, सुलैमान बिन अब्दुल मलिक और यज़ीद बिन अब्दुल मलिक) की बहन थी और उस के शोहर (या'नी उमर बिन अब्दुल अज़ीज़) भी ख़लीफ़ा थे। (تاریخ الخلفاء، ص ١٩٦)

अख़राजात की कैफ़िय्यत

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में लिखते हैं : ख़लीफ़ा अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللهِ العزيز से अपनी बेटी बियाहते वक़्त ख़र्च का ह़ाल दरयाफ़्त किया तो जवाब दिया : "नेकी दो बदियों के दरमियान है।" (سیرت ابن جوزی ص ۳۶) इस से मुराद येह थी कि ख़र्च में ए'तेदाल नेकी है और वोह इसराफ़ व इक़्तार (या'नी फ़ुज़ूल ख़र्ची और तंगी) के दरमियान है जो दोनों बदियां हैं। इस से अ़ब्दुल मलिक ने पहचान लिया कि वोह सूरए फ़ुरक़ान की आयत 67 के इस मज़्मून की त़रफ़ इशारा करते हैं :

وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ﴿۶۷﴾ (پ۱۹، الفرقان: ۶۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह कि जब ख़र्च करते हैं न ह़द से बढ़ें और न तंगी करें और उन दोनों के बीच ए'तेदाल पर रहें।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, तह़तल आयत. 67)

अज़वाज व अवलाद

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللهِ العزيز ने कुल तीन शादियां कीं बक़िय्या दो बीवियों के नाम लुमैस बिन्ते अ़ली बिन ह़ारिस और उम्मे उ़स्मान बिन्ते शुऐ़ब बिन ज़िय्यान हैं और आप की एक कनीज़ उम्मुल वलद [1] थी। इन चारों में हर एक से अवलाद पैदा

1 : उम्मुल वलद उस कनीज़ को कहते हैं जिस के हां बच्चा पैदा हुवा और मौला (या'नी उस के मालिक) ने इक़रार किया कि येह मेरा ही बच्चा है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 2, हिस्सा. 9, स. 294)

हुई, कनीज़ से 7 बेटे या'नी अ़ब्दुल मलिक, वलीद, आ़सिम, यज़ीद, अ़ब्दुल्लाह, अ़ब्दुल अ़ज़ीज़, ज़िय्यान और 2 बेटियां आमिना और उम्मे अ़ब्दुल्लाह पैदा हुईं। "उम्मे उ़ष्मान" से सिर्फ़ एक बेटा इब्राहीम पैदा हुवा, दो बेटे अ़ब्दुल्लाह और बकर और बेटी उम्मे अ़म्मार "लुमैस बिन्ते अ़ली" के बत़न से थे और बक़िय्या अवलाद या'नी इसह़ाक़, या'क़ूब और मूसा, "फ़ातिमा बिन्ते अ़ब्दुल मलिक" के बत़न से थी। यूं आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की मजमूई अवलाद 16 थी जिन में 13 लड़के और 3 लड़कियां थीं। (سیرت ابن جوزی ص ۳۱۵ ملتقطاً)

अवलाद की तरबिय्यत

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمۃُ اللّٰهِ العزیز ने अपनी अवलाद की ता'लीम व तरबिय्यत का निहायत उ़म्दा इन्तिज़ाम किया, चुनान्चे जलीलुल क़द्र मोह़द्दिष ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ बिन कैसान عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَنَّان जो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के भी उस्ताज़े मोह़तरम थे, उन को अपनी अवलाद का अत़ालीक़ (या'नी निगरान उस्ताज़) मुक़र्रर किया। (التحفۃ اللطیفۃ فی تاریخ المدینۃ الشریفۃ،حرف الصاد،ج ۱ ص ۳۰۴) इलावा अज़ीं आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के आज़ाद कर्दा ग़ुलाम सह्ल भी अवलाद की देखभाल पर मामूर थे। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمۃُ اللّٰهِ العزیز उन को बेहतरीन ता'लीम व तरबिय्यत देने पर ख़ुद भी मु–तवज्जेह करते थे, चुनान्चे एक बार उन्हें ख़त़ में लिखा :

फ़िक्रे तरबिय्यते अवलाद पर मुश्तमिल एक मक्तूब

मैं ने बहुत सोच समझ कर तुम्हें अपनी अवलाद की ता'लीम व तरबिय्यत के लिये मुन्तख़ब किया है, उन को तर्के सोह़बत की त़रफ़ तवज्जोह दिलाओ कि वोह ग़फ़लत पैदा करती हैं, उन्हें कम हंसने दो कि

ज़ियादा हंसना दिल को मुर्दा कर देता है, तुम्हारी कोशिशों के नतीजे में एक अहम बात जो वोह सीखें वोह येह है कि उन्हें गाने बाजे की त़रफ़ से नफ़रत हो क्यूंकि गाना सुनना दिल में इसी त़रह़ निफ़ाक़ पैदा करता है जिस त़रह़ पानी से घास उगता है, मेरे बेटों में से हर एक के जदवल में येह भी हो कि वोह क़ुरआने मजीद खोले और निहायत एह़तियात़ के साथ उस की क़िराअत करे, जब इस से फ़ारिग़ हो जाए तो हाथ में तीर व कमान ले कर बरह्ना पा (या'नी नंगे पाउं) निकल जाए और सात तीर चला कर निशाना बाज़ी की मश्क़ करे। फिर क़ैलूला (या'नी दो पहर का आराम) करने के लिये वापस आए क्यूंकि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "क़ैलूला करो इस लिये कि शैत़ान क़ैलूला नहीं करता।" (سیرت ابن جوزی ص ۲۹۷)

बेटे के नाम नसीह़त आमोज़ ख़त़

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ العزیز बराहे रास्त अपनी अवलाद को भी तरबिय्यत व नसीह़त के म–दनी फूलों से नवाज़ते रहते थे, चुनान्चे अपने बेटे के नाम एक ख़त़ में लिखा : तुम अपने आप और अपने वालिद पर **अल्लाह** तआ़ला के एह़सानात को याद करो, फिर अपने बाप की उन कामों में मदद करो जिन पर उसे क़ुदरत ह़ासिल है और इस मुआ़–मले में भी मदद करो जिस के बारे में तुम येह समझते हो कि मेरा बाप उन को अन्जाम देने से आ़जिज़ है। तुम अपनी जान, सिह़ह़त और जवानी की पूरी रिआ़यत रखो, अगर तुम से हो सके तो अपनी ज़बान तह़मीद व तस्बीह़ की सूरत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से तर रखो, इस लिये कि तुम्हारी अच्छी बातों में से सब से अच्छी बात **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्द और उस का ज़िक्र है। जो शख़्स जन्नत की रग़बत रखता हो और जहन्नम से भागता हो तो ऐसी

ह़ालत वाले आदमी की तौबा क़बूल होती है उस के गुनाह मुआ़फ़ किये जाते हैं। मुद्दते मुक़र्ररा (या'नी मौत) के आने से पहले और अ़मल के ख़त्म होने से पहले और जिन्नो इन्स को उन के आ'माल का बदला देने से पहले, **अल्लाह** तआ़ला उन्हें उन के आ'माल का बदला देगा ऐसी जगह जहां फ़िदया क़बूल नहीं किया जाएगा और जहां मा'ज़ेरत नफ़्अ़ मन्द नहीं होगी और जहां पोशीदा उमूर ज़ाहिर हो जाएंगे, लोग अपने आ'माल का बदला ले कर लौटेंगे और मु-तफ़र्रिक़ हो कर अपने अपने मक़ामात की त़रफ़ जाएंगे, पस उस आदमी के लिये ख़ुश ख़बरी है जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त की और उस आदमी के लिये हलाकत है जिस ने **अल्लाह** तआ़ला की ना फ़रमानी की, पस अगर **अल्लाह** तआ़ला तुम्हें मालदारी अ़त़ा कर के आज़माए तो अपनी मालदारी में मियाना रवी इख़्तियार करना, और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये अपने आप को झुका लो, और अपने माल में **अल्लाह** तआ़ला के हुक़ूक़ को अदा करो, और मालदारी के वक़्त वोह बात कहो जो ह़ज़रते सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने कही थी, या'नी

هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّیْ ۗ لِیَبْلُوَنِیْۤ ءَاَشْكُرُ اَمْ اَكْفُرُ ؕ (پ۱۹،النمل:۴۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : येह मेरे रब के फ़ज़्ल से है ताकि मुझे आज़माए कि मैं शुक्र करता हूं या ना शुक्री।

और तुम फ़ख़्र व ख़ुद पसन्दी से इज्तेनाब करना और अपने रब के दिये हुए माल के बारे में येह गुमान न करो कि येह तुम्हारी किसी शराफ़त की बिना पर तुम्हें मिला है या किसी ऐसी फ़ज़ीलत की बुन्याद पर मिला है जो उन लोगों में नहीं है जिन्हें **अल्लाह** तआ़ला ने येह

माल नहीं दिया है, फिर अगर तुम ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के शुक्र में कोताही की तो फ़क्र व फ़ाक़ा का मज़ा चखोगे और उन लोगों में से होंगे जिन्हों ने मालदारी की बुन्याद पर सरकशी की और उन को आ'माल का बदला दुन्या में दे दिया गया, बे शक मैं तुम्हें येह नसीह़त कर रहा हूं ह़ालांकि मैं अपने नफ़्स पर बहुत ज़ुल्म करने वाला हूं, बहुत से उमूर में ग़-लत़ी करने वाला हूं और अगर आदमी अपने उमूर के ठीक होने तक और **अल्लाह** तआ़ला की इबादत में कामिल होने तक अपने भाई को नसीह़त न करता तो लोग امربالمعروف اورنہی عن المنکر को छोड़ देते और ह़राम कामों को ह़लाल समझने लगते, और नसीह़त करने वाले और ज़मीन में **अल्लाह** के लिये ख़ैर ख़्वाही करने वाले कम हो जाते, पस **अल्लाह** तआ़ला ही के लिये तमाम ता'रीफें हैं जो ज़मीनों और आस्मानों का परवर्द गार है, और उसी के लिये ज़मीन व आस्मान में किब्रियाई षाबित है और वोही ग़ालिब और ह़िक्मत वाला है।

(حلیۃ الاولیاء ج۵ ص۳۱۰)

मुसलमान के बारे में हुस्ने ज़न रखो

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز ने अपनी अवलाद की ज़ाहिरी तरबिय्यत के साथ साथ बात़िनी तरबिय्यत में भी भर पूर कोशिश फ़रमाई, चुनान्चे एक मरतबा अपने शहज़ादे को नसीह़त की :

اِذَا سَمِعْتَ كَلِمَةً مِنْ اِمْرِءٍ مُسْلِمٍ فَلَاتَحْمِلْهَا عَلٰى

شَيْءٍ مِنَ الشَّرِ مَاوَجَدْتَّ لَهَا مَحْمَلًا عَلَى الْخَيْرِ

*या'नी जब तुम अपने मुसलमान भाई की ज़बान से कोई बात सुनो तो उस वक़्त तक बुराई पर **मह़मूल** न करो जब तक उस में भलाई का अदना से अदना एह़तेमाल बाक़ी रहे।*

(سیرت ابن جوزی ص۳۱۲)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हम इस म-दनी फूल पर मज़बूती से अ़मल पैरा हो जाएं तो हमें ऐसा रूहा़नी सुकून मह़सूस होगा जिस की लज़्ज़त बयान से बाहर है, याद रखिये कि मुसलमान से हुस्ने ज़न रखने में फ़ाएदा ही फ़ाएदा है और येह इ़बादत भी है चुनान्चे

हुस्ने ज़न उ़म्दा इ़बादत है

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

"حُسْنُ الظَّنِّ مِنْ حُسْنِ الْعِبَادَةِ *या'नी हुस्ने ज़न उ़म्दा इ़बादत है*"

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، ج۴، ص۳۸۷، الحدیث۴۹۹۳)

मुसलमान का ह़ाल ह़त्तल इमकान अच्छाई पर ह़म्ल करना वाजिब है

इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ में लिखते हैं : "मुसलमान का ह़ाल ह़त्तल इमकान सलाह़ (या'नी अच्छाई) पर ह़म्ल करना (या'नी गुमान करना) वाजिब है।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि.19, स. 691)

मुसलमान की बात का बुरा मत़लब लेना भी बद गुमानी है

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में लिखते हैं : "मोमिने सालेह़ के साथ बुरा गुमान ममनूअ़ है (कि) उस का कोई कलाम सुन कर फ़ासिद मा'ना मुराद लेना बा वुजूद येह कि उस के दूसरे

सही़ह़ मा'ना मौजूद हों और मुसलमान का ह़ाल उन के मुवाफ़िक़ हो येह भी गुमाने बद में दाख़िल है।"[1] (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह, 26 अल हुजुरात 12)

मुझे ग़ीबत व चुग़ली व बद गुमानी

की आफ़ात से तू बचा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 80)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

ग़फ़्लत से बच कर रहना

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللهِ العزيز ने अपने बेटे के नाम एक ख़त़ में नसीह़त फ़रमाई : اِحْذَرِالصُّرعَةَ عَلَى الْغَفْلَةِ وَ لاتَغْتَرَنَّ بِطُوْلِ الْعَافِيَةِ *या'नी ग़फ़्लत से बच कर रहना और लम्बे अ़र्से के लिये मिलने वाली आ़फ़िय्यत से हरगिज़ ग़लत़ फ़हमी में मुब्तला न होना।* (سیرت ابن جوزی ص ۲۴۲)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस म-दनी फूल की ख़ुश्बू को उ़म्र भर के लिये अपने दिल में बसा लीजिये, यक़ीनन आफ़ात व बलिय्यात से आ़फ़िय्यत अल्लाह तआ़ला की बहुत बड़ी ने'मत है मगर उस की वजह से गुनाहों पर दलेर हो जाना सरासर ग़फ़्लत है क्यूंकि रब عَزَّوَجَلَّ की गिरिफ़्त बहुत शदीद है जैसा कि पारह 30 सूरए बुरूज की आयत 12 में इरशाद होता है :

اِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيْدٌ ﴿۱۲﴾ *तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तेरे रब की गिरिफ़्त बहुत सख़्त है।*

مدینہ

1 : बद गुमानी के बारे में तफ़्सीलात जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ 57 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "बद गुमानी" का ज़रूर मुत़ा-लआ़ कीजिये।

ख़्वाब में मख़्सूस दुआ़ सिखाई

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز के शहज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰى عَلَيْه जो यज़ीद बिन वलीद के दौर में ह़-रमैने त़य्यिबैन के गवर्नर भी रहे, उन का बयान है कि मुझे इ़ल्मे ह़दीष के ज़बर दस्त इमाम ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ोहरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى की ज़ियारत का बहुत शौक़ था, बिल आख़िर मुझे ख़्वाब में उन की ज़ियारत नसीब हो ही गई। मैं ने अ़र्ज़ की : ह़ज़रत ! कोई मख़्सूस दुआ़ बताइये। फ़रमाने लगे :

اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ تَوَكَّلْتُ عَلَى الْحَيِّ الَّذِىْ لَايَمُوْتُ

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْأَلُكَ الْعَافِيَةَ وَاَسْأَلُكَ اَنْ تُعِيْذَنِىْ وَذُرِّيَّتِىْ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

*या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह यक्ता है उस का कोई शरीक नहीं, मेरा भरोसा उसी पर है जो हमेशा ज़िन्दा रहेगा कभी मरेगा नही, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से आ़फ़िय्यत का सुवाली हूं और तुझ से दुआ़ करता हूं कि मुझे और मेरी अवलाद को शैत़ान मरदूद से मह़फ़ूज़ फ़रमा दे।*

(سیرت ابن جوزی ص ۳۱۲)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

गवर्नर बन गए

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز के इ़ल्मी फ़ज़्लो कमाल के इज़्हार का सब से मौज़ूं ज़रीआ़ दर्स व तदरीस था मगर ख़ानदाने ख़िलाफ़त से ता'ल्लुक़ आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰى عَلَيْه को मस्नदे ख़िलाफ़त तक ले गया, मगर इस से पहले "ख़ुनासिरा" फिर **मदीनए मुनव्वरा** زَادَهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيماً وَّ تَكرِيماً में सिर्फ़ 25 साल की उ़म्र में गवर्नर के ओ़-हदे पर भी फ़ाइज़ हुए, मगर येह ख़िदमत भी आप ने आसानी से क़बूल नहीं की, चुनान्चे

गवर्नरी क़बूल करने के लिये शर्त़ रखी

खली़फ़ए वक़्त वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز को **मदीनए मुनव्वरा** زادَهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيماً وَّ تَكرِيماً **मक्कए मुकर्रमा** زادَهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيماً وَّ تَكرِيماً, और त़ाइफ़ का गवर्नर मुक़र्रर किया मगर आप येह ख़िदमत क़बूल करने में पसो पेश करते रहे, ख़लीफ़ा के बार बार कहने पर आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने गवर्नरी इस शर्त़ पर क़बूल की, कि मुझे पहले के गवर्नरों की त़रह़ लोगों पर जु़ल्म और ज़ियादती पर मजबूर न किया जाए। वलीद ने इस शर्त़ को मन्जू़र करते हुए कहा : اِعْمَلْ بِالْحَقِّ وَاِنْ لَّمْ تَرْفَعْ اِلَيْنَا اِلَّا دِرْهَماً وَاحِداً *या'नी आप ह़क़ पर अ़मल कीजिये चाहे हमें एक ही दिरहम वुसूल हो।*

(سیرت ابن جوزی ۴۲)

जु़ल्म का अन्जाम हलाकत है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز का म–दनी ज़ेह्न मुला–ह़ज़ा किया कि गवर्नरी का ओ़–हदा जो इख़्तियारात का मर्कज़ था, इस को भी आप ने इस शर्त़ पर क़बूल किया कि मुझे जु़ल्म करने पर मजबूर नहीं किया जाएगा, यक़ीनन लोगों पर जु़ल्म करने में दुन्या व आख़िरत की बरबादी है, इस में **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم की ना फ़रमानी भी है और बन्दों की ह़क़ त–लफ़ी भी। लिहाज़ा अगर हमें कोई मन्सब या ओ़–हदा ह़ासिल हो जाए तो इस बात का बेह़द ख़याल रखना

चाहिये कि कहीं इ़ज़्ज़त व त़ाक़त का ग़ुरूर हमें लोगों पर ज़ुल्म करने पर मजबूर न कर दे जिस के नतीजे में हम मैदाने महशर में ज़लील व रुस्वा हो जाएं।

ज़ुल्म किसे कहते हैं ?

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ 62 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**ज़ुल्म का अन्जाम**" के सफ़्हा 9 पर है : ह़ज़रते जुरजानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی अपनी किताब "**अत्त़ारीफ़ात**" में **ज़ुल्म के मा'ना** बयान करते हुए लिखते हैं : किसी चीज़ को उस की जगह के इलावा कहीं और रखना (التعریفات للجرجانی ص ۱۰۲) शरीअ़त में ज़ुल्म से मुराद येह है कि किसी का ह़क़ मारना, किसी को ग़ैर मह़ल में ख़र्च करना, किसी को बिग़ैर क़ुसूर के सज़ा देना। (मिरआत, जि. 6, स. 669)

मुफ़्लिस कौन ?

ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्लिम बिन ह़ज्जाज क़ुशैरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی अपने मश्हूर मजमूअ़ए ह़दीष "**सह़ीह़ मुस्लिम**" में नक़्ल करते हैं : सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, रसूलों के सालार, नबिय्यों के सरदार, हम ग़रीबों के ग़मगुसार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, जनाबे अह़मदे मुख़्तार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : क्या तुम जानते हो **मुफ़्लिस कौन है** ? सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हम में से जिस के पास दराहिम व सामान न हों **वोह मुफ़्लिस है**। फ़रमाया : "मेरी उम्मत में

मुफ़्लिस वोह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़े और ज़कात ले कर आया और यूं आया कि इसे गाली दी, उस पर तोहमत लगाई, इस का माल खाया, उस का ख़ून बहाया, उसे मारा तो उस की नेकियों में से कुछ इस मज़्लूम को दे दी जाएं और कुछ उस मज़्लूम को, फिर अगर इस के ज़िम्मे जो हुक़ूक़ थे उन की अदाएगी से पहले इस की नेकियां ख़त्म हो जाएं तो इन मज़्लूमों की ख़ताएं ले कर उस ज़ालिम पर डाल दी जाएं फिर उसे आग में फैंक दिया जाए।" (مُسلِم ص ۱۳۹۴ حدیث ۲۵۸۱)

लरज़ उठो !

ऐ नमाज़ियो ! ऐ रोज़ा दारो ! ऐ हाजियो ! ऐ पूरी ज़कात अदा करने वालो ! ऐ ख़ैरात व ह़-सनात में हिस्सा लेने वालो ! ऐ नेक सूरत नज़र आने वाले मालदारो ! **डर जाओ** ! लरज़ उठो ! ह़क़ीक़त में मुफ़्लिस वोह है जो नमाज़, रोज़ा, ह़ज, ज़कात व स-दक़ात, सख़ावतों, फ़लाह़ी कामों और बड़ी बड़ी नेकियों के बा वुजूद क़ियामत में ख़ाली का ख़ाली रह जाए ! जिन को कभी गाली दे कर, कभी बिला इजाज़ते शरई डांट कर, बे इ़ज़्ज़ती कर के, ज़लील कर के, मार पीट कर के, आ़रिय्यतन चीज़ें ले कर क़सदन वापस न लौटा कर, क़र्ज़ दबा कर, दिल दुखा कर नाराज़ कर दिया होगा वोह उस की सारी नेकियां ले जाएंगे और नेकियां ख़त्म हो जाने की सूरत में उन के गुनाहों का बोझ उठा कर वासिले जहन्नम कर दिया जाएगा। (ज़ुल्म का अंजाम, स. 9)

हमेशा हाथ भलाई के वास्ते उठे — बचाना ज़ुल्मो सितम से मुझे सदा या रब
रहें भलाई की राहों में गामज़न हर दम — करें न रुख़ मेरे पाउं गुनाह का या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 96-97)

पहला म-दनी मश्वरा

जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللهِ العزيز **मदीनए मुनव्वरा** زَادَهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعۡظِيۡماً وَّ تَكۡرِيۡماً पहुंचे तो वहां के अकाबिर फु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلام को म-दनी मश्वरे के लिये जम्अ़ किया और उन की ख़िदमत में अ़र्ज़ की : मैं ने आप ह़ज़रात को एक ऐसे काम के लिये इकठ्ठा किया है जिस पर आप को षवाब मिलेगा और आप ह़क़ के ह़िमायती क़रार पाएंगे। आप लोग किसी को ज़ुल्म करते हुए देखें या आप में से किसी को मेरे आ़मिल (या'नी हुकूमती अहल कार) के ज़ुल्म का ह़ाल मा'लूम हो तो मैं आप को ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम देता हूं कि मुझ तक इस मुआ़-मले को ज़रूर पहुंचाएं। फु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلام आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه के जज़्बे से बहुत मु-तअष्षिर हुए और दुआ़ए ख़ैर से नवाज़ा। (سیرت ابن جوزی،ص۴۱) ग़ालिबन इसी म-दनी मश्वरे का अषर था कि जब भी ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللهِ العزيز को कोई मुश्किल मुआ़-मला दर पेश होता, आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه फु-क़हाए मदीना पर मुश्तमिल मजलिसे शुरा से इस पर मश्वरा किया करते और इसी की ब-रकत से आप के फ़ैसले ग़-लती से पाक होते थे चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه के पास ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللهِ العزيز के किसी फ़ैसले का ज़िक्र हुवा तो फ़रमाया : वल्लाह ! उन्हों ने कभी ग़लत़ फ़ैसला नहीं किया। (البدایۃ والنہایۃ،ج۶،ص ۳۳۲،۳۳۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने देखा कि इ़ल्मो ह़िक्मत से माला माल और हुकूमती उमूर का तजरिबा होने के बा वुजूद ह़ज़रते

सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ العزیز ने **मदीनए मुनव्वरा** زَادَهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِیۡماً وَّ تَکۡرِیۡماً में गवर्नरी की ख़िदमात का आग़ाज़ फु-क़हाए मदीना के **म-दनी मश्वरे** से किया और एक हम हैं कि हमें कोई मन्सब या ज़िम्मादारी मिल जाती है तो किसी **मा तह़्त** से मश्वरा करना तो दूर की बात है अगर वोह अज़ ख़ुद हमें मश्वरा देने की जसारत कर बैठे तो उस को बद तहज़ीब, बे अदब, गुस्ताख़ और ज़बान दराज़ जानते बल्कि बा'ज़ अवक़ात तो अपने ओ़-हदे के गुरूर में उसे खरी खरी सुना कर और ह़ौसला शिकन रविय्ये के फुतूर से उस के दिल का शीशा चकना चूर कर डालते हैं। यक़ीनन दीनी व दुन्यावी उमूर में मश्वरे की बड़ी अहम्मिय्यत व ज़रूरत और ब-रकत है। **काश** हम आ़जिज़ी अपना कर अपने आक़ाए ख़ुश ख़िसाल, साहि़बे शीरीं मक़ाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मश्वरा करने वाली सुन्नत पर भी अ़मल पैरा हों और वुस्अ़ते क़ल्बी से अपने मा तह़्त इस्लामी भाइयों की राय लेने का ख़ुल्क़ अपनाएं और उन की मुनासिब राय क़बूल भी करें।

मश्वरा सुन्नत है

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने मह़बूबे करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से इरशाद फ़रमाया :

وَشَاوِرۡهُمۡ فِى الۡاَمۡرِ
(پ ۴، اٰلِ عمران:۱۵۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और कामों में उन से मश्वरा लो।

इस आयत की तफ़्सीर में **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में है कि इस में इन की दिलदारी भी है और इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई भी और येह फ़ाएदा भी कि मश्वरा सुन्नत हो जाएगा और आइन्दा उम्मत इस से नफ़्अ़ उठाती रहेगी। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

हज़रते सय्यिदैना **हसने बसरी और ज़हाक** رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا से मरवी है कि **अल्लाह** तआ़ला ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को अपने अस्ह़ाब से मश्वरा करने का हुक्म इस वजह से नहीं दिया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को उन के मश्वरे की ह़ाजत है बल्कि इस लिये कि उन्हें मश्वरे की फ़ज़ीलत का इ़ल्म दे और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द उम्मत मश्वरा करने में आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की इक्तिदा और इत्तेबाअ़ करे।

(تفسیرِ قرطبی، الجزء الرابع ص ۱۹۲)

नेक बख़्त कौन ?

हज़रते **सहल बिन सा'द** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने आक़ाए काएनात صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत की है :

مَا شَقِیَ قَطُّ عَبْدٌ بِمَشُوْرَةٍ وَمَا سَعِدَ بِاسْتِغْنَاءِ رَأْيٍ *या'नी जो बन्दा मश्वरा ले वोह कभी बद बख़्त नहीं होता और जो बन्दा खुद राय और दूसरों के मश्वरों से मुस्तग़्नी (या'नी बे परवाह) हो वोह कभी नेक बख़्त नहीं होता।*

(الجامع لاحکام القرآن، الجزء الرابع، ص ۱۹۳)

मश्वरा ब-रकत की कुन्जी है

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمةُ اللّٰہِ العزیز ने फ़रमाया : اِنَّ الْمَشُوْرَةَ وَالْمُنَاظَرَةَ بَابَا رَحْمَةٍ وَمِفْتَاحَا بَرَكَةٍ لَا يَضِلُّ مَعَهُمَا رَأْيٌ وَلَا يُفْقَدُ مَعَهُمَا حَزْمٌ

या'नी मश्वरा और ह़क़ के लिये बाहमी बह़्स रह़मत का दरवाज़ा और ब-रकत की कुन्जी है जिन की वजह से कोई राय गुमराह नहीं होती और दूर अन्देशी क़ाइम रहती है।

(بدائع السلک فی طبائع الملک، مشورۃ ذوی رأی، ج ۱ ص ۹۳)

"मश्वरा" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से मश्वरे की अहम्मिय्यत व अफ़ादिय्यत के बारे में 5 रिवायात

(1) हज़रते सय्यिदुना **इब्ने उ़मर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا बयान करते हैं कि आक़ा عَلَیْہِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ اَرَادَ اَمْراً ، فَشَاوَرَ فِیْہِ وَقَضٰی اِھْتَدٰی لِاَرْشَدِ الْاُمُوْرِ *या'नी जो शख़्स किसी काम का इरादा करे और उस में किसी मुसलमान शख़्स से मश्वरा करे **अल्लाह** तआ़ला उसे दुरुस्त काम की हिदायत दे देता है।*

(تفسیر درمنثور ج۷ص ۳۵۷)

(2) हज़रते सय्यिदुना **ह़सन बसरी** رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का फ़रमान है : "कोई क़ौम जब भी आपस में मश्वरा करती है **अल्लाह** तआ़ला उसे अफ़ज़ल राय की त़रफ़ हिदायत दे देता है।" (قرطبی ج ۴ ص ۱۹۳)

(3) हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि आक़ाए मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

مَا خَابَ مَنِ اسْتَخَارَ وَلَا نَدِمَ مَنِ اسْتَشَارَ وَلَا عَالَ مَنِ اقْتَصَد

या'नी जिस ने इस्तिख़ारा किया वोह ना मुराद नहीं होगा और जिस ने मश्वरा किया वोह नादिम नहीं होगा और जिस ने मियाना रवी की वोह कंगाल नहीं होगा। (طبرانی اوسط ج۵ ص ۷۷ الحدیث: ۶۶۲۷)

(4) किसी दाना से पूछा गया कौन सी चीज़ अ़क्ल की ज़ियादा मुअय्यिद (या'नी मददगार) और कौन सी ज़ियादा मुज़िर्र (या'नी नुक़्सान देह) है। कहा : अ़क्ल के लिये ज़ियादा मुफ़ीद **तीन चीजे़ं** है (1) उ़-लमाए किराम से मश्वरा करना। (2) उमूर का तजरिबा होना। (3) काम में ठहराव सुलझाव होना और ज़ियादा मुज़िर्र (या'नी नुक़्सान देह) भी तीन चीजे़ं हैं। (1) खुद राई (2) ना तजरिबा कारी (3) जल्द बाज़ी

(العقد الفرید ج ۱ ص ۲۶)

(5) हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "خَاطَرَ مَنِ اسْتَغْنٰی بِرَأْیِہٖ *या'नी जिस ने अपनी राय को काफ़ी जाना वोह ख़त़रे में पड़ गया।"* [1] (المستطرف ج٣ ص٢٤٥)

इ़ल्म के क़द्र दान

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَدِیْر न सिर्फ़ खुद ज़बर दस्त आ़लिम थे बल्कि इ़ल्म और उ़-लमा के क़द्र दान भी थे, चुनान्चे फ़रमाते हैं :

اِنِ اسْتَطَعْتَ فَکُنْ عَالِمًا فَاِنْ لَّمْ تَسْتَطِعْ فَکُنْ مُتَعَلِّمًا فَاِنْ لَمْ تَسْتَطِعْ فَاَحِبَّھُمْ فَاِنْ لَّمْ تَسْتَطِعْ فَلَاتُبْغِضْھُم

या'नी अगर तुम से हो सके तो आ़लिम बनो, येह न हो सके तो मु-तअ़ल्लिम बनो, येह भी न हो सके तो उ़-लमाए किराम से मह़ब्बत ही रखो और येह भी न हो सके तो कम अज़ कम उन से बुग़्ज़ तो न रखो। फिर फ़रमाया : जिस ने इस नसीह़त को क़बूल कर लिया उस के लिये नजात का कोई रास्ता निकल ही आएगा, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ (سیرت ابن عبدالحکم ص١٣٣)

मुझ को ऐ अ़त्त़ार सुन्नी आ़लिमों से प्यार है
اِنْ شَآءَاللّٰہ दो जहां में मेरा बेड़ा पार है

(वसाइले बख़्शिश, स. 646)

مـــــدینہ

1 : मश्वरे के बारे में मज़ीद म-दनी फूल ह़ासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ किताब "रसाइले दा'वते इस्लामी" में शामिल रिसाले "म-दनी कामों की तक़्सीम" के सफ़्ह़ा 30 ता 48 का ज़रूर मुता-लआ कीजिये।

इ़ल्म ह़ासिल करने का नुस्ख़ा

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز ने फ़रमाया : तुम इ़ल्म को उस वक़्त तक ह़ासिल नहीं कर सकते जब तक इस को जहालत पर तरजीह़ न दो और ह़क़ को नहीं पा सकते जब तक बाति़ल को न छोड़ दो। (حلیۃ الاولیاء ج۵ ص ۳۰۲)

आ़लिमे बा अ़मल बनो

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز ने हज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन नुऐ़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को एक मक्तूब में लिखा : बे शक इ़ल्म और अ़मल क़रीब क़रीब हैं लिहाज़ा तुम आ़लिमे बा अ़मल बनो क्यूंकि जो लोग इ़ल्म रखते हैं मगर अ़मल नहीं करते तो उन का इ़ल्म उन के लिये वबाल बन जाता है। (تاریخ طبری، ج۴، ص ۲۵۰)

इ़ल्म ग़नी की ज़ीनत है

एक और मक़ाम पर फ़रमाया :

تَعَلَّمُوا الْعِلْمَ فَاِنَّہٗ زَیْنٌ لِلْغَنِیِّ وَعَوْنٌ لِلْفَقِیْرِ لَااَقُوْلُ اِنَّہٗ یَطْلُبُ بِہٖ وَلٰکِنَّہٗ یَدْعُوْ اِلَی الْقَنَاعَۃِ

या'नी इ़ल्म सीखो ! येह ग़नी की ज़ीनत और फ़क़ीर के लिये मुआ़विन (या'नी मददगार) है, मैं येह नहीं कहता कि फ़क़ीर इ़ल्म के ज़रीए़ मांगता फिरेगा बल्कि इ़ल्म उसे क़नाअ़त पर आमादा करेगा। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۴۶)

इ़ल्म की फ़ज़ीलत

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने फ़ज़ीलत निशान है : اِنَّ فَضْلَ الْعَالِمِ عَلَی الْعَابِدِ کَفَضْلِ الْقَمَرِعَلٰی سَائِرِ الْکَوَاکِبِ

या'नी आ़लिम की बुज़ुर्गी आ़बिद (या'नी इ़बादत गुज़ार) पर ऐसी है जैसे चौदहवीं रात के चांद की तारों पर। (ابن ماجہ ج۱،ص۱۴۶،الحدیث ۲۲۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन इ़ल्मे दीन की बड़ी फ़ज़ीलत व अहम्मिय्यत है मगर फ़ी ज़माना इस ह़वाले से हमारी ह़ालत इन्तिहाई ना गुफ़्ता बेह है, हुब्बे जाह व माल ने हमारे दिलों पर ऐसा क़ब्ज़ा कर रखा है कि हम इ़ज़्ज़त, शोहरत और दौलत पाने के लिये दुन्या का हर काम सीखने के लिये तय्यार हो जाते हैं लेकिन अपनी आख़िरत संवारने के लिये इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के लिये हमारे पास वक़्त नहीं होता, याद रखिये, इ़ल्म माल से अफ़्ज़ल है, चुनान्चे

इ़ल्म माल से अफ़्ज़ल है

हज़रते मौलाए काएनात अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं कि इ़ल्मे दीन माल पर सात वजह से अफ़्ज़ल है : (1) इ़ल्म पैग़म्बरों की मीराष और माल फ़िरऔ़न, हामान, और नमरूद की (2) माल ख़र्च करने से घटता है मगर इ़ल्म बढ़ता है (3) माल की इन्सान ह़िफ़ाज़त करता है मगर **इ़ल्म** इन्सान की ह़िफ़ाज़त करता है (4) मरने के बा'द माल तो दुन्या में रह जाता है और इ़ल्म क़ब्र में साथ जाता है (5) माल मोमिन व काफ़िर सब को मिल जाता है मगर इ़ल्मे दीन का नफ़्अ़ ईमान दार ही को ह़ासिल होता है (6) कोई भी आ़लिम से बे परवाह नहीं लेकिन बहुत से लोगों को मालदारों की ज़रूरत नहीं (7) **इ़ल्म** से पुल सिरात पर गुज़रने की क़ुव्वत ह़ासिल होगी और माल से कमज़ोरी। (تفسیر کبیر ج۱ص۴۰۳)

इ़ल्म की हि़फ़ाज़त का त़रीक़ा

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز ने फ़रमाया : يٰۤاَيُّهَاالنَّاس قَيِّدُوا الْعِلْمَ بِالْكِتَابِ *या'नी ऐ लोगो ! इ़ल्म की हि़फ़ाज़त लिखने के ज़रीए करो ।* (سیرت ابن جوزی ص ۲۷۶)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी दीनी इ़ल्म की या हि़क्मत भरी कोई बात सुनें उसे लिखने की आ़दत बनाइये । इ़ल्मे दीन की बात लिख लेने से जल्दी याद भी हो जाती और उस की बक़ा की सूरत भी पैदा होती है । ताबेई बुज़ुर्ग हज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़ौल है : भूल जाने से लिख लेना कहीं बेहतर है । (جامع بیان العلم وفضله ، ص ۱۰۳) इ़ल्मे नह़्व के मश्हूर इमाम हज़रते ख़लील बिन अह़मद ताबेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى का क़ौल है : "जो कुछ मैं ने सुना है, लिख लिया है और जो कुछ लिखा है, याद कर लिया है और जो कुछ याद किया है, उस से फ़ाएदा उठाया है ।" (ایضًا ، ص ۱۰۵) हज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन यूसुफ़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मुफ़ीद बातें लिखने के लिये एक दीनार में क़लम ख़रीद फ़रमाया था ।

(تعلیم المتعلم،ص ۱۰۸) (तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत, हि़स्सा : 5 मुलख़्ख़सन)

आप वापस अपनी जगह तशरीफ़ ले जाइए

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز को अगर्चे हुकूमती ए'तेबार से हर क़िस्म के लोगों से मैल जोल रखना पड़ता था ताहम उन का ज़ियादा मैलान अहले इ़ल्म की त़रफ़ था इस लिये मुख़्तलिफ़ त़रीक़ों से उन की क़द्र दानी किया करते थे, चुनान्चे जब आप **मदीनए मुनव्वरा** زَادَهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيماً وَّ تَكرِيماً में थे, एक क़ासिद हज़रते

सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में भेजा कि उन से एक मस्अला पूछ आए। क़ासिद ने ग़-लती से कह दिया कि आप को "अमीर" बुलाते हैं, हज़रते सईद رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ किसी हाकिम या ख़लीफ़ा के पास जाने के आदी नहीं थे लेकिन बुलावा हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز जैसी इ़ल्म दोस्त शख़्सिय्यत की जानिब से था, इस लिये हज़रते सईद رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ को उन के बुलाने पर न जाना गवारा न हुवा, फ़ौरन जूते पहने और क़ासिद के साथ हो लिये, जब हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز ने देखा कि हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ब नफ़्से नफ़ीस तशरीफ़ ला रहे हैं तो वज़ाहत की : हुज़ूर ! हम ने क़ासिद आप को बुलाने के लिये नहीं बल्कि इस लिये भेजा था कि वोह आप से मस्अला दरयाफ़्त कर आए। येह इस की ग़-लती है कि इस ने आप को यहां आने की ज़ह़मत दी, ख़ुदारा ! आप वापस अपनी जगह तशरीफ़ ले जाएं, हमारा क़ासिद वहीं आ कर आप से मस्अला दरयाफ़्त करेगा।

(الطبقات الکبری ج۲ ص۲۹۱)

बा अदब बा नसीब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز ने आ़लिमे दीन की कैसी ता'ज़ीम की और क़ासिद की ग़-लती का कैसा इज़ाला किया ! हमें भी चाहिये कि उ़-लमाए किराम के अदब व एह़तिराम में कोई कसर न उठा रखें, आ़लिम की फ़ज़ीलत का बयान करते हुए सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हर वोह चीज़ जो

आस्मानो ज़मीन में है यहां तक कि मछलियां पानी के अन्दर आ़लिम के लिये दुआ़ए मग़फ़िरत करती हैं और आ़लिम की फ़ज़ीलत आ़बिद पर ऐसी है जैसी चौधवीं रात के चांद की फ़ज़ीलत सितारों पर, और उ़-लमा अम्बियाए किराम के वारिष व जा नशीन हैं, अम्बियाए किराम का तरका दीनार व दिरहम नहीं हैं, उन्हों ने विराषत में सिर्फ़ इ़ल्म छोड़ा है तो जिस ने इसे ह़ासिल किया उस ने पूरा हिस्सा पाया।"

(ترمذی، کتاب العلم، باب ما جاء فی فضل الفقہ، الحدیث ۲۶۹۱، ج ۴، ص ۳۱۲)

आ़लिम की ता'ज़ीम का सिला

एक शख़्स को इन्तिक़ाल के बा'द किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा, مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या सुलूक फ़रमाया ? जवाब दिया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी मग़फ़िरत फ़रमा दी। ख़्वाब देखने वाले ने पूछा : कौन सा अ़मल काम आ गया ? जवाब दिया : एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ दरिया के कनारे वुज़ू फ़रमा रहे थे और वहीं मैं बुलन्दी की त़रफ़ वुज़ू करने बैठ गया, जब मेरी नज़र इमाम साह़िब رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पर पड़ी तो ता'ज़ीमन नीचे की जानिब आ गया। बस येही अ़मल काम आ गया और मैं बख़्शा गया। (तज़्कि-रतुल औलिया, स.196)

उ़-लमाए किराम के एह़तिराम में कोताही न कीजिये

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ उ़-लमाए किराम की अहम्मिय्यत का एह़सास दिलाते हुए लिखते हैं : दा'वते इस्लामी के तमाम वाबस्तगान बल्कि हर मुसलमान के लिये ज़रूरी है कि वोह उ़-लमाए

अहले सुन्नत से हरगिज़ न टकराएं, उन के अदब व एह़तिराम में कोताही न करें, उ़-लमाए अहले सुन्नत की तह़क़ीर से क़त़्अ़न गुरैज़ करें। **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़्फ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, "आ़लिम ज़मीन में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की दलीलो हुज्जत हैं तो जिस ने आ़लिम में ऐ़ब निकाला वोह हलाक हो गया।"** (کنز العمال ج ١٠ص ٧٧) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं। "उस की (या'नी आ़लिम की) ख़त़ागीरी (या'नी भूल निकालना) और उस पर ए'तिराज़ ह़राम है और इस के सबब रहनुमाए दीन से कनारा कश होना और इस्तिफ़ादए मसाइल छोड़ देना इस के ह़क़ में ज़ह्‌र है।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स.711) उन नादान लोगों को डर जाना चाहिये जो बात बात पर उ़-लमाए किराम के बारे में तौहीन आमेज़ कलिमात बक दिया करते हैं म-षलन भई ज़रा बच कर रहना कि "अ़ल्लामा साह़िब" हैं, उ़-लमा लालची होते हैं, हम से जलते है। हमारी वजह से अब उन का कोई भाव नहीं पूछता, छोड़ो छोड़ो येह तो मौलवी है, (مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आ़लिमों को बा'ज़ लोग ह़क़ारत से कह देते हैं) "येह मुल्ला लोग !" वग़ैरा वग़ैरा।

(कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब. स. 344)

सारे सुन्नी आ़लिमों से तू बना कर रख सदा
कर अदब हर एक का, होना न तू उन से जुदा

(वसाइले बख़्शिश, स. 646)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ को ना पसन्द करते थे

गवर्नरों में से "ह़ज्जाज बिन यूसुफ़" वलीद के ज़माने में ज़ियादा मक़्बूल था लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़

عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز उसे उस के ज़ुल्मो सितम की वजह से बद तरीन समझते थे और फ़रमाते थे : अगर क़ियामत के दिन दुन्या की तमाम कौमें ख़बीष लोगों का मुक़ाबला करें और हर क़ौम अपने अपने ख़बीष को मुक़ाबले में लाए तो हम ह़ज्जाज को पेश कर के तमाम दुन्या पर ग़ालिब हो जाएंगे। (سیرت ابن جوزی ص ۱۰۸)

ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ के मदीने में दाख़िले की मुमा-न-अ़त

जिन दिनों हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز मदीनए पाक के गवर्नर थे, ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ को अमीरुल ह़ज बनाया गया तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه ने ख़लीफ़ा को ख़त़ लिखा कि मुझे ह़ज्जाज के मदीना आने से मुआ़फ़ रखा जाए। ख़लीफ़ा ने ह़ज्जाज को कहा कि उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه) ने इस मज़मून का ख़त़ लिखा है, जो शख़्स तुम्हारे आने को पसन्द नहीं करता तुम अगर उस के पास न जाओ तो क्या ह़रज है? चुनान्चे ह़ज्जाज मदीना नहीं गया। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۲۵)

दूसरे कोने में चले गए

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز अपने ज़मानए गवर्नरी में एक रात मस्जिदे न-बवी शरीफ़ में ह़ाज़िर हुए, और जहरी (या'नी ऊंची) क़िराअत [1] के साथ नमाज़ पढ़ने लगे, आवाज़ बड़ी अच्छी थी, इत्तेफ़ाक़न क़रीब ही कहीं हज़रते सई़द बिन

मदीना

1 : दिन के नवाफ़िल में कुरआन आहिस्ता पढ़ना वाजिब है और रात के नवाफ़िल में इख़्तियार है अगर तन्हा पढ़े और जमाअ़त से रात के नफ़्ल पढ़े तो जह्र वाजिब है। (درمختار مع ردالمحتار ج۲ص ۳۰۶)

मुसय्यब رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه मौजूद थे, मगर उन्हें आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه की मौजूदगी का इल्म नहीं था, चुनान्चे उन्हों ने अपने गुलाम "बुर्द" से फ़रमाया : "इस क़ारी को यहां से हटाओ, इस की आवाज़ हमें परेशान कर रहीं है।" गुलाम इस काम की हिम्मत न कर सका और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِیز ब दस्तूर अपने ध्यान में नमाज़ पढ़ते रहे। थोड़ी देर बा'द ह़ज़रते सई़द رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه ने गुलाम से फिर फ़रमाया : "बुर्द ! बड़े अफ़्सोस की बात है, मैं ने कहां था कि इस क़ारी को यहां से हटाओ, मगर तुम ने अभी तक नहीं हटाया।" बुर्द ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर मस्जिद कोई हमारी जागीर तो नहीं।" जब येह बात ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِیز के कान में पड़ी तो अपने जूते उठाए और मस्जिद के दूसरे कोने में चले गए। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۲۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی علٰی محمَّد

ज़मानए ख़िदमत की यादगारें

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِیز ने **मदीनए मुनव्वरा** زادَھَااللّٰہُ شَرَفًاوَّ تعظِیماً وَّ تکریماً में अपने ज़मानए ख़िदमत के दौरान मस्जिदे न-बवी शरीफ़ की अज़ सरे नौ ता'मीर की, मस्जिदे न-बवी में अगर्चे **अमीरुल मोअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْه के ज़माने से ही थोड़ी बहुत तोसीअ़ का काम शुरूअ़ हो गया था बिल ख़ुसूस **अमीरुल मोअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना

उ़ष्मान ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उसे बहुत शानदार बना दिया था, फिर **अमीरुल मोअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के बा'द से ले कर अ़ब्दुल मलिक तक मस्जिदे न-बवी में कोई तसर्रुफ़ नहीं किया गया, वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक मस्नदे ख़िलाफ़त पर बैठा तो मस्जिदे न-बवी को नई आबो ताब के साथ बनाना चाहा, चुनान्चे उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز को लिखा कि मस्जिदे न-बवी की ता'मीरे नौ की जाए। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मस्जिद के पास मौजूद मकानात ख़रीद कर मस्जिद में शामिल किये और फ़ु-क़हाए मदीना ने मस्जिदे न-बवी की ता'मीरे नौ का संगे बुन्याद रखा और मस्जिद बनना शुरूअ़ हो गई। पहले मस्जिद में इमाम के लिये त़ाक़ नुमा **मेह़राब** नहीं होती थी सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने मस्जिदुन्-बवी शरीफ़ علٰی صاحِبِهَا الصَّلوٰةُ وَالسَّلام में **मेह़राब** बनाने की सआ़दत ह़ासिल की इस नई ईजाद (बिदअ़ते ह़-सना) को इस क़दर मक़्बूलिय्यत ह़ासिल है कि अब दुन्या भर में मस्जिद की पहचान इसी से है, रोज़ए अत़्हर के चारों त़रफ़ दोहरी दीवार बनवाई, अत़राफ़े मदीना में जिन जिन मसाजिद में नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ अदा फ़रमाई थी, उन को मुनक़्क़श पथ्थरों से ता'मीर करवाया, **मदीनए मुनव्वरा** زَادَهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيماً وَّ تَكْرِيماً में पानी के कूंएं खुदवाए और रास्ते हमवार करवाए। (البداية والنهاية ج٦ص ١٩٧ ملخصًا)

रसूले अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जैसी नमाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز सुन्नते ख़ैरुल अनाम علٰی صاحِبِهَا الصَّلوٰةُ وَالسَّلام पर अ़मल की भरपूर कोशिश

किया करते थे। जब आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه गवर्नरे मदीना थे तो नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़ादिमे ख़ास और जलीलुल क़द्र सह़ाबी ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इराक़ से **मदीनए मुनव्वरा** زَادَهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيماً وَّ تَكْرِيماً आए तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز के पीछे नमाज़ पढ़ी। इन्हें ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز की नमाज़ बहुत पसन्द आई चुनान्चे नमाज़ पढ़ने के बा'द फ़रमाया : "مَا رَأَيْتُ اَحَدًا اَشْبَهَ بِصَلَاةِ النَّبِيِّ مِنْ هٰذَا الْغُلَامِ *या'नी मैंने इस नौ जवान से बढ़ कर रसूले अकरम* صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم *से मुशाबे नमाज़ पढ़ने वाला कोई नहीं देखा।"* (سیرت ابن جوزی ص ۳۴)

इत़्मीनान से नमाज़ पढ़ने की फ़ज़ीलत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी नमाज़ इत़्मीनान और सुकून से पढ़नी चाहिये ताकि हमारी नमाज़ क़बूलिय्यत की मे'राज तक पहुंच सके, चुनान्चे **ह़ज़रते** सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि **नबिय्ये रह़मत**, शफ़ीए उम्मत, शहनशाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है, "जो शख़्स अच्छी त़रह़ वुज़ू करे, फिर नमाज़ के लिये खड़ा हो, इस के रुकूअ़, सुजूद और क़िराअत (قِراءَت) को मुकम्मल करे तो **नमाज़** कहती है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरी हि़फ़ाज़त करे जिस त़रह़ तूने मेरी हि़फ़ाज़त की। फिर उस **नमाज़** को आस्मान की त़रफ़ ले जाया जाता है

और उस के लिये चमक और **नूर** होता है। पस उस के लिये आस्मान के दरवाज़े खोले जाते हैं ह़त्ता कि उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश किया जाता है और वोह **नमाज़** उस नमाज़ी की शफ़ाअ़त करती है। और अगर वोह उस का रुकूअ़, सुजूद और क़िराअत मुकम्मल न करे तो नमाज़ कहती है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे ज़ाएअ़ कर दे जिस त़रह़ तूने मुझे ज़ाएअ़ किया। फिर उस नमाज़ को इस त़रह़ आस्मान की त़रफ़ ले जाया जाता है कि उस पर त़ारीकी छाई होती है और उस पर आस्मान के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं फिर उस को पुराने कपड़े की त़रह़ लपेट कर उस नमाज़ी के मुंह पर मारा जाता है।"

(شعب الایمان، ج۳،ص ۱۴۲،الحدیث ۳۱۴۰)

मैं पांचों नमाज़ें पढ़ूं बा जमाअ़त हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़त़ा या इलाही
मैं पढ़ता रहूं सुन्नतें वक़्त ही पर हों सारे नवाफ़िल अदा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 84)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मिट्टी पर सजदा किया करते

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز (कपड़े वग़ैरा के बजाए) हमेशा मिट्टी पर सजदा किया करते थे।

(احیاء العلوم، ج ۱ص ۲۰۴)

म-दनी फूल : सजदा ज़मीन पर बिना ह़ाइल होना मुस्तह़ब है। अगर कोई कपड़ा बिछा कर इस पर सजदा करे तो ह़रज नहीं।

(बहारे शरीअ़त जि. 1, स. 529-538)

आगे न पढ़ सके

हज़रते सय्यिदुना मक़ातिल बिन हय्यान رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز के पीछे नमाज़ पढ़ी। जब आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तिलावत करते हुए पारह 23 सूरए साफ़्फ़ात की आयत 24 ''وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ مَّسْـُٔوْلُوْنَ ﴿۲۴﴾ *(तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उन्हें ठहराओ उन से पूछना है।)*'' पर पहुंचे तो रोने लगे, इसी आयत को बार बार पढ़ा मगर आगे न बढ़ सके। (سیرت ابن جوزی ص۲۱۷)

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْھَادِی इस आयत के तह़त लिखते हैं : (या'नी) सिरात़ के पास (ठहराओ), ह़दीष शरीफ़ में है कि रोज़े क़ियामत बन्दा जगह से हिल न सकेगा जब तक चार बातें उस से न पूछ ली जाएं : (1) एक उस की उ़म्र कि किस काम में गुज़री ? (2) दूसरे उस का इ़ल्म कि उस पर क्या अ़मल किया ? (3) तीसरे उस का माल कि कहां से कमाया कहां ख़र्च किया ? (4) चोथे उस का जिस्म कि उस को किस काम में लाया ? (ترمذی، ج۴، ص۱۸۸، الحدیث ۲۴۲۵)

तूलें मेरे आ'माल मीज़ां पे जिस दम
पड़े एक भी नेकी न कम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 82)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मह़ब्बते मदीना

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز **मदीनए त़य्यिबा** زادَھَااللّٰہُ شَرَفًاوَّ تَعظِیماً وَّ تَکْرِیماً के अदबो एह़तिराम का बहुत ज़ियादा लिह़ाज़ रखते थे, म-षलन मदीने का जो ह़रम **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुक़र्रर कर दिया था, उस के अन्दर के दरख़्त या घास को काटा नहीं जा सकता था, जैसा कि हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे मदीना, सुरूरे **क़ल्बो सीना** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ने मक्के को ह़रम बनाया और मैं मदीने को ह़रम बनाता हूं उस के गोशे के दरमियान को कि उस में ख़ून बहाया जाए न शिकार किया जाए और न ही ब जुज़ चारे के यहां का दरख़्त काटा जाए। (مسلم،کتاب الحج،الحدیث ۱۳۶۲ص ۷۰۹)

ग़ालिबन इसी फ़रमाने **मुस्त़फ़ा** का पास रखने के लिये हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز फ़रमाया करते थे : एक शख़्स को मेरे सामने इस ह़ालत में लाया जाए कि वोह शराब लिये जाता हो मगर येह गवारा नहीं कि एक शख़्स को इस ह़ालत में लाया जाए कि वोह ह़-रमे मदीना से कोई चीज़ काट कर ले जाता हो।

(معجم البلدان، باب المیم والدال ج۴ ص ۲۳۲ ملخصا)

वाह ! क्या बात है मदीने की

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब सफ़र से आते और

मदीनए पाक की दीवारों को देखते तो उस की महब्बत की वजह से अपनी सुवारी को तेज़ फ़रमा देते और अगर घोड़े पर होते तो उसे एड़ी लगाते। (بخاری، کتاب الحج، الحدیث ۱۸۰۲، ج ۱، ص ۵۹۴)

तू अ़त्तार को चश्मे नम दे के हर दम
मदीने के ग़म में रुला या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 80)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

अहले बैत से महब्बत

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیہِ رحمةُ اللّٰہِ الْعَزِیز अहले बैत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم से बहुत महब्बत रखते थे, चुनान्चे जब किसी चीज़ को राहे खुदा में पेश करने का इरादा करते तो फ़रमाते : اِبْتَغُوا اَھْلَ بَیْتٍ بِھِمْ حَاجَةٌ *या'नी उन अहले बैत को तलाश करो जो हाजत मन्द हों।*

(سیرت ابن جوزی ۴۲)

महब्बते अहले बैत का फ़ाएदा

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, शहनशाहे अबरार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

اَحِبُّوا اللّٰہَ لِمَا یَغْذُوکُمْ مِنْ نِعَمِہٖ وَاَحِبُّونِی بِحُبِّ اللّٰہِ وَاَحِبُّوا اَھْلَ بَیْتِی لِحُبِّی

या'नी ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *से महब्बत करो क्यूंकि वोह तुम्हें अपनी ने'मतों से रोज़ी देता है और* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *की महब्बत के लिये मुझ से महब्बत करो और मेरी महब्बत के लिये मेरे अहले बैत से महब्बत करो।*

(ترمذی، الحدیث ۳۸۱۴، ج ۵، ص ۴۳۴)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अह़मद यार खान عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْحَنَّان इस ह़दीषे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत ह़ासिल करने के लिये मुझ से मह़ब्बत करो क्यूंकि मैं अल्लाह तआ़ला का मह़बूब हूं, मह़बूब का मह़बूब खुद अपना मह़बूब होता है, मेरी मह़ब्बत ह़ासिल करने के लिये मेरे घर वालों, अवलादे पाक, अज़्वाजे मु-त़ह्हरात (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم) से मह़ब्बत करो क्यूंकि वोह मेरे मह़बूब हैं खुलासा येह है कि इन मह़ब्बतों में तरतीब येह है कि अहले बैत की मह़ब्बत ज़ीना है हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) की मह़ब्बत का और हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) की मह़ब्बत ज़रीआ़ है रब तआ़ला की मह़ब्बत का।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8 स. 493)

सह़ाबा का गदा हूं और अहले बैत का ख़ादिम
येह सब है आप ही की तो इनायत या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश, स. 184)

खड़े हो कर इस्तिक़्बाल किया

जो लोग ख़ानदाने नबूव्वत से थोड़ा सा तअ़ल्लुक़ भी रखते थे, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ الۡعَزِیۡز उन के साथ इसी क़िस्म के फ़य्याज़ाना सुलूक करते थे। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मौला ज़ाद (या'नी आज़ाद कर्दा ग़ुलाम) थे, उन की बेटी एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ الۡعَزِیۡز के पास आई तो आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने खड़े हो कर उन का इस्तिक़्बाल किया, अपनी जगह बिठाया और उन की तमाम ज़रूरतें पूरी कीं। (تاریخ الخلفاء ص ۲۳۹) इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ الۡعَزِیۡز के ख़लीफ़ा बनने के बा'द एक

बार ख़ानदाने बनू उमय्या के बहुत से लोग दरवाज़े पर मुन्तज़िर बैठे हुए थे, लेकिन आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھُمَا के गुलाम को सब से पहले बारयाबी का मोक़अ़ दिया तो हिशाम ने जल कर कहा : क्या उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ को सब कुछ कर के अब भी तस्कीन नहीं हुई कि एक गुलाम को मोक़अ़ देते हैं कि हमारी गरदन फांद के चला जाए। (سیرتِ ابن جوزی، ص ۹۲)

बिशारते न-बवी

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز **मक्कए मुकर्रमा** की त़रफ़ जा रहे थे कि एक चटयल मैदान में एक मुर्दा सांप देखा। उन्हों ने एक गढ़ा खोदा और एक कपड़े में उस सांप को लपेट कर दफ़्न कर दिया। अचानक ग़ैब से एक आवाज़ सुनाई दी : "ऐ सुर्रक़ ! तुम पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत हो, मैं गवाही देता हूं कि मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना है : ऐ सुर्रक़ ! तुम एक चटयल मैदान में मरोगे और तुम्हें मेरी उम्मत का बेहतरीन आदमी दफ़्न करेगा।" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने उस आवाज़ देने वाले से पूछा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़म फ़रमाए, तुम कौन हो ?" उस ने कहा : "मैं एक जिन्न हूं और येह सुर्रक़ है, हम उन जिन्नात में से हैं जिन्हों ने मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से बैअ़त की है, हम दोनों के सिवा उन में कोई भी ज़िन्दा नहीं रहा, मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए

सुना था : "ऐ सुर्रुक़ ! तुम चटयल मैदान में दम तोड़ोगे और तुम्हें मेरा बेहतरीन उम्मती दफ़्न करेगा।" (دلائل النبوۃ، ج۶،ص ۴۹۴)

जिन्नात की तीन क़िस्में

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहि़बे मुअ़त्तर पसीना صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिन्नात की तीन क़िस्में हैं ; **अव्वल :** जिन्न के पर हैं और वोह हवा में उड़ते हैं, **दुवम :** सांप और कुत्ते और **सिवुम :** जो सफ़र और क़ियाम करते हैं।"

(اَلْمُسْتَدْرَک لِلْحَاکِم،الجن ثلاثۃ اصناف ،الحدیث ۳۷۵۴،ج ۳ ،ص ۲۵۴)

जिन्नात की मुख़्तलिफ़ शक्लें

अ़ल्लामा बदरुद्दीन शिब्ली ह़-नफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی अपनी किताब "اٰکامُ الْمَرجَانِ فِی اَحکَامِ الْجَان" में लिखते हैं : "बिला शुबा जिन्नात इन्सानों और जानवरों की शक्ल इख़्तियार कर लेते हैं चुनान्चे वोह सांपों, बिच्छूओं, ऊंटों, बैलों, घोड़ों, बकरियों, ख़च्चरों, गधों, और परन्दों की शक्लों में बदलते रहते है।" [1]

(آکام المرجان فی احکام الجان،الباب السادس فی تطور الجن و تشکلھم،ص ۲۱)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

مدینہ

1 : जिन्नात के बारे में मज़ीद मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ रिसाले "जिन्नात की ह़िकायात" और 262 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "क़ौमे जिन्नात और अमीरे अहले सुन्नत" का मुता़-लआ़ कीजिये।

गवर्नरी से इस्ति'फ़ा

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ الۡعَزِيز 87 हि. से 93 हि. तक़रीबन 6 साल तक **मदीनए मुनव्वरा** زَادَهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيماً وَّ تَكرِيماً में गवर्नरी की ख़िदमात अन्जाम देते रहे, इस दौरान ताइफ़ और **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيماً وَّ تَكرِيماً भी आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه के ज़ेरे इन्तिज़ाम रहे। आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه के अ़दलो इन्साफ़ ने मक्के मदीने वालों के दिल जीत लिये मगर एक अफ़सोस नाक वाक़िए की वजह से आप गवर्नरी से मुस्त'फ़ी हो गए, हुवा यूं कि ख़लीफ़ा वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक ने आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه को पैग़ाम भेजा कि ख़ुबैब बिन अ़ब्दुल्लाह (رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه) को गिरिफ़्तार कर लें और 100 कोड़ों की सज़ा दें। चुनान्चे हज़रते ख़ुबैब बिन अ़ब्दुल्लाह (رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه) को पाबन्दे सलासिल कर दिया गया और जब उन्हें सो कोड़े मारे गए तो एक घड़े में ठन्डा पानी ला कर हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ الۡعَزِيز को दिया गया जिसे आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه ने ख़ुबैब बिन अ़ब्दुल्लाह (رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه) पर फैंक दिया, सर्दियों के दिन थे, उन पर कपकपी तारी हो गई। जब उन की तबिअ़त ज़ियादा ख़राब हो गई तो आप ने उन्हें क़ैद से रिहा कर दिया और अपने फ़े'ल की मुआफ़ी मांगी। उन के रिश्तेदार उन्हें घर ले गए। हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ الۡعَزِيز बहुत परेशान थे चुनान्चे आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه ने अपने मुआ़विन "माजिशून" को मा'लूमात के लिये उन के घर भेजा। जब माजिशून वहां पहुंचा तो हज़रते ख़ुबैब बिन अ़ब्दुल्लाह (رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه) की कफ़न में लिपटी

हुई लाश उन के सामने थी। माजिशून का बयान है कि जब मैं वापस हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز के पास पहुंचा तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه बे क़रारी के आ़लम में उठ बैठ रहे थे, मुझे देखते ही बेचैनी से पूछा : क्या हुवा ? जब मैं ने ख़ुबैब बिन अ़ब्दुल्लाह (رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه) की मौत की ख़बर दी तो वोह गश खा कर ज़मीन पर गिर गए कुछ देर बा'द "اِنَّالِلّٰهِ وَاِنَّااِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ" पढ़ते हुए उठे और गवर्नरी से मुस्ता'फ़ी हो गए। इस वाक़िए का आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه को उ़म्र भर अफ़सोस रहा, ह़त्ता कि जब कभी कोई किसी काम पर आप की ता'रीफ़ करता कि आप ने बड़ा शानदार काम किया है तो फ़रमाया करते : "मगर मैं ने ख़ुबैब के साथ क्या किया ?" (سیرت ابن جوزی، ص۴۴)

इस्ति'फ़ा या मा'ज़ूली ?

बा'ज़ रिवायात के मुताबिक़ महल्लाती साज़िशो के नतीजे में वलीद ने ख़ुद ही उन्हें **मदीनए मुनव्वरा** زَادَهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِیْماً وَّ تَکْرِیماً की गवर्नरी से मा'ज़ूल कर दिया था, इस की तफ़्सील येह है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने उस वक़्त के ख़लीफ़ा वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक को एक ख़त़ रवाना किया जिस में ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ के बढ़ते हुए मज़ालिम की शिकायत की गई थी। जब ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ को इस बारे में पता चला तो उस ने आग बगोला हो कर वलीद को एक ख़त़ में लिखा कि इराक़ से बहुत से फ़सादी लोग जिला वत़न हो कर मक्का और मदीना में आबाद हो गए हैं जो एक क़िस्म की सियासी कमज़ोरी है (और उस का ज़िम्मादार वहां का

गवर्नर है) । वलीद ने जवाब में लिखा : मुझे गवर्नरी के लिये दो नाम बताओ जिन्हें वहां गवर्नरी कि ख़िदमत सोंपी जा सके। ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ ने ख़ालिद बिन अ़ब्दुल्लाह और उ़ष्मान बिन ह़य्यान के नाम लिख कर भेजे। चुनान्चे वलीद ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِیز को मा'ज़ूल कर के ख़ालिद बिन अ़ब्दुल्लाह को **मक्कए मुकर्रमा** زادَھَااللّٰہُ شَرَفًاوَّ تَعظِیماً وَّ تَکرِیماً और उ़स्मान बिन ह़य्यान को **मदीनए मुनव्वरा** زادَھَااللّٰہُ شَرَفًاوَّ تَعظِیماً وَّ تَکرِیماً में गवर्नर मुक़र्रर कर दिया। (تاریخ طبری ج ۴،ص ۱۹۹ تا ۲۱۴ ملخصاً)

सिर्फ़ एक ग़ुलाम साथ था

जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِیز **मदीनए त़य्यिबा** زادَھَااللّٰہُ شَرَفًاوَّ تَعظِیماً وَّ تَکرِیماً आए थे तो आप का ज़ाती सामान ऊंटों पर लद कर आया था मगर जब मा'ज़ूल होने के बा'द रात की तारीकी में दिमिश्क़ जाने के लिये निकले तो सिर्फ़ एक ग़ुलाम "**मुज़ाह़िम**" साथ था। (سیرت ابن عبد الحکم ص ۲۷ ملتقطاً)

बे चैन हो गए

मदीनए मुनव्वरा زادَھَااللّٰہُ شَرَفًاوَّ تَعظِیماً وَّ تَکرِیماً से रुख़्सती के वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِیز को येह ह़दीष याद आई : " اَلْمَدِیْنَةُ کَالْکِیرِ تَنْفِی خَبَثَھَا *या'नी मदीना भट्टी की त़रह़ है कि वोह मैल कुचैल और गन्दगी को निकाल बाहर करता है,"* (الاحسان بترتیب ابن حبان،الحدیث ۳۷۲۴،ج ۶،ص ۱۸) इस पर बेचैन हो गए और अपने ग़ुलाम मुज़ाह़िम से फ़रमाया : نَخْشٰی اَنْ نَّکُوْنَ مِمَّنْ نَّفَتِ الْمَدِیْنَةُ *या'नी हमें डर है कि कहीं हम भी उन में से न हों जिन को* ***मदीनए मुनव्वरा*** زادَھَااللّٰہُ شَرَفًاوَّ تَعظِیماً وَّ تَکرِیماً *बाहर निकाल देता है।* (سیرت ابن جوزی ص ۲۲۴)

अफ़सोस वक़्ते रुख़सत नज़दीक आ रहा है — एक हूक उठ रही है दिल बैठा जा रहा है
आह! अल फ़िराक़ आक़ा! आह! अल वदाअ़ मौला — अब छोड़ कर मदीना अ़त्तार जा रहा है

(वसाइले बख़्शिश, स. 413)

बद शगूनी की तरदीद

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز के गुलाम मुज़ाहिम का बयान है कि : जब हम **मदीनए तृय्यिबा** زادَهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيماً وَّ تَكرِيماً से निकले तो मैं ने देखा कि चांद "दबरान" में है, मैंने उन से येह कहना तो मुनासिब न समझा बल्कि येह कहा : "ज़रा चांद की तरफ़ नज़र फ़रमाइये, कितना ख़ूब सूरत लगता है।" आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने देखा तो चांद दबरान [1] में था, फ़रमाया शायद तुम मुझे येह बताना चाहते हो कि चांद दबरान में है, मुज़ाहिम ! हम चांद सूरज के साथ नहीं, बल्कि **अल्लाह** वाहिद व क़हहार عَزَّوَجَلَّ के हुक्म व मशिय्यत के साथ निकलते हैं। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۲۷)

बद शगूनी क्या है ?

किसी चीज़ या अ़मल को देख कर या किसी आवाज़ को सुन कर उसे अपने ह़क़ में अच्छा या बुरा समझना शगून कहलाता है। इस की दो क़िस्में हैं : (1) अच्छा शगून (नेक फ़ाल) (2) बद शगूनी।

مدینہ

1 : दबरान चांद की एक मन्ज़िल का नाम है, उस वक़्त चांद षिरया और जूज़ा के दरमियान होता है, अ़रब में नुजूमियों का येह वह्म राइज था कि येह साअ़त मन्हूस होती है, मुज़ाहिम का इशारा इसी तरफ़ था।

म–षलन कोई शख़्स घर से कहीं जाने के लिये निकला और काली बिल्ली ने उस का रास्ता काट लिया, जिसे उस ने अपने ह़क़ में मन्हूस जाना और वापस पलट गया या येह ज़ेहन बना लिया कि अब मुझे कोई न कोई नुक़्सान पहुंच कर ही रहेगा तो येह बद शगूनी है जिस की इस्लाम में मुमा–न–अ़त है। और अगर घर से निकलते ही किसी नेक शख़्स से मुलाक़ात हो गई जिसे उस ने अपने लिये बाइ़षे ख़ैर समझा तो येह नेक फ़ाली कहलाता है और येह जाइज़ है।

बद शगूनी कोई चीज़ नहीं

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ कहते हैं कि मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना : لَا طِیَرَةَ وَخَیْرُهَا الفَالُ *या'नी बद फ़ाली कोई चीज़ नहीं और फ़ाल अच्छी चीज़ है।* लोगों ने अ़र्ज़ की : مَا الفَألُ ؟ ! फ़ाल क्या चीज़ है ! फ़रमाया : "اَلْکَلِمَةُ الصَّالِحَةُ یَسْمَعُهَا *या'नी अच्छा कलिमा जो किसी से सुने।*" (بخاری،الحدیث۵۷۵۴،ج۴،ص۳۶) या'नी कहीं जाते वक़्त या किसी काम का इरादा करते वक़्त किसी की ज़बान से अगर अच्छा कलिमा निकल गया, येह फ़ाल ह़सन है। (बहारे शरीअ़त जि. 3, स. 503)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ख़लीफ़ा के मुशीर बन गए

गवर्नरी से मा'ज़ूली के बा'द हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمةُ اللّٰہِ الْعَزِیز "सुवैदा" पहुंचे। कुछ अ़र्सा वहीं रहे फिर आप ने मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही के लिये दिमिश्क़ मुन्तक़िल होने का इरादा किया और ख़लीफ़ा वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक के पड़ोस में

रिहाइश पज़ीर हुए ताकि उसे भलाई के मश्वरे दे सकें और ह़त्तल मक़्दूर उसे ज़ुल्म से रोक सकें, यूं आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه दारुल ख़ु–लफ़ा दिमिश्क़ में वलीद की मर्कज़ी मजलिसे शुरा के रुक्न मुक़र्रर हो गए।

ना ह़क़ क़त्ल से रोका

जब जब आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه को मोक़अ़ मिलता बड़ी जुरअत के साथ ह़ाकिमे वक़्त की इस्लाह़ फ़रमाया करते। एक रोज़ वलीद से फ़रमाया : "मैं आप से कुछ कहना चाहता हूं जब आप को मुकम्मल फ़ुरसत हो मुझे याद कर लीजियेगा।" वलीद कहने लगा : "अभी फ़रमाइये !" जवाब दिया : "अभी आप इत़्मीनान और दिल जमई के साथ सुन नहीं पाएंगे।" कुछ ही अ़र्से बा'द आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه शामियों की एक जमाअ़त के साथ दरबारे ख़िलाफ़त में मौजूद थे तो वलीद कहने लगा : अबू ह़फ़्स ! कहिये आप क्या कहना चाहते थे ? फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक शिर्क के बा'द सब से बड़ा गुनाह किसी को ना ह़क़ क़त्ल करना है, आप के गवर्नर और उ–मरा लोगों को ना ह़क़ क़त्ल कर डालते हैं फिर आप को इस का झूटा सच्चा जुर्म लिख कर भेज देते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में आप की भी पकड़ होगी क्यूंकि उन को आप ने गवर्नर मुक़र्रर किया है, लिहाज़ा आप उन्हें लिख भेजिये कि कोई गवर्नर किसी को क़त्ल न करे जब तक उस के जुर्म की शरई शहादत आप तक न पहुंचा दे और आप उस के वाजिबुल क़त्ल होने का फ़ैसला न कर दें।" " مِزاجِ شَاهاں تابِ سُخَن نَدارَد *या'नी शाहों का मिज़ाज सुनने की ताब नहीं रखता* " के मिस्दाक़ वलीद को गुस्सा तो बहुत आया मगर वोह अपना गुस्सा पी गया और कहने लगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर ब–र–कतें नाज़िल फ़रमाएं। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۱۴ ملخصًا)

हज्जाज की साजिश

आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मश्वरे के मुताबिक़ वलीद ने तमाम गवर्नरों को येह हुक्म लिख कर भेज दिया। सिवाए हज्जाज के किसी ने इस से तंगी महसूस नहीं की। उस को येह हुक्म बडा शाक़ गुज़रा और वोह इस पर बड़ा तल मलाया, पहले पहल उस का ख़याल था कि येह हुक्म मेरे सिवा किसी और को नहीं भेजा गया लेकिन जब उस ने तफ़्तीश कराई तो मा'लूम हुवा कि उस का येह ख़याल सहीह नहीं। चुनान्चे उस ने कहा : येह आफ़त हम पर कहां से आ पड़ी? **अमीरुल मोअमिनीन** को येह मश्वरा किस ने दिया? उसे बताया गया कि येह कारनामा उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ने अन्जाम दिया है, येह सुन कर बोला : आह! अगर मश्वरा देने वाला उमर है तो इस हुक्म को रद करना मुमकिन नहीं। फिर हज्जाज ने एक चाल चली वोह यूं कि क़बीला बकर बिन वाइल के एक देहाती को बुलवाया जो बड़ा अखड़, बद मिज़ाज और अक़ीदे के ए'तेबार से ख़ारिजी था, हज्जाज ने उस से पूछा : मुआविया बिन अबू सुफ़्यान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के बारे में क्या कहते हो? उस ने उन की ऐबजोई की। फिर पूछा : यज़ीद के बारे में क्या राय है। उस ने यज़ीद को गालियां सुना दीं। फिर पूछा : अब्दुल मलिक कैसा था? उस ने कहा : ज़ालिम था। फिर पूछा मौजूदा ख़लीफ़ा वलीद कैसा है ? उस ने कहा येह सब से बढ़ कर ज़ालिम है । क्यूंकि उस ने तुम्हारे ज़ोर व सितम को जानते हुए भी तुझे हम पर मुसल्लत कर दिया। इस जवाब को सुन कर हज्जाज ख़ामोश हो गया क्यूंकि उसे लोगों को क़त्ल करने पर दलील चाहिये थी जो उसे मिल चुकी थी, लिहाज़ा उस ने ख़ारिजी को वलीद के पास भेज दिया और साथ ही एक

ख़त़ भेजा जिस में लिखा था : "मैं अपने दीन के मुआ़-मले में बेह़द मोह़तात़ हूं, जिस रिआ़या पर आप ने मुझे ह़ाकिम बनाया है उन की सब से ज़ियादा हि़फ़ाज़त करता हूं और मैं इस बात से निहायत एह़तिराज़ करता हूं कि किसी ऐसे शख़्स को क़त्ल कर दूं जो इस का सज़ा वार न हो, लीजिये ! मैं आप के पास एक शख़्स को भेज रहा हूं आप उस की बातें सुनिये और यक़ीन कीजिये कि मैं इसी क़िस्म के लोगों को उन के ख़यालाते फ़ासिदा की बिना पर क़त्ल किया करता था, अब आप जानें और येह जाने !" वोह ख़ारिजी वलीद के दरबार में पेश हुवा उस वक़्त मजलिस में अहले शाम की मुम्ताज़ शख़्सिय्यात के इलावा ख़ुद ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز भी मौजूद थे, वलीद ने ख़ारिजी से कहा : मेरे बारे में क्या कहते हो ? उस ने कहा : ज़ालिम और जाबिर। वलीद ने कहा और अ़ब्दुल मलिक ? ख़ारिजी बोला : जब्बार और सरकश। वलीद ने कहा : और मुआ़विया (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ? ख़ारिजी ने कहा : ज़ालिम (مَعَاذَاللّٰہِ عَزَّوَجَل)। वलीद ने अपने जल्लाद "इब्ने रय्यान" को हुक्म दिया : "उडा दो इस की गरदन।" अगले ही लम्ह़े ख़ारिजी का सर तन से जुदा था। फिर वलीद वहां से उठ कर घर चला गया और ख़ादिम से कहा : ज़रा उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز) को बुला लाओ। जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز उस के पास तशरीफ़ ले गए तो कहने लगा : "अबू ह़फ़्स ! क्या ख़याल है ? हम ने ठीक किया या ग़लत़ ? फ़रमाया : आप ने उसे क़त्ल कर के ठीक नहीं किया, बेहतर था कि आप उसे जेल भिजवाते, फिर या तो वोह **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में तौबा कर लेता या उस को मौत आ लेती।"

वलीद गुस्से से बोला : उस ने मुझे और (मेरे बाप) अ़ब्दुल मलिक को गालियां दी और वोह ख़ारिजी था मगर फिर भी आप के ख़याल में मैं ने उसे क़त्ल कर के ठीक नहीं किया ? ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने फ़रमाया : "जी नहीं ! **वल्लाह** मैं इसे जाइज़ नहीं समझता, आप उसे क़ैद भी तो कर सकते थे और अगर मुआ़फ़ ही कर देते तो और भी अच्छा होता।" येह सुन कर वलीद गुस्से से उठ कर चला गया। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۱۴ ملخصاً)

कलिमए ह़क़ कहने से न डरे

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز फ़रमाते हैं : एक दिन ख़िलाफ़े मा'मूल दो पहर के वक़्त ख़लीफ़ा वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक ने मुझे बुलवाया, मैं गया तो वोह अपने कमरए ख़ास में था और गुस्से में दिखाई देता था। उस ने मुझे अपने सामने इस त़रह़ बिठा लिया जैसे मुजरिमों को बिठाया जाता है, उस वक़्त वहां हम दोनों के इ़लावा इस का जल्लाद ख़ालिद बिन रय्यान था जो तल्वार सोंते खड़ा था। वलीद ने गरज दार आवाज़ में पूछा : उस शख़्स के बारे में तुम्हारी क्या राय है जो ख़ु-लफ़ा को बुरा भला कहता है, उसे क़त्ल कर दिया जाए या नहीं ? मैं ख़ामोश रहा, वोह फिर गरजा : जवाब क्यूं नहीं देते ? मैं फिर चुप रहा क्यूंकि वोह मुझ से "हां" कहलवाना चाहता था, उस ने सेहबार पूछा तो मैं ने कहा : "क्या मुझे कत्ल करना चाहते हो ?" वोह कहने लगा : "नहीं, मगर सुवाल ख़ु-लफ़ा की इ़ज़्ज़त का है।" अब की बार मैं ने हिम्मत कर के कहा : तो मेरी राय येह है कि ऐसे शख़्स को ख़ु-लफ़ा की तौहीन करने के जुर्म में सज़ा दी जा सकती है। वलीद ने सर उठा कर जल्लाद की त़रफ़ देखा, मुझे ऐसा लगा जेसे उस

ने मुझे क़त्ल करने का इशारा किया है, ता हम ऐसा नहीं हुवा और ख़लीफ़ा तै़श के आ़लम में येह कह कर घर के अन्दर चला गया कि येह "मु-तकब्बिर" है। उस के जाने के बा'द जल्लाद ने मुझे भी वापस होने का इशारा किया और मैं वहां से उठ कर चला आया।

(سیرت ابن عبدالحکم ص ۲۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने में रो'बे शाही को भी ख़ात़िर में न लाते थे। ऐ काश ! हमें भी اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْىٌ عَنِ الْمُنْكَر *(या'नी नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने)* जैसी अ़ज़ीम ज़िम्मादारी का एह़सास हो जाए और हम भी उस के बदले में मिलने वाले षवाब के लिये कोशां हो जाएं।

नेकी की दा'वत का षवाब

हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : ऐ रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ ! जो अपने भाई को बुलाए और उसे नेकी का हुक्म करे और बुराई से रोके उस शख़्स का बदला क्या होगा ? फ़रमाया : "मैं उस के हर कलिमे के बदले **एक साल की इ़बादत का षवाब** लिखता हूं और उसे जहन्नम की सज़ा देने में मुझे ह़या आती है।" (مکاشفۃ القلوب، باب فی الامر والمعروف، ص ۴۸)

समझाना कब वाजिब है ?

आ़म ह़ालात में अगर्चे नेकी की दा'वत देना मुस्तह़ब है, मगर बा'ज़ सूरतों में येह वाजिब हो जाती है, वाजिब होने की सूरत येह है कि

जब कोई शख़्स गुनाह कर रहा हो और हमारा ज़न्ने ग़ालिब हो कि उस को मन्अ़ करेंगे तो येह मान जाएगा तो अब उस को **बताना, समझाना, मन्अ़ करना वाजिब** है। अब हम को ग़ौर करना चाहिये कि येह वाजिब कौन अदा कर रहा है ? म-षलन आप देख रहे हैं कि फुलां बिला उ़ज़्रे शरई नमाज़ की जमाअ़त तर्क करने का गुनाह कर रहा है और वोह आप से छोटा भी है बल्कि आप का मा तह़्त, मुलाज़िम या बेटा भी है, और आप का ज़न्ने ग़ालिब भी है कि समझाऊंगा तो मान जाएगा मगर आप उस की इस्लाह़ की कोशिश नहीं फ़रमाते तो आप गुनहगार होंगे। (ज़लज़ला और उस के अस्बाब, स. 5)

अ़ता हो "नेकी की दा'वत" का ख़ूब जज़्बा कि
दूं धूम सुन्नते मह़बूब की मचा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 97)

फ़ाएदा ही फ़ाएदा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकी की बात बताने, गुनाह से नफ़रत दिलाने और इन कामों के लिये किसी पर **इन्फ़िरादी कोशिश** का षवाब कमाने के लिये येह ज़रूरी नहीं कि जिस को समझाया वोह मान जाए तो ही षवाब मिलेगा बल्कि अगर वोह न माने तब भी اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ षवाब ही षवाब है और अगर आप की **इन्फ़िरादी कोशिश** से किसी ने गुनाहों से तौबा कर के सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारनी शुरूअ़ कर दी फिर तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आप का भी बेड़ा पार हो जाएगा। आइये इस ज़िम्न में **इन्फ़िरादी कोशिश** की एक **म-दनी बहार** सुनते चलें, चुनान्चे

बदनामे ज़माना शख़्स की तौबा

पंजाब (पाकिस्तान) के शहर मदीनतुल औलिया (मुल्तान) के नवाह़ी अ़लाक़े छोक वनीस में मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है कि **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल की ब-र-कतें मिलने से पहले मैं अपने अ़लाक़े का **बदनाम तरीन शख़्स** था। हर दूसरे दिन थाने में मेरे ख़िलाफ़ कोई न कोई **शिकायत** पहुंच जाती। लोग मुझ से दूर भागते और घरवाले मेरी ह़-र-कतों की वजह से सख़्त **नालां** थे। फिर वोह वक़्त भी आया कि मुझे अपने अ़लाक़े में **नेक नामी** नसीब हो गई और मैं अपने घरवालों की आंखों का **तारा** बन गया। येह इस त़रह़ मुमकिन हुवा कि जिस जगह मैं नौकरी करता था वहां दा'वते इस्लामी के एक मुबल्लिग़ किसी काम से आए। उन्हों ने मुझ से भी मुलाक़ात की और इन्फ़िरादी कोशिश के दौरान **दा'वते इस्लामी** की म-दनी बहारें सुनाने के बा'द तोह़्फ़े में शैख़े त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत** دامت بركاتهم العاليه के बयान की केसट "**क़ब्र की पहली रात**" दी। जब मैं ने येह बयान सुना तो मारे **ख़ौफ़** के मेरे रोंगटे खड़े हो गए। गुज़श्ता ज़िन्दगी के ना गुफ़्ता बेह ह़ालात मेरी आंखों के सामने घूमने लगे। मैंने खुद को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ना फ़रमान पाया। अपने अन्जाम का तसव्वुर कर के मैं **बे क़रार** हो गया। अपने गुनाहों पर **शरमिन्दा** हो कर उसी वक़्त अपने ख़ालिक़ व मालिक عَزَّوَجَلَّ से मुआ़फ़ी मांगी और सच्ची **तौबा** कर ली। फिर मुझ पर **दा'वते इस्लामी** का ऐसा म-दनी रंग चढ़ा कि देखने वाले ह़ैरान रह गए और उन की

नफ़रत मह़ब्बत में तबदील होना शुरूअ़ हो गई। एक ख़्वाहिश मुसल्सल मुझे तड़पाती रहती कि काश मैं इस वलिय्ये कामिल या'नी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की ज़ियारत का शरबत पी सकूं जिन की बनाई हुई तह़रीक "दा'वते इस्लामी" की ब दौलत मेरी ज़िन्दगी में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हुवा। आख़िरे कार मेरी सआ़दतें अपनी मे'राज को पहुंची और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ग़ालिबन किसी म-दनी मश्वरे के लिये ईदगाह मदीनतुल औलिया मुल्तान तशरीफ़ लाए। वहां मैं आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के दस्ते मुबारक पर बैअ़त कर के **अ़त्तारी** हो गया और रात भर **दीदारे मुर्शिद** के मज़े भी लूटता रहा। ता दमे तह़रीर में अ़लाक़ाई मुशा-वरत के ख़ादिम (निगरान) की ह़ैषिय्यत से **म-दनी कामों** की धूमें मचाने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा हूं।

मक़्बूल जहां भर में हो दा'वते इस्लामी
स-दक़ा तुझे ऐ रबे गफ़्फ़ार मदीने का

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

धोका देही से रोका

वलीद का भाई सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक उस का वली अ़हद था मगर वोह उसे वली अ़-हदी से हटा कर अपनी अवलाद को ख़िलाफ़त मुन्तक़िल करना चाहता था और येह काम ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز के तआ़वुन के बिग़ैर मुमकिन न था। जब वलीद ने इस बारे में आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से बात की तो ह़क़ गोई का मुज़ा-हरा करते हुए फ़रमाया :

يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ اِنَّا بَايَعْنَا لَكُمَا فِىْ عُقْدَةٍ وَّاحِدَةٍ فَكَيْفَ نَخْلَعُهٗ وَنَتْرُكُك

*या'नी **अमीरुल मोअमिनीन** ! हम ने आप दोनों की एक ही वक़्त में बैअ़त की थी अब अकेले सुलैमान को इस बैअ़त से कैसे अलग कर सकते हैं ?* (سیرت ابن جوزی ۵۲) इस पर वलीद ने नाराज़ हो कर आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه को क़ैद में डाल दिया। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه को काफ़ी अ़र्सा क़ैद में रखा गया मगर आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه अपने इरादे पर षाबित कदम रहे, बिल आख़िर किसी की सिफ़ारिश पर रिहाई मिली। सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمة اللّٰهِ العزیز की वफ़ादारी और एह़सान को याद रखा चुनान्चे अपने बा'द आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه ही को अपना जा नशीन मुक़र्रर किया।

(تاریخ الخلفاء ص ۲۳۵)

***अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।* اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

इन्सान को वोही कुछ मिलेगा जो आगे भेजा होगा

एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمة اللّٰهِ العَزِیز ख़लीफ़ा सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक के साथ किसी सफ़र के लिये निकले, आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه ने अपना सामान और ख़ैमा वग़ैरा पहले से आगे नहीं भिजवाया था। मन्ज़िल पर पहुंचे तो हर शख़्स अपने ख़ैमे में चला गया जो उस ने पहले से भिजवा रखा था। सुलैमान भी अपने ख़ैमे में चला गया, जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمة اللّٰهِ العَزِیز कहीं नज़र न आए तो सुलैमान ने कहा : इन्हें तलाश करो, ग़ालिबन इन्हों ने कोई ख़ैमा नहीं भेजा था। तलाश किया

गया तो वोह एक दरख़्त के नीचे बैठे रो रहे थे। सुलैमान को इत्ति़लाअ़ दी गई, उस ने आप को बुलाया और दरयाफ़्त किया : "अबू ह़फ़्स ! क्यूं रो रहे थे ?" फ़रमाया : **अमीरुल मोअमिनीन** ! मुझे क़ियामत का दिन याद आ गया, देखिये मैं ने घर से कोई चीज़ नहीं भेजी थी, इस लिये मुझे यहां कुछ नहीं मिला, इसी त़रह़ क़ियामत में भी जिस ने जो चीज़ आगे भेजी होगी वोही उसे मिलेगी। (سیرت ابن عبد الحکم ص ۲۳ ملخصًا)

हाए ! हुस्ने अ़मल नहीं पल्ले — हश्र में मेरा होगा क्या या रब
*ख़ौफ़ आता है नारे दोज़ख़ से — हो करम बहरे **मुस्त़फ़ा** या रब*

(वसाइले बख़्शिश, स. 88)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बारिश से इ़ब्रत

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز एक बार सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक के साथ ह़ज के लिये गए। ह़ज के बा'द त़ाइफ़ गए तो रास्ते में गरज चमक के साथ शदीद बारिश हुई, सुलैमान ने आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को मुख़ात़ब करते हुए कहा : "अबू ह़फ़्स ! कभी ऐसी बारिश देखी ?" फ़रमाया : "هٰذَا عِنْدَ نُزُوْلِ رَحْمَتِهٖ فَكَيْفَ لَوْ كَانَ عِنْدَ نُزُوْلِ نِقْمَتِهٖ" *या'नी अभी तो* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *की रह़मत की बारिश है, अगर उस के ग़ज़ब की बारिश हो तो क्या ह़ालत होगी ?"* (سیرت ابن جوزی ۵۲)

गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी
हाए ! मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब !

(वसाइले बख़्शिश, स. 91)

येह स-दक़े से बेहतर है

एक सहरा में इसी क़िस्म का और भी वाक़ेआ़ पेश आया तो सुलैमान ने घबरा कर एक लाख दिरहम हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز को स-दक़ा करने के लिये दिये कि उस की ब-रकत से बादलों की गरज और बिजली की कड़क की येह आफ़त टल जाए तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने **इन्फ़िरादी** कोशिश करते हुए उसे मश्वरा दिया : इस से भी बेहतर एक काम है। सुलैमान ने पूछा : वोह क्या ? फ़रमाया : आप ने बा'ज़ लोगों की जाएदाद ग़सब कर रखी है, वोह वापस दे दीजिये । येह **इन्फ़िरादी** कोशिश रंग लाई और सुलैमान ने उन के तमाम माल, जाएदाद वापस कर दिये। (سیرت ابن جوزی ۵۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत से हमें येह दर्स मिला कि जब कोई मुसीबत आन पड़े तो उस से नजात पाने के लिये दुआ़ करने और स-दक़ा देने के साथ साथ येह भी ग़ौर करना चाहिये कि कहीं हम ने किसी की ज़मीन, माल या किसी की जाएदाद पर ज़ालिमाना क़ब्ज़ा तो नहीं कर रखा और अगर खुदा न ख़्वास्ता ऐसा हो तो सल्ब कर्दा हुक़ूक़ फ़ौरन अदा कर देने चाहिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मुसीबत टलने के साथ साथ दुन्या व आख़िरत की ढेरों भलाइयां भी नसीब होंगी।

दुन्या को दुन्या खा रही है

एक मरतबा दौराने सफ़र मक़ामे उ़सफ़ान के क़रीब पहुंच कर सुलैमान ने अपने लाउ लश्कर और क़िता़र दर क़िता़र ख़ैमों को देखा तो

सरशारी में हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز से पूछा : كَيْفَ تَرٰى مَاهَاهُنَا يَاعُمَرُ؟ *या'नी आप को येह सब देख कर क्या महसूस हो रहा है ?* जवाब दिया :

اَرٰى دُنْيَا يَأْكُلُ بَعْضُهَا بَعْضًا اَنْتَ الْمَسْئُوْلُ عَنْهَا وَالْمَاخُوْذُ بِمَافِيْهَا

या'नी मुझे तो ऐसा दिखाई देता है कि दुन्या को दुन्या खा रही है, आप से इस का सुवाल और मुआ-ख़ज़ा किया जाएगा । (سیرت ابن جوزی ۵۲)

येह तुम्हारे फ़रीक़ हैं

अ़-रफ़ात में क़ियाम के दौरान सुलैमान ने इजतिमाअ़ गाह की तरफ़ देख कर कहा : कितने ज़ियादा लोग जम्अ़ हैं ! हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने उसे फ़िक्रे आख़िरत दिलाते हुए कहा कि येह आप के फ़रीक़ हैं (या'नी क़ियामत के दिन बारगाहे इलाही में आप के ख़िलाफ़ दा'वा करेंगे) । (سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۲۹)

हुक्मे शरई को फ़ौक़िय्यत है

हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز ने सुलैमान बिन अब्दुल मलिक से कहा कि मेरे वालिद साहिब (या'नी अब्दुल अज़ीज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ) की बा'ज़ साहिब ज़ादियों का अब्दुल मलिक की विराषत में हिस्सा बनता है वोह दिलवाया जाए। सुलैमान ने जवाब दिया कि अब्दुल मलिक ने एक तहरीर छोड़ी है कि उन को हिस्सा न दिया जाए । हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز कुछ देर ख़ामोश रहे, दोबारा इसी मौज़ूअ़ पर गुफ़्त-गू की तो सुलैमान समझा कि शायद उन को मेरी बात का यक़ीन नहीं आया चुनान्चे ख़ादिम को कहा : ज़रा अब्दुल मलिक की किताब लाना । हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز ने कहा :

क्या **तुम ने किताबुल्लाह मंगवाई है** (या'नी जब शरीअ़त ने मीराष में उन का हि़स्सा मुक़र्रर किया है तो कोई अपनी तह़रीर से उसे कैसे ख़त्म कर सकता है ?) येह सुन कर सुलैमान ख़ामोश हो कर रह गया और उस से कोई जवाब न बन पड़ा। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۲۷)

औ़रतों को भी मिराष में से हि़स्सा दीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस शरीअ़त ने विराषत में मर्दों का हि़स्सा मुक़र्रर फ़रमाया है उसी शरीअ़त ने औ़रतों का भी हि़स्सा मुक़र्रर किया है लिहाज़ा विरषे की तक़्सीम के वक़्त मर्दों के साथ साथ औ़रतों को भी हि़स्सा देना लाज़िम है मगर अफ़्सोस कि हमारे मुआ़शरे में एक ता'दाद औ़रतों को विराषत में हि़स्सा देने में रुकावट बनती है बल्कि अगर कोई इस्लामी बहन अपना हि़स्सए शरई लेने पर इसरार करे तो अव्वल तो उसे हि़स्सा देने से ही इन्कार कर दिया जाता है या फिर येह धमकी दी जाती है कि अगर हि़स्सा लेना है तो हम से ता'ल्लुक़ ख़त्म करना होगा नीज़ हि़स्सा त़लब करने को मा'यूब समझा जाता है जो कि दुरुस्त नहीं है।

जुज़ामियों की जान बचाई

ख़लीफ़ा सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक एक रात मक्कए मुकर्रमा के क़रीब सुवारी पर जा रहा था कि ऊंघ आ गई। इतने में जुज़ामियों के शोर मचाने और घन्टियां बजाने की आवाज़ आई घबराहट और बेचैनी से सुलैमान की आंख खुल गई, उन की इस ह़–रकत पर बड़ी कोफ़्त हुई और उस ने जलाल के मारे हुक्म दे दिया उन्हें आग से जला दिया जाए, जिस शख़्स को येह हुक्म दिया गया था वोह बे ह़द परेशान हुवा कि क्या किया जाए ? इतने में उस की मुलाक़ात ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन

अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز से हुई और उस ने सारा माजरा सुना कर मदद की दरख़्वास्त की। आप ने फ़रमाया : "ज़रा ठहरो ! मैं **अमीरुल मोअमिनीन** से मिलता हूं।" चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز सुलैमान के पास गए, कुछ देर बातें होती रहीं फिर आप ने फ़रमाया : "**अमीरुल मोअमिनीन** ! आप ने कभी इन मुब्तलाए मुसीबत (जुज़ामी) लोगों जैसा भी कोई देखा ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी आ़फ़िय्यत में रखे, काश आप इन को यहां से निकाल देने का हुक्म फ़रमा देते।" सुलैमान ने ए'तिराफ़ करते हुए कहा : "आप ने ठीक फ़रमाया, उन को यहां से निकाल दिया जाए।" हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز वापस आए और उस शख़्स से फ़रमाया : **अमीरुल मोअमिनीन** ने इन को (जलाने के बजाए) यहां से निकाल देने का हुक्म फ़रमा दिया है। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۲۶)

मुषला करने से रोका

एक मरतबा सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक के चन्द लश्करी रात भर गाने बजाने में मसरूफ़ रहे, सुब्ह़ सुलैमान ने उन्हें बुलवा कर डांटा और बतौ़रे सज़ा उन्हें ख़स्सी करने (या'नी ना मर्द बनाने) का हुक्म दे दिया मगर हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز ने फ़रमाया : هٰذَا مُثْلَةٌ وَّلَاتَحِلُّ *या'नी येह मुषला है और जाइज़ नहीं है।* तो सुलैमान ने उन्हें छोड़ दिया। (سیرت ابن جوزی ۴۹)

मुषला से मन्अ़ फ़रमाते

हज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं

कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हम को मुषला से मन्अ़ फ़रमाते थे।

(ابوداؤد،الحدیث ۲۶۶۷،ج ۳،ص ۷۲)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : मुषला के लुग़वी मा'ना हैं सख़्त सज़ा, इस्तिलाह़ में मय्यित या मक़्तूल के हाथ पाउं, आंख, नाक, ज़कर (या'नी आलए तनासुल) वग़ैरा कांटने को कहते हैं।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5 स. 267)

फ़य्याज़ी की ह़क़ीक़त

एक बार सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक **मदीनए मुनव्वरा** زَادَھَااللّٰہُ شَرَفًاوَّ تَعظِیماً وَّ تَکرِیماً आया तो वहां बहुत सा माल तक़्सीम किया फिर दाद त़लब निगाहों से ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز को देखते हुए पूछा : अबू ह़फ़्स ! आप ने देखा हम ने कैसी फ़य्याज़ी की ! फ़रमाया : मेरे ख़याल में तो आप ने मालदारों के माल में इज़ाफ़ा कर दिया और फ़क़ीरों को उसी त़रह़ तंग दस्ती की ह़ालत में छोड़ दिया। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۱۲)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से हमें येह म-दनी फूल मिला कि स-दक़ा व ख़ैरात पर पहला ह़क़ तंग दस्त का है न कि माल दार का, जिस का पेट पहले ही से भरा हुवा हो उस के मुंह में निवाले ठूसने के बजाए भूके के कलेजे को ठन्डक पहुंचानी चाहिये। **अल्लाह** तआ़ला हमें अ़क़्ले सलीम अ़त़ा फ़रमाए,

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ख़लीफ़ा की तौहीन पर क़त्ल का हुक्म

एक शख़्स ने बर सरे आ़म ख़लीफ़ा सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक को बुरा भला कहा और उस की सख़्त तौहीन की। सुलैमान ने उस के बारे में मश्वरा किया कि इसे क्या सज़ा दी जाए? हाज़िरीन ने कहा : फ़ौरन इस की गरदन उड़ा दी जाए मगर हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز ख़ामोश रहे। सुलैमान ने कहा : उ़मर ! आप ने कुछ नहीं फ़रमाया ! जवाब दिया : अगर आप मुझ से पूछना ही चाहते हैं तो सुनिये कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के इलावा किसी को सबो शितम करने वाले की ख़ून रेज़ी जाइज़ नहीं। येह जवाब सुन कर सब लोग उठ गए और सुलैमान भी येह कहते हुए उठ खड़ा हुवा : ऐ उ़मर ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें ख़ुश रखे।

(سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۱۲)

सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक का ए'तिराफ़

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر के शरीअ़त के ऐन मुताबिक़ दिए गए मश्वरों का ही नतीजा था कि ख़लीफ़ा सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक को आप की अ़-ज़मतों का ए'तिराफ़ था चुनान्चे उस का बयान है : "हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر जब कभी मेरे पास मौजूद न हों तो मुझे कोई ऐसा शख़्स नहीं मिलता जो उन से ज़ियादा मुआ़-मला फ़हम और सहीह मश्वरा देने वाला हो।"

(سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۰۲)

झूट से नफ़रत

एक बार हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़

عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ख़लीफ़ा सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक की रफ़ाक़त में आबो हवा की तब्दीली के लिये किसी पुर फ़ज़ा मक़ाम में गए । इत्तेफ़ाक़न वहां इन के और ख़लीफ़ा सुलैमान के ग़ुलामों के दरमियान किसी बात पर तक़रार हो गई, हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز के ग़ुलामों ने ख़लीफ़ा सुलैमान के ग़ुलामों की पिटाई कर दी, उन्हों ने इस की शिकायत ख़लीफ़ा सुलैमान से की, सुलैमान ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز को बुलाया और शिकायत के लहजे में कहा : "आप के ग़ुलामों ने मेरे ग़ुलामों को मारा है ।" आप ने फ़रमाया :"मुझे इस बात का इ़ल्म नहीं ।" सुलैमान बिगड़ कर बोला : "आप झूट बोल रहे हैं ।" फ़रमाया "जब से मैं ने होश संभाला है और मुझे मा'लूम हुवा कि झूट आदमी को नुक़्सान देता है, आज तक कभी झूट नहीं बोला ।" (سیرت ابن عبدالحکم ص ۲۴)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز को झूट से किस क़दर नफ़रत थी ! और झूट से नफ़रत होनी भी चाहिये मगर सद अफ़सोस ! आज कषरत से झूट बोलने को कमाल और तरक़्क़ी की अ़लामत जब कि सच को बे वुक़ूफ़ी और तरक़्क़ी में रुकावट तसव्वुर किया जाता है बल्कि बा'ज़ अवक़ात तो मज़्मूम मक़ासिद के लिये झूटी क़सम उठाने से भी दरैग़ नहीं किया जाता । याद रखिये ! झूट बोलने वाला दुन्या में चाहे कितनी ही काम्याबियां और कामरानियां समेट ले, आख़िरत में ना कामियां और रुस्वाइयां उस का इस्तिक़्बाल करेंगी, लिहाज़ा ! हमें चाहिये कि अपनी ज़बान को झूट बोलने से महफ़ूज़ रखें ।

झूट की मज़म्मत में तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

(1) اَلَا اِنَّ الْکِذْبَ یُسَوِّدُ الْوَجْہَ وَالنَّمِیْمَۃَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ या'नी "झूट, इन्सान को रुस्वा कर देता है और चुग़ली अ़ज़ाबे क़ब्र का सबब बनती है।"

(الترغیب والترہیب کتاب الادب، الحدیث ۴۵۲۰، ج۳،ص ۴۵۶)

(2) اِذَا کَذَبَ الْعَبْدُ تَبَاعَدَ عَنْہُ الْمَلَکُ مِیلًا مِنْ نَتْنِ مَا جَاءَ بِہٖ या'नी जब बन्दा झूट बोलता है तो फ़िरिश्ता उस की बद बू से एक मील दूर हो जाता है।

(سنن الترمذی، ج۳،ص ۳۹۲، الحدیث ۱۹۷۹)

(3) اِنَّ الصِّدْقَ یَھْدِی اِلَی الْبِرِّ وَاِنَّ الْبِرَّ یَھْدِی اِلَی الْجَنَّۃِ وَاِنَّ الرَّجُلَ لَیَصْدُقُ حَتّٰی یُکْتَبَ صِدِّیقًا وَاِنَّ الْکَذِبَ یَھْدِی اِلَی الْفُجُورِ وَاِنَّ الْفُجُورَ یَھْدِی اِلَی النَّارِ وَاِنَّ الرَّجُلَ لَیَکْذِبُ حَتّٰی یُکْتَبَ کَذَّابًا

या'नी सच बोलना नेकी की तरफ़ और नेकी जन्नत में ले जाती है और बे शक बन्दा सच बोलता रहता है यहां तक कि उसे सिद्दीक़ लिख दिया जाता है और झूट बोलना फ़िस्क़ व फ़ुजूर की तरफ़ जब कि फ़िस्क़ व फ़ुजूर दोज़ख़ में ले जाता है, और बे शक बन्दा झूट बोलता रहता है यहां तक कि उसे कज़्ज़ाब लिख दिया जाता है।

(مسلم، کتاب الادب، باب قبح الکذب، الحدیث ۲۶۰۷، ص ۱۴۰۵)

मैं झूट न बोलूं कभी गाली न निकालूं
अल्लाह मरज़ से तू गुनाहों के शिफ़ा दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 103)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام से श-रफ़े मुलाक़ात

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز एक रात तने तन्हा सुवार हो कर कहीं जाने के लिये निकले, आप के ख़ादिम मुज़ाह़िम भी आप के पीछे हो लिये। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه उन से आगे ज़रा फ़ासिले पर थे, मुज़ाह़िम ने देखा कि आप के साथ एक और शख़्स भी है जिस ने अपना हाथ आप के कन्धे पर रखा हुवा है, ह़ालांकि घर से आप तन्हा निकले थे। मुज़ाह़िम कहते हैं : मैं ने सोचा येह कोई रेहबर होगा जिसे रास्ता बताने के लिये साथ ले लिया होगा। मैं ने अपनी रफ़्तार तेज़ कर दी ताकि आप से जा मिलूं। मैं आप तक पहुंचा तो देखा कि आप तन्हा चल रह हैं और कोई आप के साथ नहीं। मैं ने अ़र्ज़ की : मैं ने अभी आप के साथ एक शख़्स को देखा था, वोह अपना हाथ आप के कन्धे पर रखे आप के साथ साथ चल रहा था, मैं समझा कि वोह कोई रेहबर होगा, लेकिन मैं आप तक पहुंचा तो देखा कि आप तन्हा हैं। फ़रमाया : मुज़ाह़िम ! क्या वाक़ेई तुम ने उन्हें देखा है ? अ़र्ज़ की : जी हां, फ़रमाया : मेरा गुमान है तुम नेक आदमी हो, दर अस्ल वोह ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام थे, वोह मुझे बता रहे थे कि मुझे इस अम्र (या'नी ख़िलाफ़त) से पाला पड़ेगा और (ह़क़ तआ़ला की जानिब से) इस पर मेरी मदद की जाएगी। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۲۷)

ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام कौन है ?

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 561 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत" के सफ़ह़ा 483 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام नबी हैं, ज़िन्दा हैं। (عمدة القاری، کتاب العلم،باب ما ذکر فی ذهاب موسی......الخ، ج ۲،ص ۸۴،۸۵)

फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ में है : मालिके बह्रो बर और हर खुश्को तर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात है और उस की अ़ता से हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم, हुज़ूर (صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) की नयाबत (या'नी नाइब होने की हैसिय्यत) से खि़ज़्र عَلَیْہِ السَّلَام के तसर्रुफ़ात खुश्की व दरिया दोनों में हैं। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 26, स. 436)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

ईमान अफ़्रोज़ ख़्वाब

हज़रते सय्यिदुना रजा बिन हैवत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ "उर्दन" के रहने वाले थे, अपने दौर के बहुत बड़े आ़बिद, खुश अख़्लाक़, दाना, ह़लीम और बा वक़ार थे, खु-लफ़ा उन की क़द्र करते थे और उन्हें अपना वज़ीर व मुशीर और अपने हुक्काम और अवलाद का निगरान मुक़र्रर किया करते थे। ख़लीफ़ा सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक के साथ उन के मरासिम बहुत गहरे थे, उसे इन पर बड़ा ए'तेमाद था और अपने राज़ उन से कह देता था। जब कि ख़ानदाने बनी मरवान में से हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ العَزِیز को सुलैमान के हां बड़ा मरतबा ह़ासिल था और उसे आप से खुसूसी ता'ल्लुक़ था। जब सुलैमान ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ العَزِیز को **मदीनए मुनव्वरा** زادَھَااللّٰہُ شَرفَاوَّ تَعظِیماً وَّ تَکرِیماً का गवर्नर बनाया तो हज़रते सय्यिदुना रजा बिन हैवत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को उन के पास भेजा ताकि वोह उन के तौ़र व त़रीक़ और सीरत व रविश की ठीक ठीक ख़बर लाएं। ग़ालिबन सुलैमान के दिल में हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल

अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز को अपने बा'द ख़लीफ़ा बनाने का इरादा मौजूद था, वोह येह मा'लूम करना चाहता था कि आप कहां तक उस की सलाहिय्यत रखते हैं। हज़रते सय्यिदुना रजा बिन हैवत رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز के पास गए तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने उन की बहुत ज़ियादा ता'ज़ीम व तकरीम की। चन्द दिन आप के यहां उन का क़ियाम रहा। मा'मूल येह था कि हर सुब्ह़ नमाज़े फ़ज्र के बा'द वोह हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز के पास चले जाते। दोनों की नीजी मजलिस होती, जब तक हज़रते सय्यिदुना रजा बिन हैवत رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ मौजूद रहते किसी को अन्दर जाने की इजाज़त न होती। एक दिन जब येह हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز के पास गए तो मुख़ातिब तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ से थे मगर उन का ज़ेहन ग़ैर हाज़िर था। दर अस्ल उन्हों ने रात एक ख़्वाब देखा था, उसी की सोच में लगे हुए थे, जब हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز ने उन से दरयाफ़्त किया : क्या बात है ? आप का ज़ेहन किसी दूसरी चीज़ की त़रफ़ मु-तवज्जेह है ? उन्हों ने फ़रमाया : दर अस्ल मैं ने आज रात एक ख़्वाब देखा है बस उसी के बारे में सोच सोच कर ता'ज्जुब कर रहा हूं। कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए बयान तो कीजिये कि आप ने क्या ख़्वाब देखा ?" उन्हों ने कहा : मैं ने आज रात देखा कि गोया आस्मान के दरवाज़े खुल गए हैं, मैं अभी उन खुले हुए दरवाज़ों को देख ही रहा था कि अचानक दो फ़िरिश्ते उतरे, उन के साथ एक तख़्त था, मैं ने ऐसा ख़ूब सूरत तख़्त कभी नहीं देखा, येह तख़्त उन्हों ने **मदीनए मुनव्वरा** زَادَھَااللّٰہُ شَرَفًاوَّ تَعظِیْماً وَّ تَکْرِیماً में ला कर रखा और

जिस रास्ते से आए थे उसी से वापस चले गए। कुछ देर बा'द वोह दोनों दोबारा आए, इस बार उन के पास ऐसे सफ़ेद कपड़े थे कि मैं ने ऐसे बेहतरीन कपड़े कभी नहीं देखे, उन की महक मेरे मशामे जां को मुअत्तर कर रही थी, मैं उन दोनों के क़रीब गया और पूछा कि येह कपड़े कैसे हैं ? उन्हों ने जवाब दिया कि येह सुन्दुस व इस्तब-रक़ हैं। फिर वोह ऊपर चले गए और थोडी देर बा'द वोह वापस आए तो उन के साथ एक पैकरे नूर बुज़ुर्ग भी थे, हुल्या येह था : आंखें बड़ी बड़ी ख़ूब सूरत सुर्ख़ व सफ़ेद और सुरमगीं, ज़ुल्फ़ें निहायत सियाह कानों की लौ तक, दोनों कन्धों के दरमियान का फ़ासिला अच्छा ख़ासा, जिस्म सुडोल और शख़्सिय्यत सरा पा हैबत व वक़ार का मुजस्समा दोनों फ़िरिश्तों ने नूरानी बुज़ुर्ग को उस तख़्त पर जो सुन्दुस व इस्तब-रक़ के फ़र्श पर बिछा हुवा था ला कर बिठा दिया, मैं ने क़रीब जा कर दरयाफ़्त किया : "येह कौन बुज़ुर्ग हैं ?" फ़िरिश्तों ने बताया : "रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم" येह सुन कर मैं तो कांप कांप गया और अदब के मारे उल्टे पाऊं हटते हटते कुछ दूर जा खड़ा हुवा मगर वहां से येह सारा मन्ज़र नज़र आ रहा था और गुफ़्त-गू भी सुनाई दे रही थी। इसी दौरान एक और बुज़ुर्ग वहां तशरीफ़ ले आए सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उन की त़रफ़ मु-तवज्जेह हुए, इस्लाम में उन के कारनामों की ता'रीफ़ फ़रमाई और फ़रमाया : तुम अबू बक्र सिद्दिक़ हो, मेरे रफ़ीक़े ग़ार हो, मगर यहां मुआ़-मला किसी और के सिपुर्द है। हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ब दस्तूर खड़े रहे, कुछ देर बा'द आवाज़ आई : इन को छोड़ दिया गया। चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ तख़्त के एक त़रफ़ ज़मीन पर बैठ गए।

फिर एक और शख़्स ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने हाज़िर हुए, आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की त़रफ़ तवज्जोह फ़रमाई, उन के इस्लामी कारनामों की ता'रीफ़ फ़रमाई और फ़रमाया : तुम फ़ारूक़ हो, जिस के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दीन को इ़ज़्ज़त बख़्शी मगर यहां मुआ़-मला किसी और के सिपुर्द है। येह भी कुछ देर खड़े रहे। फिर आवाज़ आई : इन को छोड़ दिया गया। चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ के पास बैठ गए। इसी त़रह़ एक एक ख़लीफ़ा को लाया जाता रहा, यहां तक कि आप का नम्बर आया। हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز येह सुनते ही कांपते हुए खड़े हो गए और फ़रमाया :"हां ! अबुल मिक़्दम ! ज़रा जल्दी बताइये कि मेरे साथ क्या गुज़री ?" उन्हों ने कहा : आप के दोनों हाथ गरदन से बन्धे हुए थे बड़ी देर तक आप को हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने खड़ा रखा गया बिल आख़िर रिहाई का हुक्म हुवा और आप को शैख़ैने करीमैन (या'नी हज़रते अबू बक्र व उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُمَا) के क़रीब बिठा दिया गया। हज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز को इस ख़्वाब से बड़ी हैरत हुई और हज़रते सय्यिदुना रजा बिन ह़ैवत رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہ से फ़रमाया : अगर मुझे आप के वरअ़ व तक़्वा, सिदक़ो वफ़ा और दोस्ती व रफ़ाक़त पर ए'तेमाद न होता तो मैं येही कहता कि आप का ख़्वाब सह़ीह़ नहीं क्यूंकि मैं ने फ़ैसला कर रखा है कि मैं कभी इस अम्रे ख़िलाफ़त को हाथ नहीं लगाऊंगा, मगर आप का ख़्वाब और आप की गुफ़्त-गू सुन कर मुझे ख़याल होता है कि ख़्वाही न ख़्वाही मुझे इस उम्मत की ख़िलाफ़त में मुब्तला होना ही पड़ेगा। ब ख़ुदा ! अगर मैं इस में मुब्तला हुवा तो

येह दुन्या का शर्फ़ तो है ही मगर मैं اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस के ज़रीए आख़िरत का शर्फ़ ह़ासिल कर लूंगा। (سیرت ابن عبدالحکم ص۱۱۸ ملخصًا)

अल्लाह *عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।* اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

ख़लीफ़ा कैसे बने?

दाबक़ के मक़ाम पर (जो फ़ौज की इजतिमाअ़ गाह थी) ख़लीफ़ा सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक शदीद बीमार हो गया। जब ज़िन्दगी की कोई उम्मीद बाक़ी न रही तो उस ने अपने कम सिन बेटे अय्यूब के नाम ख़िलाफ़त की वसिय्यत लिख दी मगर ह़ज़रते सय्यिदुना रजा बिन ह़ैवत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मश्वरा दिया : या **अमीरल मोअमिनीन** ! येह आप ने क्या किया ? ख़लीफ़ा को उस की क़ब्र में जो चीज़ मह़फ़ूज़ रखेगी वोह येह है कि वोह किसी नेक आदमी को ख़लीफ़ा बनाए। येह सुन कर सुलैमान ने कहा : मैं इस बारे में इस्तिख़ारा करता हूं क्यूंकि अभी मेरा अय्यूब को जा नशीन बनाने का इरादा पुख़्ता नहीं है। एक या दो दिन बा'द सुलैमान ने वोह तह़रीर फाड़ दी और ह़ज़रते सय्यिदुना रजा बिन ह़ैवत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से कहा : मेरे बेटे दावूद बिन सुलैमान के बारे में आप की क्या राय है ? उन्हों ने जवाब दिया : वोह यहां से बहुत दूर क़ुस्तुन्तुनया में है और येह भी पता नहीं कि ज़िन्दा भी है या नहीं ! काफ़ी देर सोचने के बा'द सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक ने पूछा : उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) के बारे में आप की क्या राय है ? ह़ज़रते सय्यिदुना रजा बिन ह़ैवत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कहा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं उन्हें उ़म्दा और बेहतरीन मुसलमान समझता हूं।

सुलैमान ने उन की ताईद की और कहा : **वल्लाह** ! वोह यक़ीनन बेहतरीन हैं लेकिन अगर अ़ब्दुल मलिक की अवलाद को छोड़ कर मैं उन्हें ख़लीफ़ा बना दूं तो फ़ितना उठ खड़ा होगा और वोह लोग उन्हें चैन से हुकूमत नहीं करने देंगे, हां ! एक सूरत है कि अगर मैं उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه) के बा'द अ़ब्दुल मलिक की अवलाद में से भी किसी को ख़लीफ़ा नाम ज़द कर दूं तो येह उन्हें क़बूल होंगे। चुनान्चे सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمۃ اللّٰهِ الْعَزِیز और यज़ीद बिन अ़ब्दुल मलिक को बित्तरतीब अपना जा नशीन मुक़र्रर करने के लये अपने हाथों से येह ख़िलाफ़त नामा लिखा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान और निहायत रह़म करने वाला है ! येह ख़त़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे, **अमीरुल मोअमिनीन** सुलैमान की त़रफ़ से उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه) के लिये है। बे शक मैं ने अपने बा'द इन को ख़िलाफ़त का मु–तवल्ली बनाया और इस के बा'द यज़ीद बिन अ़ब्दुल मलिक को, पस तुम लोग इन की बात सुनो और इत़ाअ़त करो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो और आपस में इख़्तेलाफ़ मत करो" येह वसिय्यत नामा लिखा और मुहर बन्द कर के "का'ब बिन जाबिर" नामी पोलीस अफ़्सर के ह़वाले किया कि वोह इस वसिय्यत नामे पर बनू उमय्या से बैअ़त ले चुनान्चे सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक की ज़िन्दगी ही में इस पर बैअ़त ले ली गई। चूंकि सुलैमान को बनू उमय्या की त़रफ़ से ख़त़रा लाहिक़ था इस लिये मरने से पहले हज़रते सय्यिदुना रजा رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه को दोबारा बैअ़त की ताकीद की। (سیرت ابن جوزی،۶۰،۶۱)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

दोनों में कितना फ़र्क़ है ?

हज़रते सय्यिदुना रजा बिन हैवत رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه फ़रमाते है : जब पहली मरतबा सुलैमान की ज़िन्दगी में ही नए ख़लीफ़ा के लिये बैअ़त ले ली गई और लोग चले गए तो उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه) मेरे पास आ कर कहने लगे : बेशक सुलैमान मेरी बड़ी इ़ज़्ज़त करता है, मुझ से बड़ी महब्बत रखता है और लुत़्फ़ व करम से पेश आता है, इस लिये मुझे अन्देशा है कि कहीं इस वसिय्यत नामे में मेरा नाम न लिख दिया हो। अगर ऐसी बात है तो मुझे बता दीजिये ताकि मैं अभी उस से मा'ज़ेरत कर लूं। मगर मैं ने जवाब दिया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं आप को एक ह़र्फ़ भी नहीं बताने वाला।" तो वोह नाराज़ हो कर चले गए। जब कि हिशाम बिन अ़ब्दुल मलिक ने मुझ से मिल कर कहा : बेशक सुलैमान की नज़र में मेरे लिये बड़ा एह़तिराम और महब्बत है, मुझे बताइये कि क्या येह वसिय्यत मेरे लिये है कि अगर ऐसा है तो फ़बीहा (या'नी ठीक), वरना मैं उस से अभी बात करता हूं क्यूंकि मेरे होते हुए किसी और को ख़लीफ़ा कैसे बनाया जा सकता है ! मैं आप का नाम किसी से ज़िक्र नहीं करूंगा, मुझे ज़रूर बताइये। तो मैं ने इन्कार किया और कहा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं तुम्हें एक लफ़्ज़ भी नहीं बताऊंगा। हिशाम ना उम्मीद हो कर वहां से चल दिया और हाथ मलते हुए कह रहा था : "क्या ख़िलाफ़त मुझ से फैर दी जाएगी और क्या ख़िलाफ़त अ़ब्दुल मलिक की अवलाद से निकल जाएगी।" (سیرت ابن جوزی ٦١)

मेरा नाम न लीजियेगा

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ने हज़रते सय्यिदुना रजा बिन हैवत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ को वसिय्यते ख़िलाफ़त लिखे जाने से क़ब्ल भी क़सम दे कर कहा था कि अगर सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक "वली अ़-हदी" के लिये मेरा नाम ले तो आप मन्अ़ कर दीजियेगा और अगर मेरा नाम न ले तो आप भी न लीजियेगा।

(سیرت ابن عبدالحکم، ص ۲۸)

ख़िलाफ़त का ए'लान

जब सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक का इन्तिक़ाल हो गया तो हज़रते सय्यिदुना रजा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ को अन्देशा हुवा कि **बनू उमय्या** आसानी से हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز की ख़िलाफ़त क़बूल न करेंगे, इस लिये कुछ देर के लिये सुलैमान की मौत को छुपाए रखा यहां तक कि दाबक़ की जामेअ़ मस्जिद में **बनू उमय्या** के अफ़राद को जम्अ़ कर के दोबारा बैअ़त ले ली। इस के बा'द सुलैमान की मौत की ख़बर दी गई और वसिय्यत नामा खोल कर पढ़ा गया जिस में हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز की ख़िलाफ़त की वसिय्यत दर्ज थी, चुनान्चे आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ के ख़लीफ़ा बनने का ए'लान कर दिया गया मगर आप कहीं दिखाई नहीं दे रहे थे। जब तलाश किया गया तो मस्जिद के आख़िरी कोने में सर झुका कर बैठे हुए मिले। ख़िलाफ़त के लिये नाम निकलने के बा'द आप की ह़ालत ग़ैर हो रही थी ह़त्ता कि उठने की ताक़त न रही थी। लोग उन्हें सहारा दे कर मिम्बर के क़रीब लाए और उस पर बिठा दिया। हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز काफ़ी देर तक

ख़ामोश बैठे रहे, बिल आख़िर पहली बात येह इरशाद फ़रमाई : "ऐ लोगो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने पोशीदा और ज़ाहिरी तौर पर कभी भी अल्लाह तआ़ला से ख़िलाफ़त का सुवाल नहीं किया था।" (سیرت ابن جوزی ص ۶۴، ۶۹ ملخصا) यूं आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه 10, स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 99 हि. को जुमुअ़तुल मुबारक के दिन ख़लीफ़ा मुक़र्रर हो गए।

(طبقات ابن سعد، ج۵،ص ۳۱۹)

एह़सासे ज़िम्मादारी की वजह से रोने लगे

हज़रते सय्यिदुना ह़म्माद عليه رحمة الله الجواد बयान करते हैं कि जब हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ख़लीफ़ा मुक़र्रर हुए तो रोने लगे। जब मैं ने रोने की वजह दरयाफ़्त की तो फ़रमाया : "ह़म्माद ! मुझे इस ज़िम्मादारी से बड़ा ख़ौफ़ आता है।" मैं ने उन से पूछा : "आप के दिल में माल व दौलत की कितनी मह़ब्बत है ?" इरशाद फ़रमाया : "बिलकुल नहीं।" तो मैं ने अ़र्ज़ की : "फिर आप ख़ौफ़ज़दा न हो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप की मदद फ़रमाएगा।" (تاریخ الخلفاء، ص ۱۸۵)

मेरा दिल पाक हो सरकार ! दुन्या की मह़ब्बत से
मुझे हो जाए नफ़रत काश ! आक़ा मालो दौलत से

(वसाइले बख़्शिश, स. 237)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का तर्ज़े अ़मल मुला-ह़ज़ा फ़रमाया कि बिग़ैर त़लब के ख़िलाफ़त का आ'ला तरीन मन्सब मिलने पर ख़ुश होने के बजाए एह़सासे ज़िम्मादारी की वजह से किस क़दर परेशान हो गए और एक हम हैं जो ओ़-हदा व मन्सब के ह़ुसूल के लिये दौड़ धूप

करते हैं और अपनी ख़्वाहिश पूरी हो जाने पर फूले नहीं समाते लेकिन अगर हमारी तगो दौ का मन पसन्द नतीजा न निकले तो हमारा मूड ऑफ़ हो जाता है। सिर्फ़ इसी पर बस नहीं बल्कि (مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ) ह़सद व बुग़्ज़, चुग़ली व ग़ीबत, तोहमत और ऐ़ब जूई का एक संगीन सिलसिला शुरूअ़ हो जाता है। नीज़ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمۃُ اللّٰهِ الْعَزِيز को तसल्ली देने वाले की म-दनी सोच भी मरह़बा कि अगर ह़िर्से माल दिल में नहीं है तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आ़फ़िय्यत व सलामती नसीब होगी क्यूंकि ह़िर्से माल बहुत सी तबाहियों का सबब है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

مَاذِئْبَانِ جَائِعَانِ اُرْسِلَا فِیْ غَنَمٍ بِاَفْسَدَ لَهَا مِنْ حِرْصِ الْمَرْءِ عَلَى الْمَالِ وَالشَّرَفِ لِدِيْنِهٖ

"या'नी दो भूके भेड़िये अगर बकरियों के रेवड़ में छोड़ दिये जाएं तो इतना नुक़्सान नहीं पहुंचाते जितना कि माल व दौलत की ह़िर्स और हुब्बे जाह इन्सान के दीन को नुक़्सान पहुंचाते हैं।"

(جامع الترمذی، کتاب الزھد، الحدیث: ۲۳۸۳، ج۴، ص۱۶۶)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَنَّان इस ह़दीषे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : निहायत नफ़ीस तश्बीय्या है मक़्सद येह है कि मोमिन का दीन गोया बकरी है और इस की ह़िर्से माल, ह़िर्से इ़ज़्ज़त गोया दो भूके भेड़िये हैं। मगर येह दोनों भेड़िये मोमिन के दीन को इस से ज़ियादा बरबाद करते हैं जैसे ज़ाहिरी भूके भेड़िये बकरियों को तबाह करते हैं कि इन्सान माल की ह़िर्स में ह़राम व ह़लाल की तमीज़ नहीं करता, अपने अ़ज़ीज़ अवक़ात को माल

ह़ासिल करने में ही ख़र्च करता है फिर इ़ज़्ज़त ह़ासिल करने के लिये ऐसे जतन करता है जो बिलकुल ख़िलाफ़े इस्लाम है।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7 स. 19)

काश ! हमें ऐसा ख़ौफ़े ख़ुदा नसीब हो जाए कि हुब्बे जाह से जान छूट जाए और ह़िर्स से भी, किसी "वाह" की ख़्वाहिश हो न किसी "आह" का ग़म, सिर्फ़ और सिर्फ़ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ हमारे पेशे नज़र रहे।

अपनी रिज़ा [1] का देदे मुज़्दा [2]

*या **अल्लाह** मेरी झोली भर दे*

(वसाइले बख़्शिश, स. 109)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इ़त्र वाले कपड़े धो डाले

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز बहुत ख़ुश पोशाक और उ़म्दा से उ़म्दा इ़त्र इस्ति'माल किया करते थे मगर जब ख़िलाफ़त आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के सिपुर्द की गई तो घुटनों में सर दे कर रोने लगे, लोग समझे कि शायद ख़िलाफ़त मिलने की ख़ुशी में रो रहे हैं, कुछ देर बा'द सर उठाया, आंखें मलीं और दुआ़ मांगी :

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِیْ عَقْلاً يَّنْفَعُنِیْ وَاجْعَلْ مَا اَصِيْرُ اِلَيْهِ اَهَمَّ مَا يَزُوْلُ عَنِّیْ

*या'नी या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे अ़क़्ले नाफ़ेअ़ अ़ता फ़रमा और जो काम मैं करने जा रहा हूं उसे मेरी नज़र में अहम बना दे उस चीज़ के मुक़ाबले में जो मुझ से दूर होने वाली है।"* फिर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه घर गए और इ़त्र वाले कपड़ों को पानी से धो डाला। (سیرت ابن عبد الحکم ص ۱۲۳)

---

1 : राज़ी होना 2 : ख़ुश ख़बरी

तुम्हारे पास अ़द्ल और नर्मी आ रही है

जिस दिन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ العَزِيز ने मस्नदे ख़िलाफ़त को ज़ीनत बख़्शी। उस से एक रात पहले किसी ने ख़्वाब में देखा कि एक शख़्स आस्मान से कह रहा है : "लोगो ! तुम्हारे पास अ़द्ल और नर्मी आ रही है, अब मुसलमानों में नेकियों का चर्चा होगा।" ख़्वाब देखने वाले ने दरयाफ़्त किया : "वोह कौन है ?" आवाज़ देने वाला आस्मान से ज़मीन पर उतरा और अपने हाथ से लिखा "**उ़मर !!**" (سیرت ابن عبدالحکم ص۳۱)

ख़िलाफ़त की बिशारत

हज़रते सय्यिदुना वुहैब رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का बयान है कि एक मरतबा मैं मक़ामे इब्राहीम के क़रीब सोया हुवा था, मैं ने ख़्वाब में एक शख़्स को बाबे बनी शैबा से अन्दर आते हुए देखा जो कह रहा था : लोगो ! तुम पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने एक वाली मुक़र्रर किया है। मैं ने पूछा : कौन ? उस ने अपने नाख़ुन की तरफ़ इशारा किया जिस पर "ع م ر" लिखा हुवा था। उस के बा'द हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ العَزِيز की बैअ़त का वाक़िआ़ रु नुमा हो गया। (حلیۃ الاولیاء ج۵ ص۳۷۱)

हिदायत याफ़्ता ख़लीफ़ा

अबू अ़म्बस का बयान है कि मैं ख़ालिद बिन यज़ीद बिन मुआ़विया के साथ बैतुल मुक़द्दस की मस्जिद में खड़ा था कि एक नौ जवान ने आ कर ख़ालिद को सलाम किया, ख़ालिद ने सलाम का जवाब दिया और मुसा–फ़हा किया तो नौ जवान ने पूछा : هَلْ عَلَيْنَا مِنْ عَيْنٍ या'नी क्या हम पर कोई निगह बान है ? ख़ालिद के बजाए मैं ने

जल्दी से कहा : "हां ! तुम पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से एक फ़िरासत वाला निगह बान है।" येह सुन कर उस नौ जवान पर रिक़्क़त त़ारी हो गई और उस की आंखों से आंसू बह निकले। जब वोह चला गया तो मैं ने ख़ालिद से पूछा : येह कौन था ? कहा : क्या तुम इसे नहीं जानते ? येह उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ है और अगर तुम ज़िन्दा रहे तो इसे हिदायत याफ़्ता ख़लीफ़ा देखोगे। (سیرت ابن جوزی ص ۷۵)

नसीह़ते न-बवी

हज़रते सय्यिदुना इमाम खुज़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने नबिय्ये मुकर्रम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़्वाब में ज़ियारत की तो इरशाद हुवा : तुम अ़न क़रीब मेरी उम्मत के मुआ़-मलात के वाली बनोगे तो ख़ून बहाने से बचना, ख़ून बहाने से बचना, क्यूंकि लोगों में तुम्हारा नाम उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां "जाबिर" है। (سیرت ابن جوزی ص ۲۸۶)

इन दोनों की त़रह़ ख़िलाफ़त करना

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के रुख़े रोशन की ख़्वाब में ज़ियारत की, आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे अपने क़रीब बुला कर इरशाद फ़रमाया :

يَاعُمَرُ! اِذَا وُلِّيتَ فَاعْمَلْ فِیْ وِلَايَتِکَ نَحْواً مِّنْ عَمَلِ هٰذَيْنِ *या'नी ऐ उ़मर ! जब तुम्हें ख़लीफ़ा बनाया जाए तो वैसे ही काम करना जेसे इन दोनों ने अपनी ख़िलाफ़त के दौरान किये थे।* मैं ने अ़र्ज़ की, कि : येह दोनों ह़ज़रात कौन हैं ? फ़रमाया : अबू बक्र और उ़मर (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) (سیرت ابن جوزی ص ۲۸۴)

ह़ज्जाज की ज़बान पर ज़िक्रे ख़िलाफ़त

अम्बसा बिन सई़द का बयान है कि ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ ने गुनूदगी की ह़ालत में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ العَزِيز का तज़किरा किया तो मैं ने ह़ज्जाज को ख़ुश करने के लिये आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه पर नुक्ता चीनी की मगर ह़ज्जाज उसी कैफ़िय्यत में कहने लगा : "ख़ामोश ! हम कहते हैं कि वोह इस अम्रे ख़िलाफ़त के सर बराह बनेंगे और अ़दलो इन्साफ़ करेंगे ।" फिर मैं वहां से चला आया, बेदार होने के बा'द ह़ज्जाज ने मुझे बुला कर कहा कि जो बात गुनूदगी की ह़ालत में मेरे मुंह से निकली थी अगर तुम ने किसी से कही तो मैं तुम्हारी गरदन उड़ा दूंगा । (سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۱۸)

सुलैमान के लिये ख़ुश ख़बरी

सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक के ख़लीफ़ा बनने से पहले ही एक शख़्स ने उसे येह ख़बर दे दी थी कि चन्द दिन तक तुम्हें ख़िलाफ़त मिलेगी, फिर इसी त़रह़ हुवा, जब येह शख़्स दोबारा ख़लीफ़ा सुलैमान के पास आया तो उस ने पूछा : मेरे बा'द कौन ख़लीफ़ा होगा ? उस ने कहा : मैं नहीं जानता । सुलैमान ने कहा : तुझ पर अफ़सोस है, क्या तुम्हें मेरा बेटा अय्यूब नज़र नहीं आता ! उस ने कहा : मैं अय्यूब को ख़ु-लफ़ा की फ़ेहरिस्त में नहीं पाता, अलबत्ता इतना ज़रूर जानता हूं कि आप अपना ख़लीफ़ा ऐसे शख़्स को बनाएंगे जो आप के बहुत से गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाएगा । (سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۲۱)

ख़िलाफ़त से दस्त बरदार होने की पेशकश

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ख़िलाफ़त की अ़ज़ीम ज़िम्मादारी के उठाने से लर्ज़ां तरसां थे। चुनान्चे आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मस्जिद में बर सरे मिम्बर पेशकश की : "ऐ लोगो ! मेरे कन्धों पर ख़िलाफ़त का बारे गिरां रख दिया गया है मगर मैं उसे अन्जाम देने की त़ाक़त नहीं रखता लिहाज़ा मेरी बैअ़त का जो तौक़ तुम्हारी गरदन में है उसे ख़ुद उतारे देता हूं, तुम जिसे चाहो अपना ख़लीफ़ा बना लो।" जब ह़ाज़िरीन ने येह सुना तो बेचैन हो गए और सब ने बयक ज़बान कहा : "हम ने आप ही को ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया, हम आप (رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه) से राज़ी हैं, हम सब आप ही की ख़िलाफ़त पर मुत्तफ़िक़ हैं। आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम ले कर उमूरे ख़िलाफ़त सर अन्जाम दें, **अल्लाह** इस में ब-रकत देगा।" (سیرت ابن جوزی ص ۶۵)

__अल्लाह__ عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़लीफ़ा बनने के बा'द इस्लाह़ी बयान

जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने लोगों की येह अ़क़ीदत देखी और आप को इस बात का यक़ीन हो गया कि लोग ब ख़ुशी मेरी ख़िलाफ़त क़बूल करने पर आमादा हैं तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो षना की और ह़ुज़ूरे अकरम

صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम पढ़ने के बा'द लोगों से कुछ इस त़रह़ मुख़ात़िब हुए : "ऐ लोगो ! मैं तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने की वसिय्यत करता हूं, तुम तक़्वा इख़्तियार करो और अपनी आख़िरत के लिये नेकियां करो । बेशक जो शख़्स आख़िरत के लिये नेक आ'माल करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की दुन्यवी ह़ाजात को ख़ुद पूरा फ़रमाएगा । **ऐ लोगो !** तुम अपने बात़िन की इस्लाह़ की कोशिश करो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे ज़ाहिर की इस्लाह़ फ़रमाएगा । मौत को कषरत से याद किया करो और मौत से पहले अपने लिये नेक आ'माल का ख़ज़ाना इकठ्ठा कर लो, मौत तमाम लज़्ज़ात ख़त्म कर देगी । **ऐ लोगो !** तुम अपने आबाओ अजदाद के अह़वाल में ग़ौरो फ़िक्र किया करो वोह भी दुन्या में आए और ज़िन्दगी गुज़ार कर चले गए इसी त़रह़ तुम भी चले जाओगे । अगर तुम उन के अन्जाम को याद न रखोगे तो मौत तुम्हारे लिये बहुत सख़्ती का बाइ़ष होगी लिहाज़ा मौत से पहले मौत की तय्यारी कर लो, और बेशक येह उम्मत अपने रब عَزَّوَجَلَّ, उस के नबी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और उस की किताब कुरआने मजीद के बारे में एक दूसरे से झगड़ा नहीं करेगी बल्कि उन के दरमियान अ़दावत व फ़साद तो दिरहम व दीनार की वजह से होगा । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं किसी एक को भी ना ह़क़ कोई चीज़ न दूंगा और ह़क़दार को उस का ह़क़ ज़रूर दूंगा ।" उस के बा'द फ़रमाया : "**ऐ लोगो !** जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त करे, तुम पर उस की इत़ाअ़त वाजिब है और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त न करे उस की इत़ाअ़त हरगिज़ न करो । जब तक मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त करता रहूं उस वक़्त तक तुम

मेरी इत़ाअ़त करना अगर तुम देखो कि (مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ) मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त नहीं कर रहा तो उस मुआ़-मले में तुम मेरी हरगिज़ इत़ाअ़त न करना।" (عیون الحکایات،ص ۸۳)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

अ़-हदे सिद्दीक़ी व फ़ारूक़ी की याद ताज़ा कर दी

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز को ख़लीफ़ा बनने के बा'द मुसलमानों के हुक़ूक़ की निगहदाश्त और अल्लाह तआ़ला के अह़कामात की ता'मील और नफ़ाज़ की फ़िक्र दामन गीर रहती जिस की वजह से अकषर चेहरे पर परेशानी और मलाल के आषार दिखाई देते। अपनी ज़ौजए मोह़तरमा ह़ज़रते फ़ातिमा बिन्ते अ़ब्दुल मलिक رحمۃ اللہ تعالی علیہا को हुक्म दिया कि अपने ज़ेवरात बैतुल माल में जम्अ़ करा दो वरना मुझ से अलग हो जाओ। वफ़ा शिआ़र और नेक बीवी ने ता'मील की। घर के काम काज के लिये कोई मुलाज़िमा न थी तमाम काम वोह ख़ुद करतीं। अल ग़रज़ आप की ज़िन्दगी दरवेशी और फ़क़्र व इस्तिग़्ना का नमूना बन गई। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की तमाम तर कोशिशें इस अम्र पर लगी हुई थी कि एक बार फिर अ़-हदे सीद्दीक़ी व फ़ारूक़ी की याद ताज़ा कर दें। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अहले बैत के साथ होने वाली ज़ियादतियों का इज़ाला किया, उन की ज़ब्त़ की हुई जाएदादें उन्हें वापस कर दीं गईं। एह़याए शरीअ़त के लिये काम किया। बैतुल माल को ख़लीफ़ा की बजाए अ़वाम की मिल्किय्यत क़रार दिया। इस की हि़फ़ाज़त का निहायत मज़्बूत इन्तिज़ाम किया, इस में से तोह़फ़े तहा़इफ़ और बेजा इन्आ़मात

देने का त़रीक़ा मौक़ूफ़ कर दिया। ज़िम्मियों से हुस्ने सुलूक की रिवायत इख़्तियार कीं। इस के इलावा भी मुआ़शी और सियासी निज़ाम में कई इस्लाह़ात कीं। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللهِ العزيز का ज़मानए ख़िलाफ़त अगर्चे **अमीरुल मोअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تَعالٰی عَنْهُ की त़रह़ बहुत ही मुख़्तसर था लेकिन आ़लमे इस्लाम के लिये तारीख़ी ज़माना था। आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه से पहले मुख़्तलिफ़ हुक्मरान इस्लाम के दिये हुए निज़ामे मज़्हब व अख़्लाक़ और सियासत व हुकूमत में त़रह़ त़रह़ की आमेज़िशें कर रहे थे। आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه ने उन सब ख़राबियों से हुकूमत व मुआ़शरे को पाक करने की कोशिशें कीं, हुक्मरानों की इम्तियाज़ी ख़ुसूसिय्यात मिटाने की पूरी कोशिश की, अमीर ग़रीब के इम्तियाज़ात, जब्र व इस्तिबदाद के निशानात और हुक्म रानों के ज़ुल्म व सितम को ख़त्म कर के इस्लाम का निज़ामे अ़द्ल दोबारा क़ाइम किया, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللهِ العزيز का सब से बड़ा कारनामा येह है कि वोह ख़िलाफ़ते इस्लामिय्या को ख़िलाफ़ते राशिदा की त़र्ज़ पर क़ाइम कर के अ़-हदे सिद्दीक़ी और अ़-हदे फ़ारूक़ी को दुन्या में फिर वापस ले आए थे। तजदीद व इस्लाह़ के इसी कारनामे की ब दौलत आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه का ज़माना ख़िलाफ़ते राशिदा में शुमार किया जाता है।

ख़िलाफ़ते राशिदा किसे कहते हैं ?

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 561 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत में है कि इमामे अहले सुन्नत आ'ला ह़ज़रत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत,

मौलाना शाह अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की बारगाह में सुवाल किया गया कि ख़िलाफ़ते राशिदा किसे कहते हैं और उस के मिस्दाक़ कौन कौन हुए, और अब कौन कौन होंगे ? जवाब में **इरशाद** फ़रमाया : ख़िलाफ़ते राशिदा वोह ख़िलाफ़त कि मिन्हाजे नुबुव्वत (या'नी न-बवी त़रीक़े) पर हो जैसे ह़ज़राते ख़ु-लफ़ाए अर-बआ़ (या'नी चार ख़ु-लफ़ाए किराम ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी और ह़ज़रते मौला अ़ली (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم) व इमामे ह़सने मुज्तबा व **अमीरुल मोअमिनीन** उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने की और अब मेरे ख़याल में ऐसी ख़िलाफ़ते राशिदा इमाम महदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ही क़ाइम करेंगे *(وَالْغَيْبُ عِنْدَ اللّٰه या'नी : और ग़ैब का इ़ल्म **अल्लाह** तआ़ला को है।)*

(मलफ़ूज़ात, स.160)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़ुरासानी का ख़्वाब

ख़ुरासान में एक शख़्स ने ख़्वाब में देखा कि कोई शख़्स उस से कह रहा है कि जब बनू उमय्या में (पेशानी पर) निशान वाला ख़लीफ़ा हो तो तुम फ़ौरन जा कर उस की बैअ़त कर लेना इस लिये कि वोह "इमामे आ़दिल" होगा। चुनान्चे वोह बनू उमय्या के हर ख़लीफ़ा का हुल्या दरयाफ़्त करता रहा। जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ العزيز ख़लीफ़ा हुए तो उस ने पे दर पे तीन दिन तक ख़्वाब देखा कि उस से बैअ़त के लिये कहा जा रहा है, इस पर वोह शख़्स हाथों हाथ ख़ुरासान से रवाना हो गया और दिमिश्क़ पहुंच कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बैअ़त कर ली। (تاریخ الخلفاء ص ۱۸۱)

ख़लीफ़ा बनाने वाले के बारे में हुस्ने ज़न

मुहम्मद बिन अ़ली बिन शाफ़ेअ़ कहते हैं : मेरा हुस्ने ज़न है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक को उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ) को ख़लीफ़ा बनाने के सबब जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा। (سیرت ابن جوزی ۶۳)

लोग बैअ़त के लिये टूट पड़े

जब सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक को दफ़्न किया जा चुका तो लोग परवाना वार हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ الْعَزِیز से बैअ़त के लिये टूट पड़े हत्ता कि हुजूम की वजह से आप के साहिब ज़ादे की क़मीस का गिरीबान फट गया।

(سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۲۴)

बैअ़त के अल्फ़ाज़

एक शख़्स ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ العزیز के हाथ पर बैअ़त करना चाही तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने उस से इन अल्फ़ाज़ पर बैअ़त ली :

تُطِیْعُنِیْ مَااَطَعْتُ اللّٰہَ فَاِنْ عَصَیْتُ اللّٰہَ فَلَاطَاعَۃَ لِیْ عَلَیْکَ *या'नी तुम मेरी उस वक़्त तक इत़ाअ़त करोगे जब तक मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त करूं और अगर मैं उस की ना फ़रमानी करूं तो तुम पर मेरी इत़ाअ़त लाज़िम नहीं।*

(سیرت ابن جوزی ص ۶۷)

मुझे इस मन्सब की चाह नहीं थी

जब हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ العزیز के चचा ज़ाद भाई और मर्हूम ख़लीफ़ा के बेटे हिशाम ने बैअ़त के लिये

अपना हाथ आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के हाथ में दिया तो उस के मुंह से निकला : اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ *(या'नी हम अल्लाह के माल हैं और हम को उसी की त़रफ़ फिरना है ।)* आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कहा : اَجَلْ اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ *(या'नी बे शक हम अल्लाह के माल हैं और हम को उसी की त़रफ़ फिरना है ।)* फिर फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं इस मक़ाम व मन्सब की ख़्वाहिश नहीं रखता था क्यूंकि येह ऐसी शै नहीं है जिस के ज़रीए़ मैं रब तआ़ला का कुर्ब पा सकूं ।

(تاریخِ دمشق، ج ۴۵ ص ۱۵۹)

आप रन्जीदा क्यूं हैं ?

जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक की तदफ़ीन के बा'द वापस हुए तो बहुत रन्जीदा और ग़मगीन दिखाई दे रहे थे, ग़ुलाम ने सबब पूछा तो फ़रमाया : आज इस दुन्या में कोई रन्जीदा और फ़िक्रमन्द हो सकता है तो वोह मैं हूं, मैं चाहता हूं कि इस से पहले कोई ह़क़दार मुझ से अपना ह़क़ त़लब करे मैं उस का ह़क़ उस तक पहुंचा दूं । (تاریخ الخلفاء ص ۱۸۵)

शाही सुवारी से इन्कार

ख़िलाफ़त का बारे गिरां उठाते ही फ़र्ज़ की तकमील के एह़सास ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز की ज़िन्दगी बदल कर रख दी । जब सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक की तदफ़ीन से फ़ारिग़ हो कर आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ क़ब्रिस्तान से वापस आने लगे तो सुवारी के लिये उ़म्दा नसल के ख़च्चर और तुर्की घोड़े पेश किये

गए। पूछा : “येह क्या है?” अर्ज़ की गई : “येह शाही सुवारियां हैं जिन पर कभी कोई सुवार नहीं हुवा, इन का मसरफ़ येह है कि नया ख़लीफ़ा ही पहली बार इन पर सुवार हुवा करता है, चूंकि अब आप (رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه) ही हमारे ख़लीफ़ा हैं लिहाज़ा इन में से किसी को क़बूल फ़रमाइये।” मगर हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز इन में से किसी पर सुवार न हुए और अपने ख़ादिमे ख़ास मुज़ाहिम से फ़रमाया : “मेरे लिये मेरा ख़च्चर ही काफ़ी है, इन्हें मुसलमानों के बैतुल माल में दाख़िल कर दो।” (سیرت ابن عبدالحکم ص ۳۳)

मुझे अपने जैसा ही समझो

जब रवाना होने लगे तो एक सिपाही ने आगे बढ़ कर अर्ज़ की : “हुज़ूर ! चलिये, मैं आप के ख़च्चर की लगाम पकड़ कर साथ साथ चलता हूं।” हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز ने उसे भी मन्अ़ कर दिया और फ़रमाया : “मैं भी तुम्हारी त़रह़ ही एक आ़म मुसलमान हूं।” (سیرت ابن جوزی ص ۶۵ ملتقطاً)

शाही ख़ैमे में नहीं गए

शाही दस्तूर था कि मस्नदे ख़िलाफ़त संभालने पर ख़ु-लफ़ा के लिये आ'ला क़िस्म के ख़ैमे और शामियाने नस्ब किये जाते थे, चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز के लिये भी नए शाही ख़ैमे और शामियाने आरास्ता किये गए। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उन्हें देख कर फ़रमाया : “येह क्या है?” अर्ज़ की गई : “शाही ख़ैमे और शामियाने हैं जो कभी इस्ति'माल नहीं होते, उन में नए ख़लीफ़ा की सब से पहली नशिस्त होती है।” अपने वफ़ादार ग़ुलाम से फ़रमाया :

"मुज़ाहिम ! इन को मुसलमानों के बैतुल माल में शामिल कर दो ।" फिर आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने ख़च्चर पर सुवार हो कर उन आ़लीशान कालीनों तक पहुंचे जो नए ख़लीफ़ा के ए'ज़ाज़ में बिछाए गए थे और उन को पाउं से हटाते हुए नीचे की चटाई पर बैठ गए। फिर उन कालीनों को भी मुसलमानों के बैतुल माल में जम्अ़ करवाने का हुक्म दे दिया। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۳۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो ।* اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तीन फ़ौरी अह़काम

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने क़लम काग़ज़ त़लब किया और फ़ौरी त़ौर पर तीन अह़काम जारी किये। गोया उन के नज़्दीक ख़लीफ़ा बन जाने के बा'द इन में एक लम्हे की ताख़ीर भी रवा नहीं थी। **पहला हुक्म** येह था कि मस्लमा बिन अ़ब्दुल मलिक को क़ुस्तुन्तुनया से वापसी की इजाज़त है। इस का पसे मन्ज़र येह था कि ख़लीफ़ा सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक ने अपनी ज़िन्दगी में उन्हें क़ुस्तुन्तुनया के बर्री व बह़री जेहाद के लिये भेजा था, क़रीब था कि शहर फ़त्ह़ हो जाए मगर येह दुश्मन के धोके में आ गए, ह़रीफ़ों ने इन के खाने पीने और दूसरी ज़रूरिय्यात के सामान पर क़ब्ज़ा कर के शहर का दरवाज़ा बन्द कर लिया। सुलैमान को इस की इत्तेलाअ़ पहुंची तो उसे इस फ़रैब ख़ुर्दगी (या'नी धोके में आ जाने) का बेहद रंज हुवा, और उस

ने क़सम खा ली कि जब तक मैं ज़िन्दा हूं उन्हें वापस आने की इजाज़त नहीं दूंगा। मस्लमा और उन की फ़ौज के लिये वहां ठहरना दूभर हो गया था, भूक और बद ह़ाली में जानवरों को खाने तक नौबत पहुंची, कोई शख़्स अपनी सुवारी से इधर उधर होता तो लोग उसे ज़ब्ह़ कर के खा जाते, मगर सुलैमान बार बार की अपील के बा वुजूद अपने फ़ैसले पर क़ाइम था। हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزیز उन की ह़ालत से परेशान थे। चुनान्चे जब वोह ख़लीफ़ा हुए तो उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर इस अम्र की गुन्जाइश नज़र न आई कि मुसलमानों के मुआ़-मलात उन के सिपुर्द हों और वोह उन बेचारों के मुआ़-मले में एक लम्ह़े की ताख़ीर भी रवा रखें। **दूसरा हुक्म** जो तह़रीर फ़रमाया वोह उसामा बिन ज़ैद तनोख़ी की बरत़रफ़ी थी, येह मिस्र के ख़िराज का तह़सील दार और बड़ा जाबिर व ज़ालिम था, ख़िलाफ़े कानून लोगों के हाथ काट डालता, चोपायों के पेट चाक कर के उन के पेट में गोश्त के टुकडे भर के बह़री दरिन्दों के सामने डाल देता। हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزیز ने हुक्म दिया कि उसे हर अ़लाक़े की जेल में एक साल रखा जाए और उस के हाथ पाउं बांध दिये जाएं, सिर्फ़ नमाज़ के वक़्त खोला जाए और फिर बान्ध दिया जाए। **तीसरा हुक्म** यज़ीद बिन अबी मुस्लिम की अफ़रीक़ा से बरत़रफ़ी का था, येह बड़ा बेधब ह़ाकिम था, ब ज़ाहिर बड़े ज़ोह्द व इ़बादत का मुज़ाहरा करता था, मगर छोटे बड़े तमाम शाही फ़रामीन को नाफ़िज़ करना ज़रूरी समझता था, ख़्वाह वोह कितने ही ज़ालिमाना और मुख़ालिफ़े ह़क़ क्यूं न हों। ऐन इस ह़ालत में जब कि उस के सामने लोगों

को सज़ाएं दी जातीं वोह ज़िक्र व तस्बीह़ और वज़ीफ़े में मश्ग़ूल रहता और साथ ही साथ सज़ा के बारे में हिदायात भी देता म-षलन यूं कहता : "اللّٰہ اکبر اللّٰہ اکبر! ऐ लड़के ! इस को रस्सी से ज़रा ठीक से बांध" वग़ैरा। उस की इसी बद तरीन ह़ालत की वजह से ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز ने उस की मा'ज़ूली का हुक्म तह़रीर फ़रमाया। बहर ह़ाल येह अस्बाब थे जिन की बिना पर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने इन तीनों उमूर में फ़ौरी फ़ैसला ज़रूरी समझा।

(سیرت ابن عبدالحکم ص ۳۱)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

पहले साइल की मदद

फिर एक शख़्स लाठी टेकता हुवा आगे बढ़ा और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز के सामने पहुंच कर कहने लगा : "या **अमीरल मोअमिनीन** ! मैं शदीद ह़ाजत मन्द और फ़ाक़ों का मारा हुवा हूं, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ आप से मेरे यूं आप के सामने खड़े होने के बारे में पूछेगा।" इतना कहने के बा'द वोह फूट फूट कर रोने लगा। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز ने दरयाफ़्त फ़रमाया : तुम्हारे घर में कितने अफ़राद हैं ? उस ने अ़र्ज़ की : पांच ! मैं, मेरी बीवी और तीन बच्चे। चुनान्चे आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने उस के लिये दस दीनार वज़ीफ़ा मुक़र्रर कर दिया और हाथों हाथ तीन सो दीनार बैतुल माल से और 200 दीनार अपनी जैबे ख़ास से भी अ़ता फ़रमाए।

(سیرت ابن جوزی ص ۲۰۷ ملخصا)

क़स्रे ख़िलाफ़त में क़ियाम नहीं फ़रमाया

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز से पूछा गया : क्या आप क़स्रे ख़िलाफ़त में क़ियाम फ़रमाएंगे ? तो फ़रमाया : नहीं ! अभी इस में अबू अय्यूब (या'नी सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक) के घरवाले हैं, मेरे लिये मेरा ख़ैमा ही काफ़ी है। चुनान्चे क़स्रे ख़िलाफ़त ख़ाली होने तक हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز अपने पहले घर में ही क़ियाम पज़ीर रहे।

(سیرت ابن جوزی ۶۲)

साबिक़ ख़लीफ़ा की मख़्सूस अश्या बैतुल माल में जम्अ़ करवा दीं

उस दौर में येह आ़म रवाज था कि जब किसी ख़लीफ़ा का इन्तिक़ाल हो जाता तो उस के मल्बूसात और इत्र वग़ैरा में से जो चीज़ें उस की इस्ति'माल शुदा होतीं वोह उस के अहलो इयाल का हक़ समझी जातीं और नए इत्र और लिबास आने वाले ख़लीफ़ा की नज़्र कर दिया जाता। सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक के इन्तिक़ाल के बा'द उस के अहले ख़ाना ने सुलैमान की तेल और ख़ुश्बू की शीशियां और कपड़े हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز की ख़िदमत में पेश करते हुए कहा : येह चीज़ें आप की हैं और वोह हमारी हैं। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया "येह" और "वोह" का क्या मत़लब ? तो उन्हों ने दस्तूर बताया मगर हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने फ़रमाया : येह सारी चीज़ें न मेरी हैं, न सुलैमान की और न तुम्हारी, फिर आवाज़ दी : मुज़ाहिम ! इन को मुसलमानों के बैतुल माल में पहुंचाओ। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۳۴)

खूब रू कनीज़ों की पेश कश

येह सूरते ह़ाल देख कर साबिक़ उ-मरा व वु-ज़रा को अपनी ऐश कोशियों की बक़ा की फ़िक्र पड़ गई। चुनान्चे वोह सर जोड़ कर बैठ गए और कहने लगे : जो कुछ आज तुम ने देखा है इस के बा'द हमारे लिये आ़लीशान सुवारियों, ख़ैमों, शामियानों, ज़ीनत व आराइश और फ़र्श फ़रोश की तवक़्क़ोअ़ बे सूद है, अब सिर्फ़ एक चीज़ बाकी रह जाती है और वोह हैं कनीज़ें ! येह उन की ख़िदमत में पेश कर के देखो मुमकिन है इन्हीं से तुम्हारी मुराद बर आए, वरना तुम्हें इन "साहिब" से कोई तवक़्क़ोअ़ नहीं रखनी चाहिये। चुनान्चे ह़सीनो जमील कनीज़ों को लाकर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز की ख़िदमत में पेश किया गया मगर आप एक एक से दरयाफ़्त करते : तुम कौन हो ? किस की हो ? और किस ने तुम्हें यहां भेजा है ? हर कनीज़ बताती कि वोह अस्ल में फुलां की थी और इस त़रह़ ज़बर दस्ती पकड़ कर उसे यहां लाया गया। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه ने सब के बारे में हुक्म फ़रमाया कि इन्हें इन के मालिकों को वापस कर दिया जाए, चुनान्चे सुवारी दे कर उन्हें उन के अस्ल शहरों की त़रफ़ वापस कर दिया गया जब उन लोगों ने येह ह़ालत देखी तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه से क़त़ई मायूस हो गए और उन्हें यक़ीन हो गया कि आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه लोगों को उन का ह़क़ दिलाएंगे और इन्साफ़ का सुलूक फ़रमाएंगे।

(سیرت ابن عبد الحکم ص ۳۴)

अब तुम से दिल चस्पी नहीं रही

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز

के आज़ाद कर्दा गुलाम सहल बिन सदक़ा का बयान है कि जब आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ख़िलाफ़त मिली तो घर के अन्दर से रोने की घुटी घुटी आवाजें सुनी गईं। दरयाफ़्त करने से मा'लूम हुवा कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने अपनी कनीज़ों से फ़रमाया : "मुझ पर ऐसे काम का बोझ आन पड़ा है जिस ने तुम से मेरी दिल चस्पी ख़त्म कर दी, अब तुम्हें इख़्तियार है कि जिसे आज़ादी की ख़्वाहिश हो मैं उसे आज़ाद कर देता हूं, और जो मेरे यहां रहना चाहे, खूब सोच ले कि उसे अब मुझ से कुछ न मिलेगा।" इस लिये वोह आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से ना उम्मीद हो कर रो रही हैं।

(سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۲۱ وسیرت ابن جوزی ص ۷۰)

इक्तिदार के बार से अश्क बार

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز की ज़ौजए मोहतरमा رحمۃاللہ تعالٰی علیھا का बयान है कि जब आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मर्तबए ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ हुए तो घर आ कर मुसल्ले पर बैठ कर रोने लगे, यहां तक कि आप की दाढ़ी मुबारक आंसूओं से तर हो गई, मैं ने अ़र्ज़ की : "या **अमीरुल मोअमिनीन** आप क्यूं रोते हैं ?" फ़रमाया : "मेरी गरदन पर उम्मते सरकार का बोझ डाल दिया गया है। जब मैं भूके फ़क़ीरों, मरीज़ों, मज़्लूम क़ैदियों, मुसाफ़िरों, बूढ़ों, बच्चों और इ़याल दारों, अल ग़रज़ तमाम दुन्या के मुसीबत ज़दों की ख़बर गीरी के मु-तअ़ल्लिक़ ग़ौर करता हूं तो डरता हूं कि कहीं इन के मु-तअ़ल्लिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बाज़ पुर्स फ़रमाए और मुझ से जवाब न बन पड़े ! बस येह भारी ज़िम्मादारी और फ़िक्र रुला रही है।" (تاریخ الخلفاء ص ۲۳۶)

इक़्तिदार के नशे में मस्त रहने वाले ग़ौर फ़रमाएं कि फ़िक्रे आख़िरत रखने वाले हुक्काम दुन्यवी इक़्तिदार के मुआ-मले में किस क़दर फ़िक्र मन्द होते हैं, मगर याद रहे कि सिर्फ़ हाकिम से ही नहीं बल्कि हम में से हर एक से अपने मा तह़्त के बारे में सुवाल होगा, चुनान्चे

मा तह़्तों के बारे में सुवाल होगा

हुज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : "तुम सब निगरान हो और तुम में से हर एक से उस के मा तह़्त अफ़राद के बारे में पूछा जाएगा। बादशाह निगरान है, उस से उस की रिआ़या के बारे में पूछा जाएगा। आदमी अपने अहलो इ़याल का निगरान है उस से उस के अहलो इ़याल के बारे में पूछा जाएगा। औ़रत अपने ख़ावन्द के घर और अवलाद की निगरान है उस से उन के बारे में पूछा जाएगा।"

(صحیح البخاری، کتاب الجمعۃ، الحدیث ۸۹۳، ج۱، ص ۳۰۹)

निगरानों और ज़िम्मादारान के लिये फ़िक्र अंगेज़ फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

(अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی के रिसाले "मुर्दे के सदमे" से माख़ूज़)

{1} "مَا مِنْ عَبْدٍ اِسْتَرْعَاہُ اللّٰہُ رَعِیَّۃً فَلَمْ یَحُطْھَا بِنَصِیْحَۃٍ اِلَّا لَمْ یَجِدْ رَائِحَۃَ الْجَنَّۃِ

*या'नी जिस शख़्स को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने किसी रिआ़या का निगरान बनाया फिर उस ने उन की ख़ैर ख़्वाही का ख़याल न रखा वोह जन्नत की ख़ुश्बू नहीं पाएगा।"*

(بخاری، ج۴، ص ۴۵۶، الحدیث ۷۱۵۰)

{2} ''كُلُّكُمْ رَاعٍ وَكُلُّكُمْ مَسْؤُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهٖ या'नी तुम सब निगरान हो और तुम में से हर एक से उस के मा तह्त अफ़राद के बारे में पूछा जाएगा।''

(مجمع الزوائد ج۵ ص۲۰۷)

{3} اَيُّمَا رَاعٍ اِسْتَرْعٰى رَعِيَّةً فَغَشَّهَا فَهُوَ فِى النَّارِ

''या'नी जो निगरान अपने मा तह्तों से ख़ियानत करे वोह जहन्नम में जाएगा।''

(مسند امام احمد بن حنبل ج۷، ص۲۸۴ الحدیث۲۰۳۱۱)

{4} لَيَاْتِيَنَّ عَلَى الْقَاضِى الْعَدْلِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ سَاعَةٌ يَتَمَنّٰى اَنَّهُ لَمْ يَقْضِ بَيْنَ اثْنَيْنِ فِى تَمْرَةٍ قَطُّ

या'नी इन्साफ़ करने वाले क़ाज़ी पर क़ियामत के दिन एक साअ़त ऐसी आएगी कि वोह तमन्ना करेगा कि काश ! दो आदमियों के दरमियान एक खजूर के बारे में भी फ़ैसला न करता। (مسند امام احمد بن حنبل ج۹ ص۳۵۱، الحدیث۲۴۵۱۸)

{5} مَا مِنْ اَمِيْرِ عَشَرَةٍ اِلَّا يُؤْتٰى بِهٖ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَغْلُوْلًا حَتّٰى يَفُكَّهُ الْعَدْلُ اَوْ يُوْبِقَهُ الْجَوْرُ

या'नी जो शख़्स दस आदमियों पर भी निगरान हो क़ियामत के दिन उसे इस त़रह़ लाया जाएगा कि उस का हाथ उस की गरदन से बन्धा हुवा होगा। अब या तो उस का अ़द्ल उसे छुड़ाएगा या उस का ज़ुल्म उसे अ़ज़ाब में मुब्तला करेगा।'' (السنن الکبری للبیھقی ج۱۰ ص۱۶۴، الحدیث۲۰۲۱۵)

{6} दुआए **मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

اَللّٰهُمَّ مَنْ وَلِىَ مِنْ اَمْرِ اُمَّتِىْ شَيْئًا فَشَقَّ عَلَيْهِمْ فَاشْقُقْ عَلَيْهِ وَمَنْ وَلِىَ مِنْ اَمْرِ اُمَّتِىْ شَيْئًا فَرَفَقَ بِهِمْ فَارْفُقْ بِهٖ

“या’नी या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जो शख़्स मेरी उम्मत के किसी मुआ़-मले का निगरान है पस वोह इन पर सख़्ती करे तो तू भी उस पर सख़्ती फ़रमा और अगर वोह उन से नर्मी बरते तो तू भी उस से नर्मी फ़रमा।”

(مسلم، ص۱۰۱۶، الحدیث ۱۸۲۸)

{7} مَنْ وَلَّاهُ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ شَيْئًا مِنْ أَمْرِ الْمُسْلِمِينَ فَاحْتَجَبَ دُونَ حَاجَتِهِمْ وَخَلَّتِهِمْ وَفَقْرِهِمْ اَحْتَجَبَ اللّٰهُ عَنْهُ دُونَ حَاجَتِهِ وَخَلَّتِهِ وَفَقْرِهِ ى

“या’नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस को मुसलमानों के उमूर में से किसी मुआ़-मले का निगरान बनाए पस अगर वोह उन की ह़ाजतों, मुफ़्लिसी और फ़क़्र के दरमियान रुकावट खड़ी कर दे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी उस की ह़ाजत, मुफ़्लिसी और फ़क़्र के सामने रुकावट खड़ी करेगा।”

(ابوداؤد، ج۳ص۱۸۹، الحدیث ۲۹۴۸)

{8} “لَا يَرْحَمُ اللّٰهُ مَنْ لَّا يَرْحَمُ النَّاسَ” या’नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर रह़्म नहीं करता जो लोगों पर रह़्म नहीं करता।” (بخاری، ج۴، ص۵۳۲، الحدیث ۷۳۷۶)

{9} “اِنَّكُمْ سَتَحْرِصُونَ عَلَى الْإِمَارَةِ وَسَتَكُونُ نَدَامَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ” या’नी बेशक तुम अ़न क़रीब हुक्म रानी की ख़्वाहिश करोगे लेकिन क़ियामत के दिन वोह पशेमानी का बाइ़ष होगी। اِنَّا لَا نُوَلِّى هٰذَا مَنْ سَأَلَهُ وَلَا مَنْ حَرَصَ عَلَيْهِ या’नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं इस अम्र (या’नी हुक्म रानी) पर किसी ऐसे शख़्स को मुक़र्रर नहीं करता जो इस का सुवाल करे या इस की ह़िर्स रखता हो।” (بخاری، ج۴، ص۴۵۶، الحدیث ۷۱۴۸، ۷۱۴۹)

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मोह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه तह़रीर फ़रमाते हैं : ''निगरान'' से मुराद सिर्फ़ किसी मुल्क या शहर या मज़हबी व समाजी व सियासी तन्ज़ीम का ज़िम्मादार ही नहीं। बल्कि उ़मूमन हर शख़्स किसी न किसी ह़वाले से निगरान होता है, म-षलन **मुराक़िब** (या'नी सुपर वाइज़र) अपने मा तह़्त मज़दूरों का, अफ़्सर अपने क्लर्कों का, अमीरे क़ाफ़िला शु-रकाए क़ाफ़िला का और **ज़ैली मुशा-वरत का निगरान** अपने मा तह़्त इस्लामी भाइयों का वग़ैरा वग़ैरा। येह ऐसे मुआ़-मलात हैं कि इन निगरानियों से फ़राग़त मुश्किल है। बिलफ़र्ज़ अगर कोई तन्ज़ीमी ज़िम्मादारी से मुस्ता'फ़ी हो भी जाए तब भी अगर शादी शुदा है तो अपने **बाल बच्चों** का निगरान है। अब वोह अगर चाहे कि उन की निगरानी से गुलू ख़लासी हो तो नहीं हो सकती कि येह तो उसे शादी से पहले सोचना चाहिये था। बहर ह़ाल हर **निगरान** सख़्त इम्तिह़ान से दो चार है मगर हां जो इन्साफ़ करे उस के वारे न्यारे हैं चुनान्चे इरशादे रह़मत बुन्याद है, **इन्साफ़ करने वाले नूर के मिम्बरों पर होंगे** येह वोह लोग हैं जो अपने फ़ैसलों, घर वालों और जिन के **निगरान** बनते हैं उन के बारे में अ़द्ल से काम लेते हैं। (نسائی،ص۸۵۱،الحدیث۵۳۸۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा बाला तह़रीर से वाज़ेह़ हुवा कि हम में से हर एक ज़िम्मादार है, वालिदैन अपनी अवलाद के, असा-तज़ा अपने शागिर्दों के, शोहर अपनी बीवी का, अ़ला हाज़ल

क़यास। लिहाज़ा हमें चाहिये कि अपने अन्दर ज़िम्मादारी का एह़सास पैदा करें और अ़दलो इन्साफ़ से काम ले कर शरीअ़त के अह़क़ाम के मुत़ाबिक़ अपनी ज़िम्मादारियां अदा करें।[1]

हम नशीनों के लिये शराइत़

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز ने लोगों से फ़रमाया : जो शख़्स मेरी सोह़बत में रहना चाहता है उसे पांच बातों की पाबन्दी करनी होगी : (1) अ़दलो इन्साफ़ की जो सूरतें हम से ओझल हैं उन की त़रफ़ हमारी रहनुमाई करे (2) ह़क़ व इन्साफ़ के क़ियाम में हमारी मदद करे (3) जिन लोगों की ज़रूरतें हम तक नहीं पहुंच पातीं उन की ज़रूरतें हमें पहुंचाए (4) हमारे पास किसी की ग़ीबत न करे (5) हमारी और तमाम लोगों की अमानत का ह़क़ अदा करे। जो शख़्स इन उमूर का इल्तेज़ाम नहीं कर सकता उसे हमारी सोह़बत व हम नशीनी की इजाज़त नहीं। (سیرت ابن جوزی ۷۹)

ह़ारिसीन (या'नी सिक्यूरिटी गार्ड्ज़) से बे नियाज़ी

बनू उमय्या के साबिक़ ख़ु-लफ़ा के पास 300 दरबान और 300 सिपाही ज़ाती ह़िफ़ाज़त के लिये रहा करते थे, जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز ख़लीफ़ा बने तो आप ने सिपाहियों और दरबानों से फ़रमाया : मुझे तुम्हारी ह़िफ़ाज़त की ज़रूरत नहीं है क्यूंकि मेरे पास क़ज़ा व क़द्र के निगहबान मौजूद हैं, इस के बा

1 : एह़सासे ज़िम्मादारी को समझने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 69 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "एह़सासे ज़िम्मादारी" का मुत़ा-लआ़ बेहद मुफ़ीद है।

वुजूद अगर तुम में कोई मेरे पास रहना चाहे तो उसे 10 दीनार तनख़्वाह मिलेगी और अगर कोई न रहना चाहे या येह तनख़्वाह मनज़ूर न हो तो वोह अपने घर चला जाए। (تاریخ الخلفاء ص ۱۹۰)

ह़ारिस बनाने के लिये नमाज़ी को चुना

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز ने ह़ारिसीन के निगरान (सिक्यूरिटी इन्चार्ज) ख़ालिद बिन रय्यान को मा'ज़ूल कर दिया क्यूंकि वोह साबिक़ ख़ु-लफ़ा के कहने पर ख़िलाफ़े शरीअ़त सज़ाएं दिया करता था, फिर आप رَحۡمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने अ़म्र बिन मुहाजिर अन्सारी को अपने पास बुलवाया और फ़रमाया : तुम जानते हो कि मेरे और तुम्हारे दरमियान सिवाए इस्लाम के कोई रिश्ता नहीं है, मैं ने तुम्हें कषरत से तिलावते कुरआन करते और लोगों से छुप कर नवाफ़िल पढ़ते देखा है, तुम नमाज़ बहुत अच्छी पढ़ते हो, येह तल्वार संभालो मैं तुम्हें अपना ह़ारिस (या'नी सिक्यूरिटी गार्ड) मुक़र्रर करता हूं।

(حلیۃ الاولیاء ج۵ ص ۳۱۳ وسیرت ابن جوزی ۵۰)

शो'रा की दाल न गली

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز से पहले के ख़ु-लफ़ा की बज़्म में सब से ज़ियादा हुजूम शो'रा का होता था, इसी बिना पर जब आप رَحۡمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَيۡه ख़लीफ़ा हुए तो ह़स्बे मा'मूल ह़-रमैन त़य्यिबैन और इ़राक़ के शो'रा ने उन के दरबार का रुख़ किया और बड़े बड़े शो'रा म-षलन नुसैब, जरीर, फ़र्ज़दक़, अह़वस और अख़त़ल वग़ैरा आए और महीनों क़ियाम किया लेकिन यहां तो

मजलिस ही का रंग बदला हुवा था, शो'रा की कोई क़द्र दानी नहीं की जाती थी मगर क़ुर्रा व फु-क़हा अत़राफ़ से बुलाए जाते थे और उन को ख़वास में दाख़िल किया जाता था, मजबूरन बा'ज़ शो'रा ने एक फ़क़ीह से इआ़नत (या'नी मदद) त़लब की और अपनी ना क़द्री का इज़्हार इन अश्आ़र में किया :

يَا أَيُّهَا الْقَارِئُ الْمُرْخِي عِمَامَتَهُ   هٰذَا زَمَانُكَ إِنِّي قَدْ مَضَى زَمَنِي

ऐ वोह क़ारी जिस का इ़मामा लटक रहा है यह तेरा ज़माना है, मेरा ज़माना गुज़र गया

أَبْلِغْ خَلِيْفَتَنَا إِنْ كُنْتَ لَاقِيَهُ   أَنِّي لَدَى الْبَابِ كَالْمَصْفُوْدِ فِيْ قَرَنٍ

अगर हमारे ख़लीफ़ा से मिलो तो उस को येह पैग़ाम पहुंचा दो कि मैं दरवाज़े पर बेड़ियों में जकडा हुवा हूं

(ابن جوزی ص ١٩٦)

येह शख़्स शो'रा को नहीं गदागरों को देता है

एक रोज़ उस वक़्त के मश्हूर शाइ़र जरीर को किसी त़रह़ बारगाहे ख़िलाफ़त में इज़्ने बारयाबी मिल गया। उस ने एक नज़्म पढ़ी जिस में अहले मदीना के मसाइब व आलाम और मुश्किलात का ज़िक्र था। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللهِ العَزِيز ने उन के लिये गल्ला और नक़्द रूपिया भेजने का हुक्म दिया और जरीर से पूछा : **तुम** किस जमाअ़त के हो, मुहाजिरीन से या अन्सार से या उन के अइ़ज़्ज़ा व अक़रिबा से या मुजाहिदीन से ? उस ने कहा : मैं इन में से किसी से नहीं हूं। फ़रमाया : फिर मुसलमानों के माल में से तुम्हारा क्या ह़क़ है ? उस ने कहा : "अगर आप मेरे ह़क़ को न रोकें तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी किताब में मेरा ह़क़ मुक़र्रर फ़रमाया है। मैं "इब्ने सबील" (मुसाफ़िर) हूं। दूरो दराज़ से सफ़र कर के आप के दरवाज़े पर आ कर ठहरा हूं। आप ने फ़रमाया : अच्छा ! तुम मेरे पास आ ही गए

हो तो मैं अपनी जैब से तुम्हें बीस दिरहम देता हूं, इस ह़क़ीर रक़म पर तुम मेरी ता'रीफ़ करो या मज़म्मत ?" मेरी मद्ह़ करो या हज्व (या'नी बुराई) ? जरीर ने इस रक़म को भी ग़नीमत समझ कर ले लिया और बाहर आ गया। दूसरे शो'रा ने उसे बारगाहे ख़िलाफ़त से बाहर निकलते देखा तो बेताबी से पूछा : "कैसा मुआ-मला रहा ?" जरीर ने जवाब दिया : "अपना रास्ता नापो, येह शख़्स शो'रा को नहीं गदागरों को देता है।" (سیرتِ ابن جوزی ص۱۹۷)

बहर ह़ाल ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ने खु-लफ़ा की मजालिस का रंग बिलकुल बदल दिया और अपनी सोह़बत के लिये सिर्फ़ उ़-लमा व फ़ु-क़हा को मुन्तख़ब किया जिस में ह़ज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान, ह़ज़रते सय्यिदुना रजा बिन ह़ैवत और ह़ज़रते सय्यिदुना रियाह़ बिन उ़बैदा رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہِم का शुमार ख़वास में था, इन के इलावा भी कई उ़-लमा आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعالٰی عَلَیْہ के मुसाह़िबीन में से थे। (طبقات ابن سعد، ج۵، ص۳۰۸)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।* اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہُ تَعالٰی عَلَیْہِ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

ख़लीफ़ा बनने के बा'द तीन फ़ु-क़हाए किराम से म-दनी मश्वरा

ख़ुद बीनी साह़िबे मन्सब व वजाहत को क़बूले नसीह़त से उमूमन बाज़ रखती है लेकिन परवर्द गारे आ़लम عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز को एक अषर पज़ीर दिल

अ़ता फ़रमाया था, वोह येह समझते थे कि ह़क़्क़े ख़िलाफ़त अदा करने के लिये उ़–लमा व मशाइख़ की सोह़बत व नसीह़त बहुत कार आमद षाबित होगी, चुनान्चे ख़िलाफ़त का बारे गिरां अपने कन्धों पर आने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ الۡعَزِيۡز ने तीन फु–क़हाए किराम ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह, ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन का'ब और ह़ज़रते सय्यिदुना रजा बिन ह़ैवत رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡهِم की ख़िदमत में अ़र्ज़ की : "मुझ पर येह आज़माइश आन पड़ी है मुझे अपने मश्वरों से नवाज़िये।" ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने आप को नसीह़त की :

"اِنۡ اَرَدۡتَّ النَّجَاةَ مِنۡ عَذَابِ اللّٰهِ فَصُمۡ عَنِ الدُّنۡيَا وَلۡيَكُنۡ اِفۡطَارُكَ مِنۡهَا عَلَى الۡمَوۡتِ"

*या'नी अगर आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से बचना चाहते हैं तो दुन्या से रोज़ा रख लीजिये जिसे मौत ही इफ़्तार करवाएगी।"*

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन का'ब رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने फ़रमाया :

اِنۡ اَرَدۡتَّ النَّجَاةَ مِنۡ عَذَابِ اللّٰهِ فَلۡيَكُنۡ كَبِيۡرُ الۡمُسۡلِمِيۡنَ عِنۡدَكَ اَبًا وَاَوۡسَطُهُمۡ عِنۡدَكَ اَخًا وَاَصۡغَرُهُمۡ عِنۡدَكَ وَلَدًا فَوَقِّرۡ اَبَاكَ وَاَكۡرِمۡ اَخَاكَ وَتَحَنَّنۡ عَلٰى وَلَدِكَ

या'नी अगर आप अ़ज़ाबे इलाही से नज़ात चाहते हैं तो बड़ी उ़म्र के मुसलमानों को अपने बाप की जगह, दरमियानी उ़म्र वालों को भाई की जगह और छोटों को अवलाद की जगह तसव्वुर कीजिये फिर अपने वालिद की तौक़ीर, भाइयों का इकराम और अवलाद पर शफ़क़त इख़्तियार कीजिये।

(سیرت ابن جوزی ص۱۶)

صَلُّوا عَلَى الۡحَبِيۡب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

अ़द्ल किस त़रह़ करूं ?

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ الۡعَزِيۡز

ने हज़रते मुहम्मद बिन का'ब رَحْمَةُاللهِ تعَالٰى عَلَيْه से एक मरतबा पूछा कि "मुझे अ़दलो इन्साफ़ के बारे में बताइये।" उन्हों ने फ़रमाया : "आप छोटों के लिये बाप की जगह, बड़ों के लिये बेटे की और अपने हम उ़म्रों के लिये भाई की जगह हैं, लोगों को उन की ख़ताओं और जिस्मानी ताक़त के मुताबिक़ सज़ा दीजिये। किसी को अपनी नाराज़ी की वजह से एक भी कोड़ा न मारिये क्यूंकि उस वक़्त आप ज़ालिम ठहरेंगे।"

(سیرت ابن جوزی،ص١٦)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कैसी प्यारी नसीहत है ! ऐ काश हमें भी येह जज़्बा नसीब हो जाए कि किसी मुसलमान को हमारे हाथ या ज़बान से तकलीफ़ न पहुंचे।

कामिल मुसलमान कौन ?

सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है :

اَلْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُوْنَ مِنْ لِّسَانِهٖ وَيَدِهٖ *या'नी मुसलमान वोह है कि जिस के हाथ और ज़बान से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें।* (صحیح بخاری ج١ص ١٥ حدیث ١٠)

नेक और परहेज़ गारों की सोहबत

जब हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللهِ العزیز ख़लीफ़ा मुक़र्रर हुए तो मुख़्तलिफ़ लोगों ने आप के क़रीब होने की कोशिश की मगर आप सिर्फ़ नेक और परहेज़ गार लोगों को अपनी सोहबत में रखते, जब एक पुराने दोस्त के बारे में आप से पूछा गया तो फ़रमाया : تَرَكْنَاهُ كَمَا تَرَكْنَا الْخَزَّ وَالْمُوَشّٰى *या'नी हम ने उसे इसी त़रह़ छोड़ दिया जिस त़रह़ रेशम और नक़्शो निगार को छोड़ दिया।* (سیرت ابن جوزی ص٩١)

मुझे ख़बर दार कर देना

हज़रते सय्यिदुना अबू ह़ाज़िम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ख़लीफ़ा बने तो फ़रमाया कि मेरे लिये दो नेक और सालेह़ मर्द तलाश करो। चुनान्चे दो ह़ज़रात तशरीफ़ ले आए तो उन से इल्तिजा की : आप मेरे हर हर काम पर निगाह रखिये, जब मुझे कोई ग़लत़ काम करते देखें तो मुझे ख़बर दार कर दीजियेगा और रब तआ़ला की याद दिला दीजियेगा।

(سیرت ابن جوزی ص ۲۰۳)

ख़ुद पर मुह़ासिब मुक़र्रर किया

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मुहाजिर رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی علَیْه का बयान है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने मुझ से फ़रमाया : ऐ अ़म्र ! जब तुम मुझे राहे ह़क़ से इधर उधर होते देखो तो मेरा गिरीबान पकड़ कर झंझोड़ डालना और कहना : مَاذَا تَصْنَعُ *या'नी येह तुम क्या कर रहे हो ?* (سیرت ابن جوزی ص ۲۰۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।* اٰمین بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰهُ تَعالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی علٰی محمَّد

ज़ियादा मुआ़विनीन न थे

मुख़्तलिफ़ बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْهِم से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز की मिषाल उस

माहिर कारीगर की है जिस के पास कारीगरी के आलात न हों मगर वोह बिग़ैर अवज़ार के निहायत उ़म्दा काम करे। (या'नी उन के पास काम को अन्जाम देने के लिये ज़ियादा मुआ़विनीन नहीं हैं मगर फिर भी उन की कार कर्दगी मिषाली है) (حلیۃ الاولیاء، ج۵، ص۳۰۸ وسیرت ابن جوزی ۸۸)

मोईन व मददगार

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز के घर के तीन अफ़राद, आप के भाई "सहल", साहिब ज़ादे "अ़ब्दुल मलिक" और ग़ुलाम "मुज़ाहि़म" उमूरे ख़िलाफ़त में आप के ख़ुसूसी मदद गार थे। येह तीनों ह़ज़रात ह़क़ के नफ़ाज़ में आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ के मुआ़विन थे और ताईद व कुव्वत का सबब थे। एक मोक़अ़ पर हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ने इस का इज़्हार इन अल्फ़ाज़ में किया : **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र है कि उस ने सहल, अ़ब्दुल मलिक और मुज़ाहि़म के ज़रीए मेरी कमर मज़बूत कर दी। (سیرت ابن عبدالحکم ص۴۵)

अहले ह़क़ की क़द्र दानी

आप के एक बेहतरीन मुसाहि़ब हज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ थे, जो हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز की ज़िन्दगी ही में फ़ौत हो गए थे लेकिन उन की महब्बत **अमीरुल मोअमिनीन** के दिल में जोश मारती रहती थी। अकषर फ़रमाया करते थे : अगर हज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ह़यात होते तो मैं उन से राय लिये बिग़ैर कोई

सरकारी हुक्म जारी न करता, एक मरतबा फ़रमाया : "काश मुझे फुलां फुलां शै के बदले हज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की एक मजलिस नसीब हो जाए।" (سیرتِ ابن جوزی ص ۱۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नसीह़त करने वाले का शुक्रिय्या अदा किया

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز के मस्नदे ख़िलाफ़त संभालने के बा'द एक शख़्स आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास आया और कहा : आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ैसले पर राज़ी रहिये और उस के हुक्म के सामने झुके रहिये, जो कुछ उस के पास है इसी की उम्मीद रखिये क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला के पास हमेशा की भलाई और मसाइब का बेहतरीन इवज़ है आप को जिस चीज़ का अन्देशा अपने से पहले ख़लीफ़ा सुलैमान के बारे में था अब अपने बारे में कीजिये । इस के बा'द वोह शख़्स उठ कर चला गया । ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने फ़रमाया उसे मेरे पास बुलाओ । जब वोह वापस आया तो आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : तुम ने मुझे येह नसीह़तें किस लिये कीं ? उस ने कहा : जान की अमान पाऊं तो कुछ अ़र्ज़ करूं ! फ़रमाया : तुम्हें कोई ख़त़रा नहीं । वोह शख़्स बोला : मैं ने आप को **मदीनए मुनव्वरा**

زادھَااللّٰہُ شَرَفاًوَّ تعظِیماً وَّ تکرِیماً में देखा है कि आप की चादर नीचे ढलकी और जुल्फ़ें दराज़ होती थी, आप से इत्र की खुश्बू महका करती थी, मैं उस वक़्त आप के अन्दाज़ व अत़वार देख कर बहुत हैरान होता और सोचा करता था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को ज़मीन पर रहने की मोहलत कैसे दे रहा है ? अब जब कि आप इस मन्सब तक पहुंचे तो मैं ने अपना फ़र्ज़ समझा कि (सुलैमान की वफ़ात की) ता'ज़िय्यत भी करूं और समझाने की कोशिश भी करूं । येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ने फ़रमाया : भाई अगर तुम हमारे पास रहना पसन्द करो तो बड़ी अच्छी बात है और अगर जाना चाहो तो इजाज़त है । (سیرتِ ابن عبدالحکم ص ۲۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मुआफ़ी मांगी

खिलाफ़त से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز एक मरतबा **मदीनए मुनव्वरा** زادھَااللّٰہُ شَرَفاًوَّ تعظِیماً وَّ تکرِیماً में कहीं से गुज़र रहे थे, आप की चादर ज़मीन पर घिसट रही थी, ह़ज़रते मुह़म्मद बिन का'ब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने देखा तो पुकार कर कहा : ऐ उ़मर ! रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "مَاجَاوَزَ الْکَعْبَیْنِ فَھُوَ فِی النَّارِ *या'नी जो चादर टख़नों से नीचे हो वोह दोज़ख़ में जलेगी ।*" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ने ग़ज़ब नाक निगाहों से देखते हुए जवाब दिया : तुम अपनी राह लो । फिर जब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ख़लीफ़ा बने तो ह़ज़रते मुह़म्मद बिन का'ब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के बारे में दरयाफ़्त किया तो बताया गया कि वोह

जेहाद के लिये तशरीफ़ ले गए हैं, आप ने दुरूब के गवर्नर को लिखा कि अगर मुह़म्मद बिन का'ब رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه महाज़ से वापस आ गए हों तो उन्हें ज़ादे सफ़र दे कर फ़ौरन मेरे पास भेज दिया जाए, हां ! अगर वोह आना पसन्द न फ़रमाएं तो ज़बर दस्ती न की जाए। जब ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन का'ब رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه महाज़ से वापस आए तो गवर्नर ने उन से **अमीरुल मोअमिनीन** के पास जाने की दरख़्वास्त की और ख़त़ भी दिखाया। मुह़म्मद बिन का'ब رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : ज़ादे राह तो मुझे नहीं चाहिये, बाक़ी रहा जाने का मस्अला ! तो उन का ख़त़ न भी आता तो मुझे जाना ही था। जब मुह़म्मद बिन का'ब رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمة اللّٰهِ الْعَزِیز के यहां पहुंचे तो देखा कि उन की ह़ालत बहुत तब्दील हो चुकी है। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمة اللّٰهِ الْعَزِیز ने पहली बात येह कही : इब्ने का'ब ! जब **मदीनए मुनव्वरा** زادَھَااللّٰہُ شَرفًاوَّ تَعظِیْماً وَّ تکْرِیما में तुम ने मुझे नसीह़त की थी तो मैंने उलट जवाब दिया था, मुझे मुआ़फ़ कर दीजिये। येह कहने के बा'द रोने लगे यहां तक कि दाढ़ी आंसूओं से तर हो गई। आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه की येह कैफ़िय्यत देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन का'ब رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه बहुत मु–तअष्षिर हुए और दुआ़ दी : غَفَرَاللّٰہُ لَكَ یَااَمِیْرَالْمُؤْمِنِیْنَ وَاَقَالَكَ عَثْرَتَكَ *या'नी* ***अमीरुल मोअमिनीन अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *आप की बख़्शिश फ़रमाए और आप की लग़्ज़िशें मुआ़फ़ फ़रमाए।* (سیرت ابن عبد الحکم ص ۱۲۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمة اللّٰهِ الْعَزِیز ने दुन्या ही में

मुआ़फ़ी मांगने में किस क़दर कोशिश फ़रमाई, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ हमें भी हुक़ूक़ुल इबाद का ख़याल रखने और जिन जिन के ह़क़ हम से तलफ़ हो गए हों उन से मुआ़फ़ी मांगने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, **हमारे प्यारे और मीठे मीठे आक़ा** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने उस्वए ह़-सना के ज़रीए़ हम गुलामों को हुक़ूक़ुल इबाद का ख़याल रखने की जिस ह़सीन अन्दाज़ में ता'लीम दी है उस की एक रिक़्क़त अंगेज़ झलक मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये । चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ 64 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "ज़ुल्म का अन्जाम" के सफ़हा 22 पर है :

आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बे इन्तिहा आ़जिज़ी

हमारे जान से भी प्यारे आक़ा मक्की म-दनी **मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने वफ़ाते ज़ाहिरी के वक़्त इजतिमाए़ आ़म में ए'लान फ़रमाया : "अगर मेरे ज़िम्मे किसी का क़र्ज़ आता हो, अगर मैं ने किसी की जान व माल और आबरू को सदमा पहुंचाया हो तो मेरी जान व माल और आबरू ह़ाज़िर है, "इस दुन्या में बदला ले ले।" तुम में से कोई येह अन्देशा न करे कि अगर किसी ने मुझ से बदला लिया तो मैं नाराज़ हो जाऊंगा येह मेरी शान नहीं। मुझे येह अम्र बहुत पसन्द है कि अगर किसी का ह़क़ मेरे ज़िम्मे है तो वोह मुझ से वुसूल कर ले या मुझे मुआ़फ़ कर दे। फिर फ़रमाया : ऐ लोगो ! जिस शख़्स पर कोई ह़क़ हो उसे चाहिये कि वोह अदा करे और येह ख़याल न करे कि रुस्वाई होगी इस लिये कि दुन्या की रुस्वाई आख़िरत की रुस्वाई से बहुत आसान है।" (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۴۸ ص ۳۲۳ ملخصاً)

मुआ़फ़ी मांग लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सब घबरा कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में रुजूअ़ कर लीजिये, सच्ची तौबा कर लीजिये और ठहरिये ! बन्दों की ह़क़ त–लफ़ी के मुआ–मले में बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में सिर्फ़ तौबा करना काफ़ी नहीं, बन्दों के जो जो हुक़ूक़ पामाल किये हों वोह भी अदा करने होंगे, म–षलन माली ह़क़ है तो उस का माल लौटाना होगा। दिल दुखाया है तो मुआ़फ़ करवाना होगा। आज तक जिस जिस का मज़ाक उड़ाया, बूरे अल्क़ाब से पुकारा, ता'नाज़नी और तन्ज़ बाज़ी की, दिल आज़ार नक़्लें उतारीं, दिल दुखाने वाले अन्दाज़ में आंखें दिखाईं, घूरा, डराया, गाली दी, ग़ीबत की और उस को पता चल गया। झाड़ा, मारा, ज़लील किया, **अल ग़रज़** किसी त़रह़ भी बे इजाज़ते शरई ईज़ा का बाइ़ष बने उन सब से फ़रदन फ़रदन मुआ़फ़ करवा लीजिये। अगर किसी फ़र्द के बारे में येह सोच कर बाज़ रहे कि मुआ़फ़ी मांगने से उस के सामने मेरी "पोज़ीशन डाऊन" हो जाएगी तो ख़ुदारा ग़ौर फ़रमा लीजिये ! क़ियामत के रोज़ अगर येही फ़र्द आप की नेकियां ह़ासिल कर के अपने गुनाह आप के सर डाल देगा उस वक़्त क्या होगा ! ख़ुदा की क़सम ! सह़ीह़ मा'नों में आप की "पोज़ीशन" की धज्जियां तो उस वक़्त उड़ेंगी और आह ! कोई दोस्त बरादर या अ़ज़ीज़ हमदर्दी करने वाला भी न मिलेगा। जल्दी कीजिये ! जल्दी कीजिये ! अपने वालिदैन के क़दमों में गिर कर, अपने अ़ज़ीज़ों के आगे हाथ जोड़ कर, अपने मा तह़्तों के पाउं पकड़ कर अपने इस्लामी भाइयों और दोस्तों से गिड़ गिड़ा कर, इन के आगे ख़ुद को ज़लील कर के आज दुन्या

में मुआ़फ़ी मांग कर आख़िरत की इ़ज़्ज़त ह़ासिल करने की सई़ फ़रमा लीजिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : مَنْ تَوَاضَعَ لِلّٰهِ رَفَعَهُ اللّٰه *या'नी जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आ़जिज़ी करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाता है।*

(شُعَبُ الایمان ج۶ ص۲۹۷ حدیث ۸۲۲۹) (ज़ुल्म का अन्जाम, 50 ता 52)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی محمَّد

मन्सबे रिसालत और मन्सबे ख़िलाफ़त में फ़र्क़

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِیْز ने एक मरतबा ख़ुत़्बा देते हुए इरशाद फ़रमाया : लोगो ! रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द कोई नबी नहीं, न ही किताबुल्लाह के बा'द कोई किताब है, जो चीज़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने नबिय्ये मोह़्तरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बान से ह़लाल ठहरा दीं वोह क़ियामत तक ह़लाल रहेंगी और जो ह़राम ठहरा दीं वोह क़ियामत तक ह़राम रहेंगी। ख़ूब समझ लो ! मैं ख़ुद से फ़ैसला करने वाला नहीं बल्कि **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم के फ़ैसलों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ात़िर नाफ़िज़ करने वाला हूं, मैं कोई नया रास्ता नहीं निकालूंगा बल्कि पहलों के रास्ते पर चलूंगा, सुन लो, **अल्लाह** तआ़ला की ना फ़रमानी में किसी की फ़रमां बरदारी जाइज़ नहीं, मैं तुम से बेहतर नहीं बल्कि तुम्हीं में से एक फ़र्द हूं अलबत्ता मेरी ज़िम्मादारियां तुम से ज़ियादा है। (سیرت ابن جوزی ص ۶۹)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی محمَّد

आंखों से ग़फ़्लत का पर्दा हटा दिया

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ الۡعَزِيۡز ने एक मरतबा फ़रमाया : "मुज़ाहिम" वोह शख़्स है जिस ने सब से पहले मुझे एक ज़बर दस्त नसीहत की थी, हुवा यूं कि मैं ने एक शख़्स को क़ैद किया और उस की मुक़र्ररा सज़ा से ज़ियादा मुद्दत क़ैद में रखना चाहा तो मुज़ाहिम ने मुझ से उस की रिहाई की बात की मगर मैं ने कहा : मैं उसे नहीं छोड़ूंगा यहां तक कि उस के जुर्म से ज़ियादा सज़ा न दे लूं, तो मुज़ाहिम ने कहा : "मैं आप को उस रात से डराता हूं जिस की सुब्ह़ में क़ियामत बर्पा होगी।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उस ने येह बात कह कर गोया मेरी आंखों से ग़फ़लत के पर्दे हटा दिये। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ الۡعَزِيۡز ने ह़ाज़िरीन से फ़रमाया : ذَكِّرُوۡا اَنۡفُسَكُمۡ رَحِمَكُمُ اللّٰه فَاِنَّ الذِّكۡرٰى تَنۡفَعُ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ

*या'नी **अल्लाह** तआ़ला तुम पर रह़्म फ़रमाए, एक दूसरे को नसीह़त करते रहा करो कि समझाना मुसलमान को फ़ाएदा देता है।* (سیرت ابن جوزی ص۱۲۶)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ الۡعَزِيۡز के अ़ता कर्दा इस म-दनी फूल पर अ़मल पैरा होने में दोनों जहां की भलाइयां पोशीदा हैं, सूरए आले इमरान में इरशाद होता है :

وَلۡتَكُنۡ مِّنۡكُمۡ اُمَّةٌ يَّدۡعُوۡنَ اِلَى الۡخَيۡرِ وَيَاۡمُرُوۡنَ بِالۡمَعۡرُوۡفِ وَيَنۡهَوۡنَ عَنِ الۡمُنۡكَرِؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الۡمُفۡلِحُوۡنَ ﴿۱۰۴﴾ (پ۴ سورۃ آل عمران:۱۰۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और तुम में एक गुरोह ऐसा होना चाहिये कि भलाई की त़रफ़ बुलाएं और अच्छी बात का हुक्म दें और बुरी से मन्अ़ करें और येही लोग मुराद को पहुंचे।

बेहतरीन आदमी की खुसूसिय्यात

साहिबे कुरआने मुबीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक मरतबा मिम्बरे अक़्दस पर जल्वा फ़रमा थे कि एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم लोगों में से सब से अच्छा कौन है ? " फ़रमाया : लोगों में से वोह शख़्स सब से अच्छा है जो कषरत से कुरआने करीम की तिलावत करे, ज़ियादा मुत्तक़ी हो, **सब से ज़ियादा नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने वाला हो** और सब से ज़ियादा सिलए रेह़्मी (या'नी रिश्तेदारों के साथ अच्छा बरताव) करने वाला हो ।

(مُسندِ احمد، ج۴۵ ص۲۱۲ حدیث ۲۷۴۳۴)

अ़ता हो "नेकी की दा'वत" का ख़ूब जज़्बा कि
दूं धूम सुन्नते मह़बूब की मचा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 97)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सिक्यूरिटी के मसाइल

चूंकि ख़वारिज के ना गहानी ह़म्लों से खु-लफ़ा की ज़िन्दगी ग़ैर मह़फ़ूज़ हो गई थी यहां तक कि खु-लफ़ा की ह़िफ़ाज़त के लिये बहुत से ह़ारिसीन रखे जाते थे । चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز से बहुत से लोगों ने कहा : आप खाना देख भाल कर खाएं, नमाज़ पढ़ें तो साथ साथ पहरादार रखें कि कोई

शख़्स ह़मला न कर बैठे, त़ाऊ़न में जैसा कि तमाम ख़ु-लफ़ा का त़रीक़ा था कि बाहर निकल जाएं। मगर आप رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَيْه ने जवाब दिया : बिल आख़िर वोह भी दुन्या से चले गए। जब लोगों ने बहुत इसरार किया तो फ़रमाया : या इलाही عَزَّوَجَلَّ अगर मैं रोज़े क़ियामत के सिवा और किसी दिन से डरूं तो मेरे ख़ौफ़ में कमी न फ़रमा। (سیرت ابن جوزی ص ۲۲۶)

आराम का वक़्त न मिलता

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللهِ العَزِيز लोगों के मसाइल ह़ल करने में इस क़दर मसरूफ़ रहते कि कभी कभार तो आराम के लिये बिलकुल वक़्त न मिलता। एक दिन ज़ोहर की नमाज़ से क़ब्ल बहुत ज़ियादा थकावट मह़सूस होने लगी तो कुछ देर क़ैलूला (या'नी आराम) करने के लिये कमरे में तशरीफ़ ले गए। अभी आप लैटे ही थे कि आप के शहज़ादे हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق हाज़िर हुए और अ़र्ज़ करने लगे : "या **अमीरुल मोअमिनीन** ! आप यहां कैसे तशरीफ़ फ़रमा हैं ? " आप رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "मुझे मुसल्सल बे आरामी की वजह से बहुत ज़ियादा थकावट हो रही थी, इस लिये कुछ देर के लिये आराम की ग़रज़ से आया हूं।" साह़िब ज़ादे ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! लोग आप के मुन्तज़िर हैं, मज़्लूम अपनी फ़रियादें ले कर ह़ाज़िर हैं और आप यहां आराम फ़रमा रहे हैं।" आप رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "मैं सारी रात नहीं सो सका अब थोड़ी देर आराम कर के ज़ोहर के बा'द लोगों के मसाइल ह़ल करूंगा।" शहज़ादे ने बड़े अदब से अ़र्ज़ की : "या **अमीरुल मोअमिनीन** ! क्या आप को यक़ीन है कि आप ज़ोहर तक ज़िन्दा रहेंगे ?" आप رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَيْه ने जब अपने लख़्ते जिगर का

फ़िक्रे आख़िरत से भर पूर येह जुम्ला सुना तो शहज़ादे को क़रीब बुलाया, उन की पेशानी को बोसा दिया और फ़रमाने लगे : "तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने मुझे ऐसी अवलाद अ़ता फ़रमाई जो दीन के मुआ़–मले में मेरी मदद करती है।" फिर आप رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیْه आराम किये बिग़ैर फ़ौरन बाहर तशरीफ़ लाए और ए'लान करवा दिया कि जिस का किसी पर कोई ह़क़ है या जिस को कोई मस्अला दर पेश है वोह आ जाए मैं उसे उस का ह़क़ दिलवाऊंगा और उस के मसाइल ह़ल करूंगा। (سیرت ابن جوزی ص ۲۷۱ ملخصاً)

अपने गुस्से पर क़ाबू पाइये

एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز किसी बात पर सख़्त बरहम हुए, आप के शहज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْخَالِق भी वहां मौजूद थे। जब **अमीरुल मोअमिनीन** का गुस्सा ठन्डा हुवा तो अ़र्ज़ की : आप इस क़दर गुस्सा होते हैं ? फ़रमाया तो क्या तुम्हें गुस्सा नहीं आता ? अ़र्ज़ की : "अगर मैं गुस्से को न पी सकू तो मेरी तौंद से क्या फ़ाएदा !"

(حلیۃ الاولیاء ج ۵ ص ۳۹۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن का ज़र्फ़ कितना वसीअ़ होता था कि अपने से छोटे की भी इस्लाह़ क़बूल कर लिया करते थे, और एक त़रफ़ हम हैं कि अगर कोई कम उ़म्र या कम मर्तबा हमें कोई बात समझाने की कोशिश करे तो बुरा मान जाते हैं बल्कि उसे ऐसा जवाब देते हैं कि वोह इतना सा मुंह ले कर रह जाता है म–षलन जुमुआ़ जुमुआ़ आठ दिन हुए हैं इस शो'बे में

आए हुए, मुझे समझाते हो ? येह मुंह और मसूर की दाल, तुम मुझे समझाने आए हो ! बल्कि आज कल अगर किसी की इस्लाह़ की कोई बात की जाए तो बा'ज़ अवक़ात जवाब मिलता है **"मियां ! तुम अपनी करो"** ऐसा जवाब निहायत ही मज़्मूम है, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہ تَعالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक येह एक बड़ा गुनाह है कि कोई शख़्स दूसरे को बत़ौरे नसीह़त कहे कि तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डर, तो बुराई करने वाला इस का जवाब दे **"तू अपने आप को संभाल"** ।" (تَنبِیهُ الْمُغتَرِّین ص ۲۳۷)

ना सिह़ा ! मत कर नसीह़त दिल मेरा घबराए है

उस को दुश्मन जानता हूं जो मुझे समझाए है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

ह़क़दारों को उन का ह़क़ दिलाया

ख़ु-लफ़ाए बनू उमय्या के दौर में रिआ़या के माल व जाएदाद पर बड़े पैमाने पर ज़ालिमाना क़ब्ज़े हो चुके थे, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہ العزیز ने बारे ख़िलाफ़त संभालने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदीना मैमून बिन मेहरान, मकहूल और अबू क़िलाबा رَحمۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْھِم जैसी बर गोज़ीदा हस्तियों से इस बारे में मश्वरा किया तो ह़ज़रते सय्यिदुना मकहूल رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने इशारों किनायों में अपनी राय दी जिसे ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने क़बूल नहीं किया और ह़ज़रते मैमून बिन मेहरान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان के चेहरे की त़रफ़ देखा तो वोह फ़रमाने लगे : अपने साहिब ज़ादे अ़ब्दुल मलिक को भी त़लब फ़रमा लीजिये। वोह अ़क़्ल व फ़हम में हम लोगों

से कम नहीं हैं। हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق बुलाने पर आए तो उन से पूछा कि लोग अमवाले मग़्सूबा (या'नी क़ब्ज़ा किये गए मालों) की वापसी का मुत़ा-लबा कर रहे हैं, तुम्हारी क्या राय हैं ? अ़र्ज़ की : उन के माल फ़ौरन वापस कर दीजिये वरना आप भी ग़ासिबाना क़ब्ज़ा करने वालों के मदद गार व शरीके कार होंगे। (سیرت ابن جوزی ص ۱۲۶)

अमवाल व जाएदादें वापस करने का ए'लाने आ़म

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ الْعَزِيز ने ए'लाने आ़म करवा दिया कि जिन लोगों के माल व जाएदाद पर किसी ने क़ब्ज़ा कर रखा है वोह अपनी शिकायतें पेश करें। इसी त़रह़ जो भी अमवाल व जाएदाद और ज़मीन वग़ैरा शाही ख़ानदान के पास ना ह़क़ मौजूद थी वोह सब की सब आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ह़क़ दारों को वापस करा दी और किसी के साथ कोई रिआ़यत नहीं की। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इस मुआ़-मले में बड़े अ़द्ल व इन्साफ़ का मुज़ाहिरा किया और शाही ख़ानदान के पास कोई चीज़ भी ऐसी न छोड़ी जिस पर किसी दूसरे का ह़क़ षाबित हो रहा हो।

अवलाद को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़वाले करता हूं

येह काम बहुत ख़त़रनाक और नाज़ुक था, ख़ुद आप के पास बड़ी मौरूषी जागीर थी जिस का बहुत बड़ा ह़िस्सा आप ने उस के ह़क़ दारों को लौटा दिया और अपने पास कोई ऐसी चीज़ बाक़ी नहीं रखी जिस पर किसी और का ह़क़ बनता हो। बा'ज़ अफ़राद ने आ कर आप से कहा कि अगर आप ने अपनी जागीर वापस कर दी तो अवलाद की

किफ़ालत कैसे करेंगे ? येह बात सुन कर आप की आंखों से आंसू बह निकले, फ़रमाया : اُوَكِّلُهُمْ اِلَى اللّٰهِ *या'नी मैं इन को* **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के *सिपुर्द करता हूं।* (سیرت ابن جوزی ص ۳۰۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कैसी म-दनी सोच थी ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز की, कि अवलाद की किफ़ालत पर आख़िरत को तरजीह़ दी, जब कि हम में से हर दूसरे शख़्स को येह फ़िक्र खा रही होती है कि मेरे दुन्या से जाने के बा'द अवलाद का क्या बनेगा, काश ! हम येह भी सोचते कि हमारे मरने के बा'द हमारा क्या बनेगा ? या येह सोचते कि अवलाद के मरने के बा'द उन का क्या बनेगा ? ऐ काश ! हमारा येह म-दनी ज़ेह्न बन जाए कि जो रज़्ज़ाक़ عَزَّوَجَلَّ हमें रिज़्क़ दे रहा है वोही हमारी अवलाद को भी रिज़्क़ देने वाला है तो हम माल कमाने व जाएदाद बनाने के ना जाइज़ ज़राएअ़ इख़्तियार कर के जहन्नम का इन्धन क्यूं बनें ? फिर इस बात की क्या ज़मानत है कि हमारा छोड़ा हुवा माल बच्चों के ही काम आएगा ? इस सिल्सिले में ज़ैल की ह़दीषे पाक पर ग़ौरो फ़िक्र कीजिये, चुनान्चे

भरोसे का इन्आ़म

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि सरवरे कौनैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : " **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने उन दो बन्दों को दोबारा ज़िन्दगी अ़ता फ़रमाएगा जिन्हें उस ने दुन्या में कषीर माल और अवलाद से नवाज़ा था, फिर एक से इरशाद फ़रमाएगा : "ऐ फ़ुलां बिन फ़ुलां !।" वोह अ़र्ज़ करेगा : "लब्बैक या

रब !" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "क्या मैं ने तुझे माल और कषीर अवलाद अ़त़ा न फ़रमाई थी ?" वोह अ़र्ज़ करेगा : "क्यूं नहीं !" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "तूने मेरे अ़त़ा कर्दा माल का क्या किया ?" वोह अ़र्ज़ करेगा : "मैं ने उसे मोह़ताजी के ख़ौफ़ से अपने बच्चों के लिये रख छोड़ा ।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "अगर तू ह़क़ीक़त जान लेता तो हंसता कम और रोता ज़ियादा । क्यूंकि जिस चीज़ का तुझे अपने बच्चों पर ख़ौफ़ था मैं ने उन्हें उसी में मुब्तला कर दिया ।" फिर दूसरे बन्दे से फ़रमाएगा : "ऐ फुलां बिन फुलां !" वोह अ़र्ज़ करेगा : "लब्बैक या रब عَزَّوَجَلَّ !" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "क्या मैं ने तुझे कषरत से माल और अवलाद अ़त़ा नहीं फ़रमाई थी ?" वोह अ़र्ज़ करेगा : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! क्यूं नहीं ।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "तूने मेरे अ़त़ा कर्दा माल के साथ क्या किया ?" वोह अ़र्ज़ करेगा : "या रब عَزَّوَجَلَّ मैं ने उसे तेरी त़ाअ़त (या'नी इ़बादत) में ख़र्च किया और मौत के बा'द अपने बच्चों के लिये तेरी अ़त़ा पर भरोसा किया ।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "अगर तू ह़क़ीक़त जान लेता तो रोता कम और हंसता ज़ियादा, तूने जो भरोसा किया था मैं ने तेरी अवलाद के साथ वोही मुआ़-मला किया ।" (المعجم الاوسط، باب العين، رقم ۴۳۸۳، ج ۳، ص ۲۱۷)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अंगूठी का नगीना भी वापस कर दिया

जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने ज़मीनें और जाएदादें उन के ह़क़दारों को वापस करना शुरूअ़ कीं तो फ़रमाया : मुझे अपने आप से इब्तिदा करनी चाहिये । फिर अपनी सारी

ज़मीनों और माल व दौलत पर ग़ौर करना शुरूअ़ किया। जो भी चीज़ मुश्तबा दिखाई देती वापस करते चले जाते या बैतुल माल के ह़वाले कर देते, इसी दौरान आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه की निगाह अपने हाथ की अंगूठी के नगीने की त़रफ़ गई तो फ़रमाया : ''येह मुझे वलीद ने दिया था।'' और उस को भी बैतुल माल में जम्अ़ करवा दिया। (سیرت ابن جوزی ص ۱۳۲)

ख़ैबर की जागीर

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِير ने अपनी तमाम जागीरों की दस्तावेज़ात चाक कर दी थी, अलबत्ता ''ख़ैबर'' और ''सुवैदा'' की दो जागीरें अभी बाक़ी थीं, आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه ने ख़ैबर की जागीर के बारे में तह़क़ीक़ात की, कि मेरे वालिद को येह कैसे मिली ? उन्हें बताया गया कि दर अस्ल फ़त्हे ख़ैबर के बा'द **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह अराज़ी अपनी ज़रूरिय्यात के लिये मख़सूस फ़रमाई थी, फिर आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इस को मुसलमानों के लिये ''फ़ै'' बना कर छोड़ गए, होती होती येह मरवान के पास पहुंची, मरवान ने आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه के वालिदे माजिद को अ़त़ा की और उन से आप को मिली। येह सुन कर हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِير ने इस की दस्तावेज़ भी चाक कर डाली और फ़रमाया : मैं इस को उसी ह़ालत में छोड़ता हूं जिस ह़ालत में **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इसे छोड़ कर गए थे। (या'नी माले फ़ै के त़ौर पर)।

(سیرت ابن جوزی ص ۱۳۰)

अपनी दौलत राहे ख़ुदा में ख़र्च कर दी

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने ख़लीफ़ा बनने के बा'द अपने पास कोई ऐसी ज़मीन नहीं रहने दी जिस पर किसी का मुता़-लबा बनता हो। इस के बा'द आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه ने अपनी सारी ज़मीनें, ग़ुलाम, कनीज़ें, लिबास, इ़त्र और दीगर सामान बेच डाला, जिस की क़ीमत 23 हज़ार दीनार मिली, आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه ने वोह सारी रक़म राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च कर दी। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۲۴)

ख़लीफ़ा का यौमिय्या वज़ीफ़ा

आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه को घरेलू अख़राजात के लिये दो दिरहम रोज़ाना वज़ीफ़ा मिला करता था चाहे ग़ल्ला सस्ता हो या महंगा।

(سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۲۴)

अपने खाने की रक़म सरकारी मत़बख़ (या'नी बावर्ची ख़ाने) में जम्अ़ करवाते

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز के सामने खाना पेश किया गया, मगर आप यूं ही बैठे रहे, चुनान्चे वहां पर मौजूद लोगों ने भी न खाया। जब आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه ने पूछा : तुम लोग खाना क्यूं नहीं खा रहे ? अ़र्ज़ की : इस लिये कि आप नहीं खा रहे। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه ने ज़ाती रक़म से दो दिरहम मंगवाए और खाने की क़ीमत सरकारी मत़बख़ (या'नी बावर्ची ख़ाने) में जम्अ़ करवाई और खाना शुरूअ़ किया, अब ह़ाज़िरीन ने भी खाना खा लिया। इस के बा'द से आप रोज़ाना दो दिरहम अपने खाने के जम्अ़ करवाते।

(سیرت ابن جوزی ص ۱۹۱)

बैतुल माल से कभी ना ह़क़ माल नहीं लिया

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللهِ الْعَزِيْز ने मरते दम तक कभी बैतुल माल से ना ह़क़ कोई शै नहीं ली।

(سیرت ابن جوزی ص ۱۸۶)

गवर्नरों की बेश क़ीमत तनख़्वाह और ह़ज़रते उ़मर की तंग दस्ती

ह़ज़रते इब्ने अबी ज़-करिया رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْه आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : "या **अमीरुल मोअमिनीन** मैं आप से कुछ अ़र्ज़ करना चाहता हूं।" फ़रमाया : "कहिये" अ़र्ज़ की : "मैं ने सुना है कि आप अपने एक एक गवर्नर को दो या तीन सो दीनार बल्कि इस से भी ज़ाइद तनख़्वाह देते हैं।" आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْه ने उस की वज़ाह़त की : "मेरा मक़्सद येह है कि उन्हें किताब व सुन्नत पर अ़मल करने में आसानी रहे और वोह फ़िक्रे मआ़श से आज़ाद हो कर काम करें।" अ़र्ज़ की : "**अमीरुल मोअमिनीन** ! फिर तो आप इस के ब-द-जए औला मुस्तह़िक़ हैं क्यूंकि आप उन से कहीं ज़ियादा काम करते है, आप भी उन के बराबर वज़ीफ़ा लीजिये ताकि आप के घर वाले भी मआ़शी तौर पर खुश ह़ाल हो सकें।" येह सुन कर आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला तुम पर रह़्म फ़रमाए, तुम ने येह मश्वरा यक़ीनन मेरी ख़ैर ख़्वाही में दिया है।" फिर पेट की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया : "इस की परवरिश सरकारी माल से हुई है, जो खा चुका वोही काफ़ी है, अब मैं दोबारा कभी सरकारी माल से इस की ज़ियाफ़्त नहीं करूंगा।" (سیرت ابن جوزی ص ۱۹۲)

जा़ती मनाफ़ेअ़ भी बैतुल माल में जम्अ़ करवा दिया

एक बार घर में ज़रूरियाते मआ़श के लिये कुछ न था, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز के गुलाम मुज़ाह़िम सख़्त परेशान हुए कि क्या इन्तिज़ाम किया जाए ? मजबूरन एक शख़्स से पांच दीनार क़र्ज़ लिये। जब यमन की जाएदाद का मनाफ़ेअ़ आया तो वोह निहायत ख़ुश हुए कि अब क़र्ज़ अदा हो जाएगा। येह सोच कर घर में गए मगर थोड़ी ही देर बा'द ह़ैरानी की ह़ालत में सर पर हाथ रखे बाहर निकले और कहने लगे : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **अमीरुल मोअमिनीन** को अज्र दे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **अमीरुल मोअमिनीन** को अज्र दे, जिन्हों ने अपनी ज़ाती रक़म भी बैतुल माल में जम्अ़ करवा दी।

(سیرت ابن جوزی ص ۱۹۴)

***अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।* اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

आमदनी कम हो गई

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز के साह़िब ज़ादे ह़ज़रते अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ القَدِير से दरयाफ़्त किया गया : "आप के वालिद की आमदनी कितनी थी ?" उन्हों ने जवाब दिया : "ख़िलाफ़त से क़ब्ल चालीस ह़ज़ार दीनार थी लेकिन इन्तिक़ाल के वक़्त "400 दीनार" रह गई थी और अगर कुछ दिन मज़ीद ज़िन्दा रहते तो शायद इस से भी कम हो जाती।" (تاریخ الخلفاء، ص ۱۸۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللهِ العَزِيز ख़िलाफ़त के आ'ला तरीन मन्सब पर पहुंचे तो उन की आमदनी पहले से कम हो गई मगर आज मन्सब व ओ़–हदे को अपनी आ़मदनी बढ़ाने का आसान ज़रीआ़ तसव्वुर किया जाता है और अ़ज़ाबाते आख़िरत को भूल कर ज़ियादा से ज़ियादा माल कमाने के अ़जीब व ग़रीब त़रीक़े अपनाए जाते हैं हालांकि इधर इन्सान की आंखें बन्द हुईं उधर माल का साथ ख़त्म ! कितनी परेशान कुन बात है कि इन्सान दुन्या से फुटी कोड़ी तक भी अपने साथ नहीं ले जा सकता मगर ह़िसाब उसे सारे माल का देना पड़ेगा हालांकि वोह माल इस के वारिष इस्ति'माल करते हैं, किसी बुज़ुर्ग के सामने एक शख़्स का ज़िक्र हुवा कि उस ने बहुत माल जम्अ़ कर लिया है तो उन्हों ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या इस को ख़र्च करने के लिये अय्याम भी जम्अ़ कर लिये हैं ?" (منہاج القاصدین) यक़ीनन येह बे वफ़ा दुन्या न पहले किसी की हुई न अब होगी इस दुन्या के माल व असबाब के पीछे हम कितना ही दौड़ें येह पेट भरने वाला नहीं है जैसा कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "अगर इन्सान को सोने की दो वादियां मिल जाएं तो वोह तीसरी की तमन्ना करेगा, इन्सान का पेट तो मिट्टी ही भर सकती है ।"(بخاری،کتاب الرقاق،ج۴،ص۲۲۹،رقم:۶۴۳۶) अकषर लोग अपना वक़्त और सलाहि़य्यतें मह़ज़ दुन्या कमाने में सर्फ़ करते हैं ह़ालांकि दुन्या की ह़क़ीक़त तो येह है कि **मह़नत से जोड़ना, मशक़्क़त से संभालना और ह़सरत से छोड़ना ।**

पीछे क्या छोड़ा ?

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरफ़ूअ़न मरवी है : "जब कोई शख़्स मर जाता है तो फ़िरिश्ते कहते हैं : مَا قَدَّمَ *या'नी इस ने आगे क्या भेजा ?* और लोग पूछते हैं : مَا خَلَّفَ *या'नी इस ने पीछे क्या छोड़ा ?"* (شعب الایمان،الحدیث ۱۰۴۷۵،ج۷،ص۳۲۸)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان इस ह़दीषे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : "या'नी मरते वक़्त उस के वारिषीन तो छोड़े हुए माल की फ़िक्र में होते हैं कि क्या छोड़े जा रहा है ? और जो मलाएका (या'नी फिरिश्ते) इस की क़ब्ज़े रूह वग़ैरा के लिये आते हैं वोह उस के आ'माल व अक़ाइद का ह़िसाब लगाते हैं ।" (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 48)

न दे जाह व ह़श्मत न दौलत की कषरत
गदाए मदीना बना या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 80)

माल क़बूल न फ़रमाते

उ़मर बिन असद कहते हैं कि लोग ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز के पास बहुत सा माल ले कर आते मगर आप लेने से इन्कार फ़रमा देते, आप رَحْمَۃُاللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہ आ़म लोगों से बे नियाज़ थे । (تاریخ الخلفاء ص۱۸۸)

ज़मीन से मिलने वाला नफ़्अ़ राहे ख़ुदा में ख़र्च कर दिया

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने एक मरतबा फ़रमाया : "मैं ने हर चीज़ मुसलमानों के बैतुल माल में दाख़िल कर दी है, अलबत्ता "चश्मा सुवैदा" मेरा अपना है, वहां मेरी कुछ चटयल (या'नी वीरान व बे आबाद) ज़मीन थी जिस की एक बालिश्त में भी किसी मुसलमान का ह़क़ नहीं था, फिर जो वज़ीफ़ा मुझे आ़म मुसलमानों के साथ मिलता है इस रक़म से मैं ने वोह ज़मीन काश्त कराई है।" जब उस ज़मीन का ग़ल्ला आया जिस की मालिय्यत 200 दीनार और एक बोरी "सैहानी" और "अ़जवा" खजूर थी तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : लाओ ! येह अ़जवा खजूर इन ह़ज़रात (या'नी हाज़िरीने मजलिस) के सामने पेश करो, येह बड़ी फ़रह़त अफ़्ज़ा और सिह़्ह़त बख़्श है। जब घर की औ़रतों ने सुना कि आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه के पास माल आया है तो उन्हों ने एक कम सिन साह़िब ज़ादे को भेजा कि उसे इस माल में से कुछ इनायत फ़रमाया जाए। म-दनी मुन्ना आया तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "इसे मुठ्ठी भर खजूरें दे दो।" खजूरे ले कर बच्चा तो ख़ुशी ख़ुशी चला गया, मगर जब औ़रतों के पास पहुंचा और उन्हों ने देखा कि उस के हाथ में सिर्फ़ खजूरें हैं तो उस से कहा : "जाओ ! येह खजूरें उन्हीं के सामने डाल दो।" म-दनी मुन्ना आया और खजूरें आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه के सामने डाल दीं और दीनारों की त़रफ़ हाथ बढ़ाया। हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِير ने वलीद बिन हिशाम से फ़रमाया : वलीद ! इस का हाथ पकड़ लो। वलीद ने बच्चे का हाथ पकड़ लिया। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه ने उस के लिये त़वील दुआ़ की, जिस में येह भी था :

اَللّٰھُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عَالِمَ الْغَیْبِ وَالشَّھَادَۃِ بَغِّضْ اِلٰی ھٰذَا الْغُلَامِ ھٰذَا الذَّھَبَ کَمَا حَبَّبْتَھَا اِلٰی فُلَانِ بْنِ فُلَانٍ

*या'नी या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! ऐ आस्मान व ज़मीन के पैदा करने वाले ! ऐ ग़ैब और ज़ाहिर को जानने वाले मौला عَزَّوَجَلَّ येह माल इस बच्चे के लिये उसी त़रह़ मबग़ूज़ (या'नी ना पसन्द) बना दे जिस त़रह़ फ़ुलां शख़्स के लिये इस को मह़बूब बनाया है।"* दुआ़ से फ़ारिग़ हो कर फ़रमाया : "वलीद ! अब इस का हाथ छोड़ दो।" म-दनी मुन्ने का हाथ कांपने लगा और उस ने एक दीनार को भी हाथ नहीं लगाया। येह देख कर एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : "**अमीरुल मोअमिनीन** ! लगता है कि आप की दुआ़ क़बूल हो गई।"

इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَدِیْر ने फ़रमाया : इन दो सो दीनार की ज़कात निकालो। जो शख़्स येह माल ले कर आया था उस ने अ़र्ज़ की : **अमीरुल मोअमिनीन** ! इस बाग़ का उ़श्र अदा किया जा चुका है। मगर आप ने ज़कात अलग करने पर इसरार फ़रमाया तो ज़कात के पांच दिनार अलग कर दिये गए। फिर आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "कोई ऐसा शख़्स बताओ जो आंखों से मा'ज़ूर हो और उस के पास कहीं आने जाने के लिये कोई ख़ादिम भी न हो।" लोग आपस में मश्वरा करने लगे, कुछ देर बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَدِیْر ने खुद ही फ़रमाया : "हां ! मुझे याद आया। वोह फ़ुलां बुढ़ा जो आंखों से मा'ज़ूर है, वोह बेचारा बरसात की अन्धेरी रात में ठोकरें खाता है, इस के पास कोई ख़ादिम नहीं जो उस का हाथ पकड़ कर यहां वहां ले जाए, इस रक़म से एक ख़ादिम की क़ीमत निकाल लो, ख़ादिम दरमिया'नी उ़म्र का हो, इतना बड़ा न हो कि उसे डांटा करें न

इतना कम उ़म्र हो कि बूढ़े की ख़िदमत से आ़जिज़ हो।" चुनान्चे उस रक़म से पैंतीस (35) दीनार उस के लिये निकाल लिये गए। इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَدِيۡر ने उस शख़्स को बुलाया जो आप के घरेलू अख़राजात का मु-तवल्ली (या'नी देख भाल करने वाला) था। इस से फ़रमाया : येह बक़िय्या दीनार ले लो और मेरा वज़ीफ़ा मिलने तक हमारे अहलो इ़याल पर ख़र्च करो। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۴۱)

क्या बात है ईषार की !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने अपनी ज़रूरियात व सहूलियात पर एक नाबीना मुसलमान की ज़रूरत को तरजीह़ दी और उस की ख़िदमत के लिये ग़ुलाम ख़रीद कर मुहय्या कर दिया, हमें भी चाहिये कि वक़्तन फ़ वक़्तन ईषार करने की सअ़्य करते रहा करें, **सुल्त़ाने दो जहान** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : اَيُّمَا اِمۡرِیءٍ اِشۡتَهٰی شَهۡوَتَه' فَرَدَّ وَآثَرَ عَلٰی نَفۡسِهٖ غُفِرَ لَه ***या'नी जो शख़्स किसी चीज़ की ख़्वाहिश रखता हो, फिर इस ख़्वाहिश को रोक कर (दूसरों को) अपने ऊपर तरजीह़ दे, तो अल्लाह*** عَزَّوَجَلّ ***इसे बख़्श देता है।***

(اتحاف السادۃ المتقین ج۹ ص۷۷۹)

ईषार की म-दनी बहार

एक इस्लामी बहन के साथ पेश आने वाली एक म-दनी बहार मुख़्तसरन अ़र्ज़े ख़िदमत है : बम्बई के एक अ़लाक़े में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** की त़रफ़ से

इस्लामी बहनों के होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ (पीर शरीफ़ 22 स–फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1428 हि. ब मुत़ाबिक़ 12.3.2007) के इख़्तेताम पर एक ज़िम्मादार इस्लामी बहन के पास किसी नई इस्लामी बहन ने अपनी चप्पल की गुमशुदगी की शिकायत की। ज़िम्मादार इस्लामी बहन ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए उसे अपनी चप्पल की पेशकश की, वहां मौजूद एक दूसरी इस्लामी बहन जिन को **म–दनी माह़ोल** से वाबस्ता हुए तक़रीबन सात माह हुए थे उस ने आगे बढ़ कर येह कहते हुए कि **''क्या दा'वते इस्लामी की ख़ातिर मैं इतनी क़ुरबानी भी नहीं दे सकती!''** ब इसरार अपनी चप्पलें पेश कर के उस नई इस्लामी बहन को क़बूल करने पर मजबूर कर दिया और ख़ुद पा बरह्ना (या'नी नंगे पाऊं) घर चली गईं। रात जब सोईं तो उस की क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी! क्या देखती है कि **सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपना चांद सा चेहरा चमकाते हुए जल्वा फ़रमा हैं नीज़ **एक मुअ़म्मर** (مُ-عَمْ-مَر) **मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी** सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ सजाए क़दमो मे ह़ाज़िर हैं। **सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के लबहाए मुबा–रका को जुम्बिश हुई रह़मत के फूल झड़ने लगे और अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : चप्पल ईषार करते वक़्त तुम्हारी ज़बान से निकले हुए अल्फ़ाज़ **''क्या दा'वते इस्लामी की ख़ातिर में इतनी क़ुरबानी भी नहीं दे सकती!''** हमें बहुत पसन्द आए। (इलावा अज़ीं भी ह़ौसला अफ़ज़ाई फ़रमाई)

(माख़ूज़ अज़ पुर असरार भिकारी, स. 28)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

30 हजा़र दिरहम बैतुल माल में जम्अ़ करवा दिये

एक मरतबा बहरीन से 30 हज़ार दिरहम ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز की ख़िदमत में अख़राजात के लिये भेजे गए, जब आप को इत्तेलाअ़ हुई तो अपने ख़ादिमे ख़ास मुज़ाहिम से फ़रमाया : इस माल को बैतुल माल में जम्अ़ करवा दो।

(تاریخ دمشق، ج ۴۵، ص ۲۲۱ ملخصا)

ख़लीफ़ा की अहलिय्या के ज़ेवरात

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने अपनी अहलिय्यए मोह़तरमा ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा बिन्ते अ़ब्दुल मलिक رحمۃاللہ تعالی علیہا से फ़रमाया : "तुम्हें अपने इन ज़ेवरात का ह़ाल मा'लूम है कि तुम्हारे वालिद ने येह किस त़रह़ ह़ासिल किये और फिर किस त़रह़ तुम्हें दिये ? अगर तुम इजाज़त दो तो मैं उन्हें एक सन्दूक़ में बन्द कर के ताला लगा कर बैतुल माल के आख़िरी गोशे में रख दूं, अगर इस से पहले बैतुल माल का सारा माल ख़र्च हो जाए तो इसे भी ख़र्च कर डालूंगा और अगर इसे ख़र्च करने से पहले ही मेरा इन्तिक़ाल हो जाए तो तुम्हें येह मिल ही जाएंगे।"(या'नी बा'द का ख़लीफ़ा तुम्हें वापस कर ही देगा) ज़ौजा ने सआ़दत मन्दी से कहा : "जैसी आप की राय हो, मेरी त़रफ़ से इजाज़त है।" चुनान्चे आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه ने ज़ेवरात बैतुल माल में रखवा दिये, येह ज़ेवरात अभी बैतुल माल ही में मौजूद थे कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز

का विसाल हो गया बा'द में ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा बिन्ते अ़ब्दुल मलिक رحمۃاللہ تعالی علیہا के भाई यज़ीद बिन अ़ब्दुल मलिक ख़लीफ़ा हुए तो येह ज़ेवरात उन्हें वापस करना चाहे मगर उन्हों ने येह कह कर लेने से इन्कार कर दिया कि येह नहीं हो सकता कि मैं उन की ज़िन्दगी में ज़ेवरात से दस्त बरदार हो जाऊं और उन की वफ़ात के बा'द वापस ले लूं।" चुनान्चे ख़लीफ़ा ने येह ज़ेवरात घर की दूसरी औ़रतों में तक़्सीम कर दिये। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۵۳)

इस ह़िकायत में शादी शुदा इस्लामी बहनों के लिये दर्से अ़ज़ीम भी पोशीदा है कि नाज़ो ने'म से पली शहज़ादी ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा बिन्ते अ़ब्दुल मलिक رحمۃاللہ تعالی علیہا ने शोहर के हुक्म पर आएं बाएं शाएं किये बिग़ैर अपने ज़ेवरात बैतुल माल में जम्अ़ करवा दिये और फिर वापस करने पर भी दोबारा क़बूल नहीं किये।

सियाह को सफ़ेद और सफ़ेद को सियाह कर दो

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है : अगर शोहर अपनी औ़रत को येह हुक्म दे कि वोह ज़र्द रंग के पहाड़ से पथ्थर उठा कर सियाह पहाड़ पर ले जाए और सियाह पहाड़ से पथ्थर उठा कर सफ़ेद पहाड़ पर ले जाए तो औ़रत को अपने शोहर का येह हुक्म भी बजा लाना चाहिये। (مسند امام احمد ج ۹ ص ۳۵۳ حدیث ۲۴۵۲۵)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْحَنَّان इस ह़दीषे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : येह फ़रमाने मुबारक मुबा-लग़े के तौ़र पर है, सियाह व सफ़ेद पहाड़ क़रीब क़रीब नहीं होते बल्कि दूर दूर होते हैं मक़्सद येह है कि अगर ख़ावन्द (शरीअ़त के दाइरे

में रह कर) मुश्किल से मुश्किल काम का भी हुक्म दे तब भी बीवी उसे करे, काले पहाड़ का पथ्थर सफ़ेद पहाड़ पर पहुंचाना सख़्त मुश्किल है कि भारी बोझ ले कर सफ़र करना है। (मिरआत, जि. 5, स. 106)

औ़रत पर शोहर का ह़क़

शोहर के हुक़ूक़ का बयान करते हुए मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "औ़रत पर मर्द का ह़क़ ख़ास उमूरे मु-तअ़ल्लिक़ा ज़ौजिय्यत में **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰلهٖ وسلَّم के बा'द तमाम हुक़ूक़ ह़त्ता कि मां बाप के ह़क़ से ज़ाइद है इन उमूर में इस के अह़काम की इताअ़त और उस के नामूस की निगह दाश्त (या'नी उस की इ़ज़्ज़त की हिफ़ाज़त) औ़रत पर फ़र्ज़े अहम है। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : अगर मैं किसी को ग़ैरे ख़ुदा के सजदे का हुक्म देता तो औ़रत को हुक्म देता कि अपने शोहर को सजदा करे।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि.24, स. 380)(माख़ूज़ अज़ पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 116)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تعالىٰ على محمَّد

घर वालों के ख़र्च में कमी

इमाम औज़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि जिस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمۃ اللهِ الْعَزِيز ने अपने अहलो इ़याल के ख़र्च में कमी की तो उन्हों ने आप رَحْمَةُ اللهِ تعالى عَلَيْه से तंगी की शिकायत की, आप رَحْمَةُ اللهِ تعالى عَلَيْه ने फ़रमाया : मेरे पास इस क़दर

माल नहीं है कि मैं तुम्हें इस से ज़ियादा दे सकूं, अब रहा बैतुल माल तो इस पर तुम्हारा उतना ही ह़क़ है जितना दूसरे मुसलमानों का। (تاریخ الخلفاء ص ۱۹۰)

अहलिय्या का वज़ीफ़ा

हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा बिन्ते अ़ब्दुल मलिक رحمۃ اللہ تعالی علیہا ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز से अपने लिये अलग से सरकारी वज़ीफ़ा मुक़र्रर करने की दरख़्वास्त की तो फ़रमाया : नहीं ! तुम्हारे लिये मेरा ज़ाती माल ही काफ़ी है। अ़र्ज़ की : तो फिर आप पहले ख़ु-लफ़ा से ख़ुद वज़ीफ़ा क्यूं लेते थे ? फ़रमाया : वोह मुझे बिग़ैर मह़नत के मिलने वाला इन्आ़म था और इस का वबाल देने वालों पर है, अब जब कि मैं ख़ुद ख़लीफ़ा हूं तो येह काम नहीं करूंगा कि कहीं गुनाहगार हो जाऊं। (سیرت ابن جوزی ص ۲۸۷)

उन की दुन्या बनाने के लिये अपनी आख़िरत तबाह नहीं करूंगा

एक दिन किसी ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز से उन के घर वालों की मुआ़शी ह़ालत के ह़वाले से गुफ़्त-गू की तो फ़रमाया : मैं ने उन्हें माले ग़नीमत से दूसरों की त़रह़ उन को भी ह़िस्सा दिया है। अ़र्ज़ की गई : इतनी सी रक़म में वोह कैसे गुज़ारा करेंगे ? कपड़े कहां से ख़रीदेंगे, घर आए मेहमानों की मेज़बानी क्यूंकर कर सकेंगे ? तो इरशाद फ़रमाया : मैं उन की दुन्या बनाने के लिये अपनी आख़िरत तबाह नहीं कर सकता। (سیرت ابن جوزی ص ۸۲)

अह़मक़ कौन ?

हज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡحَنَّان फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ الۡعَزِيۡز ने अपने रु–फ़क़ा से पूछा : اَخۡبِرُوۡنِىۡ مَنۡ اَحۡمَقُ النَّاسِ *या'नी येह बताओ कि लोगों में से ज़ियादा अह़मक़ कौन है ?* कहने लगे : رَجُلٌ بَاعَ آخِرَتَهٗ بِدُنۡيَاهُ *या'नी वोह शख़्स जिस ने अपनी आख़िरत दुन्या के बदले बेच दी ।* फ़रमाया اَلَاۤ اُنَبِّئُكُمۡ بِاَحۡمَقَ مِنۡهُ *या'नी क्या मैं तुम्हें ऐसे शख़्स के बारे में न बताऊं जो इस से बढ़ कर अह़मक़ है !* अ़र्ज़ की : **बला** *या'नी क्यूं नहीं ।* फ़रमाया رَجُلٌ بَاعَ آخِرَتَهٗ بِدُنۡيَا غَيۡرِهٖ *या'नी वोह शख़्स जिस ने दूसरों की दुन्या के बदले अपनी आख़िरत बेच डाली ।* (سیرت ابن جوزی ص ۲۷۶)

बुरा सौदा

दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

اِنَّ مِنۡ شَرِّ النَّاسِ عِنۡدَ اللّٰهِ مَنۡزِلَةً يَوۡمَ الۡقِيَامَةِ عَبۡدًا اَذۡهَبَ آخِرَتَهٗ بِدُنۡيَا غَيۡرِهٖ

या'नी लोगों में सब से बुरा और बद तर ठिकाना उस शख़्स का है जो दूसरे की दुन्या की ख़ातिर अपनी आख़िरत बरबाद कर दे ।

(المعجم الکبیر ج ۸ ص ۱۲۳، الحدیث ۷۵۵۹)

अपने घर वालों को ह़राम कमा कर खिलाने वालों को संभल जाना चाहिये कि मैदाने मह़शर में कि जहां एक एक नेकी की सख़्त ह़ाजत होगी, येही "अपने" इस से क्या सुलूक करेंगे ? चुनान्चे

क़ियामत के दिन अहलो इ़याल का दा'वा

मरवी है कि मुर्दे से ता'ल्लुक़ रखने वालों में पहले उस की **ज़ौजा** और उस की **अवलाद** है, मगर येह सब (या'नी बीवी, बच्चे क़ियामत में) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ करेंगे : "ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ! हमें इस शख़्स से हमारा ह़क़ ले कर दे, क्यूंकि इस ने कभी हमें दीनी उमूर की ता'लीम नहीं दी और येह हमें ह़राम खिलाता था जिस का हमें इ़ल्म न था।" चुनान्चे उस से उन का बदला लिया जाएगा। एक और रिवायत में है कि "बन्दे को **मीज़ान** के पास लाया जाएगा, फ़िरिश्ते पहाड़ के बराबर उस की नेकियां लाएंगे तो उस से उस के इ़याल की ख़बर गीरी और ख़िदमत के बारे में सुवाल होगा और **माल** के बारे में पूछा जाएगा कि कहां से ह़ासिल किया? और कहां ख़र्च किया? ह़त्ता कि उस के तमाम **आ'माल** उन मुत़ा–लबात में ख़र्च हो जाएंगे और उस के लिये कोई नेकी बाक़ी नहीं रहेगी, उस वक़्त फ़िरिश्ते आवाज़ देंगे : "**येह वोह शख़्स है जिस की नेकियां इस के अहलो इ़याल ले गए और वोह अपने आ'माल के साथ गिर्वी है।**"

(قوت القلوب،باب ذکر التزویج الخ،ج۲ ص۴۷۸،۴۷۹)

हमारी बिगड़ी हुई आ़दतें निकल जाएं　　मिले गुनाहों के अमराज़ से शिफ़ा या रब
रहें भलाई की राहों में गामज़न हर दम　　करें न रुख़ मेरे पाऊं गुनाह का या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 96)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बच्चों की अम्मी पर इन्फ़िरादी कोशिश

एक दिन **अमीरुल मोअमिनीन ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन** हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز की ज़ौजए मोह़तरमा ने उन से अ़र्ज़ की : "मुझे कुछ नसीह़त फ़रमाइये।" तो आप ने फ़रमाया : "तो सुनिये ! जब मैं ने देखा कि इस उम्मत के हर सुर्ख़ व सफ़ेद की ज़िम्मादारी मेरे कन्धों पर डाल दी गई है तो मुझे फ़ौरन दूरो दराज़ के शहरों और ज़मीन के अत़राफ़ व अकनाफ़ में रहने वाले भूक के मारे हुए **फ़क़ीरों**, बे सहारा मुसाफ़िरों, सितम रसीदा लोगों और इस क़िस्म के दूसरे अफ़राद का ख़याल आया और मेरे दिल में येह एह़सास पैदा हुवा कि क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझ से मेरी रिआ़या के बारे में बाज़ पुर्स फ़रमाएगा और **अल्लाह** तआ़ला के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उन तमाम लोगों के ह़क़ में मेरे ख़िलाफ़ बयान देंगे। येह सोच कर मेरे दिल पर एक ख़ौफ़ त़ारी हो गया कि **अल्लाह** तआ़ला उन के बारे में मेरा कोई उ़ज़्र क़बूल नहीं फ़रमाएगा और मैं अपने **आक़ा व मौला** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के हुज़ूर किसी क़िस्म की सफ़ाई पेश नहीं कर सकूंगा। येह सोच कर मुझे ख़ुद पर तरस आता है और मेरी आंखों से आंसू बहने लगते हैं। इस ह़क़ीक़त को मैं जितना याद करता हूं, मेरा एह़सास उतना ही बढ़ता चला जाता है।" फिर आप ने अपने बच्चों की अम्मी से मुख़ात़िब हो कर फ़रमाया : "अब आप की मरज़ी है इस से नसीह़त ह़ासिल करें या न करें।"

(تاریخ دِمشق، ج۴۵،ص۱۹۸ ملخصاً)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز वोही हस्ती हैं कि जिस दिन आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيۡه मन्सबे ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ हुए उसी दिन से तन देही से रिआ़या की ख़िदमत में मसरूफ़ हो गए। आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيۡه ने अपनी ज़ात और ज़ेह्न को मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही के लिये वक़्फ़ कर रखा था, इस के बा वुजूद आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيۡه को आख़िरत में गिरिफ़्त का किस क़दर एह्सास था, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें उन के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الۡحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

सोने के अन्दाज़ की इस्लाह़

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز की बेटी या ज़ौजा चित सोई हुई थी, आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيۡه ने देखा तो इस त़रह़ लेटने से मन्अ़ फ़रमाया। अपनी बिटियों को फ़रमाया करते कि शैत़ान तुम्हारे सामने होता है जब तुम चित लेटोगी तो वोह तुम में बुरी ख़्वाहिश रखेगा। (طبقات ابن سعد، ج۵، ص۲۹۷، ۲۹۸)

"काश ! जन्नतुल बक़ीअ़ मिले" के पन्द्रह ह़ुरूफ़ की निस्बत से सोने, जागने के 15 म-दनी फूल

{1} सोने से पहले बिस्तर को अच्छी त़रह़ झाड़ लीजिये ताकि कोई मूज़ी कीड़ा वग़ैरा हो तो निकल जाए {2} सोने से पहले येह दुआ़ पढ़ लीजिये : اَللّٰھُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْیٰ *तर्जमा :* ऐ **अल्लाह**

عَزَّوَجَلَّ मैं तेरे नाम के साथ ही मरता हूं और जीता हूं (या'नी सोता और जागता हूं) (بُخارِی ج۴ص۱۹۶ حدیث ۶۳۲۵) {3} अ़स्र के बा'द न सोएं अ़क्ल **ज़ाइल होने का ख़ौफ़** है। फ़रमाने **मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : "जो शख़्स अ़स्र के बा'द सोए और उस की अ़क्ल जाती रहे तो वोह अपने ही को मलामत करे।" (مسند ابی یعلی حدیث ۴۸۹۷ ج۴ ص۲۷۸) {4} दो पहर को क़ैलूला (या'नी कुछ देर लेटना) मुस्तह़ब है (عالَمگیری ج ۵ ص ۳۷۶) **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ग़ालिबन येह उन लोगों के लिये होगा जो शब बेदारी करते है, रात में नमाज़ें पढ़ते, ज़िक्रे इलाही करते हैं या कुतुब बीनी या मुत़ा-लए में मश्ग़ूल रहते हैं कि शब बेदारी में जो तकान हुई क़ैलूले से दफ़्अ़ हो जाएगी। (बहारे शरीअ़त जि. 16, स. 79 मक-त-बतुल मदीना) {5} दिन के इब्तिदाई ह़िस्से में सोना या मग़रिब व इशा के दरमियान में सोना मकरूह है (عالَمگیری ج ۵ ص ۳۷۶) {6} सोने में मुस्तह़ब येह है कि बा त़हारत सोए और {7} कुछ देर सीधी करवट पर सीधे हाथ को रुख़्सार (या'नी गाल) के नीचे रख कर क़िब्ला रू सोए फिर इस के बा'द बाईं करवट पर (اَیضاً) {8} सोते वक़्त क़ब्र में सोने को याद करे कि वहां तन्हा सोना होगा सिवा अपने आ'माल के कोई साथ न होगा {9} सोते वक़्त यादे ख़ुदा में मश्ग़ूल हो तहलील व तस्बीह़ व तह़मीद पढ़ें ﴿या'नी لَااِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ, سُبْحٰنَ اللّٰہِ और اَلْحَمْدُلِلّٰہِ का विर्द करता रहे﴾ यहां तक कि सो जाए, कि जिस ह़ालत पर इन्सान सोता है उसी पर उठता है और जिस ह़ालत पर मरता है क़ियामत के दिन उसी पर उठेगा (اَیضاً)

{10} जागने के बा'द येह दुआ़ पढ़िये :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْٓ اَحْيَانَا بَعْدَ مَآ اَمَا تَنَا وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ . (بخاری ج۴ص ۲۹۱ حدیث ۶۳۱۲)

"तर्जमा : तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने हमें मारने के बा'द ज़िन्दा किया और उसी की त़रफ़ लौट कर जाना है" {11} उसी वक़्त इस का पक्का इरादा करे कि परहेज़ गारी व तक़्वा करेगा किसी को सताएगा नही (فتاوٰی عالمگیری ج ۵ ص ۳۷۶) {12} जब लड़के और लड़की की उ़म्र दस साल की हो जाए तो उन को अलग अलग सुलाना चाहिये बल्कि इस उ़म्र का लड़का इतने बड़े (या'नी अपनी उ़म्र के) लड़कों या (अपने से बड़े) मर्दों के साथ भी न सोए। (دُرِّمُختار،رَدُّالْمُحتار ج ۹ ص ۶۲۹) {13} मियां बीवी जब एक चार पाई पर सोएं तो दस बरस के बच्चे को अपने साथ न सुलाएं, लड़का जब ह़द्दे शहवत को पहुंच जाए तो वोह मर्द के हुक्म में है (دُرِّمُختار ج۹ص ۶۳۰) {14} नीन्द से बेदार हो कर मिस्वाक कीजिये {15} रात में नीन्द से बेदार हो कर तहज्जुद अदा कीजिये तो बड़ी सआ़दत है। **सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "फ़र्ज़ों के बा'द अफ़्ज़ल नमाज़ रात की नमाज़ है।" (صَحِیح مُسلِم،ص ۵۹۱ حدیث ۱۱۶۳) त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ दो कुतुब बहारे शरीअ़त हि़स्सा 16 (312 सफ़्ह़ात) नीज़ 120 सफ़्ह़ात की किताब **"सुन्नतें और आदाब"** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िलें में चलो पाओगे ब-र-करतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

(माख़ूज़ अज़ "101 म-दनी फूल" स. 30)

पहनने के लिये कपड़े न थे

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز अपने बच्चों से अगर्चे बहुत ज़ियादा मह़ब्बत रखते थे, लेकिन इस मह़ब्बत का इज़्हार कभी दुन्यवी ज़ैब व ज़ीनत और ऐशो इ़शरत की सूरत में नहीं होता था, एक बार उन्हों ने अपनी बेटी आमीना को निहायत प्यार से आवाज़ दे कर बुलाया लेकिन वोह न आई। जब बा'द में उस से न आने की वजह पूछी तो अ़र्ज़ की : मेरे पास सित्र ढांपने के लिये कपड़ा न था। **अमीरुल मोअमिनीन** ने मुज़ाहि़म को हुक्म दिया कि फ़र्श पर बिछी हुई चादर को फाड़ कर इस के लिये एक क़मीज़ तय्यार करवा दो। हुस्ने इत्तेफ़ाक़ से लड़की की फूफी उम्मुल बिनीन निहायत दौलत मन्द थी, एक आदमी उन के पास गया और सारा माजरा बयान किया। उन्हों ने एक थान कपड़ा भेज दिया और कहा उ़मर (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) से कुछ न मांगो। (سیرت ابن جوزی ص ۳۱۵)

मोटे कपड़े

एक बार हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز के साहि़ब ज़ादे अ़ब्दुल्लाह आए और कपड़े मांगे।

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उन को ख़य्यार बिन रबाह़ बसरी के पास भेज दिया कि हमारे कपड़े वहां रखे हुए हैं। वोह गए तो ख़य्यार ने चन्द मोटे कपड़े निकाल कर सामने रख दिये और कहा कि जिस क़दर ज़रूरत हो ले लो, साहिब ज़ादे ने कहा : येह मेरी और मेरे ख़ानदान की पोशिश (या'नी लिबास) नहीं है। ख़य्यार ने कहा : **अमीरुल मोअमिनीन** के येही कपड़े हैं जो मेरे पास हैं। येह सुन कर अ़ब्दुल्लाह वापस हो लिये और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز से वाक़ेआ़ बयान किया तो फ़रमाया : "वोह ठीक ही तो कहते हैं, हमारे पास तो येही कपड़े हैं।" अब साहिब ज़ादे ने मायूस हो कर पलटना चाहा तो पेशकश की, कि अगर लेना चाहो तो मैं तुम्हें 100 दिरहम क़र्ज़ दिलवा सकता हूं। वोह राज़ी हो गए तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सो दिरहम दिलवा दिये, जब वज़ीफ़ा तक़्सीम हुवा तो उन के वज़ीफ़े से वोह रक़म काट ली। (سیرت ابن جوزی ص ۳۱۲)

हज़ार भूकों का पेट भर दो

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز की अवलाद में अगर कोई बेश क़ीमत चीज़ का इस्ति'माल करता तो उस को भी मन्अ़ करते। एक बार उन के साहिब ज़ादे ने अंगूठी बनवाई और उस के लिये हज़ार दिरहम का नगीना ख़रीदा। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को मा'लूम हुवा तो लिखा कि इस अंगूठी को फ़रोख़्त कर डालो और इस रक़म से हज़ार भूकों का पेट भर दो। (سیرت ابن جوزی ص ۳۱۴)

बैतुल माल सौकें जम्अ़ करने के लिये नहीं है

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز के एक साहिब ज़ादे ने आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में येह दरख़्वास्त

भेजी कि मैं शादी करना चाहता हूं, मेरा महर बैतुल माल से अदा फ़रमा दीजिये। येह साहिब ज़ादे पहले से शादी शुदा थे, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه उस पर बे हद नाराज़ हुए और उसे लिखा : "तुम ने अपने ख़त़ में मुझ से दरख़्वास्त की है कि मैं तुम्हारे लिये मुसलमानों के बैतुल माल की रक़म ख़र्च कर के सौंके जम्अ़ कर दूं ? (या'नी तुम्हारी दूसरी शादी कर दूं) हालांकि मुहाजिरीन की अवलाद में बा'ज़ ऐसे अफ़राद भी हैं जिन्हें अपनी इफ़्फ़त व इस्मत की हिफ़ाज़त के लिये एक बीवी भी मुयस्सर नहीं, ख़बर दार ! आइन्दा ऐसी बात मुझे न लिखना।" बा'द अज़ां आप ने उसी साहिब ज़ादे को एक ख़त़ और लिखा जिस में फ़रमाया : "तुम्हारे पास जो हमारा तांबा और घरेलू सामान है अगर चाहो तो उसे फ़रोख़्त कर के अपनी ज़रूरत पूरी कर लो।" (سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۰۶)

शहज़ादियों की ईद

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز की ख़िदमत में ईद से एक दिन क़ब्ल आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की **शहज़ादियां** हाज़िर हुईं और बोलीं : "**बाबा जान** ! कल ईद के दिन हम कौन से कपड़े पहनेंगी ?" फ़रमाया : "येही कपड़े जो तुम ने पहन रख्खे हैं, इन्हें धो लो, कल पहन लेना !", "**नहीं बाबा जान** ! आप हमें नए कपड़े बनवा दीजिये," बच्चियों ने ज़िद करते हुए कहा। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "मेरी बच्चियों ईद का दिन **अल्लाह** रबुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करने, उस का शुक्र बजा लाने का दिन है, नए कपड़े पहनना ज़रूरी तो नहीं !", "**बाबा जान** ! आप का फ़रमाना बे शक दुरुस्त है लेकिन हमारी सहेलियां हमें ता'ने देंगी कि तुम **अमीरुल मोअमिनीन**

की लड़कियां हो और ईद के रोज़ भी वोही पुराने कपड़े पहन रखे हैं !" येह कहते हुए बच्चियों की आंखों में **आंसू** भर आए। बच्चियों की बातें सुन कर आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه का दिल भी भर आया । आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने ख़ाज़िन (वज़ीरे मालियात) को बुला कर फ़रमाया : "मुझे मेरी एक माह की तन ख़्वाह पेशगी ला दो।" ख़ाज़िन ने अ़र्ज़ की, "हुज़ूर ! क्या आप को यक़ीन है कि आप एक माह तक ज़िन्दा रहेंगे !" आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "جَزَاكَ اللّٰهُ तूने बे शक उ़म्दा और सहीह़ बात कही।" **ख़ाज़िन** चला गया। आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने बच्चियों से फ़रमाया, "**प्यारी बेटियो** ! **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰه تعالٰی علیه واٰلہٖ وسلَّم की रिज़ा पर अपनी ख़्वाहिशात को क़ुरबान कर दो।"

अल्लाह *عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।* اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تَعالٰی عَلَيْهِ وَاٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی علٰی محمَّد

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इस हिकायत को नक़्ल करने के बा'द लिखते हैं :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? गुज़श्ता दोनों हिकायात से हमें येही दर्स मिला कि उजले कपड़े पहन लेने का नाम ही **ईद** नहीं। इस के बिग़ैर भी **ईद** मनाई जा सकती है। **अल्लाहु** अकबर عَزَّوَجَلَّ **अमीरुल मोअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز किस क़दर ग़रीब व मिस्कीन ख़लीफ़ा थे। इतनी बड़ी सल्त़नत के ह़ाकिम होने के बा वुजूद आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने

कोई रक़म जम्अ़ न की थी। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ के **ख़ाज़िन** भी किस क़दर दियानत दार थे और उन्हों ने कैसे ख़ूब सूरत अन्दाज़ में पेशगी तन ख़्वाह देने से इन्कार कर दिया। इस **हिकायत** से हम सब को भी इ़ब्रत ह़ासिल करनी चाहिये और पेशगी तन ख़्वाह या उजरत लेने से पहले ख़ूब अच्छी त़रह़ ग़ौर कर लेना जाहिये कि हम जितनी मुद्दत की पेशगी तन ख़्वाह ले रहे हैं आया उतनी मुद्दत तक ज़िन्दा भी रहेंगे या नहीं और अगर ज़िन्दा रह भी गए तो काम काज के क़ाबिल भी रहेंगे या नहीं ! ज़ाहिर है इन्सान ह़ादिषा या बीमारी के सबब ना कारा भी तो हो सकता है। (फ़ैज़ाने सुन्नत, स.1305)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی علٰی محمَّد

मसूर की दाल और प्याज़ से पेट भरा

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز का मा'मूल था कि इ़शा की नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर कुछ देर के लिये अपनी साहि़ब ज़ादियों के पास तशरीफ़ ले जाते। ह़स्बे मा'मूल एक रात उन के यहां गए तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ की आहट पाते ही उन्हों ने अपने मुंह पर हाथ रख लिये और अन्दर की त़रफ़ लपकीं। आप ने ख़ादिमा से इस का सबब दरयाफ़्त किया, उस ने बताया कि इन के पास शाम के खाने के लिये कुछ नहीं था, मजबूरन इन्हों ने मसूर की दाल और प्याज़ से पेट भरा है, इन को गवारा न हुवा कि आप को इन के मुंह की बू मेह़सूस हो। येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز रो पड़े और साहि़ब ज़ादियों

से फ़रमाया : "तुम्हें इस से क्या नफ़्अ़ होगा कि तुम रंगा रंग के खाने खाओ और फ़िरिश्ते तुम्हारे बाप को पकड़ कर दोज़ख़ में ले जाएं !" येह कह कर आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه वापस आ गए और साहिब ज़ादियों की रोते रोते चीखें निकल गईं । (سیرت ابن عبدالحکم ص ۴۹)

जला दे न मुझ को कहीं नारे दोज़ख़
करम बहरे शाहे उमम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 83)

इस हिकायत से उन नादानों को इब्रत पकड़नी चाहिये जो सिर्फ़ और सिर्फ़ अपने घर वालों की फ़रमाइशें और ज़रूरतें पूरी करने के लिये माले ह़राम का वबाल अपने सर ले लेते हैं, ऐसों को ख़ूब समझ लेना चाहिये कि येह सरासर ख़सारे का सौदा है, चुनान्चे

अपने आप को हलाकत में डालने वाला बद नसीब

हमारे प्यारे आक़ा, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "लोगों पर एक ज़माना ऐसा आएगा कि मोमिन को अपना दीन बचाने के लिये एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ और एक ग़ार से दूसरे ग़ार की त़रफ़ भागना पड़ेगा तो उस वक़्त रोज़ी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी ही से ह़ासिल की जाएगी फिर जब ऐसा ज़माना आ जाएगा तो आदमी अपने बीवी बच्चों के हाथों हलाक होगा, अगर उस के बीवी बच्चें न हों तो वोह अपने वालिदैन के हाथों हलाक होगा, अगर उस के वालिदैन न हुए तो वोह रिश्तेदारों और पड़ोसियों के हाथों हलाक होगा ।" सह़ाबए

किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم वोह कैसे ?" फ़रमाया : "वोह उसे माल की कमी का ता'ना देंगे तो आदमी अपने आप को हलाकत में डालने वाले कामों में मसरूफ़ कर देगा ।" (तो गोया उन्हीं के हाथों हलाक हुवा)

(الترغيب والترهيب ، كتاب الادب ،باب فى العزلة لمن لايا من ...الخ رقم٦ ١، ج٣، ص ٣٦٢)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ज़िम्मी को उस की ज़मीन वापस दिलवाई

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز के पास एक ज़िम्मी काफ़िर आया और कहने लगा : "मैं ह़िम्स से आया हूं और आप से किताबुल्लाह के मुत़ाबिक़ फ़ैसला चाहता हूं ।" आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه ने पूछा : "तुम किस बात का फ़ैसला चाहते हो ?" कहने लगा : "अ़ब्बास बिन वलीद ने मेरी ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर लिया है ।" अ़ब्बास बिन वलीद भी उसी मजलिस में मौजूद थे । आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه ने उन से पूछा : "अ़ब्बास ! तुम इस बारे में क्या कहते हो ?" अ़ब्बास बिन वलीद कहने लगे : "हुज़ूर ! येह ज़मीन मुझे मेरे वालिद **अमीरुल मोअमिनीन** वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक ने दी थी, उन की लिखी हुई दस्तावेज़ मेरे पास मौजूद है ।" हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ العزيز ने ज़िम्मी से फ़रमाया : "अब तुम इस बारे में क्या कहते हो ? अ़ब्बास के पास तो ज़मीन की मिल्किय्यत की दस्तावेज़ वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक की त़रफ़ से मौजूद है जिस के मुत़ाबिक़ येह ज़मीन अ़ब्बास की मिल्किय्यत में है ।" ज़िम्मी कहने लगा :

"या **अमीरल मोअमिनीन** ! मैं आप से किताबुल्लाह के मुताबिक़ फ़ैसला चाहता हूं।" हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِیز ने फ़रमाया : "वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक की किताब (या'नी दस्तावेज़) के बजाए किताबुल्लाह ज़ियादा लाइक़ है कि उस की पैरवी की जाए। लिहाज़ा, अ़ब्बास ! तुम येह ज़मीन इस ज़िम्मी को वापस कर दो।" यूं आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने वोह ज़मीन साबिक़ ख़लीफ़ा वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक के बेटे अ़ब्बास से ले कर इस ज़िम्मी को दिलवा दी। (سیرت ابن جوزی ص ۱۲۶)

सात ज़मीनों का हार

दूसरों की जगहों पर क़ब्ज़ा कर के इमारतें बनाने वाले, लोगों की त़रफ़ से ठेके पर मिली हुई ज़रई ज़मीनें दबा लेने वाले किसान, वडेरे और ख़ाइन ज़मीन दार संभल जाएं कि अगर्चे दुन्या में रिश्वत और ता'ल्लुक़ात के बल बूते पर वोह सज़ा से बचने में काम्याब हो भी जाएं मगर आख़िरत में सख़्त ज़िल्लत व रुस्वाई का सामना होगा जैसा कि सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

مَنِ اقْتَطَعَ شِبْرًا مِنَ الْاَرْضِ ظُلْمًا طَوَّقَهُ اللّٰهُ إِيَّاهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ سَبْعِ اَرَضِيْنَ

"या'नी जो शख़्स किसी की बलिश्त भर ज़मीन ना ह़क़ तौ़र पर लेगा तो उसे क़ियामत के रोज़ सात ज़मीनों का तौ़क़ (या'नी हार) पहनाया जाएगा।"

(مسلم، الحدیث ۱۶۱۰، ص ۸۶۹)

चुनान्चे ऐसों को घबरा कर झट पट तौबा कर लेनी चाहिये और जिन जिन के हुक़ूक़ दबाए हैं वोह फ़ौरन अदा कर देने चाहिये।

दुआ़ क़बूल न हुई

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى कहते हैं : बनी इसराईल सात[7] बरस कहत में मुब्तला रहे यहां तक कि मुर्दों और बच्चों को खाने लगे, पहाड़ों में निकल जाते और आ़जिज़ी व तज़र्रुअ़ के साथ दुआ़ मांगते और रोते मगर रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ उन के ह़ाल पर असलन तवज्जोह न फ़रमाती यहां तक कि उन के पैग़म्बर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर वह़्य हुई : "अगर तुम मेरी त़रफ़ इस क़दर चलो कि तुम्हारे घुटने घिसट जाएं और तुम्हारे हाथ आस्मान को लग जाएं और तुम्हारी ज़बानें दुआ़ करते करते गूंगी हो जाएं जब भी मैं तुम में से किसी दुआ़ मांगने वाले की दुआ़ क़बूल न करूं और किसी रोने वाले पर रह़्म न फ़रमाऊं, जब तक मज़्लूमों को उन के हुक़ूक़ वापस न कर दें।" पस बनी इसराईल ने मज़्लूमों को उन के ह़क़ वापस किये, उसी दिन मींह बरसा।

(احیاء العلوم، ج۱، ص۴۰۷)

एह़सासे ज़िम्मादारी ने रुला दिया

हज़रते सय्यिदुना फुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ تعالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि एक दिन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللهِ الْعَزِيز बहुत रोए जब उन से वजह पूछी गई तो फ़रमाया : لَوْاَنَّ سَخْلَةً هَلَكَتْ عَلٰى شَاطِئِ الْفُرَاتِ لَاُخِذَ بِهَا عُمَرُ *या'नी फ़ुरात के कनारे एक बकरी का बच्चा भी मर गया तो उ़मर से मुआ-ख़ज़ा होगा।* (سیرت ابن جوزی ص۲۲۶)

मज़्लूम की मदद

आज़र बाइजान से एक शख़्स हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللهِ الْعَزِيز के पास आया और उन के सामने खड़े

हो कर बोला : "या **अमीरल मोअमिनीन** ! अपने सामने मेरे इस त़रह़ खड़े होने से उस वक़्त को याद कीजिये जब आप रब्बुल इ़ज़्ज़त की बारगाह में खड़े होंगे, आप के फ़रीक़ों की कषरत भी आप को छुपने नहीं देगी, जिस दिन अ़-मले मोह़कम के इ़लावा कोई चारा और गुनाहों से छुटकारा मुमकिन नहीं होगा। इस की येह बात सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْہِ رحمةُ اللّٰہِ العَزِیز बहुत रोए फिर फ़रमाया : तुम्हारा भला हो ! ज़रा फिर से कहना।" उस ने दो बारा येही बात कही तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फिर रोने लगे, लम्बी लम्बी आहें भरने लगे। थोड़ा इफ़ाक़ा हुवा तो दरयाफ़्त फ़रमाया : مَاحَاجَتُكَ *या'नी तुम्हारी क्या ह़ाजत है ?* उस ने बताया : आज़र बाइजान के आ़मिल ने मुझ पर ज़ुल्म किया और बिला वजह मेरे बारह हज़ार दिरहम बैतुल माल में डाल दिये हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْہِ رحمةُ اللّٰہِ العَزِیز ने उसी वक़्त आज़र बाइजान के आ़मिल को येह ख़त़ लिखने का हुक्म दिया कि उस का माल उसे लौटा दिया जाए। (سیرت ابن جوزی ص۱۶۷)

ग़ुलाम आज़ाद कर दिया

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْہِ رحمةُ اللّٰہِ العَزِیز के पास एक ग़ुलाम था। वोह ग़ुलाम एक ख़च्चर के ज़रीए़ मह़नत मज़दूरी किया करता था। एक दिन आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने उस ग़ुलाम से ह़ाल अह़वाल दरयाफ़्त किया तो शिक्वा करते हुए कहने लगा : اَلنَّاسُ كُلُّهُمْ بِخَيْرٍ غَيْرِىْ وَغَيْرُكَ *या'नी मेरे और आप के सिवा बाक़ी सब लोग ख़ैरिय्यत से हैं।* फ़रमाया : " فَاذْهَبْ فَاَنْتَ حُرٌّ *या'नी जाओ तुम आज़ाद हो।*"

(سیرت ابن جوزی ص۱۸۶)

अपने अ़लाक़ों में वापस चले जाओ

जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز के ख़लीफ़ा बनने की ख़बर आ़म हुई तो दूरो नज़दीक से लोग आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه के पास पहुंचना शुरूअ़ हो गए। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه ने उन सब को जम्अ़ कर के फ़रमाया : ऐ लोगो ! अपने अपने अ़लाक़ों में वापस चले जाओ क्यूंकि जब तुम मेरे पास होते हो तो मैं तुम्हें भूल जाता हूं और जब तुम अपनी अपनी जगह पर होते हो मुझे ख़ूब याद रहते हो, देखो ! मैं ने कुछ लोगों को तुम पर ह़ाकिम मुक़र्रर किया है, मेरा येह हरगिज़ दा'वा नहीं है कि वो तुम में से बेहतरीन हैं, हां ! येह कह सकता हूं कि वोह बहुत से लोगों से अच्छे हैं, अगर कोई ह़ाकिम तुम पर ज़ुल्म ढाता है तो उसे मेरी त़रफ़ से हरगिज़ इस की इजाज़त नहीं है (या'नी उस का मुह़ा-सबा होगा)। (سیرتِ ابن عبدالحکم ص ۴۰ وسیرت ابن جوزی ص ۸۹)

बद्दूओं को ज़मीन वापस दिलाई

ग़सब शुदा जाएदादें और मक़्बूज़ा ज़मीनें वापस करने का सिल्सिला ता दमे मर्ग क़ाइम रहा। हुक़ूक़ की वापसी के लिये किसी क़त़ई शहादत या हुज्जत की ज़रूरत न थी, बल्कि जो शख़्स दा'वा करता था मा'मूली से मा'मूली सुबूत पर उस का माल वापस मिल जाता था। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۰۶) एक बार बद्दूओं (या'नी देहातियों) ने दा'वा किया कि उन्हों ने एक कित़्आ़ ज़मीन आबाद किया था जिस को अ़ब्दुल मलिक ने अपनी अवलाद को दे दिया। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है :

"اَلْبِلَادُ بِلَادُ اللّٰهِ وَالْعِبَادُ عِبَادُ اللّٰهِ ، مَنْ اَحْیٰ اَرْضاً مَیْتَةً فَهِیَ لَه" या'नी ज़मीन खुदा عَزَّوَجَلَّ की ज़मीन है, और बन्दे खुदा عَزَّوَجَلَّ के बन्दे हैं जिस ने बन्जर ज़मीन को आबाद किया वोह उस का मुस्तह़िक़ है।" येह कह कर ज़मीन बदूओं को वापस दिला दी। (سیرت ابن جوزی ص ۱۲۵)

अपने हुकूमती कारिन्दों को भी इसी की ताकीद की

इन ज़ाती कोशिशों के साथ साथ उ-मरा व उ़म्माल (हुकूमती ज़िम्मादारान) को भी हिदायतें भेजते रहते थे कि वोह भी इसी मुस्तइ़दी (या'नी तेज़ रफ़्तारी) के साथ अमवाले मग़सूबा उन के मालिकान को वापस दिलाएं। चुनान्चे अबू ज़नाद का बयान है : हमें इ़राक़ में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِیز ने लिखा : "हम अहले हुकूक़ को हुकूक़ वापस दिला दें।" जब हम ने उस काम को शुरूअ़ किया तो इ़राक़ का बैतूल माल बिलकुल ख़ाली हो गया और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِیز को शाम से रूपिया भेजना पड़ा। (سیرتِ ابن عبدالحکم،ص۱۰۷) अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ैद अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِیز की कोई तह़रीर ऐसी नहीं आई जिस में अमवाले मग़सूबा की वापसी, एह़याए सुन्नत, इमातते बिदअ़त (या'नी बिदअ़त के ख़ातिमे) वग़ैरा की हिदायत दर्ज न हो। (سیرتِ ابن جوزی،ص۱۰۰) बल्कि एक बार तो येह भी लिख कर भेजा कि रजिस्टरों का जाइज़ा लें और क़दीम उ़म्माल (या'नी हुकूमती ओ़-हदे दारों) ने किसी मुसलमान या ज़िम्मी पर ज़ुल्म किया हो तो इस का माल वापस कर दें और अगर वोह खुद ज़िन्दा न हों तो उस के वु-रषा को दे दें। (طبقات ابن سعد،ج۵،ص۲۶۴)

टाल मटोल करनेवाले हुक्काम से नाराज़ी

जो ज़िम्मादाराने हुकूमत ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز के इस हुक्म में لَيْتَ وَلَعَل (या'नी टाल मटोल) करते थे, उन से बहुत नाराज़ होते थे, "उ़र्वा" यमन के आ़मिल थे एक बार उन्हों ने इस मुआ़–मले में बहुत قِيْلَ وَقَال (या'नी बह़स व तकरार) की तो उन को लिखा कि मैं तुम्हें लिखता हूं कि मुसलमानों के अम्वाले मग़सूबा वापस कर दो और तुम उस के मु–तअ़ल्लिक़ मुझ से सुवाल जवाब करते हो ! हालांकि तुम अच्छी त़रह़ जानते हो कि मेरे और तुम्हारे दरमियान कितना लम्बा सफ़र है ? और मौत के आने का कुछ पता नहीं, अगर मैं तुम्हें लिखता हूं कि एक मुसलमान की ग़सब शुदा बकरी वापस कर दो तो तुम पूछते हो कि वोह भूरी हो या सियाह ? जल्द अज़ जल्द मुसलमानों का माल वापस कर दो और मुझ से इस मुआ़–मले में ग़ैर ज़रूरी ख़त़ व किताबत न करो। (طبقات ابن سعد، ج۵،ص۲۹۶)

अदाए हुक़ूक़ में एह़तियात

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز ने उ़म्माल के नाम एक ख़त़ में लिखा : मैं ने पहले तुम्हें लिखा था कि "मक़्बूज़ा" अमवाल उन के मालिकों को वापस कर दिये जाएं मगर बा'द में लिखा था कि अभी रोक लिये जाएं और तीसरी बार लिखा था कि वापस कर दिये जाएं, दर अस्ल बात येह थी कि बा'ज़ लोगों की त़रफ़ से ख़यानतों और झूटी शहादतों की इत्त़ेलाअ़ मुझे मिली थी, इसी वजह से मैं ने वापस किये गए बा'ज़ अमवाल अपनी तह़वील में ले

लिये थे कि जब तक दा'वा दारों की त़रफ़ से क़ाबिले ए'तिमाद शहादत फ़राहम नहीं की जाती उन्हें अमवाल वापस न दिये जाए, लेकिन बा'द में येह राय बनी कि अपनी तह़वील में रखने के बजाए उन के मालिकों को लौटा देना बेहतर है। (سیرت ابن عبد الحکم ص ۷۷)

तुम्हारा कोई ह़क़ नहीं मारा गया

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ العَزِیز के सामने बे ह़द उ़म्दा अ़म्बर ला कर रखी गई और एक शख़्स ने खड़े हो कर बुलन्द आवाज़ से पुकारा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और आप की दुहाई है या **अमीरुल मोअमिनीन** ! फ़रमाया : क्या बात है ? अ़र्ज़ की : "या **अमीरुल मोअमिनीन** ! मेरा अ़म्बर !" दरयाफ़्त फ़रमाया : इस अ़म्बर का क्या मुआ़-मला है ? उस ने कहा : मैं ने येह अ़म्बर सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक को सात हज़ार दिरहम में फ़रोख़्त किया था हालांकि इस की क़ीमत अठ्ठारह हज़ार से भी ज़ियादा है। फ़रमाया क्या उन्हों ने तुझे डराया धमकाया था ? अ़र्ज़ की : नहीं , फ़रमाया : क्या तुझे मजबूर किया था ? कहा : नहीं, फ़रमाया : क्या तुझ से ग़सब किया था ? कहा : नहीं, फ़रमाया : तो फिर ? उस के मुंह से निकला : मेरा अ़म्बर। मगर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : जाओ ! तुम्हारा कोई ह़क़ नहीं मारा गया, क्यूंकि मैं भी येही पसन्द करता हूं कि कोई चीज़ ख़रीदूं तो सस्ती ख़रीदूं (और सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक ने येही किया था)। (سیرت ابن جوزی ص ۹۹)

साइल से हमदर्दी

एक साइल ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ العَزِیز की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और आप के मुक़र्रर कर्दा

गवर्नर की शिकायत की, कि वोह मेरी ज़मीन वापस नहीं दिलवाता, हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने फ़रमाया : उस के हुल्ये ने हमें धोका दिया कि हम ने उसे नेक समझ कर गवर्नर बना दिया, मैं ने उसे लिखा भी था कि जो शख़्स अपने ह़क़ पर गवाही पेश कर दे उस की चीज़ फ़ौरन उस के ह़वाले कर दिया करो, मगर उस ने मेरी ताकीद नज़र अन्दाज़ कर दी और तुम्हें ख़्वाह म ख़्वाह यहां आने की ज़ह़मत दी। फिर आप ने गवर्नर के नाम तह़रीरी हुक्म लिखा कि इस शख़्स की ज़मीन इसे दिलवाई जाए। इस के बा'द साइल से दरयाफ़्त फ़रमाया : मेरे पास आने में तुम्हारा कितना ख़र्च हुवा ? अ़र्ज़ की : या **अमीरल मोअमिनीन** ! आप मुझ से सफ़र का ख़र्च पूछते हैं, मेरी जो ज़मीन आप ने वापस दिलवाई है उस की क़ीमत एक लाख से भी ज़ियादा है ! हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने फ़रमाया : वोह तो तुम्हारा ह़क़ था जो तुम्हें मिल गया येह बताओ कि सफ़र पर कितनी रक़म ख़र्च हुई ? अ़र्ज़ की : जी ! मा'लूम नहीं। फ़रमाया : कुछ आन्दाज़ा तो होगा ? अ़र्ज़ की : "येही कोई 60 दिरहम।" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تعَالٰى عَلَيْه ने हुक्म दिया कि इस का ख़र्च बैतुल माल से अदा किया जाए, जब वोह जाने लगा तो उसे आवाज़ दे कर बुलाया और फ़रमाया :

خُذْهٰذِهٖ خَمْسَةَ دَرَاهِمَ مِنْ مَّالِيْ فَكُلْ بِهَا لَحماً حَتّٰى تَرْجِعَ اِلٰى اَهْلِكَ

या'नी लो ! येह पांच दिरहम मेरे ज़ाती माल से हैं, घर जाने तक उन का गोश्त ले कर खाते रहना। (سیرت ابن عبد الحکم ص ۱۲۵)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰى على محمَّد

हुकूमती ज़िम्मादार पर इन्फ़िरादी कोशिश

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر ने एक गवर्नर को लिखा : तुम से पहले के गवर्नर फ़िस्क़ व फ़ुजूर और ज़ुल्म व उ़दवान की जिस इन्तिहा को पहुंचे हुए थे तुम से हो सके तो अ़द्ल व इन्साफ़ और एह़सान व इस्लाह़ में वोही मक़ाम पैदा करो।

(سیرت ابن عبد الحکم ص ۱۰۲)

प्रोटोकोल ख़त्म कर दिया

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز से पहले ख़लीफ़ा मुन्तख़ब होने वाले के ख़ानदान को शाही अहम्मिय्यत मिल जाती थी, ख़लीफ़ा की त़रफ़ से उन को ख़ास वज़ाइफ़ मिलते थे, वोह हर जगह नुमायां हैसिय्यत में नज़र आते थे, ख़ुद ख़लीफ़ा जब चलता था तो उस के साथ साथ नक़ीब व अ़लम बरदार चला करते थे, किसी जनाज़े में शरीक होता तो उस के लिये ख़ास त़ौर पर चादर बिछाई जाती लेकिन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز ने ख़लीफ़ा बनते ही तमाम नशैब व फ़राज़ मिटा दिये और "मह़मूदो अयाज़" को एक ही सफ़ में खड़ा कर दिया। ख़ानदाने शाही को आ़म मुसलमानों पर जो इम्तियाज़ ह़ासिल हो गया था उस के बारे में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر ने अबू बक्र बिन ह़ज़्म को लिखा कि दरबारे आ़म में किसी को किसी पर इस लिये तरजीह़ न दो कि वोह ख़ानदाने ख़िलाफ़त से ता'ल्लुक़ रखता है, येह लोग मेरे नज़दीक तमाम मुसलमानों के बराबर हैं (طبقات ابن سعد، ج۵، ص ۲۶۴)

खुद अपने लिये लिखा कि मज़्हबी इजतिमाआ़त में ख़ास मेरे लिये दुआ़ न की जाए बल्कि उमूमी त़ौर पर सारे मुसलमानों के लिये दुआ़ की जाए अगर मैं उन में से होऊंगा तो उस दुआ़ में हि़स्सा दार बन जाऊंगा। (طبقات ابن سعد، ج ۵، ص ۲۹۵)

सब के लिये की जाने वाली दुआ़ ज़ियादा क़बूल होती है

वोह दुआ़ ज़ियादा मक़्बूल होती है कि जो सब के लिये की जाए क्यूंकि अगर एक के लिये भी क़बूल हुई तो उम्मीद है कि सब के लिये क़बूल हो जाएगी। इसी लिये दुआ़ के अव्वल और आख़िर दुरूदे पाक पढ़ा जाता है क्यूंकि **दुरूद शरीफ़** यक़ीनन क़बूल होता है, तो रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ से उम्मीदे क़वी है कि वोह **दो 2 दुरूदों के दरमियान की जाने वाली दुआ़** को न छोड़ेगा बल्कि अव्वल आख़िर पढ़े जाने वाले दुरूद शरीफ़ की ब-रकत से इसे भी क़बूल फ़रमा ही लेगा। (تفسیر کبیر ج ۱، ص ۲۱۹)

पड़ोसी ख़ुल्द में या रब बना दे अपने प्यारे का
येही है आरज़ू मेरी येही दिल से दुआ़ निकले

(वसाइले बख़्शिश, स. 262)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

सब के बराबर बैठिये

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز के बरादरे निस्बती (या'नी ज़ौजए मोह़तरमा के भाई) हज़रते मस्लमा बिन

अ़ब्दुल मलिक رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ किसी मुक़द्दमे में ब हैषिय्यते फ़रीक़ आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के दरबार में आए तो दरबारी फ़र्श पर आप के सामने बैठ गए, मगर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने फ़रमाया : इन ह़ालात में यहां न बैठिये अगर येह गवारा न हो तो किसी को अपना वकील मुक़र्रर कर लीजिये वरना सब के बराबर बेठिये। (سیرت ابن جوزی ص ۱۹ ملخصا)

उ़-लमाए किराम को अपने क़रीब कर लिया

जब हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَدِیۡر ख़लीफ़ा मुक़र्रर हुए तो मुख़्तलिफ़ "शख़्सिय्यात" ने आप के पास आना जाना शुरूअ़ किया लेकिन जब उन्हों ने देखा कि उन्हें भी वोही तवज्जोह मिलती है जो आ़म लोगों को तो वोह पीछे हट गएं, फिर हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَدِیۡر ने अपनी पसन्दीदा शख़्सिय्यात या'नी उ़-लमाए किराम को अपने क़रीब कर लिया। (سیرت ابن جوزی ص ۹۱) तारिख़े दिमिश्क़ में है :

كَانَ لِعُمَرَ بْنَ عَبْدِالْعَزِيْزِ سُمَّارٌ يَسْتَشِيْرُهُمْ فِيْمَا يَرْفَعُ اِلَيْهِ مِنْ اُمُوْرِ النَّاس

या'नी : हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ के चन्द मुसाहिब थे जिन से वोह रिआ़या के मुआ़-मलात में मश्वरा किया करते थे। (تاریخ دمشق، ج ۴۵ ص ۱۷۰)

कम रफ़्तार सुवारी पर बैठना

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ الۡعَزِیۡز ने अपने एक गवर्नर को लिखा : तुम उसी सुवारी पर बैठना जिस की रफ़्तार लश्कर की दीगर सुवारियों से कम हो। (حلیۃ الاولیاء ج ۵ ص ۳۴۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस फ़रमाने नसीहत निशान का एक मत़लब येह भी हो सकता है कि तुम अपने मर्तबे का फ़ाएदा उठाते हुए अच्छी अच्छी चीज़ें अपने लिये ख़ास न कर लेना, इस से उन इस्लामी भाइयों को ख़ुद पर एक सो बारह मरतबा ग़ौर कर लेना चाहिये जिन्हें किसी शो'बे या मकतब (दफ़्तर) में फ़ौक़िय्यत ह़ासिल होती है और वोह अपनी हैषिय्यत का फ़ाएदा उठाते हुए अच्छी, क़ीमती और मे'यारी अश्या अपने लिये ख़ास कर देते हैं और बचा खुचा सामान मा तह़्त इस्लामी भाइयों को पेश कर देते हैं।

ख़ानदान वालों से मैल जोल कम कर दिया

ख़लीफ़ा बनने के बा'द आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ख़ानदान वालों से मैल जोल कम कर दिया तो उन में बा'ज़ लोगों ने कहा : "आप मु–तकब्बिर हो गए हैं।" फ़रमाया : मैं पहले मह़्ज़ एक नौ जवान था, ख़ानदान के लोग बिला रोक टोक मेरे पास आते जाते थे लेकिन ख़लीफ़ा बनने के बा'द मेरे सामने दो रास्ते थे कि या तो मैं पहले की त़रह़ उन के साथ ज़ियादा मैल जोल रखूं और ह़क़ की मुख़ालिफ़त पर उन को सज़ा दूं, या उन से मिलना जुलना कम कर दूं ताकि उन्हें मेरे बल बूते पर ह़क़ की मुख़ालिफ़त की जुरअत ही न हो, मैं ने बहुत सोच समझ कर दूसरा रास्ता इख़्तियार किया है, वरना **तकब्बुर** तो सिर्फ़ ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ है, मैं इस के मु–तअ़ल्लिक़ उस से क्यूं कर जंग कर सकता हूं !

(سیرت ابن جوزی ص ۲۰۴ ملخصا)

बीस हज़ार दीनार देने से इन्कार

ख़लीफ़ा सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक ने अम्बसा बिन सईद को बीस हज़ार दीनार देने का हुक्म दिया था, येह हुक्म नामा दफ़्तरी

कारवाई के आखि़री मर्ह़ले में था और इस रक़म का सिर्फ़ वुसूल करना बाक़ी था कि सुलैमान का इन्तिक़ाल हो गया। अम्बसा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز के गहरे दोस्त थे, आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ख़लीफ़ा हुए तो वोह इस रक़म की वुसूली के सिल्सिले में गुफ़्त–गू करने के लिये आप की खि़दमत में ह़ाज़िर हुए। उन्हों ने देखा कि आप के दरवाज़े पर बनू उमय्या के कई लोग भी जम्अ़ हैं और वोह अपने अपने मुआ़–मलात में गुफ़्त–गू करने के लिये ह़ाज़िरी की इजाज़त चाहते हैं। जब उन्हों ने अम्बसा को देखा तो आपस में कहने लगे कि हमें **अमीरुल मुअमिनीन** से बात चीत करने से पहले येह देखना चाहिये कि अम्बसा से क्या सुलूक किया जाता है? चुनान्चे उन्हों ने अम्बसा से कहा कि आप **अमीरुल मुअमिनीन** के पास जाएं तो उन की खि़दमत में हमारा तज़किरा भी करें और वापस आ कर हमें बताइयें कि आप के साथ क्या हुवा। अम्बसा अन्दर गए और अ़र्ज़ की : "या **अमीरल मुअमिनीन** ! ख़लीफ़ा सुलैमान ने मुझे कुछ रक़म अ़ता करने का हुक्म फ़रमाया था, उस की दफ़्तरी कारवाई मुकम्मल हो चुकी थी और सिर्फ़ क़ब्ज़ा बाक़ी था कि उन का इन्तिक़ाल हो गया, मेरी राय में अब आप को इस की तकमील ब–द–रजए औला करनी चाहिये क्यूंकि मेरा आप का तअ़ल्लुक़ इस से कहीं ज़ियादा गहरा है जो मेरा और सुलैमान का था।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने पूछा : "कितनी रक़म है ?" अ़र्ज़ की : "बीस हज़ार दीनार !" आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه बहुत ह़ैरान हुए और फ़रमाया : "बीस हज़ार दीनार ! इतनी रक़म तो मुसलमानों के चार हज़ार घरों के लिये काफ़ी हो सकती हैं, वोह एक ही आदमी को दे डालूं ? वल्लाह ! मैं येह नहीं कर सकता।" अम्बसा कहते हैं मैं ने येह सुन कर नाराज़ी से

वोह दस्तावेज़ फेंक दी । ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने फ़रमाया : येह तुम्हारे पास ही रहे तो तुम्हारा क्या नुक़्सान है, मुमकिन है मेरे बा'द कोई ऐसा ख़लीफ़ा आए जो इस माल के मुआ़-मले में मुझ से ज़ियादा जरी (या'नी जुरअत करने वाला) हो और तुम्हें येह रक़म दिलवा दे । मैं ने उन की राय को मुफ़ीद समझते हुए वोह दस्तावेज़ उठा ली और अ़र्ज़ की : **अमीरुल मुअमिनीन** ! "**जब्ले दर्स**" का क्या हुवा ? दर ह़क़ीक़त जब्ले दर्स ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز की ही जागीर थी मगर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने अम्बसा की चोट को नज़र आन्दाज़ करते हुए फ़रमाया : तुम ने ख़ूब याद दिलाया । फिर ख़ादिम को एक टोकरी लाने का कहा । खजूर के तिन्कों की बनी हुई टोकरी लाई गई, उस में जागीरों के काग़ज़ात थे आप ने ख़ादिम को पढ़ने का हुक्म दिया, वोह एक एक को पढ़ता जाता और आप उसे चाक करते जाते, यहां तक कि उस टोकरी के तमाम काग़ज़ात फाड़ डाले ।

अम्बसा कहते हैं : मैं बाहर निकला तो बनू उमय्या के लोग दरवाज़े पर मौजूद थे । मैं ने सारा क़िस्सा उन को सुनाया तो वोह मायूस हो कर बोले : इस से ज़ियादा क्या हो सकता है ? आप उन के पास वापस जाइये और हमारी सिफ़ारिश कीजिये या येह दरख़्वास्त कीजिये कि हमें दूसरे अ़लाक़ों में जाने की इजाज़त दे दें । मैं वापस हुवा और अ़र्ज़ की : या **अमीरल मुअमिनीन** ! आप की क़ौम के लोग आप के दरवाज़े पर खड़े हैं , उन की दरख़्वास्त है कि आप उन के वोह वज़ाइफ़ व अ़त़िय्यात जारी कर दें जो आप से पहले उन को मिला करते थे । ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने फ़रमाया :

"**वल्लाह** ! येह माल मेरी मिल्किय्यत नहीं, न मैं येह अ़तिय्यात उन को दे सकता हूं।" मैं ने अ़र्ज़ की : "फिर उन की दरख़्वास्त है कि आप उन्हें दूसरे अ़लाक़ों में चले जाने की इजाज़त दें।" आप ने फ़रमाया : "वोह जहां जाना चाहें उन्हें उस की इजाज़त है।" मैं ने अ़र्ज़ की : "मुझे भी ?" फ़रमाया : "हां तुम्हें भी इजाज़त है, मगर मेरा मश्वरा है कि तुम यहीं ठहरो, तुम अच्छे ख़ासे मालदार आदमी हो, मैं सुलैमान का तर्का फ़रोख़्त करना चाहता हूं, हो सकता है कि तुम कोई चीज़ ख़रीद कर नफ़्अ़ कमा लो और इस त़रह़ जो रक़म तुम्हें नहीं मिल सकी उस का बदल ही मिल जाए।" अम्बसा कहते हैं : मैं उन की राय को बा ब-रकत समझते हुए वहीं रुक गया। जब सुलैमान का तर्का फ़रोख़्त हुवा तो मैं ने वोह एक लाख में ख़रीद लिया और इराक़ ले जा कर दो लाख का फ़रोख़्त कर दिया, यूं मुझे एक लाख दिरहम का नफ़्अ़ हुवा। बीर हज़ार की दस्तावेज़ भी मैं ने मह़फ़ूज़ रखी, जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمۃُ اللّٰہِ الۡعَزِیۡز का विसाल हुवा और यज़ीद बिल अ़ब्दुल मलिक ख़लीफ़ा बने तो मैं ने सुलैमान की तह़रीर ला कर उन को दिखाई तो उन्हों ने उस रक़म की अदाई के अह़कामात जारी कर दिये। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۴۹ تا ۵۱)

फूफी साह़िबा का वज़ीफ़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمۃُ اللّٰہِ الۡعَزِیۡز की ख़िलाफ़त के बा'द आप की फूफी साह़िबा आप की अहलिय्या मोह़तरमा ह़ज़रते फ़ातिमा बिन्ते अ़ब्दुल मलिक رحمۃاللہ تعالٰی علیہا के पास आई और कहा : "मैं **अमीरुल मुअमिनीन** से कुछ कहना चाहती हूं।" ह़ज़रते फ़ातिमा رحمۃاللہ تعالٰی علیہا ने कहा : "ज़रा तशरीफ़ रखिये वोह अभी मसरूफ़ हैं।" वोह बैठ गई, थोडी देर बा'द ग़ुलाम घर से चराग़ ले कर गया तो ह़ज़रते फ़ातिमा رحمۃاللہ تعالٰی علیہا ने कहा : अब **अमीरुल**

मुअमिनीन फ़ारिग़ हैं आप उन से बात कर सकती हैं, उन का मा'मूल येह है कि जब तक मुसलमानों के काम में मसरूफ़ होते हैं तो सरकारी शम्अ़ जलाते हैं और अपना ज़ाती काम करना हो तो घर से चराग़ मंगवा लेते हैं। फूफी साहिबा **अमीरुल मुअमिनीन** के पास गईं, वहां देखा कि आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه शाम का खाना तनावुल फ़रमा रहे हैं। छोटी छोटी चन्द रोटिया, कुछ नमक और ज़रा सा ज़ैतून ! बस येह था **अमीरुल मुअमिनीन** का खाना। फूफी साहिबा ने कहा : "**अमीरुल मुअमिनीन** ! मैं तो अपनी ज़रूरत के लिये आई थी मगर तुम्हें देख कर मुझे एह्सास हुवा कि अपनी ज़रूरत से पहले मुझे तुम्हारे मसाइल पर कुछ कहना चाहिये।" **अमीरुल मुअमिनीन** ने कहा : "फ़रमाइये फूफीजान !" फूफी साहिबा ने कहा : "ज़रा इस से नर्म खाना खाया करो।" जवाब दिया : "फूफी जान ! यक़ीनन मैं ऐसा ही करता मगर क्या करूं कि इस की गुन्जाइश ही नहीं।" इस के बा'द फूफी साहिबा ने कहा : "तुम्हारे चचा अ़ब्दुल मलिक मुझे इतना इतना वज़ीफ़ा दिया करते थे, उन के बा'द तुम्हारे ताया ज़ाद भाई वलीद और सुलैमान आए तो उन्हों ने इस में इज़ाफ़ा कर दिया। अब तुम आए तो मेरा वज़ीफ़ा ही बन्द कर दिया !" आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه बोले : "फूफी जान ! मेरे चचा अ़ब्दुल मलिक, चचा ज़ाद भाई वलीद और सुलैमान आप को मुसलमानों का माल दिया करते थे, अब येह माल मेरा तो है नहीं कि मैं आप को दिया करूं ! आप चाहें तो ज़ाती माल से दे सकता हूं।" वोह पूछने लगीं : वोह कौन सा ? जवाब दिया : वोही जो मुझे दो सो दीनार सालाना वज़ीफ़ा मिलता है। फूफी साहिबा ने कहा : मैं तुम्हारे वज़ीफ़े का क्या करूंगी ? कहा : "फूफी जान ! मेरे पास तो येही कुछ है इस के इ़लावा मैं किसी चीज़ का मालिक नहीं हूं।" येह सुन कर फूफी साहिबा वापस चली गईं। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۵۴)

हुक्मे इलाही का पास

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز की फूफी जान उम्मे उ़मर बिन्ते मरवान ने किसी मोक़अ़ पर आप से कहा : हमारे और तुम्हारे दरमियान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़ैसला है मगर तुम ने हमें बहुत सारी ऐसी चीज़ों से मह़रूम कर दिया जो दूसरे खु-लफ़ा दिया करते थे ! आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने जवाब दिया :

یَا عَمَّۃُ لَوْلَا ذٰلِکَ الْحُکْمُ لَکُنْتُ اَوْصَلُھُمْ لَكَ

*या'नी फूफी जान ! अगर "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़ैसला" न होता तो मैं आप को दूसरों से ज़ियादा देता।* (سیرت ابن عبد الحکم ص ۱۰۴)

आइन्दा एक दिरहम भी नहीं दूंगा

एक मरतबा अम्बसा बिन सईद हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز के हां से निकले तो दरवाज़े पर ख़ानदाने बनू उमय्या के लोग जम्अ़ थे, जिन में यज़ीद बिन अ़ब्दुल मलिक भी थे जो हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز के बा'द वली अ़हद थे। उन लोगों ने अम्बसा से शिकायत की, कि हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ने हमें सिर्फ़ दस दस दीनार भेजे हैं, हमें उन की रन्जिश का अन्देशा है वरना हम उन्हें येह रक़म वापस कर देते। वली अ़हद यज़ीद बिन अ़ब्दुल मलिक ने कहा : उन्हें बता दीजिये कि मैं भी इस रक़म पर राज़ी नहीं, शायद उन का ख़याल होगा कि मैं उन के बा'द ख़लीफ़ा नहीं होउंगा।

येह सुन कर अम्बसा दोबारा अन्दर गए और हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز से बात की, कि आप के ख़ानदान के लोग दरवाज़े पर बेठे हैं, उन्हें आप से शिकवा है कि आप ने

उन को सिर्फ़ दस दस दीनार पर टरख़ा दिया है, वली अ़हद यज़ीद बिन अ़ब्दुल मलिक ने तो यहां तक कहा है कि शायद उ़मर का ख़याल होगा कि उन के बा'द मैं ख़लीफ़ा बनने वाला नहीं हूं। हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने फ़रमाया : उन से मेरा सलाम कहो, सलाम के बा'द उन्हें मेरी त़रफ़ से बताओ कि "उस ज़ात की क़सम जिस के सिवा कोई मा'बूद नही, मैं ने गुज़श्ता रात जाग कर और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस बात की मुआ़फ़ी मांगते हुए गुज़ारी है कि मैंने दूसरे मुसलमानों को छोड़ कर तुम्हें फ़ी कस दीनार क्यूं दे डाले ? واللّٰهُ العظيم ! आइन्दा मैं तुम्हे एक दिरहम भी नहीं दूंगा इल्ला येह कि दीगर मुसलमानों को भी मिले।" और यज़ीद बिन अ़ब्दुल मलिक से कहना : "मैं तुम्हें उस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम दे कर पूछता हूं, जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं कि अगर तुम मेरी बैअ़त तोड़ डालो और मुसलमान मुझे ख़िलाफ़त से मा'ज़ूल कर दें फिर तुम मुआ़–मलाते ख़िलाफ़त संभाल लो तो क्या तुम मुझ से इतना कमतर मुआ़–मला कर सकते हो जितना मैं ने (ख़लीफ़ा होते हुए) ख़ुद अपने आप से कर रखा है? जब कारोबारे ख़िलाफ़त तुम्हारे सिपुर्द होगा तो जो तुम्हारे जी में आए कर लेना।" अम्बसा बाहर निकले तो उन से येह सारा क़िस्सा बयान किया और कहा : भाइयो ! जिस की ज़मीन है वोह जा कर अपनी ज़मीन की देख भाल करे (या'नी यहां कुछ नहीं मिलेगा)। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۴۱)

दुकानें वापस दिलवाई

चन्द मुसलमानों ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز की अ़दालत में दा'वा किया कि ह़म्स में उन की चन्द

दुकानों पर वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक के बेटे "रौह़" ने ना जाइज़ क़ब्ज़ा जमा रखा है। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने "रौह़" से फ़रमाया : "उन की दुकानें वापस कर दो।" रौह़ बोला : येह मेरे पास साबिक़ ख़लीफ़ा वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक की तह़रीर मौजूद है। मगर आप ने फ़रमाया : "जब दुकानें उन की हैं और इस पर शहादत भी मौजूद है तो वलीद की तह़रीर क्या मा'ना रखती है ?" इस फ़ैसले के बा'द दोनो फ़रीक़ उठ कर चले गए। बाहर जा कर रौह़ ने मुद्दई (या'नी दा'वा करने वाले) को धमकाया। उस ने वापस आ कर शिकायत की : या **अमीरुल मुअमिनीन** ! वोह मुझे धमकियां देता है। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز ने का'ब बिन ह़ामिद जो आप का पूलीस अफ़सर था, से फ़रमाया : "रौह़ के पास जाओ, अगर दुकानें उन के ह़वाले कर दे तो बेहतर वरना उन का सर काट लाओ।" रौह़ के ह़ामियों ने ख़लीफ़ा का येह फ़रमान सुना तो फ़ौरन उसे ख़बर कर दी। जब "का'ब बिन ह़ामिद" पूलीस अफ़सर ने एक बालिश्त तलवार नियाम से बाहर निकाल कर "रौह़" से कहा उन की दुकानें फ़ौरन उन के ह़वाले कर दो वरना.....!! उस ने कहा : "बहुत अच्छा !" और दुकानों का क़ब्ज़ा छोड दिया। (سیرت ابن عبد الحکم ص ۵۲)

जवाब न बन पड़ा

जब ख़ानदाने बनू उमय्या ने ख़ुद को तमाम मुसलमानों के साथ एक सत़ह़ पर शाना ब शाना खड़े देखा तो उन्हें सख़्त ज़िल्लत मह़सूस हुई क्यूं कि पुराने तफ़व्वुक़ व इम्तियाज़ ने उन के लिये इस मुसावात को ख़्वाबे फ़रामोश बना दिया था, फिर ज़ाती जाएदाद का हाथ से निकल जाना भी इश्तिआ़ल का मुमकिना सबब था और सब से

बड़ी बात येह थी कि हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز के तर्ज़े अ़मल से अ़वाम को यक़ीन हो चला था कि पहले के ख़ु-लफ़ाए बनू उमय्या ने जो रविश इख़्तियार की थी वोह शरअ़न दुरुस्त नहीं थी, इस लिये ख़ानदान को अपने पूरे सिल्सिले का दामन दाग़दार नज़र आता था, चुनान्चे ख़ानदान के कई अफ़राद ने मुख़्तलिफ़ त़रीक़ों से हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز के सामने अपनी तशवीश का इज़्हार किया तो एक दिन आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه ने मरवानी ख़ानदान को जम्अ़ कर के कहा : ऐ बनू मरवान ! तुम्हें बहुत सी जाएदादें, इ़ज़्ज़तें और दौलतें मिली थी, मेरे ख़याल में उम्मत का निस्फ़ या तिहाई माल तुम्हारे क़ब्ज़े में आ गया था, ऐसा क्यूं कर मुमकिन हुवा ? येह सुन कर सब पर सक्ते की सी कैफ़िय्यत त़ारी हो गई, जब आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه ने दोबारा वज़ाह़त त़लब की तो सब यक ज़बान हो कर कहने लगे : "जब तक हमारा सर हमारे धड़ से अलग न हो जाए हम न तो अपने आबा व अजदाद को बुरा भला कह सकते हैं और न अपनी अवलाद को मोह़ताज बना सकते हैं ।" (سیرت ابن جوزی ص ۱۳۶) येह कह कर वहां से चल दिये ।

"समझाने" की एक और कोशिश

ख़ानदान के अफ़राद ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز को "समझाने" की एक और कोशिश की, चुनान्चे हिशाम बिन अ़ब्दुल मलिक को अपना वकील बना कर चन्द लोगों के साथ आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه के पास भेजा । हिशाम ने आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه के पास पहुंच कर कहा : "या **अमीरल मुअमिनीन** ! मैं आप की ख़िदमत में आप के सारे ख़ानदान की त़रफ़ से क़ासिद बन

कर आया हूं, उन लोगों का कहना है कि आप अपनी ज़ेरे हुकूमत चीज़ों के बारे में अपने त़रीके़ पर अ़मल कीजिये लेकिन उन के पुराने हुकूक़ को बाक़ी रहने दीजिये।" हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने फ़रमाया : अगर तुम्हारे सामने 2 दस्ता वेज़ पेश की जाएं और जिन में से एक हज़रते सय्यिदुना मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की और दूसरी ख़लीफ़ा अ़ब्दुल मलिक की लिखी हुई हो तो तुम किस पर अ़मल करोगे ? हिशाम ने कहा : ज़ाहिर है हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की तह़रीर मुक़द्दम है उसी पर अ़मल करूंगा। हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने फ़रमाया : तो फिर सुनो ! मैं **किताबुल्लाह** को सब पर मुक़द्दम पाता हूं और हर चीज़ को इसी के मुत़ाबिक़ चलाने की कोशिश करूंगा। इस पर वहां पर मौजूद ख़ालिद बिन उ़मर ने कहा : फिर भी जो चीज़ें आप के ज़ेरे फ़रमान हैं उन पर अ़द्ल व इन्साफ़ से हुकूमत कीजिये लेकिन गुज़श्ता खु-लफ़ा की अच्छी या बुरी चीज़ों को अपने ह़ाल पर रहने दीजिये और येह आप के लिये काफ़ी होगा। हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने फ़रमाया : अगर किसी शख़्स के चन्द छोटे बड़े बच्चे हों और वोह इन्तिक़ाल कर जाए फिर बड़े बेटे छोटों की दौलत पर क़ब्ज़ा कर लें और छोटे बच्चे तुम्हारे पास दादरसी के लिये आएं तो तुम क्या करोगे ? ख़ालिद ने कहा : मैं उन्हें उन का ह़क़ दिलाऊंगा। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : मेरे नज़दीक बहुत से खु-लफ़ा और उन के क़रीबी लोगों ने लोगों का माल व जाएदाद ज़बर दस्ती हथया लिया और जब मैं ख़लीफ़ा बना तो लोगों ने मुझ से दादरसी चाही तो मेरे लिये इस के सिवा कोई चारा नहीं था कि मैं

कमज़ोरों को उन का हक़ दिलाऊं। येह सुन कर ख़ालिद बिन उ़मर के मुंह से बे इख़्तियार येह दुआइया कलिमात निकले : وَفَّقَكَ اللّٰهُ يَا اَمِيرَ الْمُؤْمِنِيْنَ *या'नी अमीरुल मुअमिनीन अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *आप को इस की तौफ़ीक़ दे।* (سیرت ابن جوزی ص ۱۴۱)

मैं क़ियामत के अ़ज़ाब से डरता हूं

इसी त़रह़ किसी और मोक़अ़ पर ख़ानदान के लोग ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز के दरवाज़े पर जम्अ़ हुए और उन के साहि़ब ज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق से कहा : "या तो हमें बारयाबी की इजाज़त दिलवाओ, या ख़ुद हमारा पैग़ाम **अमीरुल मुअमिनीन** तक पहुंचाओ।" उन्हों ने पैग़ाम पहुंचाने पर ह़ामी भरी तो सब ने कहा : "उन से पहले जो ख़ु-लफ़ा थे वोह हम को अ़तिय्या देते थे और हमारे मरातिब का लिहाज़ रखते थे, लेकिन तुम्हारे बाप ने हम को बिलकुल मह़रूम कर दिया।" उन्हों ने जा कर येह पैग़ाम सुनाया तो ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने फ़रमाया : "जा कर कह दो कि मेरा बाप कहता है : إِنِّىٓ اَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّىْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ *या'नी अगर मैं अपने ख़ुदा* عَزَّوَجَلَّ *की ना फ़रमानी करूं तो क़ियामत के अ़ज़ाब से डरता हूं।"* (سیرت ابن جوزی ص ۱۳۹)

गुनहगार त़लब गारे अ़फ़्व व रह़मत है
अ़ज़ाब सहने का किस में है ह़ौसला या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 97)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फूफी साहिबा की सिफ़ारिश

उन सब ने एक तदबीर येह भी की, कि ह़ज़्रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز की फूफी साहिबा को भेजा । वोह आईं और कहा : तुम्हारे क़राबत दार शिकायत करते हैं और कहते हैं कि तुमने उन से रोटी छीन ली । ह़ज़्रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने जवाब दिया : मैं ने उन का कोई ह़क़ नहीं रोका । वोह बोलीं : "सब लोग इसी के बारे में गुफ़्त-गू करत हैं, मुझे ख़ौफ़ है कि किसी दिन तुम्हारे ख़िलाफ़ बग़ावत न कर दें !" ह़ज़्रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने फ़रमाया : "उन की बग़ावत के दिन से ज़ियादा क़ियामत के दिन का ख़ौफ़ है ।" इस के बा'द एक अशरफ़ी, गोश्त का एक टुकड़ा और एक अंगीठी मंगवाई और अशरफ़ी को आग में डाल दिया, जब वोह ख़ूब सुर्ख़ हो गई तो उस को उठा कर गोश्त के टुकडे पर रख दिया जिस से वोह भुन गया, अब फूफी साहिबा की त़रफ़ रूख़ कर के कहा :

"اَیْ عَمَّةُ! اَمَا تَأْوِیْنَ لِاِبْنِ اَخِیْكَ مِنْ مِّثْلِ هٰذا *या'नी फूफी जान ! अपने भतीजे के लिये इस क़िस्म के अ़ज़ाब से पनाह नहीं मांगतीं ?"* (سیرت ابن جوزی ص ۱۳۸)

मुझे नारे दोज़ख़ से डर लग रहा है

हो मुझ ना तुवां पर करम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 82)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰی علٰی محمّد

ख़िलाफ़त से बे नियाज़ी

जब ख़ानदान के कुछ लोगों ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز पर इसी ह़वाले से कुछ ज़ियादा ही बरहमी का इज़्हार किया तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعالٰی عَلَيْه ने उन की सब बातों को निहायत ग़ौर से सुना और फिर धमकी आमेज़ लहजे में फ़रमाया : "अगर आइन्दा फिर तुम ने इस क़िस्म की बातें कीं तो सुन लो ! मैं न सिर्फ़ तुम्हारा शहर छोड़ कर मदीनए त़य्यिबा चला जाऊंगा बल्कि ख़िलाफ़त का मुआ़-मला शुरा पर छोड दूंगा, मैं इस के अहल को अच्छी त़रह़ पहचानता हूं।" (طبقات ابن سعد، ج ۵،ص ۲۶۵)

उ़मर बिन वलीद का ख़त़ और उस का जवाब

जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز के अ़द्ल व इन्साफ़ पर मब्नी इन फ़ैसलों की ख़बर वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक के बेटे "उ़मर" को पहुंची तो उस ने इस आ़दिलाना तर्ज़े अ़मल को निहायत ना पसन्दीदगी से देखा और आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعالٰی عَلَيْه की त़रफ़ एक मक्तूब भेजा जिस में आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعالٰی عَلَيْه को बहुत ज़ियादा सख़्त अल्फ़ाज़ से मुख़ात़ब किया। चुनान्चे उस ने लिखा : "ऐ उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ! तुम ने अपने से पहले तमाम ख़ु-लफ़ा पर ऐ़ब लगाया है और तुम ह़द से तजावुज़ कर गए हो, तुम ने बुग़्ज़ व इ़नाद की वजह से अपने पेशरौओं के त़रीक़ों को छोड़ दिया है और उन के ख़िलाफ़ चल रहे हो, तुम ने क़ुरैश और उन की अवलाद की मीराष को जबरन बैतुल माल में दाख़िल कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी की है और क़त़्ए रेह़्मी से काम लिया है। ऐ उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो और इस बात का ख़याल करो कि तुम ज़ुल्म व ज़ियादती

से काम ले रहे हो, ऐ उ़मर बिन अ़ब्दुल अज़ीज़ ! अभी तुम्हारे पाऊं सहीह़ तौ़र पर तख़्ते ख़िलाफ़त पर जमे भी नहीं और तुम ने ऐसे सख़्त फ़ैसले करना शुरूअ़ कर दिये हैं। याद रखो ! तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की निगाह में हो जो बहुत जब्बार व क़ह्हार है।"

जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز को उस का येह ख़त़ मिला तो अगर्चे आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه सरापा ह़िल्म थे ता हम इस मुआ़-मले में कोई नर्मी नहीं बरती बल्कि उसी के अन्दाज़ में अ़द्ल व इन्साफ़ और जुरअते ईमानी से भर पूर जवाबी ख़त़ रवाना किया जिस का मज़्मून कुछ इस त़रह़ था : بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे उ़मर बिन अ़ब्दुल अज़ीज़ की त़रफ़ से उ़मर बिन वलीद को। तमाम ता'रीफें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो तमाम जहानों का पालने वाला है और सलाम हो तमाम रसूलों पर। **अम्मा बा'द** ! ऐ उ़मर बिन वलीद ! मुझे तुम्हारी त़रफ़ से जो मक्तूब मिला है उस का जवाब उसी अन्दाज़ में लिख रहा हूं। ऐ उ़मर बिन वलीद ! तू ज़रा अपने आप को पहचान कि किस की अवलाद हैं ? तू एक ऐसी लौंडी के बत़्न से पैदा हुवा था जिसे ज़बयान बिन दय्यान ने ख़रीदा था और उस की क़ीमत बैतुल माल से अदा की थी फिर उस ने वोह लौंडी तेरे वालिद को तोह़्फ़तन दे दी थी। और अब तू इतना शदीद व सख़्त बन रहा है और तू गुमान कर रहा है कि मैं ने हुदूदुल्लाह नाफ़िज़ कर के जुल्म किया है। याद रख ! वोह ज़मीन और जाएदाद जो तुम्हारे ख़ानदान वालों के पास ना ह़क़ थी वोह मैं ने उन के ह़क़ दारों को दे कर जुल्म नहीं किया बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की किताब के मुत़ाबिक़ फ़ैसला किया है। ज़ालिम तो वोह शख़्स है जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के

अह़्काम का लिहाज़ न रखा और जिस ने ऐसे लोगों को गवर्नर और बुलन्द हुकूमती ओ़-हदे दिये जो सिर्फ़ अपने अहले ख़ाना और अपनी अवलाद का भला चाहते थे और मुसलमानों की मुश्किलात और उन के हुकूक़ से उन्हें कोई ग़रज़ न थी और वोह अपनी मर्ज़ी से फ़ैसले करते थे। ऐ उ़मर बिन वलीद ! तुझ पर और तेरे बाप पर बहुत ज़ियादा अफ़्सोस है, बरोज़े क़ियामत तुम दोनों से ह़क़ मांगने वालों की ता'दाद बहुत ज़ियादा होगी, उस दिन लोग तुम से अपने हुकूक़ का मुत़ा-लबा करेंगे और मुझ से ज़ियादा ज़ालिम तो **ह़ज्जाज बिन यूसुफ़** था जिस ने ना ह़क़ ख़ून बहाया और माले ह़राम पर क़ब्ज़ा किया और मुझ से ज़ियादा ज़ालिम व ना फ़रमान तो वोह शख़्स था जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हुदूद क़ाइम करने के लिये **क़ुर्रा बिन शरीक** जैसे शख़्स को मिस्र का गवर्नर मुक़र्रर किया हालांकि वोह निरा जाहिल था, उस ने शराब को आ़म किया और आलाते लह्व लइ़ब को ख़ूब परवान चढ़ाया। ऐ उ़मर बिन वलीद ! तुम्हें मोहलत है कि जिन जिन का ह़क़ तुम पर है जल्द उन को वापस कर दो वरना तुम्हारे और तुम्हारे घर वालों के पास जो भी ऐसा माल है कि उस में किसी ग़ैर का ह़क़ शामिल है तो मैं उसे ह़क़दारों में तक़्सीम कर दूंगा और अगर तुम ग़ौरो फ़िक्र करो तो तुम्हारे अमवाल में बहुत सारे लोगों का ह़क़ शामिल है। अगर दुन्या व आख़िरत की भलाई चाहते हो तो दूसरों के ह़क़ वापस कर दो। وَالسَّلَامُ عَلَيْنَا وَلَاسَلَامَ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْن *या'नी हम पर सलामती हो और ज़ालिमों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से सलामती न हो।* (سیرت ابن جوزی ص ۱۳۳)

ख़ानदान की इ़ज़्ज़त का पास

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز अगर्चे बा'ज़ हुकूमती मुआ़-मलात में अपने ख़ानदान के त़रीक़ए कार

को पसन्द न फ़रमाते थे। ताहम उन को अपने ख़ानदान की इज़्ज़त व हुरमत का कुछ कम पास न था। एक बार ख़वारिज ने उन से दौराने मुनाज़रा कहा कि जब तक आप अपने ख़ानदान से तबर्रा (या'नी बेज़ारी का इज़्हार) और उन पर ला'नत व मलामत न करेंगे हम आप की इताअ़त क़बूल न करेंगे। दरयाफ़्त फ़रमाया : क्या तुम ने फ़िरऔ़न पर ला'नत की है ? उन सब ने कहा, नहीं। फ़रमाया : जब तुम ने फ़िरऔ़न जैसे काफ़िर से चश्म पोशी की तो मैं अपने ख़ानदान से क्यूं न चश्म पोशी करूं हालांकि उस में बुरे भले, नेक व बद हर क़िस्म के लोग थे। (سیرت ابن جوزی ص ۹۵)

बैतुल माल पर किस का ह़क़ है ?

एक मोक़अ़ पर अम्बसा बिन सईद ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ العَزِيز से कुछ माल देने की दरख़्वास्त की तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : जो माल तुम्हारे पास पहले से मौजूद है अगर वोह ह़लाल का है तो तुम्हें वोही काफ़ी है और अगर ह़राम का है तो उस पर मज़ीद ह़राम का इज़ाफ़ा न करो। फिर पूछा : अच्छा येह बताओ ! क्या तुम मोह़ताज हो ? अ़र्ज़ की : "नहीं।" क्या तुम्हारे ज़िम्मे क़र्ज़ है ? जवाब इस मरतबा भी नफ़ी में था। फ़रमाया : फिर तुम क्या चाहते हो ? क्या मैं मुसलमानों का माल बिला ज़रूरत तुम्हें दे डालूं और ह़क़दारों को यूंही छोड़ दूं ! हां अगर तुम मक़रूज़ होते तो मैं तुम्हारा क़र्ज़ा अदा कर सकता था, अगर मोह़ताज होते तो ब क़द्रे किफ़ायत तुम्हें दे सकता था, लिहाज़ा जो माल तुम्हारे पास मौजूद है उसी को ख़र्च करो, सब से पहले तो येह देख लो कि येह माल कहां से जम्अ़ किया है और अपनी ख़ैर मनाओ, उस से पहले कि तुम्हें उस ज़ात (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ) के सामने पेश होना पड़े जिस के हां तुम्हारा कोई मुआ़हिदा है न किसी ह़ीले बहाने की गुन्जाइश ! (سیرت ابن عبد الحکم ص ۱۳۲)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने कैसी ख़ैर ख़्वाहाना नसीह़त फ़रमाई, हमें भी चाहिये कि हाथों हाथ अपने माल व असबाब पर ग़ौरो फ़िक्र करें कि ख़ुदा न ख़्वास्ता कहीं इस में ह़राम तो शामिल नहीं, अगर हो तो हाथों हाथ इस से जान छुडा लें।

माले ह़राम के शरई अह़काम

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ 32 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "पुर असरार भिकारी" के सफ़हा 27 पर है : ह़राम माल की दो सूरतें हैं : (1) एक वोह ह़राम **माल** जो चोरी, रिश्वत, ग़सब और इन्हीं जैसे दीगर जराएअ़ से मिला हो इस को ह़ासिल करने वाला इस का असलन या'नी बिलकुल मालिक ही नहीं बनता और इस माल के लिये शरअ़न फ़र्ज़ है कि जिस का है उसी को लौटा दिया जाए वोह न रहा हो तो वारिषों को दे और उन का भी पता न चले तो बिला निय्यते षवाब फ़क़ीर पर ख़ैरात कर दे (2) दूसरा वोह **ह़राम माल** जिस में क़ब्ज़ा कर लेने से मिल्के ख़बीष ह़ासिल हो जाती है और येह वोह माल है जो किसी अ़क़्दे फ़ासिद के ज़रीए़ ह़ासिल हुवा हो जैसे सूद या दाढ़ी मुन्डाने या **ख़शख़शी** करने की उजरत वग़ैरा। इस का भी वोही हुक्म है मगर फ़र्क़ येह है कि उस को मालिक या इस के वु-रषा ही को लौटाना फ़र्ज़ नहीं अव्वलन फ़क़ीर को भी बिला निय्यते षवाब ख़ैरात में दे सकता है। अलबत्ता अफ़्ज़ल येही है कि मालिक या वु-रषा को लौटा दे। (माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 551-552 वग़ैरा)

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी

क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

(पुर असरार भीकारी, स. 27)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

कुस्तुन्तुनिया के मुसलमान क़ैदियों को रक़म भेजी

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने कुस्तुन्तुनिया के मुसलमान कैदियों के नाम ख़त़ लिखा : "अम्मा बा'द : तुम अपने आप को क़ैदी तसव्वुर करते हो ? مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ! तुम क़ैदी नहीं, बल्कि राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में मह़बूस (या'नी रोके गए) हो और तुम्हें इल्म होना चाहिये कि मैं अपनी रिआ़या में कोई चीज़ तक़्सीम करता हूं तो तुम्हारे घर वालों को अच्छा और ज़ियादा ह़िस्सा पहुंचाता हूं, मैं तुम्हारे लिये पांच पांच दीनार भेज रहा हूं और अगर येह अन्देशा न होता कि ज़ियादा भेजने की सूरत में रूमी उस को रोक लेंगे और तुम तक नहीं पहुंचने देंगे तो इस से ज़ियादा भेजता, और मैं फ़ुलां साह़िब को तुम्हारे पास भेज रहा हूं वोह रूमियों को मुंह मांगा मुआ़-वज़ा दे कर तुम में से हर छोटे बड़े, मर्द, औ़रत आज़ाद और गु़लाम सब को रिहा कराएगा, वस्सलाम।" (سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۴۰)

बुख़्ल का ख़ौफ़

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز फ़रमाते हैं कि मैं ने जिस किसी को भी कुछ दिया उसे बहुत थोड़ा समझा

क्यूंकि मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ह़या आती है कि मैं उस से अपने इस्लामी भाइयों के लिये जन्नत का सुवाल करूं और दुन्या के मुआ़-मले में उन पर बुख़्ल करूं यहां तक कि क़ियामत के दिन मुझ से येह सुवाल हो : لَوْكَانَتِ الْجَنَّةُ بِيَدِكَ كُنْتَ بِهَا اَبْخَل *अगर जन्नत तुम्हारे हाथ में होती तो तुम इस में भी बुख़्ल करते ?* (سیرت ابن جوزی ص۱۸۷)

कनीज़ वापस कर दी

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز की ज़ौजा ह़ज़रते फ़ातिमा बिन्दे अ़ब्दुल मलिक رحمۃاللہ تعالی علیہا के पास एक कनीज़ थी जो हुस्नो जमाल में बे मिषाल थी, वोह आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه को बहुत पसन्द थी, ख़लीफ़ा बनने से पहले आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه ने अपनी ज़ौजा से कहा भी था : "येह कनीज़ मुझे हिबा कर दो।" लेकिन उन्हों ने इन्कार कर दिया। फिर जब आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه को ख़लीफ़ा बनाया गया तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه की ज़ौजए मोह़तरमा उस कनीज़ को तय्यार कर के आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में लाईं और अ़र्ज़ की : "मैं येह कनीज़ ब ख़ुशी आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه को पेश करती हूं क्यूंकि आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه को येह बहुत ज़ियादा पसन्द है।" आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه बहुत ख़ुश हुए। जब वोह तन्हाई में आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه के क़रीब आई तो उस का हुस्नो जमाल आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه को बहुत भाया। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه ने उस से क़ुरबत इख़्तियार करना चाही मगर एक दम रुक गए और उस कनीज़ से कहा :

"बैठ जाओ, और पहले मुझे येह बताओ कि तुम कौन हो और फ़ातिमा के पास तुम कहां से आईं ?" वोह कहने लगीं : "मैं "कूफ़ा" के गवर्नर की गुलामी में थी और वोह गवर्नर ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ का बहुत मक़रूज़ था, उस ने मुझे ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ के पास भेज दिया। ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ ने मुझे अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान के पास भेज दिया। उन दिनों मेरा लड़कपन था, फिर अ़ब्दुल मलिक ने मुझे अपनी बेटी फ़ातिमा को तोह़फ़े में दे दिया और यूं मैं आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه के पास पहुंच गई।" आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उस से पूछा : "उस गवर्नर का क्या हुवा ?" कहने लगी : "वोह फ़ौत हो चुका है।" आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने पूछा : "क्या उस की कोई अवलाद है ?" उस ने जवाब दिया : "जी हां ! उस का एक लड़का है।" आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "इस का क्या ह़ाल है ?" कहने लगी : "उस का ह़ाल बहुत बुरा है, बहुत ज़ियादा मुफ़्लिसी की ज़िन्दगी गुज़ार रहा है।" आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उसी वक़्त कूफ़ा के मौजूदा गवर्नर "**अ़ब्दुल ह़मीद**" को ख़त़ लिखा कि फ़ुलां शख़्स को फ़ौरन मेरे पास भेज दो, फ़ौरन हुक्म की ता'मील हुई और वोह शख़्स आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه के पास आ गया। आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने पूछा : "तुझ पर कितना क़र्ज़ है ?" तो उस ने जितना बताया आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने सारा अदा कर दिया। फिर फ़रमाया : "येह कनीज़ भी तुम्हारी है, इसे ले जाओ।" येह कहते हुए आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने वोह कनीज़ उस के ह़वाले कर दी।

उस ने कहा : "**अमीरुल मुअमिनीन** ! येह कनीज़ आप ही रख दीजिये।" आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "मुझे अब इस की कोई ह़ाजत नहीं।" उस ने पेशकश की : "इसे मुझ से ख़रीद लें।" आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ख़रीदने से भी इन्कार कर दिया और फ़रमाया : "जाओ, इसे अपने साथ ही ले जाओ।" येह सुन कर वोह कनीज़ कहने लगी : "या **अमीरुल मुअमिनीन** ! आप तो मुझे बहुत चाहते थे, अब वोह चाहत कहां गई ?" आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "वोह मह़ब्बत व चाहत अपनी जगह बर क़रार बल्कि अब तो और ज़ियादा बढ़ गई है।" फिर उन दोनों को रवाना कर दिया।

(عیون الحکایات، ص ۵۴)

ख़ारिजियों ने आप से जंग नहीं की

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز की सीरत व किरदार से आप के दुश्मन भी मु-तअष्षिर हुए बिग़ैर न रह सके, चुनान्चे ख़ारिजी गुरौह जो हमेशा ख़ु-लफ़ा के मुक़ाबले में अ़-लमे बग़ावत बुलन्द करता रहता था, वोह लोग पहले पहल ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز को भी क़त्ल करना चाहते थे, लेकिन जब उन को आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की सीरत और तर्ज़े हुकूमत की ख़बर हुई तो उन्हों ने आपस में येह तै किया कि ऐसे अ़ज़ीम शख़्स से जंग करना और उसे क़त्ल करना हमें ज़ेब नहीं देता, लिहाज़ा वोह अपने इस मज़मूम फ़े'ल से बाज़ रहे और येह ए'तिराफ़ किया कि येह मर्दे मुजाहिद वाक़ेई ख़िलाफ़त के लाइक़ है। चुनान्चें जब तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा आप निहायत अ़द्ल व इन्साफ़ से उमूरे ख़िलाफ़त अन्जाम देते रहे।

(سیرت ابن جوزی ص ۶۷)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बुज़ुर्गाने दीन की बारगाहों से रुजूअ़

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِير अगर्चे खुद भी तक़्वा व परहेज़ गारी के अ़ज़ीम मर्तबे पर फ़ाइज़ थे मगर आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه वक़्तन फ़ वक़्तन दीगर बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن से भी नसीह़त व इ़ब्रत के म-दनी फूल ह़ासिल किया करते थे, ऐसी ही 14 हिकायात व रिवायात और मक्तूबात मुला-ह़ज़ा कीजिये :

(1) मौत को अपने सिरहाने रखिये

एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِير ने ह़ज़रते शैख़ अबू ह़ाज़िम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم से कहा कि मुझे कुछ नसीह़त फ़रमाइए तो उन्हों ने फ़रमाया :

اِضْطَجِعْ ثُمَّ اجْعَلِ الْمَوْتَ عِنْدَ رَأْسِكَ ثُمَّ انْظُرْ مَاتُحِبُّ اَنْ يَكُوْنَ فِيْهِ تِلْكَ السَّاعَةُ فَخُذْ فِيْهِ الْاٰن وَمَا تَكْرَهُ اَنْ يَّكُوْنَ فِيْكَ تِلْكَ السَّاعَةُ فَدَعْهُ الْاٰن

या'नी ज़मीन पर लेट जाइये और मौत को अपने सर के पास समझिये, फिर ग़ौर किजिये कि उस घड़ी आप को कौन सी चीज़ मह़बूब होगी ? पस उस चीज़ को फ़ौरन इख़्तियार कर लीजिये और उस वक़्त जिस शै को आप ना पसन्द करें उसे हाथों हाथ छोड़ दीजिये। (سیرت ابن جوزی ص ۱۵۹)

(2) किसी से इमदाद की तवक़्क़ोअ़ न रखिये

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ने हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की ख़िदमत में ब ज़रीअ़ए मकतूब दरख़्वास की, कि : "मुझे कोई ऐसी नसीह़त फ़रमाइये जो मेरे तमाम कामों में **मददगार** षाबित हो।" आप ने उस के जवाब में लिखा : "अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप का मुआ़विन नहीं है तो फिर किसी से भी इमदाद की तवक़्क़ोअ़ न रखिये, उस दिन को बहुत नज़्दीक तसव्वुर कीजिये जिस दिन सारी दुन्या फ़ना हो जाएगी और सिर्फ़ आख़िरत बाक़ी रहेगी।" (تذکرۃ الاولیاء، ج۱، ص۳۹)

(3) येह नसीह़त काफ़ी है

हज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز के पास गए तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने उन से कहा कि मुझे नसीह़त कीजिये। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने कहा : ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के वक़्त से अब तक कोई ख़लीफ़ा बाक़ी नहीं रहा है। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ने कहा कि मुझे और नसीह़त कीजिये। उन्हों ने कहा : अब पहला ख़लीफ़ा जो इन्तिक़ाल करेगा वोह आप होंगे। कहा : और भी नसीह़त कीजिये। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : अगर ह़क़ तआ़ला आप के साथ है तो फिर आप को कुछ ख़ौफ़ नहीं, लेकिन अगर वोह आप के साथ न रहे, तो फिर आप किस की पनाह ढूंढेंगे। येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز फ़रमाने लगे : बस येह नसीह़त मुझे काफ़ी है। (التبر المسبوک فی نصیحۃ الملوک، باب ان یشتاق ان رویۃ العلماء، ج۱، ص۵)

(4) बुरी ख़िलाफ़त के गवाह हों

हज़रते सय्यिदुना अबू हाज़िम عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡاَكۡرَم ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز को ख़त़ लिखा : "नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से इस ह़ाल में मिलने से डरिये कि आप उन की रिसालत की गवाही दें और वोह अपनी उम्मत में आप की बुरी ख़िलाफ़त के गवाह हों।"

(سیرت ابن جوزی ص ۱۵۹)

(5) शु-रफ़ा को ज़िम्मादारियां दीजिये

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ القَوِی को ब ज़रीअ़ए मकतूब दरख़्वास्त की, कि मुझे ऐसे लोगों की निशान देही फ़रमाइये जिन से मैं हुक्मे इलाही नाफ़िज़ करने में मदद ले सकूं तो उन्हों ने जवाब में लिखा : अहले दीन आप के क़रीब नहीं आएंगे और रहे अहले दुन्या तो उन को आप ख़ुद क़रीब नहीं करना चाहेंगे लेकिन आप शु-रफ़ा को ज़िम्मादारियां दीजिये क्यूंकि वोह अपनी शराफ़त को ख़ियानत से दाग़दार नहीं करेंगे। (احیاء العلوم، ج۱، ص ۹۹)

(6) मुख़्तसर तरीन नसीह़त

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡمَجِيۡد ने लिखा : या **अमीरल मुअमिनीन** ! लम्बी ज़िन्दगी की इन्तिहा उस फ़ना तक है जो मा'लूम है लिहाज़ा आप इस फ़ना से वोह हि़स्सा लीजिये जो

बाक़ी रहने वाला नहीं, अपनी इस बक़ा के लिये जिस ने फ़ना नहीं होना, वस्सलाम। जब हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ العَزِيز ने ख़त़ पढ़ा तो रो पड़े, फ़रमाया : अबू सईद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَجِيد ने इन्तिहाई मुख़्तसर नसीह़त की है। (حلیۃ الاولیاء،ج۵،ص۳۵۱)

(7) मत़लबी की सोह़बत से बचिये

हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन का'ब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ القَوِی ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ العَزِيز से कहा : "ऐसे शख़्स को हरगिज़ अपना मुसाहिब न बनाइये जो अपनी ह़ाजत के पूरे होने तक आप के आगे पीछे हो, जब उस का मत़लब निकल जाए तो उस की आप से मह़ब्बत भी ख़त्म हो जाए, बल्कि ऐसे लोगों को अपना मुसाहिब बनाइये जो भलाई में बुलन्द मर्तबे वाले और ह़क़ के मुआ़–मले में सब्र वाले हों, येही लोग नफ़्स के ख़िलाफ़ आप के मदद गार होंगे और उन की ह़िमायत व मदद आप के लिये काफ़ी होगी।"

(سیرت ابن جوزی ص۱۷)

(8) काश मैं ने येह बात न कही होती

हज़रते ज़ियाद رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ العَزِيز से मुलाक़ात के लिये आए तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه ने उन से भी उमूरे ख़िलाफ़त के बारे में मश्वरा त़लब किया तो उन्हों ने पूछा : या **अमीरल मुअमिनीन** ! उस शख़्स के बारे में आप क्या कहते हैं जिस के ख़िलाफ़ एक शख़्स ने दा'वा दाइर

कर रखा हो ? फ़रमाया ऐसा शख़्स बुरी ह़ालत में है। पूछा : अगर दो हों तो ? फ़रमाया : येह उस से भी बुरी ह़ालत है। पूछा : अगर तीन हों तो ? फ़रमाया : इस के लिये तो ज़िन्दगी का लुत़्फ़ ही बाक़ी न रहेगा। ह़ज़रते ज़ियाद رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : तो फिर सुनिये या **अमीरल मुअमिनीन** ! उम्मते मुह़म्मदी का हर शख़्स क़ियामत के दिन आप का फ़रीक़ होगा। येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ الْعَزِيز इतना रोए कि ह़ज़रते ज़ियाद رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मुझे अफ़सोस होने लगा कि काश मैं ने इन से येह बात न की होती।

(سیرت ابن جوزی ص ۱۶۴)

(9) बेहोश हो कर गिर गए

ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद रक़्क़ाशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ الْعَزِيز के पास तशरीफ़ ले गए तो उन्हों ने अ़र्ज़ की, कि मुझे कुछ नसीह़त फ़रमाएं। आप ने फ़रमाया : "या **अमीरल मुअमिनीन** !! याद रखिये कि आप पहले ख़लीफ़ा नहीं हैं जो मर जाएंगे। (या'नी आप से पहले गुज़रने वाले ख़ु-लफ़ा को मौत ने आ लिया था।)" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ الْعَزِيز रोने लगे और अ़र्ज़ करने लगे : " कुछ और भी फ़रमाइये।" तो आप ने कहा : "या **अमीरल मुअमिनीन** ! ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से ले कर आप तक आप के सारे आबा व अजदाद फ़ौत हो चुके हैं।" येह सुन कर आप मज़ीद रोने लगे और अ़र्ज़ की : "मज़ीद कुछ बताइये।" ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद रक़्क़ाशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی ने फ़रमाया : " आप के और

जन्नत व दोज़ख़ के दरमियान कोई मन्ज़िल नहीं है। (या'नी दोज़ख़ में डाला जाएगा या जन्नत में दाख़िल किया जाएगा) येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز बे होश हो कर गिर पड़े।" (احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج۴، ص ۲۲۹)

(10) आंसूओं से चुल्हा बुझ गया

एक बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز से मुलाक़ात के लिये तशरीफ़ लाए। उस वक़्त आप के सामने आग का चुल्हा रखा था, आप ने उन से कहा : "मुझे कोई नसीह़त फ़रमाइये।" उन्हों ने फ़रमाया : "**अमीरुल मुअमिनीन** ! आप को किसी के जन्नत में दाख़िल हो जाने से क्या फ़ाएदा ? जब कि आप ख़ुद जहन्नम में जा रहे हों, और किसी के जहन्नम में दाख़िल होने से आप का क्या नुक़्सान ? जब आप ख़ुद जन्नत में जा रहे हों।" येह सुन कर ह़ज़रते उ़मर رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه इतना रोए कि सामने रखा आग का चुल्हा आप के आंसूओं से बुझ गया। (سیرت ابن جوزی ص ۱۶۴)

(11) नसीह़तों भरा मक्तूब

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه को एक मकतूब लिखा जिस का मज़्मून कुछ इस तरह़ था : السلام علیکم ! **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्दो षना के बा'द उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ अ़र्ज़ करता है : "मेरे मश्वरे के बिग़ैर ही उमूरे ख़िलाफ़त मेरे सिपुर्द किर दिये गए हैं हालांकि मैं ने कभी भी ख़िलाफ़त की ख़्वाहिश न की थी, **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त के हुक्म से मुझे

ख़िलाफ़त की ज़िम्मादारी मिली है, लिहाज़ा मैं उमूरे ख़िलाफ़त के तमाम मसाइल में उसी से मदद तलब करता हूं कि वोह मुझे अच्छे आ'माल और मख़्लूक़ पर शफ़क़त व नर्मी की तौफ़ीक़ मर्हमत फ़रमाए। वोही ज़ात मेरी मदद करने वाली है, (ऐ मेरे भाई) जब आप के पास मेरी येह तहरीर पहुंचे तो मुझे **अमीरुल मुअमिनीन** हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की सीरत और उन के फ़ैसलों के बारे में कुछ मा'लूमात फ़राहम कीजियेगा और येह बताइयेगा कि उन्हों ने मुसलमानों और ज़िम्मियों के साथ अपने दौरे ख़िलाफ़त में कैसा रविय्या इख़्तियार किया ? मैं उमूरे ख़िलाफ़त में उन की पैरवी करना चाहता हूं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी मदद फ़रमाएगा। वस्सलाम : उमर बिन अब्दुल अज़ीज़।"

जब येह मकतूब हज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को पहुंचा तो उन्हों ने उस के जवाब में कुछ यूं लिखा : "ए उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَدِیْر) ! आप पर सलामती हो, **अल्लाह** रब्बुल इज़्ज़त की हम्दो षना और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम के बा'द मैं कहता हूं : "**अल्लाह** रब्बुल इज़्ज़त क़ादिरे मुत्लक़ है, उस की अ-ज़मत व बुलन्दी को कोई नहीं पहुंच सकता, उस का कोई शरीक नहीं, वोह किसी ग़ैर के शरीक होने से मुनज़्ज़ा व मुबर्रा है, जब उस ने चाहा दुन्या को पैदा फ़रमाया और जब तक चाहेगा बाक़ी रखेगा, उस ने दुन्या की इब्तिदा व इन्तिहा के दरमियान बहुत क़लील मुद्दत रखी जो हक़ीक़तन दिन के कुछ हिस्से के बराबर भी नहीं। फिर **अल्लाह** तआला ने इस दुन्या और इस में मौजूद तमाम मख़्लूक़ात की फ़ना का फ़ैसला भी फ़रमा दिया और येह सब चीज़ें फ़ानी

हैं, सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ात ही को बक़ा है, उस के सिवा बाक़ी सब चीजें फ़ानी हैं, जैसा कि कुरआने करीम में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

كُلُّ شَیْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ ؕ لَهُ الْحُكْمُ وَ اِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ۠ (۸۸) (پ۲۰، القصص:۸۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : हर चीज़ फ़ानी है सिवा उस की ज़ात के, उसी का हुक्म है और उसी की त़रफ़ फिर जाओगे ।

(ऐ उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه!) बे शक दुन्या वाले दुन्या की किसी चीज़ पर क़ादिर नहीं, वोह खुद मुख़्तार नहीं, जब उन्हें हुक्मे इलाही होगा वोह इस दुन्या को छोड़ देंगे और येह बे वफ़ा दुन्या उन को छोड़ देगी । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने (लोगों की रहनुमाई के लिये) कुरआने करीम और दीगर आसमानी कुतुब नाज़िल फ़रमाईं, अम्बिया व रुसुल عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मबऊ़ष फ़रमाए, अपनी किताब में जज़ा व सज़ा बयान फ़रमाई, समझाने के लिये मिषालें बयान फ़रमाईं और अपने दीन की वज़ाहत कुरआने करीम में फ़रमा दी, ह़राम व ह़लाल अश्या का बयान इसी किताब में फ़रमा दिया और इ़ब्रत आमोज़ वाक़ेआ़त इस में बयान फ़रमाए । ऐ उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه) क्या आप से इस बात का वा'दा नहीं लिया गया कि आप हर एक इन्सान के खाने पीने के ज़िम्मादार हैं, बल्कि आप को तो ख़िलाफ़त दी गई है, इस लिये बेशक आप के लिये भी उतना ही खाना और लिबास काफ़ी है जितना एक आ़म इन्सान के लिये काफ़ी होता है बेशक आप को येह ज़िम्मादारी अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ही की त़रफ़ से मिली है । अगर

आप ख़ुद को और अपने अहले ख़ाना को नुक़्सान व बरबादी से बचा सकते हैं तो ज़रूर बचाइये और क़ियामत की होलनाकियों से बचिये, नेकी करने की त़ाक़त और बुराई से बचने की तौफ़ीक़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से है। बेशक जो लोग आप से पहले गुज़रे उन्हों ने जो कुछ करना था वोह किया, जो तरक़्क़ियाती काम करने थे किये, जिन चीज़ों को ख़त्म करना था ख़त्म किया, और हर शख़्स अपने अपने अन्दाज़ में अपनी ज़िम्मादारियों को अदा करता रहा और येही समझता रहा कि अस्ल त़रीक़ा येही है जो मैं ने इख़्तियार किया है, उन में से बा'ज लोगों ने क़ाबिले गिरिफ़्त लोगों से भी निहायत नर्मी से काम लिया और उन की सरकशी के बा वुजूद उन्हें बेजा ढ़ील दी तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ऐसे लोगों पर आज़माइश का दरवाज़ा खोल दिया। अगर आप भी किसी क़ाबिले गिरिफ़्त शख़्स से नर्मी का बरताव करेंगे तो उस का अन्जाम देखेंगे और अगर आप ने किसी मुजरिम से किसी दीनी मुआ़-मले में नर्मी का बरताव किया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर भी आज़माइश के दरवाज़े खोल देगा, अगर आप किसी को गवर्नर बनने के क़ाबिल न समझें तो बे धड़क उस को ओ़-हदे से मा'ज़ूल कर दीजिये और इस बात से न डरिये कि अब कौन गवर्नर व ह़ाकिम बनेगा ? अल्लाह रब्बुल आ़-लमीन आप के लिये इन ना अहल गवर्नरों और ह़ाकिमों से भी अच्छे मदद गार लोग अ़त़ा फ़रमा देगा। आप मख़्लूक़ की परवाह मत कीजिये और अपनी निय्यत को ख़ालिस रखिये, हर इन्सान की मदद उस की निय्यत के मुत़ाबिक़ की जाती है, जिस कि निय्यत कामिल है तो उस को अज्र भी कामिल ही मिलेगा और जिस की निय्यत में फ़ुतूर होगा

उस को सिला भी ऐसा ही दिया जाएगा। ऐ उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ! अगर आप चाहते हैं कि बरोज़े क़ियामत कोई आप के ख़िलाफ़ ज़ुल्म का दा'वेदार न हो और जो लोग आप से पहले गुज़र गए वोह आप पर रश्क करें कि देखो ! इस के मुत्तबेइ़न को इस से कोई शिकायत नहीं, इस की रिआ़या इस से खुश है तो आप ऐसे आ'माल कीजिये कि उस दिन येह मक़ाम ह़ासिल हो जाए और बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की तरफ़ से नेकी करने की क़ुव्वत दी जाती है और बुराई से भी वोही ज़ात बचाने वाली है। और जो लोग मौत और उस की हौलनाकियों से ख़ौफ़ खाते थे मरने के बा'द उन की वोह आंखें उन के चेहरों पर बह गईं जो दुन्यवी लज़्ज़तों से सैर ही न होती थीं, उन के पेट फट गए और वोह तमाम चीज़ें भी ज़ाएअ़ हो गईं, जो वोह खाया करते थे, उन की वोह गरदनें जो नर्म व नाज़ुक तकियों पर आराम करने की आ़दी थीं आज क़ब्र की मिट्टी में बोसीदा ह़ालत में पड़ी हैं। जब वोह दुन्या में थे तो लोग उन से खुश होते और उन की ख़िदमत करते लेकिन आज येही लोग मौत के बा'द ऐसी ह़ालत में हैं कि उन के जिस्म गल सड़ गए, अगर उन लोगों को और उन की दुन्यवी गिज़ाओं को आज किसी मिस्कीन के सामने रख दिया जाए तो वोह भी उस की बदबू से अज़िय्यत मह़सूस करे, अब अगर उन के तअ़फ़्फ़ुन ज़दा जिस्मों पर ढेर सारी खुश्बू मली जाए तब भी उन की बदबू ख़त्म न हो। हां ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिसे चाहे अपनी रह़मते ख़ास्सा से ह़िस्सा अ़ता फ़रमाए और उसे दाइमी ने'मतें अ़ता फ़रमाए, बे शक हम सब उसी की त़रफ़ लौटने वाले हैं। ऐ उ़मर बिन अ़ब्दुल

अ़ज़ीज़ ! आप के साथ वाके़ई एक बहुत बड़ा मुआ़-मला दर पेश है, आप कभी भी जिज़्या और ज़कात वुसूल करने के लिये ऐसे आ़मिल मुक़र्रर न कीजियेगा जो बहुत ज़ियादा सख़्ती करें और लोगों से बहुत ज़ियादा तुर्श गोई से पेश आएं और बे जा उन का ख़ून बहाएं। ऐ उ़मर ! इस त़रह़ माल जम्अ़ करने से बचिये, ऐसी ख़ून रेज़ी से हमेशा कोसों दूर भागिये, और अगर आप को किसी गवर्नर के बारे में येह ख़बर मिले कि वोह लोगों पर ज़ुल्म करता है और फिर भी आप ने उसे गवर्नरी के ओ़-हदे से मा'ज़ूल न किया तो याद रखिये ! आप को जहन्नम से बचाने वाला कोई न होगा और ज़िल्लत व रुस्वाई आप के गले का हार होगी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम सब को अपनी हि़फ़्ज़ व अमान में रखे, **आ़मीन**। अगर आप उन तमाम ज़ुल्म व ज़ियादती वाले उमूर से इज्तिनाब करते रहे तो दिली सुकून ह़ासिल होगा और आप मुत़्मइन रहेंगे (اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ) ऐ उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ! आप ने लिखा कि मैं **अमीरुल मुअमिनीन** हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की सीरत और उन के फ़ैसलों के मु-तअ़ल्लिक़ आप को मा'लूमात फ़राहम करूं तो **अमीरुल मुअमिनीन** हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने दौर के मुत़ाबिक़ फ़ैसले किये। जैसी उन की रिआ़या थी अब ऐसी नहीं, उन के फ़ैसले उस दौर के ए'तिबार से थे, आप अपने दौर के ए'तिबार से फ़ैसले कीजिये। और अपने दौर के लोगों को मद्दे नज़र रखते हुए उन से मुआ़-मलात कीजिये, अगर आप ऐसा करेंगे तो मुझे **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त से उम्मीद है कि वोह आप को भी **अमीरुल मुअमिनीन** हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जैसी

मदद व नुसरत अ़ता फ़रमाएगा और जन्नत में उन के साथ मक़ाम अ़ता फ़रमाएगा । और ऐ उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ! आप येह आयते मुबा-रका पेशे नज़र रखिये :

وَمَاۤ اُرِیْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَاۤ اَنْهٰىكُمْ عَنْهُ ؕ اِنْ اُرِیْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ ؕ وَ مَا تَوْفِیْقِیْۤ اِلَّا بِاللّٰهِ ؕ عَلَیْهِ تَوَكَّلْتُ وَ اِلَیْهِ اُنِیْبُ ﴿۸۸﴾

(پ۱۲، ھود:۸۸)

*तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और मैं नहीं चाहता हूं कि जिस बात से तुम्हें मन्अ़ करता हूं आप उस के ख़िलाफ़ करने लगूं, मैं तो जहां तक बने संवारना ही चाहता हूं, और मेरी तौफ़ीक़ **अल्लाह** ही की त़रफ़ से है, मैं ने उसी पर भरोसा किया और उसी की त़रफ़ रुजूअ़ करता हूं ।*

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त आप को अपने ह़िफ़्ज़ो अमान में रखे और दारैन की सआ़दतें अ़ता फ़रमाए । اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

वस्सलाम : सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह

(عیون الحکایات ص ۷۹ ملخصًا)

(12) तक़्दीर पर सब्र कीजिये

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह बिन उ़त्बा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز को मकतूब में लिखा : "उस ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर के नाम से शुरूअ़ जिस ने सूरतें नाज़िल फ़रमाईं और तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं, **अम्मा बा'द !** ऐ उ़मर ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरिये बेशक ख़ौफ़े ख़ुदा फ़ाएदा देता है और आने वाली तक़्दीर पर सब्र कीजिये और इस पर

राज़ी रहिये अगर्चे तक़दीर आप के पास किसी ऐसी चीज़ को लाए जो आप को पसन्द न हो, और इन्सान की हर वोह ऐ़श वाली ज़िन्दगी जिस पर वोह ख़ुश होता है एक दिन ऐसा आएगा जब सारे ऐ़श ख़त्म हो जाएंगे, **वस्सलाम** ।" (حلیۃ الاولیاء ج ۲ ص ۲۱۶)

(13) ख़ालिद बिन सफ़्वान की नासिहाना तक़रीर

ख़ालिद बिन सफ़्वान हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ العَزِیز के पास आए और अ़र्ज़ की : **अमीरुल मुअमिनीन** ! आप अपनी मदहो षना को पसन्द फ़रमाएंगे ? फ़रमाया : नहीं, अ़र्ज़ की : तो फिर वा'ज़ व नसीहत को पसन्द फ़रमाएंगे ? फ़रमाया : हां ! ख़ालिद ने खड़े हो कर ख़ुत्बा पढ़ा और रब तआ़ला की हम्दो षना के बा'द कहा : **अम्मा बा'द : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मख़्लूक़ को पैदा फ़रमाया, उसे न तो उन की इबादत की ज़रूरत है, न उन की मा'सिय्यत से उसे कोई अन्देशा है । इन्सानों के मरातिब और उन की राय मुख़्तलिफ़ है और अ़रब सब से बदतर मर्तबे में थे, बुत परस्ती, पथ्थर तराशी, और ऊंटों की गला बानी उन का पेशा था, जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरादा फ़रमाया कि उन में अपना रसूल (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) भेजे और उन में अपनी रह़मत आ़म करें तो इन्हीं में से एक रसूले मोह़तरम को भेजा, जिन के लिये तुम्हारी मशक़्क़त ना क़ाबिले बरदाश्त है जो तुम्हारी ख़ैर ख़्वाही के ह़रीस हैं और जो अहले ईमान के लिये निहायत शफ़ीक़ व मेहरबान हैं, येह अ़ज़ीमुश्शान रसूल मुह़म्मद **मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم थे । मगर इन तमाम अवसाफ़ व ख़साइस के बा

वुजूद लोगों ने आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को जिस्मानी अज़िय्यतें पहुंचाईं, आप पर त़रह़ त़रह़ की आवाज़े कसीं और आप को वत़न छोड़ कर हिजरत पर मजबूर किया, आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की जानिब से वाज़ेह़ दलील मौजूद थी, आप हुक्मे इलाही के बिग़ैर एक क़दम नहीं उठाते थे, न उस की इजाज़त के बिग़ैर निकलते थे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मलाइका के ज़रीए आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मदद करता था, आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ग़ैब की ख़बरें देता था और उस ने आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ज़मानत दी थी कि आख़िरे कार काम्याबी आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दम चूमेगी और जब आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को जिहाद का हुक्म हुवा तो ब हुस्न व ख़ुबी हुक्मे इलाही की ता'मील की। बहर ह़ाल आप की पूरी ज़िन्दगी दा'वत व तब्लीग़, इज़्हारे ह़क़, दुश्मनों से जिहाद और अह़कामे ख़ुदावन्दी की ता'मील में गुज़री यहां तक कि इसी रविश पर आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल हुवा आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ हुए तो अ़रब के चन्द क़बाइल ने कहा हम नमाज़ पढ़ा करेंगे मगर ज़कात नहीं देंगे, मगर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि उन्हें वोह तमाम फ़राइज़ बजा लाने होंगे जो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में अदा करते थे, आप ने मुर्तद्दीन के मुक़ाबले के लिये तलवार नियाम से निकाली, जंग के शो'ले भड़क उठे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अहले बात़िल पर ग़ालिब आए, उन की इ़ज़्ज़त व गुरूर को ख़ाक में मिला दिया और ज़मीन उन के ख़ून से सैराब कर डाली ता आंकि वोह

जिस दरवाज़े से निकले थे उन्हें दोबारा उसी में दाखि़ल कर दिया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन से ह़ासिल होने वाले "माले फ़ै" से मा'मूली सी चीज़ें क़बूल कीं, या'नी एक दूध देने वाली ऊंटनी जिस का दूध पिया करते थे, एक ऊंट जिस पर पानी ढोया जाता था और ह़बशन लौंडी जो आप के बच्चे को दूध पिलाती थी। जब आप की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो आप ने मह़सूस किया कि येह बारे खि़लाफ़त उन के ह़ल्क़ का कांटा और कन्धे का बोझ है, चुनान्चे आप ने येह बार ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर डाल दिया और नबिय्ये पाक साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत पर (चलते हुए) **अल्लाह** को प्यारे हो गए। आप के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बारे खि़लाफ़त संभाला, शहर आबाद किये। सख़्ती व नर्मी को बाहम मिलाया, निहायत मुस्तइ़दी व ख़ुश उस्लूबी से इस को निभाया और हर काम के लिये मौज़ूं तरीन अफ़राद मुक़र्रर किये। ह़ज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शो'बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के एक ग़ुलाम ने जो फ़ीरोज़ कहलाता था और जिस की कुन्यत अबू लुलु थी, आप पर क़ातिलाना ह़म्ला किया। आप ने ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से कहा कि वोह लोगों से पता कर के बताएं कि उन का क़ातिल कौन है? लोगों ने बताया कि आप को मुग़ीरा बिन शो'बा के ग़ुलाम अबू लुलु ने क़त्ल किया है। येह सुन कर आप ने बा अवाज़े बुल्द اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कही कि वोह किसी मुसलमान के हाथ से क़त्ल नहीं हुए। फिर आप ने अपने क़र्ज़ों पर ग़ौर किया तो उन की अदाएगी का बार अपनी अवलाद के ज़िम्मे डालना मुनासिब नहीं समझा, बल्कि जाएदाद फ़रोख़्त कर के उसे बैतुल माल में दाखि़ल कर दिया। येह सिल्सिलए खि़लाफ़त चलता

रहा यहां तक कि आप दुन्या के सामने हैं, दुन्या के बादशाहों ने आप को जन्म दिया, सल्तनत की आग़ोश में पले, उसी के पिस्तानों से दूध पिया और मुमकिन ज़राएअ़ से सल्त़नत के मुत्लाशी रहे यहां तक कि जब वोह अपने तमाम ख़त़रात के साथ आप तक पहुंची तो आप ने उसे नफ़रत व ह़क़ारत की नज़र से देखा। आप ने मा'मूली तोशे के इ़लावा उस से कुछ फ़ाएदा नहीं उठाया। बल्कि उस को वहीं डाल दिया जहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे डाला था। पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बेहद शुक्र है कि आप के ज़रीए़ हमारे गुनाहों को उस ने ज़ाइल और हमारी परेशानियों को दूर कर दिया और आप की ब दौलत हमें रास्त गो और रास्त बाज़ बना दिया। बस आप अपनी इस रविश पर चलते रहिये और इधर उधर इल्तिफ़ात न कीजिये क्यूंकि ह़क़ पर होते हुए कोई चीज़ ज़लील नहीं हो सकती और न बात़िल पर होते हुए कोई चीज़ मोअ़ज़्ज़ज़ होगी।" (سیرت ابن عبد الحکم ص ۹۱)

(14) धोके बाज़ दुल्हन

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللہِ العَزِیز को येह नसीह़त आमोज ख़त़ लिखा : بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ط **अम्मा बा'द : या अमीरल मुअमिनीन** ! याद रखिये कि येह दुन्या हमेशा रहने की जगह नहीं, दुन्या को पछाड़ना बेह़द ज़रूरी है, जो इसे शिकस्त देता है येह उस की ता'ज़ीम करती है और जो इस की ता'ज़ीम करता है येह उसे ज़लीलो ख़्वार कर देती है। दुन्या वोह मीठा ज़ह्र है जिसे लोग बड़े मज़े से खाते हैं और हलाक हो जाते हैं। दुन्या में ज़ादे राह येह है कि दुन्यवी

आसाइशों को तर्क कर दिया जाए, दुन्या में तंग दस्ती गि़ना है, जो यहां फ़क्र व फ़ाक़ा का शिकार है दर ह़क़ीक़त वोही ग़नी है। या **अमीरल मुअमिनीन** ! दुन्या में उस मरीज़ की त़रह़ रहिये जो अपने मरज़ के इलाज की ख़ात़िर दवाओं की कड़वाहट और तकलीफ़ बरदाश्त करता है ताकि उस का ज़ख़्म और मरज़ मज़ीद न बढ़ें, इस थोड़ी तकलीफ़ को बरदाश्त कर लीजिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ बड़ी तकलीफ़ से बच जाएंगे। बेशक अ़-ज़मत और फ़ज़ीलत के लाइक़ वोह लोग हैं जो हमेशा ह़क़ बात कहते हैं, इन्किसारी व तवाज़ोअ़ से चलते हैं, उन का रिज़्क़ ह़लाल व त़य्यिब होता है, हमेशा ह़राम चीज़ों से अपनी निगाहों को मह़फ़ूज़ रखते हैं, वोह ख़ुश्की में भी ऐसे ख़ौफ़ ज़दा रहते हैं जैसे समुन्दर में मुसाफ़िर और ख़ुशह़ाली में ऐसे दुआ़एं करते हैं जैसे मसाइब व आलाम में दुआ़ की जाती है, अगर मौत का वक़्त मु-तअ़य्यन न होता तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात के शौक़, षवाब की उम्मीद और अ़ज़ाब के ख़ौफ़ से उन की रूहें उन के अजसाम में लम्ह़ा भर भी न ठहरतीं, ख़ालिक़े लम यज़ल की अ़-ज़मत और हैबत उन के दिलों में रासिख़ है और मख़लूक़ उन की नज़रों में कोई है़षिय्यत नहीं रखती (या'नी वोह फ़क़त रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के त़लबगार होते हैं)। या **अमीरल मुअमिनीन** ! याद रखिये कि ग़ौरो फ़िक्र करना नेकियों और भलाई की त़रफ़ ले जाता है, गुनाहों पर नदामत बुराइयों को छोड़ने में मदद करती है, दुन्यावी साज़ो सामान कितना वाफ़िर क्यूं न हो बाक़ी रहने वाला नहीं, येह और बात है कि लोग इस की ख़्वाहिश रखते हैं। इस तकलीफ़ का बरदाश्त करना जिस के बा'द हमेशा का आराम मिले उस राह़त से बेहतर है जिस के बा'द त़वील ग़म व अलम, तकालीफ़ और नदामत व ज़िल्लत का

सामना करना पड़े । इस बे वफ़ा, शिकस्त ख़ुर्दा और ज़ालिम दुन्या से आख़िरत की ज़िन्दगी कई द–रजे बेहतर है। येह दुन्या बड़ी धोके बाज़ है, लोगों के सामने ख़ूब बन संवर कर आती है और तबाह व बरबाद कर डालती है, लोग इस की झूटी अदाओं की वजह से हलाकत में जा पड़ते हैं, येह उस **धोके बाज़ दुल्हन** की त़रह़ है जो ख़ूब सजी सजाई हो, इस का बनावटी हुस्नो जमाल आंखों को ख़ीरा करने लगा, मगर जब इस का शोहर इस के क़रीब जाए तो वोह उसे ज़ालिमाना त़रीक़े से क़त्ल कर डाले, या **अमीरल मुअमिनीन** ! इ़ब्रत पकडने वाले बहुत कम हैं, अब तो ह़ाल येह है कि दुन्या की मह़ब्बत इ़श्क़ के द–रजे तक जा पहुंची है, दुन्या और उस का आशिक़ दोनों ही एक दूसरे को छोड़ने के लिये तय्यार नहीं है, दुन्या को पाने वाला समझता है कि मेरी काम्याबियों की मे'राज हो गई और अपने मक़्सदे ह़यात और मैदाने मह़शर में होने वाले ह़िसाबो किताब को भूल जाता है, वोह नेकियां कमाने के मवाक़ेअ़ खो देता है फिर जब ह़ालते नज़्अ़ में सख़्तियां त़ारी होती हैं तो उस की आंखें खुलती हैं और अपनी काम्याबियों पर फूले न समाने वाला येह शख़्स उस ह़क़ीक़त से आगाह हो जाता है कि वोह तो दुन्या से बुरी त़रह़ धोके खा चुका है, उस के बा'द वोह आ़शिक़े ना मुराद की मानिन्द दुन्या से रुख़्सत हो जाता है और बे वफ़ा दुन्या किसी और को धोका देने चली जाती है। या **अमीरल मुअमिनीन** ! इस दुन्या और इस की फ़रेब कारियों से बच कर रहिये, इस दुन्या की मिषाल उस सांप की त़रह़ है जिसे हाथ लगाएं तो नर्म व नाज़ुक मा'लूम होता है लेकिन उस का ज़ह्र जान लेवा होता है, इस दुन्या से हरगिज़ मह़ब्बत न कीजियेगा क्यूंकि इस का अन्जाम बहुत बुरा है, दुन्या का आ़शिक़ जब दुन्या ह़ासिल करने में

कामयाब हो जाता है तो येह उसे तरह तरह से परेशान करती है, इस की खुशियों को ग़म में बदल देती है, जो इस की फ़ानी अश्या के मिलने पर खुश होता है वोह बहुत बड़े धोके में पड़ा, इस का फ़ाएदा पाने वाला दर हक़ीक़त शदीद नुक़्सान में है, दुन्यावी आसाइशों तक पहुंचने के लिये इन्सान तकालीफ़ व मसाइब का सामना करता है, जब उसे खुशी मिलती है तो येह खुशी ग़म व मलाल में तब्दील हो जाती है क्यूंकि इस की खुशी दाइमी है और न ही इस की ने'मतें, उन का साथ तो कुछ देर का है। या **अमीरल मुअमिनीन** ! इस दुन्या को तारिकुद्दुन्या की नज़र से देखिये न कि आ़शिक़े दुन्या की नज़र से, जो इस दारे नापाएदार में आया वोह यहां से ज़रूर रुख़्सत होगा। यहां से जाने वाला कभी वापस नहीं आता और न कोई इस की वापसी का इन्तिज़ार करता है। सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, शहनशाहे अबरार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को दुन्या और इस के ख़ज़ानों की चाबियां अ़ता की गईं तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने लेने से इन्कार फ़रमा दिया, हालांकि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को इन की त़लब से मन्अ़ न फ़रमाया गया था और अगर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इन चीज़ों को क़बूल भी फ़रमा लेते तब भी आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मर्तबे में कोई कमी वाक़ेअ़ न होती और जिस मक़ाम व मर्तबे का आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से वा'दा किया गया है वोह ज़रूर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को मिलता, लेकिन हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जानते थे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को येह दुन्या ना पसन्द है लिहाज़ा आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी इस को क़बूल न फ़रमाया, जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां इस की कोई वुक़्अ़त नहीं

तो हुजूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी इस को कोई वुक़्अ़त न दी, अगर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इसे क़बूल फ़रमा लेते तो लोगों के लिये दलील बन जाती कि शायद आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इस से मह़ब्बत करते हैं, लेकिन आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसे क़बूल न फ़रमाया, क्यूंकि येह कैसे हो सकता है एक शै **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में ना पसन्द हो और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उसे क़बूल फ़रमा लें। या **अमीरल मुअमिनीन** ! मौत से पहले जितनी नेकियां हो सकती हैं कर लीजिये वरना ब वक़्ते नज़्अ़ फ़ाएदा न होगा, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इन नसीह़त आमोज़ बातों से हमें और आप को ख़ूब नफ़्अ़ अ़ता फ़रमाए, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ आप को अपनी ह़िफ़्ज़ो अमान में रखे। **वस्सलाम**

(عیون الحکایات ص ۹۹ مُلخصًا)

दुन्या की मज़म्मत पर चार अह़ादीषे मुबा-रका

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ 50 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "जन्नती मह़ल का सौदा" के सफ़ह़ा 35 पर है :

﴾1﴿ दुन्या के लिये माल जम्अ़ करने वाले बे अ़क़्ल हैं

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा, त़य्यिबा, त़ाहिरा, आ़बिदा, ज़ाहिदा, अ़फ़ीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि नबिय्ये अकरम, रसूले मुह़्तशम, सरापा जूदो करम, ताजदारे ह़रम, शहनशाहे इरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है :

اَلدُّنْیَا دَارُ مَنْ لَا دَارَ لَہٗ وَمَالُ مَنْ لَا مَالَ لَہٗ وَلَھَا یَجْمَعُ مَنْ لَا عَقْلَ لَہٗ

"या'नी दुन्या उस का घर है जिस का कोई घर न हो और उस का माल है जिस का कोई माल न हो और इस के लिये वोह जम्अ़ करता है जिस में अ़क़्ल न हो।"

(مِشْكَاةُ الْمَصَابِيح ج ۲، ص ۲۵۰، حديث ۵۲۱۱)

﴾2﴿ दुन्या की मह़ब्बत बाइ़षे नुक़्साने आख़िरत है

हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि रसूले हाशिमी, मक्की म-दनी, मुह़म्मदे अ-रबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

مَنْ اَحَبَّ دُنْيَاهُ اَضَرَّ بِآخِرَتِهٖ وَ مَنْ اَحَبَّ آخِرَتَهُ اَضَرَّ بِدُنْيَاهُ فَآثِرُوْا مَا يَبْقٰى عَلٰى مَا يَفْنٰى

"या'नी जिस ने दुन्या से मह़ब्बत की वोह अपनी आख़िरत को नुक़्सान पहुंचाता है और जिस ने आख़िरत से मह़ब्बत की वोह अपनी दुन्या को नुक़्सान पहुंचाता है, तो तुम बाक़ी रहने वाली (आख़िरत) को फ़ना होने वाली (दुन्या) पर तरजीह़ दो।" (اَلْمُسْتَدرَک لِلْحَاکِم ج۵، ص۴۵۴، حديث۷۹۶۷)

﴾3﴿ आख़िरत के मुक़ाबले में दुन्या की है़षिय्यत

हज़रते सय्यिदुना मुस्तौरिद बिन शद्दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

وَاللّٰهِ مَا الدُّنْيَا فِى الْآخِرَةِ إِلَّا مِثْلُ مَا يَجْعَلُ اَحَدُكُمْ إِصْبَعَهُ هٰذِهٖ فِى الْيَمِّ فَلْيَنْظُرْ بِمَ يَرْجِعُ

*"या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आख़िरत के मुक़ाबले में दुन्या इतनी सी है जैसे कोई अपनी इस उंगली को समुन्दर में डाले तो वोह देखे कि इस उंगली पर कितना पानी आया।"* (صَحِيح مُسلِم، ص ۱۵۲۹، حديث ۲۸۵۸)

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : येह भी फ़क़त समझाने के लिये है, वरना फ़ानी और मु-तनाही ((مُ-تَ-نَاہِی) या'नी इन्तिहा को पहुंचने वाले) को बाक़ी ग़ैर फ़ानी ग़ैर मु-तनाही से (इतनी) वजहे निस्बत भी नहीं जो (कि) भीगी उंगली की तरी को समुन्दर से है। ख़याल रहे कि दुन्या वोह है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ग़ाफ़िल कर दे आक़िल आरिफ़ की दुन्या तो आख़िरत की खेती है, उस की दुन्या बहुत ही अ़ज़ीम है, ग़ाफ़िल की नमाज़ भी दुन्या है। जो (कि) वोह नामो नुमूद के लिये अदा करता है, आक़िल का खाना, पीना, सोना, जागना बल्कि जीना मरना भी दीन है कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) की सुन्नत है, मुसलमान इस लिये खाए पिये सोए जागे कि येह हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) की सुन्नतें हैं। **हयातुद्दुन्या** और चीज़ है, **हयातुन फ़िद्दुन्या** और, **हयातुल्लिद्दुन्या** कुछ और, या'नी दुन्या की ज़िन्दगी, दुन्या में ज़िन्दगी, दुन्या के लिये ज़िन्दगी। जो ज़िन्दगी दुन्या में हो मगर आख़िरत के लिये हो दुन्या के लिये न हो, वोह मुबारक है। मौलाना फ़रमाते है, शे'र :

آب دَر کشتی ہلاکِ کِشتی اَست   آب اَندرزیرِ کِشتی پشتی است

(किश्ती दरिया में रहे तो नजात है, और अगर दरिया किश्ती में आ जावे तो हलाकत है)

(मिरआत, जि. 7, स. 3)

﴾4﴿ भेड़ का मरा हुवा बच्चा

हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **रहमते आलम, नूरे मुजस्सम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم भेड़ के मुर्दा बच्चे के पास से गुज़रे। इरशाद फ़रमाया : "तुम में से कोई येह पसन्द करेगा कि येह

इसे एक दिरहम के इवज (عِوَض) मिले ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : हम नहीं चाहते कि येह हमें किसी भी चीज़ के इवज (बदले) मिले तो इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! दुन्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां इस से भी ज़ियादा ज़लील है जैसे येह तुम्हारे नज़्दीक।"

(مِشکاۃُ المَصابِیح ،ج۲ص ۲۴۲ حدیث۵۱۵۷)

अल्लाह ! हुब्बे दुन्या से तू मुझे बचाना
साइल हूं या ख़ुदा में इ़श्क़े मुह़म्मदी का

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

अमीरुल मुअमिनीन की आ़जिज़ी

ज़मीन पर बैठ गए

ख़ु-लफ़ाए बनू उमय्या का दस्तूर था कि जब किसी जनाज़े में शरीक होते थे तो उन के बैठने के लिये एक ख़ास चादर बिछाई जाती थी। एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز एक जनाज़े में शरीक हुए और ह़स्बे मा'मूल उन के लिये भी येह चादर बिछाई गई लेकिन आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने अपने लिये इस इम्तियाज़ को पसन्द नहीं किया और इस चादर को पाऊं से एक त़रफ़ हटा कर ज़मीन पर बैठ गए।

(سیرت ابن جوزی ص ۷۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन علیھم رحمۃ اللہ المُبین मक़ाम व मर्तबा और ओ़-हदा व मन्सब मिलने के बा वुजूद किस क़दर आ़जिज़ी फ़रमाया करते थे ! ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز की ऐसी ही मज़ीद 14 हिकायात मुला-ह़ज़ा कीजिये :

(1) मेरे मक़ाम में कोई कमी तो नहीं आई

एक रात हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ الۡعَزِيز के हां कोई मेहमान आया, आप कुछ लिख रहे थे। क़रीब था कि चराग़ बुझ जाता। मेहमान ने अ़र्ज़ की : मैं उठ कर ठीक कर देता हूं तो आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه ने फ़रमाया : *"لَيۡسَ مِن مُّرُوَّةِ الرَّجُلِ اِسۡتِخۡدَامُهُ ضَيۡفَهٗ मेहमान से ख़िदमत लेना अच्छी बात नहीं है।"* उस ने कहा ग़ुलाम को जगा दूं ? फ़रमाया : वोह अभी अभी सोया है। फिर आप ख़ुद उठे और कुप्पी ले कर चराग़ को तेल से भर दिया। मेहमान ने कहा : या **अमीरल मुअमिनीन** ! आप ने ख़ुद ज़ाती तौर पर येह काम किया ? फ़रमाया :: *قُمۡتُ وَاَنَا عُمَرُ بۡنُ عَبۡدِ الۡعَزِيۡز ، وَرَجَعۡتُ وَاَنَا عُمَرُ بۡنُ عَبۡدِ الۡعَزِيۡز जब मैं (इस काम के लिये) गया तो भी "उ़मर" था और जब वापस आया तो भी "उ़मर" था, मेरे मक़ाम में कोई कमी तो नहीं आई और बेहतरीन आदमी वोह है जो **अल्लाह** तआ़ला के हां तवाज़ोअ़ करने वाला हो।* (احیاء العلوم، ج ۳، ص ۴۹۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ الۡعَزِيز ने किस क़दर आ़जिज़ी फ़रमाई, आ़जिज़ी इख़्तियार करने वाला ब ज़ाहिर कमतर दिखाई देता है मगर ह़क़ीक़त में बुलन्द तर हो जाता है, चुनान्चे

बुलन्दी अ़ता फ़रमाएगा

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आ़जिज़ी इख़्तियार करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बुलन्दी अ़ता फ़रमाएगा, पस वोह ख़ुद को कमज़ोर

समझेगा मगर लोगों की नज़रों में अज़ीम होगा और जो तकब्बुर करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ज़लील कर देगा, पस वोह लोगों की नज़रों में छोटा होगा मगर ख़ुद को बड़ा समझता होगा यहां तक कि वोह लोगों के नज़्दीक ख़िन्ज़ीर से भी बद तर हो जाता है।"

(كنزالعمال، كتاب الاخلاق ، الحديث:۸۵۰۵،ج۳،ص ۲۸۰)

फ़ख़्रो गुरूर से तू मौला मुझे बचाना
या रब ! मुझे बना दे पैकर तू आजिज़ी का

(वसाइले बख़्शिश, स. 195)

आजिज़ी किस हद तक की जाए ?

मगर याद रहे कि **दीगर** अख़्लाक़ी आदात की तरह **आजिज़ी** में भी ए'तिदाल रखना बहुत ज़रूरी है क्यूंकि अगर **आजिज़ी** में बिला ज़रूरत ज़ियादती की तो ज़िल्लत और कमी की तो **तकब्बुर** में जा पड़ने का ख़दशा है। लिहाज़ा इस हद तक आजिज़ी की जाए जिस में ज़िल्लत और हलका पन न हो। (احیاءالعلوم،ج۳،ص ۱۵۴)

(2) मिज़ाज पुर्सी करने वाले को जवाब

एक शख़्स ने हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر से कहा : "या **अमीरल मुअमिनीन** ! كَيْفَ مَا اَصْبَحْتَ *या'नी आप ने किस हालत में सुब्ह की।"* आजिज़ी करते हुए फ़रमाया : मैं ने इस हालत में सुब्ह की, कि पेटू, सुस्त कार और गुनाहों में आलूदा हूं, और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ख़ाम आरज़ूएं बांध रहा हूं।

(سیرت ابن جوزی ص ۲۰۵)

(3) ख़ादिमा की ख़िदमत

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने बा वुजूद ख़लीफ़ा होने के कभी अपने आप को आ़म मुसलमानों बल्कि कनीज़ों और गुलामों से भी बाला तर नहीं समझा। एक बार कनीज़ आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को पंखा झल रही थी कि उस की आंख लग गई, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ख़ुद पंखा लिया और उस को झलने लगे, जब कनीज़ की आंख खुली तो ह़ैरत व ख़ौफ़ के मारे उस की चीख़ निकल गई मगर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : तुम भी तो मेरी त़रह़ एक इन्सान हो, तुम्हें भी इसी त़रह़ गर्मी लगती है जिस त़रह़ मुझे, इस लिये मैं ने सोचा कि जिस त़रह़ तुम ने मुझे पंखा झला है मैं भी तुम्हें पंखा झल दूं। (سیرت ابن جوزی ص ۲۰۲)

(4) चादर औढ़ा दी

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز जनाज़ों मे भी शरीक होते और आ़म मुसलमानों की त़रह़ जनाज़े को कन्धा देते। एक मरतबा जनाज़े में शरीक हुए तो बारिश आ गई। इत्तिफ़ाक़न एक मुसाफ़िर वहां आ गया जिस के बदन पर चादर न थी, उन्हों ने उस को बुलाया और बारिश से बचाने के लिये अपनी चादर का बचा हुवा ह़िस्सा उसे औढ़ा दिया। (سیرت ابن جوزی ص ۲۰۴)

(5) तह़रीर फाड़ डालते

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **उ़जब**, **गुरूर** और **तकब्बुर** से बचने

की इस क़दर कोशिश फ़रमाते थे कि जब ख़ुत़्बा देते या कोई तह़रीर लिखते और उस के मु-तअ़ल्लिक़ दिल में ग़ुरूर पैदा होने का अन्देशा होता, तो ख़ुत़्बे में चुप हो जाते और तह़रीर को फ़ाड़ डालते और बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ करते : "اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُبِكَ مِنۡ شَرِّ نَفۡسِیۡ *या'नी : या इलाही* عَزَّوَجَلَّ *मैं अपने नफ़्स की बुराई से पनाह मांगता हूं।"* (سیرت ابن جوزی ص ۷۸)

(6) पहचान न पाते

इसी तवाज़ोअ़ और आ़जिज़ी का असर था कि जब कभी ना आश्ना लोग ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ الۡعَزِیۡز से मुलाक़ात के लिये आते तो शाहाना जाहो जलाल न होने की वजह से आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہ को पहचान न पाते और पूछना पड़ता कि **अमीरुल मुअमिनीन** कहां हैं ? क्यूंकि आप आ़म लोगों के दरमियान बैठे हुए होते थे। (سیرت ابن جوزی ص ۲۰۴ ملخصاً)

(7) मुझे "उ़मर" ही समझो

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ الۡعَزِیۡز ख़लीफ़ए वक़्त और **अमीरुल मुअमिनीन** थे मगर अपने आप को हमेशा "उ़मर" ही समझते, एक बार किसी ने कहा : अगर आप चाहें तो मैं आप को "उ़मर" समझ कर ऐसी बात कहूं जो आज आप को ना पसन्द और कल पसन्दीदा हो, वरना "**अमीरुल मुअमिनीन**" समझ कर ऐसी गुफ़्त-गू करूं जो आज आप को मह़बूब और कल मबग़ूज़ (या'नी ना पसन्द) हो ? फ़रमाया : " كَلِّمۡنِیۡ وَاَنَاعُمَرُ فِیۡمَا اَکۡرَہُ الۡیَوۡمَ وَاُحِبُّ غَدًا *या'नी मुझे "उ़मर" समझ कर वोही बात कहो जो आज मुझे ना पसन्द और कल पसन्द हो।"* (سیرت ابن جوزی ص ۲۰۲)

(8) ता'रीफ़ करने वाले को जवाब

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ख़ाकसारी की वजह से मुदाहिनी (या'नी ता'रीफ़ व तौसीफ़) को पसन्द नहीं फ़रमाते थे, चुनान्चे एक बार किसी शख़्स ने उन के सामने उन की ता'रीफ़ की तो फ़रमाया : لَوْعَرَفْتَ مِنْ نَفْسِی مَااَعْرِفُ مِنْهَا مَانَظَرْتَ فِیْ وَجْهِی *या'नी जो कुछ मैं अपने बारे में जानता हूं अगर तुम्हें मा'लूम हो जाए तो मेरा चेहरा देखना भी पसन्द न करो।* (سیرت ابن جوزی ص ۲۰۶)

(9) "ख़ली-फ़तुल्लाह" का मिस्दाक़

एक शख़्स ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز को **"या ख़ली-फ़तल्लाह फ़िल अर्द** या'नी ऐ ज़मीन में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़लीफ़ा" कह कर पुकारा तो फ़रमाया : देखो जब में पैदा हुवा तो वालिदैन ने मेरे लिये एक नाम मुन्तख़ब किया चुनान्चे मेरा नाम "उ़मर" रखा अगर तुम मुझे "**या उ़मर**" कह कर पुकारते तो मैं जवाब देता, फिर जब मैं बड़ा हुवा तो मैं ने अपने लिये एक कुन्यत "**अबू ह़फ़्स**" पसन्द की अगर तुम "**अबू ह़फ़्स**" की कुन्यत से मुझे बुलाते तो भी मैं जवाब देता, फिर जब तुम लोगों ने अम्रे ख़िलाफ़त मेरे सिपुर्द किया तो तुम ने मेरा लक़ब "**अमीरुल मुअमिनीन**" रखा अगर तुम मुझे "**अमीरुल मुअमिनीन**" के लक़ब से मुख़ातब करते तब भी मुज़ा-यक़ा नहीं था, बाक़ी रहा "**ख़ली-फ़तुल्लाह फ़िल अर्द**" का ख़िताब तो मैं इस का मिस्दाक़ नहीं हूं "**ख़ली-फ़तुल्लाह फ़िल अर्द**" तो ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और उन जैसे दूसरे ह़ज़रात थे। फिर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने पारह 23 सूरए صٓ की आयत 26 पढ़ी :

يٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِيْفَةً فِي الْاَرْضِ (پ۲۳،ص:۲۶) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ दावूद बे शक हम ने तुझे ज़मीन में नाइब किया।

(سیرت ابن عبدالحکم ص ۴۶)

(10) इस्लाम ने मुझे फ़ाएदा दिया है

एक शख़्स ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ الْعَزِيز से कहा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस्लाम की ख़िदमत करने पर आप को जज़ाए ख़ैर दे। मगर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : नहीं ! बल्कि यूं कहो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे फ़ाएदा देने पर इस्लाम को जज़ा दे। (سیرت ابن جوزی ص ۲۰۶)

(11) शानो शौकत के इज़्हार की मुमा-नअ़त

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ الْعَزِيز के कातिब का बयान है कि अह़काम व फ़रामीन जारी करते वक़्त आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه मुझे हमेशा ताकीद फ़रमाया करते थे कि मैं अह़काम व फ़रामीन में उन की शानो शौकत और अ़-ज़मत व रिफ़्अ़त का इज़्हार बिलकुल न करूं। (تاریخ الخلفاء ص ۱۹۱)

(12) मजलिस बरख़्वास्त करने का मा'मूल

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ الْعَزِيز को तन्हाई दरकार होती और हाज़िरीने मजलिस को उठाना चाहते तो हुक्म देने के अन्दाज़ में येह नहीं कहते थे कि उठ जाइये बल्कि येह

फ़रमाया करते : *"اِذَا شِئْتُمْ या'नी जब आप चाहें ! **अल्लाह** आप पर रह़्म फ़रमाए"* लोग इस इशारे को समझ जाते और वहां से उठ जाते।

(سیرت ابن جوزی ص ۷۶)

(13) जब सलाम करना भूल गए

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز एक बार चन्द लोगों के पास बिग़ैर सलाम किये बैठ गए। जब आप को याद आया तो उठ कर पहले सब को सलाम किया फिर तशरीफ़ फ़रमा हुए। (سیرت ابن عبد الحکم ص ٦٤)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सलाम करना हमारे **प्यारे आक़ा, ताजदारे मदीना** صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बहुत ही प्यारी सुन्नत है (बहारे शरीअ़त जि. 16, स. 98) ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, कि हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम जन्नत में दाख़िल नहीं होंगे जब तक तुम ईमान न लाओ और तुम मोमिन नहीं हो सकते जब तक कि तुम एक दूसरे से मह़ब्बत न करो। क्या मैं तुम को एक ऐसी चीज़ न बताऊं जिस पर तुम अ़मल करो तो एक दूसरे से मह़ब्बत करने लगो। अपने दरमियान सलाम को आ़म करो।"

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی افشاء السلام، الحدیث ۵۱۹۳، ج ۴، ص ۴۴۸)

बा'ज इस्लामी भाई जब आपस में मिलते हैं तो السلام علیکم से इब्तिदा करने के बजाए "**आदाब अ़र्ज़**", "**क्या ह़ाल है ?**", "**मिज़ाज शरीफ़**", "**सुब्ह़ ब ख़ैर**", "**शाम ब ख़ैर**" वग़ैरा वग़ैरा अ़जीबो ग़रीब कलिमात से इब्तिदा करते हैं, येह ख़िलाफ़े सुन्नत है। रुख़्सत होते

वक़्त भी "**ख़ुदा ह़ाफ़िज़**", "**गुड बाई**", "**टाटा**" वग़ैरा कहने के बजाए सलाम करना चाहिये। हां **रुख़्सत** होते हुए السلام علیکم के बा'द अगर ख़ुदा ह़ाफ़िज़ कह दें तो ह़रज नहीं। **सलाम के बेहतरीन अल्फ़ाज़** येह हैं : "اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ *या'नी तुम पर सलामती हो और* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *की त़रफ़ से रह़मतें और ब-र-कतें नाज़िल हो।*" (माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि.22, स. 409) **छोटा बड़े को, चलने वाला बैठे हुए को, थोड़े ज़ियादा को और सुवार पैदल को सलाम करने में पहल करें।** सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : सुवार पैदल को सलाम करे, चलने वाला बैठे हुए को, और थोड़े लोग ज़ियादा को, और छोटा बड़े को सलाम करे।

(صحیح مسلم، کتاب السلام، باب یسلم الراکب علی الماشی والقلیل علی الکثیر، الحدیث ۲۱۶۰، ص ۱۱۹۱)

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ दो कुतुब (1) 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त** हिस्सा 16 और (2) 120 सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो

होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रोज़ाना का जदवल

हज़रते सय्यिदुना अ़ता رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز की ज़ौजए मोह़तरमा हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा बिन्ते अ़ब्दुल मलिक رحمةالله تعالی علیها को पैग़ाम भेजा कि मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز के कुछ ह़ालात भिजवाइये, उन्हों ने फ़रमाया : ज़रूर ! ! ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने अपनी ज़ात को मुसलमानों के लिये और अपने ज़ेह्न को उन के कामों के लिये फ़ारिग़ कर लिया था, अगर शाम हो जाती और वोह मुसलमानों के काम से फ़ारिग़ न हुए होते तो दिन के साथ रात भी मिला लेते और रात गए तक काम करते रहते। जब यौमिया काम ख़त्म हो जाते तो अपना चराग़ मंगवा लेते, फिर दो नफ़्ल पढ़ते और सर घुटनों पर रख कर अकड़ूं बैठ जाते, कुछ ही देर में रुख़्सारों पर आंसूओं की धारें बहना शुरूअ़ हो जातीं और इस क़दर दर्द व कर्ब के साथ रोते कि गोया उन का दिल फट जाएगा और रूह़ निकल जाएगी, रात भर येह कैफ़िय्यत रहती, जब सुब्ह़ होती तो रोज़ा रख लेते। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۴۶)

मह़ब्बत में अपनी गुमा या इलाही न पाऊं मैं अपना पता या इलाही
रहूं मस्त व बे ख़ुद मैं तेरी विला में पिला जाम ऐसा पिला या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

ख़लीफ़ा का खाना

ख़लीफ़ा बनने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने दुन्या से ज़ो-हदो क़नाअ़त इख़्तियार की, ऐशो इशरत पर लात मारी और अनवाअ़ व अक़्साम के लज़ीज़ खाने यकसर तर्क कर दिये। मा'मूल येह था कि जब आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का खाना तय्यार हो जाता तो किसी चीज़ में ढक कर रख दिया जाता, जब तशरीफ़ लाते तो किसी ख़ादिम से कहने के बजाए अपनी मदद आप के तह़्त उसे ख़ुद ही उठा कर तनावुल फ़रमा लेते। (تاریخ دمشق، ج۴۵، ص۲۲۷)

ज़ैतून का सालन

नुऐ़म बिन सलामत का बयान है कि मैं **अमीरुल मुअमिनीन** के पास गया तो देखा कि ज़ैतून के तेल के साथ रोटी खा रहे थे।

(سیرت ابن جوزی ص۱۸۰)

पसलियां गिनी जा सक्ती थीं

यूनुस बिन शैब जिन्हों ने **अमीरुल मुअमिनीन** को ख़िलाफ़त से पहले इस ह़ालत में देखा था कि तौन्द निकली हुई थी, उन्ही का बयान है कि ख़िलाफ़त के बा'द अगर मैं गिनना चाहता तो बिग़ैर छूए हुए उन की पसलियों को गिन सकता था। (سیرت ابن جوزی ص۱۸۱)

मसूर और प्याज़

एक बार **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز के भाई "ज़ियान बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़" आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास आए, कुछ देर तक बातें हुईं, फिर आप ने

फ़रमाया : "गुज़िश्ता रात मेरे लिये बड़ी लम्बी हो गई क्यूंकि इस में नीन्द कम आई, मेरा ख़याल है इस का सबब वोह खाना था जो मैं ने रात को खाया था।" ज़ियान ने पूछा : "आप ने क्या खाया था ?" फ़रमाया : "मसूर और प्याज़।" ज़ियान ने हैरानी से कहा : "**अल्लाह** तआ़ला ने तो आप को बड़ी कशाइश दे रखी है, मगर आप खुद ही अपनी जान पर तंगी डालते हैं ?" जब "**ज़ियान**" ने आप को मलामत के अन्दाज़ में फ़हमाइश की तो आप ने नाराज़ी का इज़्हार करते हुए फ़रमाया : "मैं ने तुम्हें अपनी ह़ालत बता कर अपना भेद तुम पर खोल दिया मगर मैं ने तुम्हें ख़ैर ख़्वाह नहीं बल्कि बद ख़्वाह पाया, मैं क़सम खाता हूं कि जब तक ज़िन्दा हूं आइन्दा कभी तुम्हें राज़दार नहीं बनाऊंगा।" (سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۱۶)

क्या बात है "मसूर" की ?

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम मसूर ज़रूर खाया करो क्यूंकि येह ब-रकत वाली शै है जो दिल को नर्म करती और आंसूओं को बढ़ाती है और इस में 70 अम्बियाए किराम (عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) की ब-रकात शामिल हैं जिन में हज़रते ईसा (عَلَیْہِ السَّلَام) भी शामिल हैं।" (فردوس الاخبار، ج۲، ص۶۳، الحدیث ۳۸۷۶)

इमाम षा'लबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ العزیز एक दिन ज़ैतून, एक दिन गोश्त और एक दिन मसूर से रोटी खाया करते थे। एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : मसूर और ज़ैतून नेकों की गिज़ा है, बिल फ़र्ज़ अगर इस में और कोई फ़ज़ीलत न हो तो येह ज़ियाफ़ते इब्राहिमी का हिस्सा होता था, मसूर

बदन को दुबला करता है और दुबला बदन इबादत में मदद गार होता है, मसूर से ऐसी शहवत नहीं भड़कती जैसी गोश्त खाने से भडकती है।

(قرطبی، ج۱، ص ۳۴۶)

समझाने वाले को समझा दिया

एक शख़्स ने हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَیْهِ رحمۃ اللّٰہِ الْعَزِیز की बेहद सादा ग़िज़ा देख कर कहा : **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तो फ़रमाता है :

كُلُوْا مِنْ طَیِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ (پ۱۶،طٰہٰ:۸۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : खाओ जो पाक चीज़ें हम ने तुम्हें रोज़ी दीं।

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उस की इस्लाह करते हुए फ़रमाया : इस से लज़ीज़ खाना मुराद नहीं बल्कि वोह माल है जो कस्बे हलाल से हासिल किया जाए। (درمنثور، ج۱، ص ۴۰۶)

खाना न खा सके

एक दिन हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَیْهِ رحمۃ اللّٰہِ الْعَزِیز ने एक शख़्स को घर में बुलाया। वोह अन्दर पहुंचा तो देखा कि एक दस्तर ख़्वान पर एक तश्त (Tray) रूमाल से ढकी हुई रखी है और **अमीरुल मुअमिनीन** नमाज़ पढ़ रहे हैं, नमाज़ पढ़ चुके तो दस्तर ख़्वान को सामने खींच कर फ़रमाया : आओ ! खाना खाओ, कहां वोह मिस्र व मदीना की ज़िन्दगी और कहां येह ज़िन्दगी ! येह कह कर रोने लगे हत्ता कि कुछ न खा सके। (سیرت ابن جوزی ص ۱۸۰ ملخصا)

ज़ियादा खाना सामने आने पर उठ खड़े हुए

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز अपने किसी क़रीबी रिश्तेदार के पास गए तो उस ने उन्हें खाना पेश किया जो बहुत ज़ियादा था, देखते ही फ़रमाया : भूक तो इस से कम में भी मिट जाती, नफ़्स की ख़्वाहिश पूरी हो जाती और ज़ाइद खाना तुम्हारे फ़क़्रो फ़ाक़े के दिन के लिये काफ़ी होता। उस ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वुस्अ़त अ़ता की है। फ़रमाया : फिर तो तुम पर शुक्र लाज़िम था और वहां से उठ खड़े हुए। (سیرت ابن جوزی ص ۲۴۵)

पेट भर कर कैसे खा पी सकता हूं ?

एक मरतबा मुसाफ़ेअ़ बिन शैबा अपने बेटे के साथ हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز के मेहमान हुए, आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया कि अपने बेटे को मेहमान ख़ाने में भेज दो और तुम मेरे साथ घर पर चलो (क्यूंकि मुसाफ़ेअ़ आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه की ज़ौजए मोह़तरमा के मह़रम रिश्तेदार थे)। नमाज़े मग़रिब पढ़ाने के बा'द घर पहुंचे और मस्जिदे बैत में जा कर सुन्नतें व नवाफ़िल पढ़ने और गिरया व ज़ारी में मश्ग़ूल हो गए, जब बहुत देर गुज़र गई तो ज़ौजए मोह़तरमा ने आवाज़ दी : मेहमान ख़ाने पर आप का इन्तिज़ार कर रहा है। हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز तशरीफ़ ले आए और मेहमान से मा'ज़िरत करते हुए कहा : वोह शख़्स पेट भर कर क्यूं कर खा पी सकता है जिस पर मशरिक़ व मग़रिब के मज़्लूमों का दा'वा बनता हो। (سیرت ابن جوزی ص ۲۲۴)

कभी पेट भर कर नहीं खाया

हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز के ख़ादिम का बयान है कि ख़लीफ़ा बनने से ले कर इन्तिक़ाल तक आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने कभी पेट भर कर खाना नहीं खाया। (طبقات ابن سعد، ج۵،ص۲۶۶)

तुम्हारे आक़ा की येही गिज़ा है

हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز के ख़ादिम को जब बार बार दाल खाने के लिये मिली तो एक दिन कहने लगा : "كُلَّ يَوْمٍ عَدَسٌ *या'नी रोज़ रोज़ दाल !*" आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़ौजए मोहतरमा ने फ़रमाया : هٰذَا طَعَامُ مَوْلَاكَ أَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ तुम्हारे आक़ा **अमीरुल मुअमिनीन** की भी येही गिज़ा है। (سیرت ابن جوزی ص۱۸۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आफ़रीन है हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز पर कि इतनी बडी सल्तनत के तख़्ते ख़िलाफ़त पर मु–तमक्किन होते हुए ऐसी सादा और कम गिज़ा इस्ति'माल फ़रमाते थे, वाक़ेई कम खाने की बड़ी ब–र–कतें हैं, चुनान्चे

खाना कितना खाना चाहिये

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उयूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सिह्हत निशान है : "आदमी अपने पेट से ज़ियादा बुरा बरतन नहीं भरता, इन्सान के लिये चन्द लुक़्मे काफ़ी हैं जो उस की पीठ को सीधा रखें अगर ऐसा न कर सके तो तिहाई (1/3) खाने के लिये तिहाई पानी के

लिये और एक तिहाई सांस के लिये हो।"[1] (سنن ابن ماجہ ج۴ ص۴۸ حدیث ۳۳۴۹)

मैं कम खाना खाने की आ़दत बनाऊं

ख़ुदाया करम ! इस्तिक़ामत भी पाऊं

अंगूर खाने की ख़्वाहिश

एक दिन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ الْعَزِیْز के दिल में अंगूर खाने की ख़्वाहिश पैदा हुई तो अपनी ज़ौजए मोह़तरमा से फ़रमाया : "अगर आप के पास एक दिरहम हो तो मुझे दे दें, मेरा दिल अंगूर खाने को चाह रहा हैं।" उन्हों ने जवाब दिया : "मेरे पास एक दिरहम कहां है ? क्या आप के पास **अमीरुल मुअमिनीन** होने के बा वुजूद एक दिरहम भी नहीं कि इस से अंगूर ही ख़रीद लें ?" फ़रमाया : "अंगूर न खाना इस से कहीं ज़ियादा आसान है कि (ह़राम खाने के नतीजे में) कल मैं जहन्नम की ज़न्जीरें पहनूं।"

(تاریخ الخلفاء، ص۱۸۸)

दाल और कटी हुई प्याज़ से मेहमान नवाज़ी

एक दिन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ الْعَزِیْز के हां कोई मेहमान आया हुवा था। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने गुलाम को खाना लाने को कहा। गुलाम खाना ले आया जो चन्द

मदीना

1 : कम खाने के फ़वाइद और ब-र-करतें जानने के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی की मायए नाज़ तस्नीफ़ फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल के बाब "पेट का कुफ़्ले मदीना" का ज़रूर मुत़ा-लआ़ कीजिये।

छोटी छोटी रोटियों पर मुश्तमिल था, जिन पर नर्म करने के लिये पानी छिड़क कर नमक और ज़ैतून का तेल लगाया गया था। रात को जो खाना पेश हुवा वोह दाल और कटी हुई प्याज़ पर मुश्तमिल था। गु़लाम ने मेहमान को वज़ाह़त करते हुए बताया : अगर **अमीरुल मुअमिनीन** के हां इस के इलावा कोई और खाना होता तो वोह भी ज़रूर आप की मेहमान नवाज़ी के लिये दस्तर ख़्वान की ज़ीनत बनता, मगर आज घर में सिर्फ़ येही खाना पका है, **अमीरुल मुअमिनीन** ने भी इसी से रोज़ा इफ़्तार फ़रमाया है। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۳۵ ملخصاً)

खाने में इसराफ़ छोड दिया

मस्लमा बिन अ़ब्दुल मलिक कहते हैं कि एक दफ़्आ़ मैं नमाज़े फ़ज्र के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز की ख़ल्वत गाह पर ह़ाज़िर हुवा जहां किसी और को आने की इजाज़त न थी। उस वक़्त एक लौंडी सैहानी खजूर का थाल लाई जो आप को बहुत पसन्द थीं और उसे रग़बत से खाते थे। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने कुछ खजूरें उठाईं और पूछा : मस्लमा ! अगर कोई इतनी खजूरें खा कर इस पर पानी पी ले तो क्या ख़याल है येह रात तक इस के लिये काफ़ी होगा ? चूंकि खजूरें बहुत कम थी इस लिये मैं ने अ़र्ज़ की : मुझे सह़ीह़ अन्दाज़ा नहीं, मैं यक़ीनी त़ौर पर कुछ नहीं कह सकता। इस पर आप ने चुल्लू भर खजूरें उठाईं और पूछा : अब क्या ख़याल है ? अब चूंकि मिक़्दार ज़ियादा थी इस लिये मैं ने कहा : या **अमीरुल मुअमिनीन** ! इस से कुछ कम मिक़्दार भी काफ़ी हो सकती है। कुछ

तवक़्क़ुफ़ के बा'द फ़रमाया : फिर इन्सान अपना पेट क्यूं नारे जहन्नम (या'नी ह़राम) से भरता है ? येह सुन कर मैं कांप उठा क्यूंकि ऐसी नसीह़त मुझे पहले कभी नहीं की गई। (سیرت ابن عبد الحکم ص ۱۳۴)

दौराने बयान रोने लगे

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز एक बार बयान के लिये खड़े हुए, अभी इतना ही फ़रमाया था : یَاۤ اَیُّهَا النَّاس ! *(या'नी ऐ लोगो !)* कि रोते रोते आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की हिचकी बन्ध गई, कुछ सुकून हुवा तो फ़रमाया : "ऐ लोगो !" लेकिन फिर हिचकी बन्ध गई और कुछ न बोल सकें जब कुछ इफ़ाक़ा हुवा तो फ़रमाया : "ऐ लोगो ! जिस आदमी ने इस ह़ालत में सुब्ह़ की हो कि उस के आबाओ अजदाद में से कोई भी ज़िन्दा न हो, वोह यक़ीनन मौत के मुंह में है, ऐ लोगो ! तुम देखते नहीं कि तुम हलाक होने वालों का छोड़ा हुवा सामान इस्ति'माल करते हो और मरने वालों के घरों में रहते हो, दुन्या से कूच कर जाने वालों की ज़मीनों पर क़ाबिज़ हो, कल वोह तुम्हारे पड़ोसी थे और आज वोह क़ब्रों में बे नामो निशान पड़े हैं, किसी की रूह़ क़ियामत तक अम्न और चैन में है और किसी की रूह़ क़ियामत तक मुब्तलाए अ़ज़ाब है। देखो ! तुम उन को अपने कन्धों पर लाद कर ले गए और ज़मीन के पेट (या'नी क़ब्र) में डाल आए जब कि उस से पहले वोह दुन्या की ऐ़शो इ़शरत और नाज़ो ने'मत में मगन थे, اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْن ، اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْن ," फिर फ़रमाया : " **वल्लाह** ! मेरी ख़्वाहिश है कि इस्लाह़ का आग़ाज़ मुझ से और मेरे ख़ानदान से हो, ताकि हमारी और तुम्हारी मईशत (या'नी माली हैसिय्यत) बराबरी की

सत्ह़ पर आ जाए, **वल्लाह**, अगर मुझे इस के इलावा कोई बात कहनी होती तो उस के लिये ख़ूब ज़बान चलती।" येह कह कर आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने चादर चेहरे पर डाल ली और बच्चों की त़रह़ बिलक बिलक कर रोने लगे, आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का येह अन्दाज़ देख कर ह़ाज़िरीन पर भी रिक़्क़त त़ारी हो गई और वोह भी आप के साथ रोने लगे। (سیرت ابن عبد الحکم ص ۱۱۲)

अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

*पए **मुस्त़फ़ा** जगमगा या इलाही*
येह दिल गोरे तीरा से घबरा रहा है

बह़रे शहे करबला या इलाही
बक़ीए मुबारक में तदफ़ीन मेरी हो

तू अ़त्तार को चश्मे नम दे के हर दम
मदीने के ग़म में रुला या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 80)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तक़्वा व परहेज़ गारी

तक़्वा की बुन्याद येह है कि अपने नफ़्स को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी से बचाया जाए। कुफ़्रो शिर्क से, सग़ीरा व कबीरा गुनाहों से, ज़ाहिरी व बात़िनी ना फ़रमानियों और बुरी ख़स्लतों से बचना सब **तक़्वा** में दाख़िल है। शहनशाहे अबरार, मुत्तक़ियों के सरदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुश्कबार है: कोई बन्दा उस वक़्त तक मुत्तक़ीन में शुमार नहीं होगा जब तक कि वोह बे ज़रर (या'नी नुक़्सान न

देने वाली) चीज़ को इस ख़ौफ़ से न छोड़ दे कि शायद इस में ज़रर (या'नी नुक़्सान) हो। (ترمذی ج ۴ ص ۲۹۴، الحدیث۲۴۵۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बा'ज चीज़ें ब ज़ाहिर जाइज़ होती हैं लेकिन शुब्हे से ख़ाली नहीं होतीं उन से बचना भी तक़्वा ही है और येह वस्फ़ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز में ब-द-रजए अतम मौजूद था, ऐसी 16 हि़कायात मुला-ह़ज़ा हो, चुनान्चे

(1) शाही घोड़े बेच दिये

अस्त़बल के निगरान ने शाही घोड़ों के लिये घास और दाने वग़ैरा का ख़र्च त़लब किया तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने फ़रमाया : "उन घोड़ों को बेचने के लिये शाम के मुख़्तलिफ़ शहरों में भेज दो और उन की क़ीमत में मिलने वाली रक़म बैतुल माल में जम्अ़ कर दी जाए, मेरे लिये मेरा ख़च्चर ही काफ़ी है।" (تاریخ الخلفاء، ص ۲۳۴)

(2) बैतुल माल का गर्म पानी

एक ग़ुलाम गर्म पानी का बरतन ले कर आता और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز उस से वुज़ू कर लेते, एक दिन आप की तवज्जोह हुई तो ग़ुलाम से फ़रमाया : "ग़ालिबन तुम येह लोटा मुसलमानों के मत़बख़ (या'नी किचन) में ले जाते हो और वहां आतश दान के पास रख कर गर्म कर लेते हो ?" अ़र्ज़ की : "जी हां !" फ़रमाया : "तुम ने गड़बड़ कर दी।" फिर "मुज़ाहि़म" से फ़रमाया : "येह बरतन भर कर गर्म करो और देखो इस में कितना इंधन

सर्फ़ होता है, फिर उन तमाम दिनों का हि़साब कर के इतना ईंधन मत़बख़ में दाखि़ल करो।" (سیرت ابن عبدالحکم ص ۴۰)

(3) सख़्त सर्दी की एक रात

इसी त़रह़ एक मरतबा सख़्त सर्दी की रात में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَدِیْر को ग़ुस्ल की ह़ाजत हुई, ख़ा़दिम ने पानी गर्म कर के पेश किया, दरयाफ़्त फ़रमाया : "कहां गर्म किया है?" अ़र्ज़ की : "मत़बख़े आ़म में।" फ़रमाया : "फिर इसे उठा लो।" और ठन्डे पानी से ग़ुस्ल करने का इरादा फ़रमाया मगर किसी ने अ़र्ज़ की : "या **अमीरल मुअमिनीन** ! मैं आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वास्ता देता हूं, अपनी ज़ात पर रह़्म कीजिये। अगर मत़बख़ का गर्म शुदा पानी अपने लिये जाइज़ नहीं समझते तो इस की क़ीमत लगा कर बैतुल माल में दाखि़ल कर दीजिये।" चुनान्चे आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने पहले बैतुल माल में क़ीमत जम्अ़ करवाई फिर ग़ुस्ल किया।

(سیرت ابن عبدالحکم ص ۴۰)

(4) बैतुल माल के माल से बने मकानों में ठहरना गवारा नहीं किया

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَدِیْر एक मरतबा ख़ुनासिरा तशरीफ़ ले गए तो वहां पर बने हुए मकानात में ठहरना पसन्द नहीं किया क्यूंकि वोह अगले ख़ु-लफ़ा ने बैतुल माल के माल से बनवाए थे, चुनान्चे आप खुले मैदान ही में ख़ैमा ज़न हो गए।

(تاریخ یعقوبی، ج۲،ص ۲۳۴)

(5) ज़ाती चराग़ जला लिया

एक ख़लीफ़ा की हि़फ़ाज़त में आने वाली सब से अहम चीज़ बैतुल माल या'नी ख़ज़ाना है, इस लिये उस की दियानत का अस्ली

मे'यार इसी को क़रार दिया जा सकता है, हालात व वाके़आत बताते हैं कि हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ الْعَزِيز की दियानत हमेशा इस मे'यार पर पूरी उतरी। वोह रात के वक़्त ख़िलाफ़त का काम बैतुल माल की शम्अ़ सामने रख कर अन्जाम दिया करते थे और जब अपना कोई काम करना होता तो इस शम्अ़ को उठवा देते और ज़ाती चराग़ मंगवा कर काम करते। इसी त़रह़ की एक सबक़ आमोज़ ह़िकायत मुला-ह़ज़ा हो, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ الْعَزِيز के पास रात के वक़्त किसी दूर दराज़ अ़लाके़ का क़ासिद आया, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه आराम फ़रमाने के लिये लेट चुके थे लेकिन उसे अन्दर आने की इजाज़त दे दी और बड़ी देर तक उस के अ़लाके़ के ह़ालात बडी तफ़्सील से दरयाफ़्त फरमाते रहे कि वहां मुसलमानों और ज़िम्मियों की ह़ालत कैसी है? गवर्नर का रहन सहन कैसा है? चीज़ों के भाव कैसे हैं? मुहाजिरीन व अन्सार की अवलाद के ह़ालात क्या हैं? मुसाफ़िरों और फु-क़रा की क्या कैफ़िय्यत है? क्या हर ह़क़दार को उस का ह़क़ दिया जाता है? क्या किसी को शिकायत तो नहीं? गवर्नर ने किसी से बे इन्साफ़ी तो नहीं की? इसी त़रह़ आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक एक चीज़ के बारे में कुरैद कुरैद कर दरयाफ़्त फ़रमाते रहे और क़ासिद अपनी मा'लूमात के मुत़ाबिक़ जवाब देता रहा। जब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के सुवालात का सिल्सिला ख़त्म हुवा तो क़ासिद ने आप की मिज़ाज पुर्सी की, कि आप की सिह़्ह़त कैसी है? अहलो इयाल के बारे में भी पूछा तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ الْعَزِيز ने फ़ौरन फूंक मार कर चराग़ बुझा दिया और दूसरा चराग़ लाने का हुक्म दिया चुनान्चे एक मा'मूली चराग़ लाया गया जिस

की रोशनी न होने के बराबर थी। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : हां अब जो चाहो पूछो। उस ने आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के अहलो इ़याल और मु-तअ़ल्लिक़ीन के ह़ालात पूछे, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जवाब देते रहे। क़ासिद को चराग़ बुझाने से बड़ा ता'ज्जुब हुवा था, चुनान्चे उस ने पूछ ही लिया : या **अमीरल मुअमिनीन** ! आप ने एक अनोखा काम किस लिये किया ? फ़रमाया : वोह क्या ? अ़र्ज़ की : जब मैं ने आप की और अहलो इ़याल की मिज़ाज पुर्सी की तो आप ने चराग़ गुल कर दिया ? फ़रमाया : **अल्लाह** के बन्दे ! जो चराग़ मैं ने बुझा दिया था वोह मुसलमानों के माल से रोशन था, लिहाज़ा जब तक मैं तुम से मुसलमानों के ह़ालात व ज़रूरियात दरयाफ़्त कर रहा था तो येह रोशन था, इस त़रह़ येह मुसलमानों के काम और उन ही की ज़रूरत के लिये मेरे पास रोशन था मगर जब तुम ने मेरी ज़ात और मेरे अहलो इ़याल के बारे में बात चीत शुरूअ़ की तो मैं ने मुसलमानों के माल से जलने वाला चराग़ बुझा दिया और ज़ाती चराग़ रोशन कर दिया। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۳۳)

इस ह़िकायत में उन इस्लामी भाइयों के लिये दर्से अ़ज़ीम है जो किसी न किसी ह़वाले से वक़्फ़ या चन्दे [1] के मुआ़-मलात में शामिल होते हैं, उन्हें बहुत ज़ियादा एह़तियात़ की ज़रूरत है कि वक़्फ़ की चीजों का थोड़ी देर का ना जाइज़ इस्ति'माल त़वील अ़र्से के लिये जहन्नम में पहुंचाने का सबब बन सकता है, लोगों के दिये हुए चन्दे का ग़लत़

1 : चन्दे के मसाइल और इस की एह़तियातें तफ़्सील से जानने के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی की आ़लीशान तालीफ़ "चन्दे के बारे में सुवाल जवाब" का ज़रूर मुत़ा-लआ़ कीजिये।

इस्ति'माल करने वालों को इस के बदले जहन्नम की पीप पीनी पड़ सकती है, इस लिये अगर आप से ज़िन्दगी में कभी ऐसी बे एहतियाती हुई हो तो फ़ौरन से पेशतर तौबा कर लीजिये, तावान बनता हो तो वोह भी दे दीजिये, मौला करीम عَزَّوَجَلَّ हमारे ह़ाल पर रह़्म फ़रमाए,

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(6) बैतुल माल के कोइले

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने अपने गुलाम से गुस्ले जुमुआ़ के लिये पानी गर्म करने का कहा तो उस ने अ़र्ज़ की : हमारे पास जलाने के लिये लकड़ियां नहीं हैं। फ़रमाया : मत़बख़ (या'नी बावर्ची खाने) से समावार (या'नी पानी गर्म करने का बरतन) ले आओ। जब समावार लाया गया तो वोह दहक रहा था, ह़ैरत से फ़रमाया : तुम ने तो कहा था कि हमारे पास लकड़िया नहीं है ! शायद तुम इसे मुसलमानों के मत़बख़ से लाए हो। गुलाम ने हां में सर हिला दिया। फ़रमाया : मत़बख़ के ज़िम्मादार को बुलाओ। जब वोह ह़ाज़िर हुवा तो फ़रमाया : तुम से कहा गया होगा कि येह **अमीरुल मुअमिनीन** का समावार है और तुम ने इस को दहका दिया होगा ? अ़र्ज़ की : **वल्लाह** ! ऐसा नहीं हुवा ! मैं ने एक भी लकड़ी इस में इस्ति'माल नहीं की बल्कि चन्द कोइले मौजूद थे कि जिन्हें अगर मैं यूं ही छोड़ देता तो थोड़ी ही देर में वोह राख के ढेर में तबदील हो जाते। फ़रमाया : तुम ने इन कोइलों की लकड़ी कितने में ख़रीदी थी ? उस ने क़ीमत बताई तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने वोह क़ीमत अदा कर दी फिर पानी इस्ति'माल फ़रमाया। (سیرت ابن جوزی ص ۱۹۱)

(7) ककड़ियों का तोहफ़ा

हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز की ख़िदमत में उरदन से **ककड़ियों** के दो टोकरे आए आप ने फ़रमाया : "येह किस ने दिये हैं ?" अर्ज़ की गई : "**ककड़ियों** के टोकरे उरदन के गवर्नर ने हदिया भेजे हैं।" फ़रमाया : "किस चीज़ पर लाद कर लाए गए ?" जवाब मिला : "सरकारी डाक की सुवारी पर।" फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला ने इन सुवारियों पर मेरा ह़क़ आ़म मुसलमानों से ज़ियादा नहीं रखा, इन्हें ले जाओ और फ़रोख़्त कर के इन की क़ीमत डाक की सुवारियों के चारे में जम्अ़ कर दो।"

रावी का बयान है : ह़ज़रते सय्यिदुना उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِير के भतीजे ने मुझे इशारा किया कि जब उन की क़ीमत तै़ हो जाए तो मेरे लिये ख़रीद लाना, चुनान्चे वोह दोनों टोकरे बाज़ार लाए गए, उन की क़ीमत चौदह दराहिम तै़ हुई मैं ने येह क़ीमत अदा की और टोकरे ख़रीद कर उन के भतीजे को ला दिये। उस ने एक ख़ुद रख लिया और दूसरे के लिये कहा : "येह **अमीरुल मुअमिनीन** की ख़िदमत में ले जाओ।" मैं ने वोह टोकरा ह़ज़रते सय्यिदुना उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِير की ख़िदमत मे ह़ाज़िर किया तो चोंक कर फ़रमाया : "येह तो वोही **ककड़ियां** हैं ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "वोह दोनों टोकरे आप के फ़ुलां भतीजे ने ख़रीद लिये थे, एक उन्हों ने ख़ुद रख लिया है और येह दूसरा आप की ख़िदमत में भेज दिया है।" फ़रमाया : "हां ! अब मेरे लिये इन का खाना दुरुस्त है।"

(سیرت ابن عبدالحکم ص ۴۷)

(8) बैतुल माल में दो दीनार जम्अ़ करवाए

एक बार आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه ने अपने गुलाम मुज़ाहिम से कहा कि मुझे कुरआने पाक रखने वाली एक रिह्ल ख़रीद दो। वोह एक रिह्ल लाए जो आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه को बहुत पसन्द आई। पूछा : कहां से लाए ? उन्हों ने बताया : सरकारी माल ख़ाने में कुछ लकड़ी मौजूद थी, मैं ने उसी की येह रिह्ल बनवा ली, फ़रमाया : जाओ ! बाज़ार में इस की क़ीमत लगाओ, वोह गए तो लोगों ने निस्फ़ दीनार क़ीमत लगाई, उन्हों ने पलट कर ख़बर दी तो फ़रमाने लगे : तुम्हारी क्या राय है, अगर हम बैतुल माल में एक दीनार दाखि़ल कर दें तो ज़िम्मादारी से सुबुक दोश हो जाएंगे ? उन्हों ने कहा : क़ीमत तो निस्फ़ दीनार की लगाई गई ! मगर आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه ने हुक्म दिया कि बैतुल माल में दो दीनार जम्अ़ करवा दो। (سیرت ابن جوزی ص ۲۱۲)

हो अख़्लाक़ अच्छा हो किरदार सुथरा
मुझे मुत्तक़ी तू बना या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 86)

(9) ख़ुश्बू सूंघने में एह़तियात

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمةُ اللّٰہِ العَزِیز के सामने मुसलमानों के लिये मुश्क का वज़्न किया जा रहा था, तो उन्हों ने फ़ौरन अपनी नाक बन्द कर ली ताकि उन्हें ख़ुश्बू न पहुंचे जब लोगों ने येह बात मह़सूस की तो आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : ख़ुश्बू सुंघना ही तो इस का नफ़्अ़ है। (चूंकि मेरे सामने इस वक़्त वाफ़िर मिक्दार में मुश्क मौजूद है लिहाज़ा इस की ख़ुश्बू भी ज़ियादा

आ रही है और मैं इतनी ज़ियादा ख़ुश्बू सुंघ कर दीगर मुसलमानों के मुक़ाबले में ज़ाइद नफ़्अ़ ह़ासिल करना नहीं चाहता)

(احیاء العلوم ج ۲ ص ۱۲۱، قوت القلوب ج ۲ ص ۳۳۵)

ख़ुश्बू धो डाली

इस से मिलता जुलता एक वाक़िआ़ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की सीरते मुबा–रका में भी मिलता है कि एक मरतबा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने माले ग़नीमत की मुश्क अपने घर में रखी हुई थी ताकि आप की अहलिय्याए मोह़तरमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا उस ख़ुश्बू को मुसलमानों के पास फ़रोख़्त कर दें। एक रोज़ आप घर तशरीफ़ लाए तो बीवी के दुपट्टे से मुश्क की ख़ुश्बू आई। आप ने उन से पूछा कि "येह ख़ुश्बू कैसी ?" उन्हों ने जवाब दिया कि "मैं ख़ुश्बू तोल रही थी, इस से कुछ ख़ुश्बू मेरे हाथ को लग गई, जिसे मैं ने अपने दुपट्टे पर मल लिया।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन के सर से दुपट्टा उतारा और उस को धोया उस के बा'द सूंघा, फिर मिट्टी मली और दोबारा धोया ह़त्ता कि उस वक़्त तक धोते रहे, जब तक ख़ुश्बू ख़त्म न हो गई फिर वोह दुपट्टा इस्ति'माल के लिये ज़ौजए मोह़तरमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को दिया। (کیمیائے سعادت، ج ۱، ص ۳۴۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर्चे इस क़दर ख़ुश्बू का लग जाना काबिले गिरिफ़्त अ़मल न था लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने चाहा कि दरवाज़ा बिलकुल बन्द हो जाए ताकि कोई बुराई इस में दाख़िल न हो सके।

(10) सेब के लिये अपने आप को बरबाद कर लूं

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِيْر एक बार सरकारी सेब मुसलमानों में तक़्सीम फ़रमा रहे थे, इसी दौरान उन का एक कम सिन म-दनी मुन्ना आया और एक सेब उठा कर खाना चाहा। उन्हों ने फ़ौरन सेब को उस के हाथ से छीन लिया, बच्चा रोता हुवा अपनी अम्मी जान के पास पहुंचा, उन्हों ने बाज़ार से सेब मंगा कर उस को दे दिया। जब आप رَحْمَةُ اللهِ تعالٰی عَلَيْه घर आए तो सेब की ख़ुश्बू सुंघ कर बोले कि कहीं सरकारी सेब तो घर में नहीं आए ! बच्चों की अम्मी ने वाकेआ़ बयान किया तो फ़रमाया : मैं ने सेब अपने बच्चे से नहीं छीना बल्कि अपने दिल से छीना, क्यूंकि मुझे अच्छा नहीं लगता कि मुसलमानों के एक सेब के लिये अपने आप को ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के सामने बरबाद कर दूं। (سیرت ابن جوزی ص ١٩٠)

जो नाराज़ तू हो गया तो कहीं का
रहूंगा न तेरी क़सम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 82)

(11) आग की चिंगारियां

एक बार आप رَحْمَةُ اللهِ تعالٰی عَلَيْه की बेटी ने एक मोती भेजा और कहा कि इस जैसा दूसरा मोती भेज दीजिये ताकि मैं कानों में डालूं, आप رَحْمَةُ اللهِ تعالٰی عَلَيْه ने उस को दो दहकते हुए कोइले भेज दिये और पैग़ाम भेजा : اِنِ اسْتَطَعْتِ اَنْ تَجْعَلِیْ هَاتَيْنِ الْجَمْرَتَيْنِ فِیْ اُذُنَيْكِ بَعَثْتُ اِلَيْكِ بِاُخْتٍ لَّهَا *या'नी अगर तुम इन सुर्ख़ कोइलों को कान में डालने की ताक़त रखती हो तो मैं बैतुल माल से इस मोती का जोड़ा भेज देता हूं !* (سیرت ابن عبدالحکم ص ١٣٤)

(12) चेहरा देखना भी पसन्द नहीं करूंगा

एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ने बातों बातों में लुबनान के शहद का शौक़ ज़ाहिर किया। ज़ौजए मुह़तरमा ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा बिन्ते अ़ब्दुल मलिक رحمۃاللہ تعالی علیھا ने लुबनान के गवर्नर इब्ने मा'दी कर्ब को कहला भेजा चुनान्चे उन्हों ने वहां से बहुत सा शहद भेज दिया। जब शहद सामने आया तो ज़ौजा की त़रफ़ रुख़ कर के कहा : ग़ालिबन तुम ने गवर्नर के ज़रीए़ से मंगवाया है। फिर उस को फ़रोख़्त करवा कर बैतुल माल में क़ीमत दाख़िल करवा दी और गवर्नरे लुबनान को लिखा कि अगर तुने ने दोबारा ऐसा काम किया तो मैं तुम्हारा चेहरा देखना भी पसन्द न करूंगा। (المعرفۃ والتاریخ، ج۱،ص ۳۲۲)

(13) खजूरों की क़ीमत जम्अ़ करवाई

एक बार किसी शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز की ख़िदमत में खजूरें रवाना की, ख़ादिम खजूरें सामने लाया तो पूछा : उन को किस चीज़ पर लाए हो ? उस ने कहा : डाक के घोड़े पर। चूंकि डाक का ता'ल्लुक़ सरकारी चीज़ों से था इस लिये हुक्म दिया कि खजूरों को बाज़ार में ले जा कर फ़रोख़्त कर आओ और उन की क़ीमत बैतुल माल में जम्अ़ करवा दो। वोह बाज़ार में आया तो एक मरवानी ने उन को ख़रीद लिया और दो बारा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز की ख़िदमत में बत़ौरे तोह़फ़ा भेज दीं। जब खजूरें सामने आईं तो ह़ैरत से फ़रमाया : येह तो वोही खजूरें हैं। येह कह कर कुछ सामने खाने के लिये रख दीं, कुछ घर में भेज दीं और उन की क़ीमत बैतुल माल में जम्अ़ करवाई।

(سیرت ابن جوزی ص ۱۸۷)

(14) दूध के चन्द घूंट

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ العَزِيز ने मुसाफ़िरों, मिस्कीनों और फु–क़रा के लिये एक मेहमान खाना बना रखा था, मगर अपने घरवालों को तम्बीह की हुई थी कि इस मेहमान ख़ाने से तुम कोई चीज़ न खाना, उस का खाना सिर्फ़ मुसाफ़िरों और गु–रबा व फु़क़रा के लिये है। एक मरतबा आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه घर आए तो कनीज़ के हाथ में एक प्याला देखा जिस में चन्द घूंट दूध था। पूछा : "येह क्या है ?" कनीज़ ने अ़र्ज़ की : "या **अमीरल मुअमिनीन** ! आप की ज़ौजए मोह़तरमा ह़ामिला हैं, उन्हें चन्द घूंट दूध पीने की ख़्वाहिश हो रही थी और जब ह़ामिला औ़रत को वोह चीज़ न दी जाए जिस की उसे ख़्वाहिश हो तो उस का ह़म्ल ज़ाएअ़ होने का डर होता है, लिहाज़ा इसी ख़ौफ़ से मैं येह थोड़ा सा दूध मेहमान ख़ाने से ले आई हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ العَزِيز ने बा आवाज़े बुलन्द फ़रमाया : "अगर इस का ह़म्ल फ़क़ीरों, मोह़ताजों और मुसाफ़िरों का ह़क़ खाए बिग़ैर नहीं ठहर सकता तो **अल्लाह** तबा–र–क व तआ़ला उसे न रोके।" फिर कनीज़ को साथ लिया और अपनी ज़ौजए मोह़तरमा के पास पहुंचे। वोह आप का येह अन्दाज़ देख कर ह़ैरान व परेशान हो गईं और अ़र्ज़ की : "मेरे सरताज ! क्या बात है ?" आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "इस कनीज़ का येह ख़याल है कि जो तेरे पेट में ह़म्ल है वोह मिस्कीनों, मोह़ताजों और मुसाफ़िरों का ह़क़ खाए बिग़ैर नहीं रुक सकता, अगर येही बात है तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तेरे ह़म्ल को न रोके।" सआ़दत मन्द

ज़ौजा ने जब येह सुना तो कनीज़ से कहा : "जाओ ! येह दूध वापस ले जाओ, खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं इसे हरगिज़ न चखूंगी।" चुनान्चे कनीज़ दूध का प्याला वापस ले गई। (طبقات ابن سعد، ج۵،ص۲۹۵)

سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! जिन की हुकूमत के डन्के अ़रब व अ़जम में बज रहे थे, उन के घर वालों की माली कैफ़िय्यत क्या थी ? इस्लाम के वोह पासबान कैसे दियानत दार थे कि भूका प्यासा रहना मन्ज़ूर था लेकिन किसी के ह़क़ में से एक घूंट लेने को भी तय्यार न थे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऐसे खु-लफ़ा के सदके़ हमें भी दियानत, इख़्लास और अपना खौ़फ़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واله وسلَّم

(15) शहद बेच डाला

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللهِ العَزِيز को शहद बहुत पसन्द था। एक बार उन की ज़ौजए मोह़तरमा ने एक आदमी को शहद लेने भेजा, वोह डाक की सुवारी पर गया और दो दीनार का शहद ख़रीद लाया। जब शहद हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللهِ العَزِيز के सामने आया और सारा वाक़िआ़ मा'लूम हुवा तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इस को फ़रोख़्त कर डाला और दो दीनार वापस ले कर बक़िय्या क़ीमत बैतुल माल में दाख़िल कर दी और फ़रमाया : तुम ने मुसलमानों के जानवर को "**उ़मर**" के लिये तकलीफ़ दी ! दूसरी रिवायत में है कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "अगर मुसलमानों को मेरी क़ै से फ़ाएदा पहुंच सकता तो मैं कर देता।"

(سیرت ابن جوزی ص۱۸۸)

(18) येह गोश्त तुम ही खा लो

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने अपने गुलाम को गोश्त का एक टुकड़ा भूनने के लिये रवाना किया। वोह जल्द ही वापस आ गया, आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه ने उस से फ़रमाया तुम ने इतनी जल्दी कैसे की ? उस ने कहा मैं ने येह गोश्त मत़बख़ (बावर्ची ख़ाना) में भूना है (इस जगह मुसलमानों का एक मत़बख़ था जिस में सुब्ह़ शाम उन का खाना पकता था)। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه ने गुलाम से फ़रमाया : अब येह सारा खाना तुम ही खा लो। (حلیۃ الاولیاء ج۵ ص ۳۲۴)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

ख़िलाफ़त से पहले की आसाइशें और बा'द की आज़माइशें

चूंकि हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز के वालिद के पास दौलत व षरवत की फ़रावानी थी लिहाज़ा आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه की परवरिश नाज़ो ने'म और ऐ़शो आराम के माह़ोल में हुई, जिस का अषर ख़लीफ़ा बनने तक क़ाइम रहा। आराइश व ज़ैबाइश में कोई आप का हमसर नहीं था, यूं लगता था कि दुन्या की सारी ने'मतें और आसाइशें आप पर निछावर कर दी गई हैं, खुश लिबासी, खुश गुफ़्तारी और रहन सहन में आप का ज़ौक़ बड़ा बुलन्द था, अ़-हदे

शबाब में अच्छे से अच्छा लिबास पहनते, दिन में कई बार पोशाक तब्दील करते, खुश्बू को बेहद पसन्द करते, उन के लिये खुसूसी तौर पर खुश्बू तय्यार की जाती जिस में कषरत से लौंग डाली जाती थी, जिस राह से गुज़रते फ़ज़ा महक जाती, दाढ़ी पर नमक की तरह अम्बर छिड़कते थे। जिस महफ़िल में बैठ जाते ऐसा लगता गोया मुश्क व अम्बर में गुस्ल कर के आए हैं। (سیرت ابن جوزی ص ١٧٩ ملخصا)

अख़्लाक़ी बुराइयों से कौसों दूर थे

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز के नाज़ो अन्दाज़ और उन ज़ाहिरी अ़लामात को देख कर कोई नहीं कह सकता था कि ख़लीफ़ा बनने के बा'द उन की ज़िन्दगी में बहुत बड़ा इन्क़िलाब आने वाला है। येही वजह है कि इस क़दर नाज़ो ने'म में पलने के बा वुजूद हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز अख़्लाक़ी बुराइयों से कौसों दूर थे हत्ता कि आप के हासिदीन भी आप पर दो ही इल्ज़ाम लगा सके: एक मे'मतों को फ़रावानी से इस्ति'माल करने का और दूसरा मग़रूरों की सी चाल चलने का। (تاریخ دمشق، ج ٤٥ ص ١٣٨)

उ़-मरी चाल

पहले पहल हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز नाज़ो ख़िराम की एक मख़्सूस चाल चला करते थे, जो उन्ही की निस्बत से **"उ़-मरी चाल"** मश्हूर हो गई हत्ता कि नौ उ़म्र दोशीज़ाएं इस चाल को सीखने की कोशिश किया करती थी, चलने के दौरान आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ की चादर ज़मीन की जा रूब कशी किया

करती थी, अगर कभी जूते में फंस जाती तो उसे ज़ोर से खींच कर फाड देते मगर जूता उतारने की ज़ह़मत गवारा नहीं करते थे, अगर सुवारी की ह़ालत में कभी जूता पाऊं से निकल कर गिर जाता तो उस की परवाह नहीं करते थे, अगर कोई ख़ादिम ला कर दोबारा पेश भी कर देता तो उसे डांट देते थे, लेकिन जब आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने मस्नदे ख़िलाफ़त को रोनक़ बख़्शी तो चलने के इस अन्दाज़ से पीछा छुड़ाने की बहुत कोशिश की मगर मुकम्मल तौ़र पर काम्याब न हो सके, बसा अवक़ात अपने ग़ुलाम मुज़ाह़िम को ताकीद करते कि जब कभी मुझे "उ़-मरी चाल" चलते हुए देखो तो याद दिला देना, फिर जब वोह अ़र्ज़ करते तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ फ़ौरन संभल जाते मगर बा'द में वोही चाल चलने लगते। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۲۲)

लोहे की ज़न्जीरें

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزیز मस्जिद की त़रफ़ जा रहे थे, रास्ते में आप पुरानी आ़दत के मुत़ाबिक़ हाथ हिला हिला कर चल रहे थे, अचानक आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने अपने हाथों को रोका और रोना शुरूअ़ कर दिया, किसी ने रोने की वजह दरयाफ़्त की तो फ़रमाया : मैं घबरा गया था कि कहीं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे इस त़रह़ चलने की वजह से बरोज़े क़ियामत इन हाथों में लोहे की ज़न्जीरें न डाल दे। (طبقات ابن سعد، ج۵،ص۲۹۰)

***अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।* اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

अमीरुल मुअमिनीन का लिबास

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ العَزِيز जब तक ख़लीफ़ा नहीं बने थे आप की नफ़ासत पसन्दी का येह ह़ाल था कि निहायत बेश क़ीमत लिबास ज़ैबे तन करते थे और थोड़ी देर बा'द उसे उतार कर दूसरा क़ीमती लिबास पहन लेते थे, लिबास के मु-तअ़ल्लिक़ ख़ुद इन का बयान है कि जब मेरे कपड़ों को लोग एक मरतबा देख लेते थे तो मैं समझता था कि पुराना हो गया। (سیرت ابن جوزی ص ۱۸۲) बसा अवक़ात आप के लिये एक हज़ार दीनार में आ़लीशान जुब्बा ख़रीदा जाता था मगर फ़रमाते : अगर येह खुरदरा न होता तो कितना अच्छा था ! लेकिन जब तख़्ते ख़िलाफ़त पर रौनक अफ़रोज़ हुए तो मिज़ाज में ऐसी इन्क़िलाबी तब्दीली आई कि आप के लिये पांच दिरहम का मा'मूली सा कपड़ा ख़रीदा जाता मगर आप फ़रमाते : अगर येह नर्म न होता तो कितना अच्छा था ! आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से पूछा गया : या **अमीरल मुअमिनीन** ! आप का वोह आ़लीशान लिबास, आ'ला सुवारी और महंगा इत्र कहां गया ? आप ने फ़रमाया : मेरा नफ़्स ज़ीनत का शौक़ रखने वाला है वोह जब किसी दुन्यवी मर्तबे का मज़ा चखता तो इस से ऊपर वाले मर्तबे का शौक़ रखता, यहां तक कि जब ख़िलाफ़त का मज़ा चखा जो सब से बुलन्द तबक़ा है तो अब उस चीज़ का शौक़ हुवा जो **अल्लाह** तआ़ला के पास है। (احیاء العلوم، ج ۳، ص ۸۹۷)

एक ही कुर्ता

अकषर अवक़ात ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ العَزِيز के जिस्म पर सिर्फ़ एक ही लिबास रहता था जिसे धो धो कर पहन लेते थे, एक मरतबा जुमुआ़ के लिये ताख़ीर से पहुंचे,

लोगों ने ताख़ीर के बारे में दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया : "ख़ादिम मेरे कपड़े धोने के लिये ले गया था इस लिये मैं बाहर नहीं निकल सकता था।" येह सुन कर लोगों को पता चला कि आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه के पास एक ही लिबास है।" (سیرت ابن جوزی ص ۱۸۲)

आठ सो की चादर और आठ दिरहम का कम्बल

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने एक शख़्स से फ़रमाया : आठ दिरहम का कम्बल ख़रीद कर लाओ। वोह साहिब ख़रीद कर लाए। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه ने उसे बहुत पसन्द किया और हाथ में ले कर फ़रमाया : "बड़ा नर्म है।" येह सुन कर वोह बे साख़्ता हंसने लगे। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "अ़जीब अह़मक़ आदमी हो, बिला वजह हंसते हो !" वोह साहिब कहने लगे। "हुज़ूर ! मैं अह़मक़ नहीं हूं, दर अस्ल मुझे याद आया कि जब आप गवर्नर थे तो मुझे फ़रमाया था कि मैं आप के लिये एक उ़म्दा क़िस्म की गर्म चादर ख़रीद कर लाऊं।" मैं ने आठ सो दिरहम की चादर ख़रीद कर पेश की थी तो आप ने इस पर हाथ रखते ही फ़रमाया था : "**बड़ी खुरदरी उठा लाए।**" और आज आठ दिरहम के मोटे से कम्बल को फ़रमाया जा रहा है कि "**बड़ा मुलाइम है,** इस पर मुझे ता'ज्जुब हुवा और बे साख़्ता हंसी आ गई।" हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने फ़रमाया : "जो शख़्स आठ आठ सो का कम्बल ख़रीदता है मैं नहीं समझता कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से भी डरता है।" (سیرت ابن عبدالحکم ص ۴۳)

12 दिरहम का लिबास

हज़रते सय्यिदुना रजा बिन हैवत رَحْمَةُاللهِ تعالیٰ علیه जिन्हों ने हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيهِ رحمةُ اللهِ العَزِيز की क़दीम हालत को देखा था, फ़रमाते हैं : "ख़लीफ़ा होने के बा'द उन के लिबास या'नी इमामा, क़मीस, क़ुब्बा (अचकन), कुर्ता, मोज़ा और चादर वग़ैरा की क़ीमत लगाई गई तो सिर्फ़ 12 दिरहम ठहरी।" (سیرت ابن جوزی ص ۱۷۴)

लिबास की सादगी

हक़ीक़त येह है कि हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيهِ رحمةُ اللهِ العَزِيز जिस वक़्त बादशाह न थे उस वक़्त बादशाहों की सी ज़िन्दगी गुज़ारते थे और जिस वक़्त इमामए ख़िलाफ़त सर पर बांधा तो बिलकुल सादा मिज़ाज हो गए, एक बार क़मीस के गिरिबान में आगे और पीछे दोनों तरफ़ पैवन्द लगे हुए थे, नमाज़े जुमुआ पढ़ा कर बैठे तो एक शख़्स ने कहा : या **अमीरल मुअमिनीन** ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप को सब कुछ दिया है, काश ! आप उम्दा कपड़े पहनते ! येह सुन कर थोड़ी देर के लिये सर झुका लिया फिर सर उठा कर फ़रमाया :

اِنَّ اَفضَلَ القَصدِ عِندَ الجِدَّةِ وَاَفضَلَ العَفوِ عِندَ المَقدَرَةِ

या'नी तमव्वुल (या'नी अमीरी) की हालत में मियाना रवी और कुव्वत व कुदरत रखते हुए अफ़्व व दर गुज़र बेहतर है। (سیرت ابن جوزی ص ۱۷۳)

सादा लिबास की फ़ज़ीलत

नित नए डीज़ाइन और तरह तरह की तराश ख़राश वाले महंगे लिबास पहनने वालों के लिये इन हिकायात में दर्से अज़ीम पोशीदा है, वाक़ेइ अगर हम सादगी अपना लें तो दोनों जहां में बेड़ा पार हो जाए, चुनान्चे सादा लिबास पहनने की फ़ज़ीलत पढ़िये और

झूमिये । ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

مَنْ تَرَكَ لُبْسَ ثَوْبِ جَمَالٍ وَهُوَ يَقْدِرُ عَلَيْهِ تَوَاضُعًا كَسَاهُ اللّٰهُ حُلَّةَ الْكَرَامَةِ

या'नी जो बा वुजूदे कुदरत अच्छे कपड़े पहनना, तवाज़ोअ़ (आ़जिज़ी) के तौर पर छोड़ देगा ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *उस को करामत का हुल्ला (या'नी जन्नती लिबास) पहनाएगा ।* (ابوداؤد ج ۴ ص ۳۲۶، حدیث ۴۷۷۸)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नमाज़े पंजगाना का एहतिमाम

नमाज़े पंजगाना निहायत पाबन्दी के साथ बा जमाअ़त अदा फ़रमाते थे । अज़ान की आवाज़ साफ़ तौर पर सुनने के लिये घर में मग़रिब की त़रफ़ एक छोटी सी खिड़की बना रखी थी, अगर मोअज़्ज़िन अज़ान देने में देर करता था तो आदमी भेज कर कहलवा देते कि वक़्त हो गया है । (سیرت ابن جوزی ص ۲۱۱) जब मोअज़्ज़िन अज़ान देता तो कोशिश करते कि अज़ान की आवाज़ के साथ ही मस्जिद में दाख़िल हो जाएं । (طبقات ابن سعد، ج ۵، ص ۲۷۸)

नमाज़ की हिफ़ाज़त की ताकीद

जा'फ़र बिन बुरक़ान का बयान है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने हमें मकतूब में लिखा : दीन की सर बुलन्दी और इस्लाम की पाएदारी इन बातों में है :

اَلْاِيْمَانُ بِاللّٰهِ ، وَاِقَامُ الصَّلَاةِ ، وَاِيْتَاءُ الزَّكَاةِ ، فَصَلِّ الصَّلَاةَ لِوَقْتِهَا وَحَافِظْ عَلَيْهَا

या'नी (1) ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *पर ईमान रखना (2) नमाज़ क़ाइम करना (3) ज़कात देना, लिहाज़ा तुम नमाज़ को उस के वक़्त में अदा करो और उस में हमेशगी इख़्तियार करो ।* (درمنثور ج ۱ ص ۷۱۸)

शब बेदारी

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز की ज़िन्दगी का सब से पुर अषर मन्ज़र रातों को दिखाई देता है जो उन की इ़बादत गुज़ारी का अस्ल वक़्त था। इस मक़्सद के लिये घर के अन्दर एक कमरा मख़्सूस कर लिया था जिस में कम्बल के सिले हुए कपड़े रखे रहते थे, जब रात का पिछला पहर होता, तो दिन के कपड़े उतार डालते और उन कपड़ों को पहन कर सुब्ह़ होने तक मुनाजात और गिर्या व ज़ारी में मसरूफ़ रहते इसी ह़ालत में आंख लग जाती जब बेदार होते तो फिर से आहो बुका शुरूअ़ कर देते, सुब्ह़ होती तो इन कपड़ों को तह कर के सन्दूक में रख देते। मरने से पहले इस सन्दूक़ को एक ग़ुलाम के पास अमानतन रख दिया था और एक रिवायत में है कि उस को दरिया में बहा देने की वसिय्यत की थी, जब ख़ानदाने बनू उमय्या को इस सन्दूक़ का ह़ाल मा'लूम हुवा तो ग़ुलाम से त़लब किया, उस ने कहा भी कि इस में मालो दौलत नहीं है लेकिन उन की ह़िर्स व तम्अ़ ने इस का ए'तिबार नहीं किया और सन्दूक़ को उठा कर नए ख़लीफ़ा यज़ीद बिन अ़ब्दुल मलिक की ख़िदमत में ले गए। उन्हों ने तमाम ख़ानदान के सामने खोला तो अन्दर से कम्बल का वोही लिबास निकला जिसे ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِير रात को पहना करते थे। (سیرتِ ابن جوزی ص ۲۱۰،۲۱۱ ملخصًا)

इ़बादत गुज़ारों की रात

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने एक शख़्स को लिखा : अगर तुम से हो सके तो ईदे क़ुरबान की रात

इबादत में बसर करो क्यूंकि येह लै-लतुल आ़बिदीन (या'नी इबादत गुज़ारों की रात) है। (سیرت ابن جوزی ص ۲۴۵)

रह़मत की चार रातें

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ الۡعَزِیز ने बसरा के गवर्नर अदी बिन अरत़ाह को लिखा : साल भर में चार रातों को ख़ूब याद रखो क्यूंकि उन रातों में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रह़मत की छमाछम बरसात फ़रमाता है :

(1) रजब की पहली रात (2) शा'बान की पन्दरहवीं रात (3) इदुल फ़ित्र की रात और (4) इदे कुरबान की रात। (سیرت ابن جوزی ص ۲۴۷)

ज़कात की अदाएगी और नफ़्ली रोज़ों का एहतिमाम

अपने माल की ज़कात पाबन्दी से अदा फ़रमाते थे, ह़ज़रते मुजाहिद رَحۡمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہ का बयान है कि एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ الۡعَزِیز ने मुझे 30 दिरहम दिये और कहा कि येह मेरे माल की ज़कात है। (سیرت ابن جوزی ص ۲۷۸)

आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہ नफ़्ली रोज़ों का भी एहतिमाम किया करते चुनान्चे पीर और जुमा'रात को रोज़ा रखने का मा'मूल था, इलावा अज़ीं यौमे आ़शूरा और अ़-रफ़ा (या'नी 9, ज़ुल हिज्जतुल ह़राम) का रोज़ा भी रखा करते थे। (سیرت ابن جوزی ص ۲۱۱)

शकर की बोरियां स-दक़ा किया करते

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ الۡعَزِیز

शकर (या'नी चीनी) की बोरियां ख़रीद कर स-दक़ा करते थे उन से कहा गया इस की क़ीमत ही क्यूं नहीं स-दक़ा कर देते फ़रमाया शकर मुझे मह़बूब व मरग़ूब है मैं येह चाहता हूं कि राहे ख़ुदा में प्यारी चीज़ ख़र्च करूं। (قرطبی،ج۲،ص۱۰۱)

शौक़े तिलावत

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ الۡعَزِیۡز रोज़ाना सुब्ह़ सवेरे क़ुरआन मजीद की थोड़ी देर तिलावत करते और रात के वक़्त जब सोते तो निहायत पुर सोज़ लहजे में सूरए आ'राफ़ की येह आयतें पढ़ते :

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِیۡ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ فِیۡ سِتَّةِ اَیَّامٍ (پ۸،اعراف:۵۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हारा रब ***अल्लाह*** *है जिस ने आसमान और ज़मीन छ दिन में बनाए*

और :

اَفَاَمِنَ اَهۡلُ الۡقُرٰۤى اَنۡ يَّاۡتِيَهُمۡ بَاۡسُنَا بَيَاتًا وَّهُمۡ نَآئِمُوۡنَ ؕ﴿۹۷﴾ (پ۹،الاعراف:۹۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : क्या बस्तियों वाले नहीं डरते कि उन पर हमारा अ़ज़ाब रात को आए जब वोह सोते हों।

बा'ज़ अवक़ात एक ही सूरए मुबा-रका को बार बार रात भर पढ़ा करते थे, चुनान्चे एक रात सूरए अनफ़ाल शुरूअ़ की तो सुब्ह़ तक पढ़ते रहे। (حلیۃ الاولیاء،ج۵،ص۳۸۵ملخصاً،وسیرت ابن جوزی ص۲۱۱)

एक त़रफ़ को झुक गए

एक बार हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने बर सरे मिम्बर येह आयत पढ़ी :

وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ (پ۱۷،الانبیاء:۴۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और हम अ़द्ल की तराज़ूएं रखेंगे क़ियामत के दिन।

तो ख़ौफ़ से एक त़रफ़ को झूक गए गोया ज़मीन पर गिर रहे हैं। (سیرت ابن جوزی ص ۲۳۶)

आयत मुकम्मल न पढ़ सके

एक रात हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز सूरए वल्लैल पढ़ रहे थे, जब इस आयत पर पहुंचे :

فَاَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظّٰى ﴿۱۴﴾ (پ۳۰،اللیل:۱۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो मैं तुम्हें डराता हूं उस आग से जो भड़क रही है।

तो रोते रोते हिचकी बन्ध गई, आगे नहीं पढ़ सके, नए सिरे से तिलावत शुरूअ़ की, जब इस आयत पर पहुंचे तो फिर वोही कैफ़िय्यत त़ारी हुई और आगे नहीं पढ़ सके बिल आख़िर येह सूरत छोड़ कर दूसरी सूरत पढ़ी। (سیرت ابن عبد الحکم ص ۴۲)

रोने वाले को जन्नत मिलेगी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तिलावत में रोना इस क़दर पसन्दीदा अ़मल है कि सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना

صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इस की रग़बत दिलाते थे । चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्यों के सरवर, मदीने के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अकबर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हम से फ़रमाया : "मैं तुम्हारे सामने **सू-रतुत्तकाषुर** पढ़ता हूं तुम में से जो रोएगा वोह जन्नत में दाख़िल होगा ।" चुनान्चे सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसे पढ़ा । हम में से कुछ तो **रोए** और कुछ न रोए, जो नहीं रो सके थे उन्हों ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम ने **रोने** की कोशिश की मगर न रो सके । आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

اِنِّى قَارِئُهَا عَلَيْكُمُ الثَّانِيَةَ فَمَنْ بَكٰى فَلَهُ الْجَنَّةُ ، وَمَن لَّمْ يَقْدِرْ اَنْ يَّبْكِىَ فَلْيَتَبَاكَ

या'नी मैं तुम्हारे सामने इसे दोबारा पढ़ता हूं जो रोएगा उस के लिये जन्नत होगी और जो न रो सके वोह रोने की सी शक्ल ही बना ले । (درمنثور ج٨،ص٦١٠)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सू-रतुत्तकाषुर में ग़फ़लत के साथ जमए माल की ह़ौसला शिकनी और क़ब्र व जहन्नम का होलनाक तज़किरा है । काश ! इस को पढ़ सुन कर हम गुनहगार भी रो दिया करें ।

रोने का त़रीक़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "जब आयते सजदा पढ़ो सजदा करने से पहले रोओ, अगर तुम में से किसी की आंख न रोए तो दिल को रोना चाहिये ।" (تفسیر کبیر 7/551)

ब तकल्लुफ़ रोने का त़रीक़ा येह है कि आ़लमे अरवाह़ में किये हुए अपने अ़हद (कि मैं ना फ़रमानी नहीं करूंगा) को याद करे और बद अ़हदी की सूरत में कुरआने पाक में वारिद होने वाली अ़ज़ाब की वईदों को तसव्वुर में लाएं। उस के अह़कामात और अपनी ना फ़रमानियों पर ग़ौर करें इस से उम्मीद है दिल में ग़म की कैफ़िय्यत पैदा होगी। अगर दिल बहुत ज़ियादा सख़्त है कि इस त़रह़ भी रोना न आए तो फिर अपने दिल की सख़्ती पर रोए।

नदामत से गुनाहों का इज़ाला कुछ तो हो जाता

मुझे रोना भी तो आता नहीं हाए नदामत से

दौराने तिलावत अगर कोई ख़ौफ़ की आयत आती तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ الۡعَزِیۡز गिर्या व ज़ारी करते, अगर रह़मत की आयत आती तो दुआ़ करते। जब उन आयतों को पढ़ते थे जिन में अह़वाले क़ियामत का ज़िक्र होता तो बे साख़्ता रो पड़ते, बा'ज़ अवक़ात तो बे होश हो जाया करते थे। ऐसी ही मज़ीद 5 ह़िकायात मुला–ह़ज़ा हों, चुनान्चे

(1) आंसूओं की झड़ी

ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا के गुलाम अबू उ़मर का बयान है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ الۡعَزِیۡز गवर्नर थे मैं जिद्दा से उन के लिये तह़ाइफ़ ले कर मदीनए मुनव्वरा زادھَااللّٰہُ شَرَفاً وَّ تَعظِیماً وَّ تَکرِیماً पहुंचा तो वोह फ़ज्र की नमाज़ अदा करने के बा'द मस्जिद ही में मौजूद थे और गोद में

कुरआने पाक लिये तिलावत कर रहे थे और उन की आंखों से आंसूओं की झड़ी लगी हुई थी। (سیرت ابن جوزی ۲۴۲)

फ़िल्मों से डिरामों से अ़ता कर दे तू नफ़रत
बस शौक़ मुझे ना'त व तिलावत का ख़ुदा दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 105)

(2) दहाड़ें मार मार कर रोने लगे

एक शख़्स ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز के पास पारह 18 सूरए फ़ुरक़ान की आयत 13 पढ़ी :

وَ اِذَاۤ اُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَیِّقًا مُّقَرَّنِیْنَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوْرًا ﴿۱۳﴾

(پ۱۸، الفرقان: ۱۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जब उस की किसी तंग जगह में डाले जाएंगे ज़ंजीरों में जकड़े हुए तो वहां मौत मांगेंगे।

तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ दहाड़ें मार मार कर रोने लगे, आख़िरे कार वहां से उठे और घर में दाख़िल हो गए। (سیرت ابن جوزی ص ۲۱۷)

काश लब पर मेरे रहे जारी ज़िक्र आठों पहर तेरा या रब
चश्मे तर और क़ल्बे मुज़्तर दे अपनी उल्फ़त की मै पिला या रब

(3) बेटे से तिलावत सुनी

एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने अपने बेटे से फ़रमाया : बेटा कुरआने पाक सुनाओ। अ़र्ज़ की : क्या पढ़ूं ? फ़रमाया : "सूरए ق" बेटे ने पढ़नी शुरूअ़ की जब वोह इस की आयत 19 पर पहुंचे :

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ط ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ﴿١٩﴾ (پ٢٦، ق:١٩)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और कोई मौत की सख़्ती ह़क़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था।

तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की आंखों से आंसू बहने लगे। फ़रमाया : फिर पढ़ो, मेरे बेटे फिर पढ़ो। अ़र्ज़ की : क्या पढ़ूं, फ़रमाया : सूरए ق पढ़ो। बेटे ने फिर पढ़ना शुरूअ़ की यहां तक कि दोबारा इसी आयत पर पहुंचे तो हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ज़ोर ज़ोर से रोने लगे। (سیرت ابن جوزی ص٢١٧)

ता़लिबे मग़्फ़िरत हूं या ***अल्लाह*** *बख़्श दे बहरे मुर्तज़ा या रब*
कर दे जन्नत में तू जवार उन का अपने अ़त्तार को अ़ता या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 88)

(4) ग़-लती निकालने का होश था !

कुरआने मजीद को सुन कर हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز पर मह़विय्यत का आ़लम ता़री हो जाता था। एक बार किसी शख़्स ने उन के सामने कुरआने मजीद की एक सूरत पढ़ी तो हाज़िरीन में से एक साहिब बोल उठे कि इस ने पढ़ने में ग़-लती की है, हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने फ़रमाया कि कुरआने मजीद सुनते वक़्त इन को इस का होश था !

(سیرت ابن جوزی ص٢٢٧ ملخصاً)

(5) तिलावत हो तो ऐसी हो !

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ الۡعَزِيۡز के इन्तिक़ाल के बा'द उन की ज़ौजए मोह़तरमा ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा बिन्ते अ़ब्दुल मलिक رحمةالله تعالی علیها बहुत ज़ियादा रोया करतीं यहां तक कि उन की बीनाई जाती रही। एक मरतबा उन के भाई मस्लमा और हिशाम आए और कहा : "प्यारी बहन ! आख़िर आप इतना क्यूं रोती हैं ? अगर आप अपने शोहर की जुदाई पर रोती हैं तो वोह वाक़ेई ऐसे मर्दे मुजाहिद थे कि उन के लिये रोया जाए, अगर दुन्यवी माल व दौलत की कमी रुला रही है तो हम और हमारे अमवाल सब आप के लिये ह़ाज़िर हैं।" ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा बिन्ते अ़ब्दुल मलिक رحمةالله تعالی علیها ने फ़रमाया : "मैं इन दोनों बातों में से किसी पर भी नहीं रो रही। खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझे तो वोह अ़जीबो ग़रीब और दर्द भरा मन्ज़र रुला रहा है जो मैंने एक रात देखा। उस रात मैं येह समझी कि कोई इन्तिहाई होलनाक मन्ज़र देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ الۡعَزِيۡز की येह ह़ालत हो गई है और आज रात आप का इन्तिक़ाल हो जाएगा।" भाइयों ने तफ़्सील पूछी तो फ़रमाया : मैं ने देखा कि वोह नमाज़ पढ़ रहे थे, जब क़िराअत करते हुए इस आयत पर पहुंचे :

يَوۡمَ يَكُوۡنُ النَّاسُ كَالۡفَرَاشِ الۡمَبۡثُوۡثِ ۙ﴿۴﴾ وَتَكُوۡنُ الۡجِبَالُ كَالۡعِهۡنِ الۡمَنۡفُوۡشِ ؕ﴿۵﴾
(پ۳۰،القارعة:۴-۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन आदमी होंगे जैसे फैले पतंगे और पहाड़ होंगे जैसे धूनी ऊन।

तो येह आयत पढ़ते ही एक ज़ोर दार चीख मार कर फ़रमाया : "हाए ! उस दिन मेरा क्या हाल होगा। हाए ! वोह दिन कितना कठिन व दुश्वार होगा।" फिर मुंह के बल गिर पड़े और मुंह से अजीबो ग़रीब आवाज़े आने लगीं फिर एक दम ऐसे ख़ामोश हो गए कि मुझे खदशा हुवा कि कहीं दम न निकल गया हो ! कुछ देर बा'द उन्हें होश आया तो फ़रमाने लगे : "हाए ! उस दिन कैसा सख़्त मुआ-मला होगा।" और आहो ज़ारी करते हुए बे क़रारी से सेहन में चक्कर लगाने लगे और फ़रमाया : "हाए ! उस दिन मेरी हलाकत होगी जिस दिन आदमी फैले हुए पतंगों की तरह और पहाड़ धोंकी हुई ऊन की तरह हो जाएंगे।" सारी रात उन की येही कैफ़िय्यत रही। जब सुब्ह फ़ज्र की अज़ानें शुरूअ़ हुईं तो दोबारा गिर पड़े, अब की बार तो मैं समझी कि रूह परवाज़ कर गई है मगर कुछ देर बा'द उन को होश आ ही गया। इतना कहने के बा'द हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा बिन्ते अब्दुल मलिक رحمة الله تعالى عليها ने फ़रमाया : खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब भी मुझे वोह रात याद आती है तो मेरी आंखों से बे इख़्तियार आंसू बहने लगते हैं बा वुजूद कोशिश मैं अपने आंसू नहीं रोक पाती। (سیرت ابن جوزی ص ۲۲۳)

*खौफ़ आता है नारे दोज़ख़ से — हो करम बहरे **मुस्तफ़ा** या रब*
मेरा नाज़ुक बदन जहन्नम से — बहरे गौसो रज़ा बचा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 88)

अल्लाह *عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो।* اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِين ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से किस त़रह़ लर्ज़ां व तरसा रहा करते थे, बहुत ज़ियादा इ़बादत व रियाज़त और गुनाहों से ह़द द-रजा दूरी के बा वुजूद वोह पाकीज़ा ख़स्लत लोग ह़श्र नश्र के बारे में किस क़दर फ़िक्र मन्द रहते थे और एक हम हैं कि अपनी आख़िरत और ह़िसाब व किताब को भूले बैठे हैं, नफ़्स व शैत़ान के बहेकावे में आ कर हम ने गुनाहों को अपना ओढ़ना बिछोना बना लिया है, गुनाहों के इरतिकाब पर नदामत न नेकियों से मह़रूमी पर शरमिन्दगी, ऐ काश ! उन पाकीज़ा हस्तियों के सदक़े हमें भी अश्के नदामत नसीब हो जाएं,

नदामत से गुनाहों का इज़ाला कुछ तो हो जाता
हमें रोना भी तो आता नहीं हाए नदामत से

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अमीरुल मुअमिनीन का ख़ौफ़े ख़ुदा

दुन्या में और भी बहुत से अ़ज़ीमुल मर्तबत बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِين गुज़रे हैं जिन का दिल ख़शिय्यते इलाही से लरज़ता रहता था लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز की इन्फ़िरादिय्यत येह है कि जो मन्सब व वजाहत इन्सान के दिल को सख़्त कर देता है उसी ने उन के दिल को नर्म कर दिया था। इ़ज़्ज़त व ह़शमत इन्सान को ग़ाफ़िल कर देते हैं लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز के दिल को इन्ही चीज़ों ने ख़ौफ़े ख़ुदा का आशियाना बना दिया था, चुनान्चे

ख़ौफ़े ख़ुदा की ज़रूरत

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِیز ने एक बयान में फ़रमाया : लोगो ! ख़ौफ़े ख़ुदा को लाज़िम पकड़ लो क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ हर चीज़ का बदल है मगर इस का कोई बदल नहीं, ऐ लोगो ! मैं तुम से माल व दौलत बचा बचा कर नहीं रखूंगा मगर जहां ज़रूरत होगी वहीं सर्फ़ करूंगा, याद रखो ! ख़ालिक़ की ना फ़रमानी कर के मख़्लूक़ की फ़रमां बरदारी जाइज़ नहीं है । (سیرتِ ابن عبدالحکم ۳۶) एक मरतबा इरशाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! मोहलत ज़ियादा त़वील और क़ियामत का दिन कुछ ज़ियादा दूर नहीं, जिस की मौत आन पहुंची उस के लिये क़ियामत बर्पा हो गई ।

(سیرتِ ابن عبدالحکم ۳۷)

मेरे लिये दुआ़ करना

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ القَدِیر ने अपने एक फ़ौजी अफ़सर को लिखा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की अ़-ज़मत और ख़शिय्यत का सब से ज़ियादा मुस्तह़िक़ बन्दा वोह है जो इस मुसीबत में मुब्तला हो जिस में इस वक़्त मैं ख़ुद मुब्तला हूं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक मुझ से बढ़ कर सख़्त अ़ज़ाब का ह़क़दार और मुझ से ज़ियादा ज़लील कोई नहीं है । मुझे मा'लूम हुवा है कि तुम जिहाद के लिये रवाना होना चाहते हो तो मेरी ख़्वाहिश येह है कि जब तुम सफ़े जंग में खड़े हो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करना कि वोह मुझे शहादत अ़त़ा फ़रमाए ।" (طبقات ابن سعد، ج۵،ص۳۰۸)

ख़ौफ़े ख़ुदा के अ-षरात

हज़रते सय्यिदुना अबू साइब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मैं ने कभी किसी शख़्स के चेहरे पर ऐसा ख़ौफ़ या ख़ुशुअ़ नहीं देखा जैसा उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز) के चेहरे पर देखा।

(حلیۃ الاولیاء ج ۵ ص ۲۹۴)

अहलियाए मोह़तरमा की गवाही

बाहर के लोग तो किसी से मु-तअष्षिर हो ही जाते हैं, घर वाले भी इस से मु-तअष्षिर हों ऐसा बहुत कम होता है, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز इन्ही में से एक हैं चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की अहलियाए मोह़तरमा ह़ज़रते फ़ातिमा बिन्ते अ़ब्दुल मलिक رحمۃ اللہ تعالی علیھا से **अमीरुल मुअमिनीन** की इ़बादत का ह़ाल दरयाफ़्त किया गया तो कहने लगीं : "वोह और लोगों से बढ़ कर नमाज़, रोज़े की कषरत तो नहीं करते थे लेकिन मैं ने उन से बढ़ कर किसी को **अल्लाह** तआ़ला के ख़ौफ़ से कांपते नहीं देखा, वोह अपने बिस्तर पर **अल्लाह** तआ़ला का ज़िक्र करते तो ख़ौफ़े ख़ुदा की वजह से चिड़या की त़रह़ फड़ फड़ाने लगते यहां तक कि हमें अन्देशा होता कि इन का दम घुट जाएगा और लोग सुब्ह़ को उठेंगे तो ख़लीफ़ा से मह़रूम होंगे।" (سیرت ابن عبد الحکم ص ۴۲)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।* اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

अमीरुल मुअमिनीन की यादे मौत

उ–मरा व सलाती़न के यहां रातों को उ़मूमन बज़्मे ऐ़शो त़रब मुनअ़क़िद होती है लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز के यहां रात के वक़्त फु–क़हाए किराम जम्अ़ होते, मौत और क़ियामत का ज़िक्र होता और ह़ाज़िरीन इस त़रह़ रोते थे गोया उन के सामने जनाज़ा रखा हुवा है। (سیرت ابن جوزی ص ۲۱۵)

क़ब्र वाले के बारे में सोचते रहे

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने अपने एक हम नशीन से कहा कि मैं ग़ौरो फ़िक्र में रात भर जागता रहा। उस ने पूछा : किस चीज़ के मु–तअ़ल्लिक़ ग़ौरो फ़िक्र करते रहे ? फ़रमाया : "अगर तुम मय्यित को तीन दिन बा'द उस की क़ब्र में देखो तो तुम्हें उस के साथ एक त़वील अ़र्सा तक मानूस रहने के बा वुजूद उस से वह़शत होने लगे और अगर तुम उस के घर (या'नी क़ब्र) को देखो जिस में कीड़े फिर रहे हो, पीप जारी हो, कीड़े उन के बदन को खा रहे हों, बदबू भी आ रही हो और उस का कफ़न बोसीदा हो चुका हो, जब कि पहले वोह ख़ूब सूरत था, उस की ख़ुश्बू अच्छी थी और कपड़े भी साफ़ थे," इतना कहने के बा'द आप ने चीख मारी और बे होश हो गए। ज़ौजए मोह़तरमा ह़ज़रते फ़ातिमा رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہا आईं और आप के चेहरए मुबारक पर पानी के छींटे फेंके, जब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ को होश आया तो देखा कि ज़ौजए मोह़तरमा रो रही हैं, पूछा يَافَاطِمَةُ مَايُبْكِيْكِ या'नी फ़ातिमा तुम्हें किस चीज़ ने रुलाया ! अ़र्ज़ की : या **अमीरुल मुअमिनीन** ! आप की दुन्या की रुख़्सती और हम से जुदाई के ख़याल ने मुझे रुला दिया है। फ़रमाया : फ़ातिमा ! तुम ने सच कहा। फिर खड़े

होने की कोशिश की तो गिरने लगे, ज़ोजए मुह़तरमा ने उन को पकड़ कर गिरने से बचाया और कहा : हम आप के बारे में अपने दिल की कैफ़िय्यात की पूरी तर्जुमानी नहीं कर सकते। **अमीरुल मुअमिनीन** पर दोबारा बे होशी त़ारी हो गई यहां तक कि नमाज़ का वक़्त आ गया तो ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा बिन्ते अ़ब्दुल मलिक رحمۃ اللہ تعالی علیھا ने उन के चेहरे पर पानी डाला और आवाज़ दी : या **अमीरल मुअमिनीन** ! नमाज़ का वक़्त हो गया, तो घबरा कर उठ गए।

(حلیۃ الاولیاء ج ۵ ص ۳۰۲ وسیرت ابن جوزی ص ۲۲۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हम भी अपने दोस्तों और अ़ज़ीज़ो अक़ारिब के साथ वक़्त गुज़ारते हैं, दुन्या जहान की बातें करते हैं, मगर हमारी मह़फ़िलों और बैठकों में क़ब्रो ह़श्र, जज़ा व सज़ा और दीगर उमूरे आख़िरत के बारे में कितनी गुफ़्त-गू होती है ? इस सुवाल का जवाब अपने ज़मीर से पूछिये ! ऐ काश ! कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز के सदक़े हमें भी ह़क़ीक़ी फ़िक्रे आख़िरत नसीब हो जाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मौत को याद किया करो

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने अपने किसी क़रीबी अ़ज़ीज़ को मकतूब में लिखा : "अगर तुम्हें दिन या रात में किसी वक़्त मौत को याद करने का शुऊर मिल जाए तो दुन्या की सब फ़ानी अश्या तुम्हें ना पसन्द और आख़िरत की हमेशा रहने वाली चीज़ें मह़बूब हो जाएंगी।" **वस्सलाम** (حلیۃ الاولیاء جزء ۵ ص ۲۹۹)

आबा व अजदाद की क़ब्रों से इ़ब्रत पकड़ते

हज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं कि मैं हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز के हमराह क़ब्रिस्तान गया। जब उन्हों ने क़ब्रों को देखा तो रो पड़े और फ़रमाया : ऐ मैमून ! येह मेरे आबा व अजदाद बनू उमय्या की क़ब्रें हैं, गोया वोह दुन्या वालों के साथ उन की लज़्ज़तों मे शरीक नहीं हुए, क्या तुम उन्हें नहीं देखते वोह बिछड़ गए और अब मह्ज़ उन के क़िस्से बाक़ी हैं। (احیاء العلوم ج ۲ ص ۲۶۴)

आख़िरत की फ़िक्र दिलाने वाला एक मक्तूब

एक गवर्नर को फ़िक्रे आख़िरत से मा'मूर मक्तूब में फ़रमाया : तुम अपने आप के बारे में जल्द सोचो बीचार करो इस से पहले कि तुम्हें शदीद ग़म में मुब्तला कर दिया जाए जैसा कि तुम से पहले लोगों को किया गया था, तुम ने लोगों को देखा कि वोह कैसे मरते हैं और किस त़रह़ अपने प्यारों से जुदा होते हैं ? और येह भी देखा मौत कैसे जल्दी जल्दी तौबा करवाती है और लम्बा अ़र्सा जीने की उम्मीद रखने वालों से उम्मीद को ख़त्म करती है और बादशाह से उस की सल्त़नत मांगती है, मौत ही बड़ी नसीह़त है, दुन्या से रूह़ को ले जाने और आख़िरत में रग़बत दिलाने वाली है, हम बुरी मौत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं, हम तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अच्छी मौत और मौत के बा'द ख़ैर का सुवाल करते हैं। तुम अपने किसी ऐसे क़ौलो फ़े'ल से दुन्या को त़लब न करो जिस से तुम्हारी आख़िरत को नुक़्सान पहुंचे, इस की वजह

से रब عَزَّوَجَلَّ तुझ से नाराज़ हो जाए और ईमान रखो कि तक़्दीर तुम्हारे पास तुम्हारा रिज़्क़ पहुंचा देगी और तुम्हें तुम्हारी दुन्या में से पूरा पूरा हिस्सा देगी जिस में तुम्हारी कुव्वत की वजह से न तो ज़ियादती होगी और न ही कमज़ोरी की वजह से उस में कुछ कमी होगी, अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें फ़क़्र में मुब्तला कर दे तो अपनी गु़रबत में इफ़्फ़त व पाकीज़गी इख़्तियार करना और अपने रब के फ़ैसले के सामने सर झुका देना और **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हारे हिस्से में जो इस्लाम जैसी अ़ज़ीम दौलत रखी है उसी को ग़नीमत समझना, दुन्या की जो ने'मतें तुम्हें ह़ासिल न हों तो तुम अपना येह ज़ेह्न बना लो कि इस्लाम में फ़ानी दुन्या के सोने और चांदी से बेहतर बदला मौजूद है। जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और जन्नत की तलाश में लगता है उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कभी नुक़्सान नहीं पहुंचाता और जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी और जहन्नम का ख़त़रा मौल लेता है उसे कभी नफ़्अ़ नहीं पहुंचाएगा।

(حلیۃ الاولیاء ج۵ ص۳۱۲)

मौत से डरो

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने फ़रमाया : اِحْذَرُوا الْمَوْتَ فَاِنَّہٗ اَشَدُّ مَاقَبْلَہٗ وَاَھْوَلُ مَابَعْدَہٗ *या'नी मौत से डरो क्यूंकि उस के पहले के मुआ़-मलात शदीद और बा'द के शदीद तर हैं।*

(سیرت ابن جوزی ص۲۳۹)

एक दिन मरना है आख़िर मौत है

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز

फ़रमाया करते थे : मैं ने कभी ऐसा यक़ीन नहीं देखा जिस में शक की मिलावट हो जैसा लोगों का मौत के बारे में देखा कि वोह उस का यक़ीन तो रखते हैं मगर जब उस के लिये कोई तय्यारी नहीं करते तो ऐसा लगता है कि शायद उन्हें मौत की आमद के बारे में कोई शक है। (قرطبی،ج۵،ص۴۸)

या इलाही ! मग़फ़िरत कर बे कसो मजबूर की
हर ख़ता तू दर गुज़र कर बे कसो मजबूर की
जां चले तेरी रिज़ा पर बे कसो मजबूर की
ज़िन्दगी और मौत की है या इलाही कश्म कश

(वसाइले बख़्शिश, स. 76)

क़ब्र की दिल हिला देने वाली कहानी

हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ الْعَزِيز एक जनाज़े के साथ क़ब्रिस्तान तशरीफ़ ले गए, वहां **एक क़ब्र** के पास बैठ कर ग़ौरो फ़िक्र में डूब गए, किसी ने अ़र्ज़ की : "या **अमीरल मोअमिनीन** ! رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه यहां तन्हा कैसे तशरीफ़ फ़रमा हैं ?" फ़रमाया : "अभी अभी **एक क़ब्र** ने मुझे पुकार कर कहा : ऐ उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ الْعَزِيز मुझ से क्यूं नहीं पूछते कि मैं अपने अन्दर आने वालों के साथ क्या बरताव करती हूं ? मैं ने उस क़ब्र से कहा : मुझे ज़रूर बता। वोह कहने लगी : जब कोई मेरे अन्दर आता है तो मैं उस का कफ़न फाड़ कर जिस्म के टुकड़े टुकड़े कर डालती और उस का गोश्त खा जाती हूं, हथेलियों को कलाइयों से, घुटनों को पिंडलियों से और पिंडलियों को क़दमों से जुदा कर देती हूं।" इतना कहने के बा'द हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ الْعَزِيز हिचकियां

ले कर रोने लगे। जब कुछ इफ़ाक़ा हुवा तो कुछ इस त़रह़ इब्रत के म-दनी फूल लुटाने लगे : "**ऐ इस्लामी भाइयो** ! इस दुन्या में हमें बहुत थोड़ा अ़र्सा रहना है, जो इस दुन्या में (सख़्त गुनहगार होने के बा वुजूद) साहि़बे इक्तिदार है वोह (आख़िरत में) इन्तिहाई ज़लीलो ख़्वार है। जो इस जहां में मालदार है वोह (आख़िरत में) फ़क़ीर होगा। इस का जवान बूढ़ा हो जाएगा और जो ज़िन्दा है वोह मर जाएगा। दुन्या का तुम्हारी त़रफ़ आना तुम्हें धोके में न डाल दे, क्यूंकि तुम जानते हो कि येह बहुत जल्द रुख़्सत हो जाती है। कहां गए तिलावते कुरआन करने वाले ? कहां गए बैतुल्लाह का ह़ज करने वाले ? कहां गए माहे र-मज़ान के रोज़े रखने वाले ? ख़ाक ने उन के जिस्मों का क्या ह़ाल कर दिया ? क़ब्र के कीड़ों ने उन के गोश्त का क्या अन्जाम कर दिया ? उन की हड्डियों और जोड़ों के साथ क्या हुवा ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! दुन्या में येह आराम देह नर्म नर्म बिस्तर पर होते थे लेकिन अब वोह अपने घर वालों और वत़न को छोड़ कर राह़त के बा'द तंगी में हैं, उन की बेवाओं ने दूसरे निकाह़ कर के दोबारा घर बसा लिये, उन की अवलाद गलियों में दर बदर है, उन के रिश्तेदारों ने उन के मकानात व मीराष आपस में बांट ली। **वल्लाह** ! उन में कुछ ख़ुश नसीब हैं जो क़ब्रों में मज़े लूट रहे हैं और **वल्लाह** ! बा'ज़ क़ब्र में अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हैं। **अफ़सोस सद हज़ार अफ़सोस,** ऐ नादान ! जो आज मरते वक़्त कभी अपने वालिद की, कभी अपने बेटे की तो कभी सगे भाई की आंखें बन्द कर रहा है, उन में से किसी को नहला रहा है, किसी को कफ़न पहना रहा है, किसी के जनाज़े को कन्धे पर उठा रहा है, किसी के जनाज़े के साथ जा रहा है,

किसी को क़ब्र के गढ़े में उतार कर दफ़ना रहा है। (याद रख ! कल येह सभी कुछ तेरे साथ भी होने वाला है) काश मुझे इ़ल्म होता ! कौन सा गाल (क़ब्र में) पहले ख़राब होगा।" फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز रोने लगे और रोते रोते बेहोश हो गए और एक हफ़्ते के बा'द इस दुन्या से तशरीफ़ ले गए।

(الروض الفائق ص ۱۰۸ ملخصاً)

ज़ादे आख़िरत तय्यार कर लो

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने एक मरतबा फ़िक्रे आख़िरत दिलाते हुए इरशाद फ़रमाया : इस मौत ने दुन्या वालों की चमक दमक को ख़राब व परा गन्दा कर दिया। जब उन के पास म–लकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام तशरीफ़ ले आए तो जिस ह़ालत में वोह थे उसी ह़ाल में उन की रूह़ क़ब्ज़ कर ली, जहाने आख़िरत में ह़सरत व अफ़सोस है उस के लिये जो मौत से न डरे, ऐ काश ! ऐसा शख़्स नर्मी व आसानी में मौत को याद करता तो अपने लिये कोई ख़ैर आगे भेजता, जिसे दुन्या और अहले दुन्या को छोड़ने के बा'द पाता।

(حلیۃ الاولیاء ج ۵ ص ۲۹۸)

बोसीदा न होने वाला कफ़न

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز एक मरतबा क़ब्रिस्तान तशरीफ़ ले गए तो एक क़ब्र से आवाज़ आई क्या मैं आप को ऐसे कफ़न के बारे में न बताऊं जो बोसीदा नहीं होता !

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने जवाब दिया : "ज़रूर बताओ।" आवाज़ आई : तक़्वा और नेकियों का कफ़न। (البدایۃ والنہایۃ،ج۶،ص۳۴۳)

मौत को याद करने का फ़ाएदा

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने अहले शाम को एक ख़त़ में ह़म्दो सलात के बा'द लिखा : مَنْ اَکْثَرَ ذِکْرَ الْمَوْتِ رَضِیَ مِنَ الدُّنْیَا بِالْیَسِیْرِ *या'नी जो मौत को अकसर याद रखता है वोह दुन्या की थोड़ी शै पर राज़ी हो जाता है।* (سیرت ابن جوزی ص ۲۴۲)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कैसी प्यारी नसीह़त है कि दुन्या से रुख़्सती जिस के पेशे नज़र होगी वोह "هَلْ مِنْ مَّزِیْدٍ" *(या'नी कुछ और है ?)* का ना'रा बुलन्द नहीं करेगा, बल्कि थोड़ी चीज़ भी उस के लिये काफ़ी होगी।

दुन्यावी रन्जो ग़म का इलाज

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز के शहज़ादे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ फ़रमाते हैं कि मेरे वालिदे मोह़तरम फ़रमाया करते थे : اِذَاکُنْتَ مِنَ الدُّنْیَا فِیْمَایَسُوْءُکَ فَاذْکُرِ الْمَوْتَ فَاِنَّہٗ یُسَھِّلُہٗ عَلَیْکَ *या'नी जब तुम्हें दुन्यावी रन्जो ग़म पहुंचे तो मौत को याद कर लिया करो उस का सहना आसान हो जाएगा।* (سیرت ابن جوزی ص ۲۳۹)

वाक़ेई अगर मौत की सख़्तियां पेशे नज़र रखी जाएं तो हर दुन्यावी मुसीबत उस के सामने बहुत छोटी दिखाई दे, हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मौत की शिद्दत के बारे में फ़रमाया : आसान तरीन मौत ऊन में कांटे दार टहनी की त़रह़ है, उसे जब खींचा जाएगा तो उस के साथ ज़रूर कुछ न कुछ ऊन भी निकल आएगी।

(کنز العمال، کتاب الموت، الحدیث ۴۲۱۶۷،ج۱۵،ص۲۳۹)

कांटे दार टहनी

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हज़रते सय्यिदुना का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कहा : हमें मौत की शिद्दत के मु-तअ़ल्लिक़ बताओ ! हज़रते का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा : **अमीरुल मोअमिनीन** ! मौत ऐसी टहनी की त़रह़ है जिस में बहुत ज़ियादा कांटे हों और वोह इन्सान के जिस्म में दाख़िल हो गई हो और उस के हर हर कांटे ने हर रग में जगह पकड़ ली हो फिर उसे एक आदमी इन्तिहाई सख़्ती से खींचे, कुछ बाहर आ जाए और बाक़ी, जिस्म में बाक़ी रह जाए। (جامع العلوم،الحدیث۳۸ص۴۵۹)

दुन्या में आना आसान, यहां से जाना मुश्किल है

हज़रते सय्यिदुना फुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : दुन्या में दाख़िला आसान मगर यहां से जाना आसान नहीं है। (احیاء العلوم،ج۳ ص۲۵۸)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मौत के वक़्त तीन बातों का सामना होता है, पहली नज़्अ़ की तक्लीफ़, जो अभी मज़्कूर हो चुकी है, दूसरी हज़रते सय्यिदुना इज़राईल عَلَیْہِ السَّلَام की सूरत का मुशा-हदा और उसे देख कर दिल में इन्तिहाई ख़ौफ़ व दहशत का पैदा होना, अगर बे पनाह हिम्मत वाला आदमी भी म-लकुल मौत की इस सूरत को देख ले जो वोह फ़ासिक़ व फ़ाजिर की मौत के वक़्त ले कर आते हैं तो इस की ताब न ला सके, चुनान्चे

बे होश हो गए

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने म–लकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام से कहा : क्या तुम मुझे अपनी वोह सूरत दिखा सकते हो जिस में तुम गुनहगारों की रूह क़ब्ज़ करने को जाते हो ? म–लकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام बोले : आप में देखने की ताब नहीं है। आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : मैं देख लूंगा। चुनान्चे म–लकुल मौत ने कहा : थोड़ी सी देर दूसरी त़रफ़ तवज्जोह कीजिये। जब आप ने कुछ देर के बा'द देखा तो एक काला सियाह आदमी नज़र आया जिस के रोंगटे खड़े हुए थे, बदबू के भभके उठ रहे थे, सियाह कपड़े पहने हुए और उस के मुंह और नथनों से आग के शो'ले निकल रहे थे और धुवां उठ रहा था, हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام येह मन्ज़र देख कर बेहोश हो गए, जब आप को होश आया तो देखा कि म–लकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام साबिक़ा शक्ल में बैठे हुए थे, आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया अगर फ़ासिक़ व फ़ाजिर के लिये मौत की और कोई सख़्ती न हो तब भी सिर्फ़ तुम्हारी सूरत देखना ही उस के लिये बहुत बड़ा अज़ाब है।

(مکاشفۃ القلوب، ص۱۶۹)

किरामन कातिबीन का सामना

मौत के वक़्त एक नाज़ुक लम्हा मुहाफ़िज़ फ़िरिश्तों को देखने का है जैसा कि हज़रते सय्यिदुना वुहैब رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि हमें येह ख़बर मिली है कि जब भी कोई आदमी मरता है तो वोह मरने से पहले नामए आ'माल लिखने वाले फ़िरिश्तों को देखता है, अगर वोह

आदमी नेक होता है तो वोह कहते हैं कि **अल्लाह** तआ़ला तुझे हमारी त़रफ़ से जज़ाए ख़ैर दे, तू ने हमें बहुत सी बेहतरीन मजालिस में बिठाया और बहुत ही नेक काम लिखने को दिये, और अगर मरने वाला गुनहगार होता है तो वोह कहते हैं कि **अल्लाह** तुझे हमारी त़रफ़ से जज़ाए ख़ैर न दे, तू ने बहुत ही बुरी मजालिस में हमें बिठाया और गुनाहों भरा और फ़ोहश कलाम सुनने पर मजबूर किया, **अल्लाह** तुझे बेहतर जज़ा न दे। उस वक़्त इन्सान की आंखें खुली की खुली रह जाती हैं और वोह सिवाए **अल्लाह** तआ़ला के फ़िरिश्तों के, किसी चीज़ को नहीं देख पाता।

(مکاشفۃ القلوب، ص ۱۷۰)

मुर्ग़े बिस्मिल की त़रह तड़पते

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि जब हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز के सामने मौत का तज़्किरा किया जाता है तो मुर्ग़े बिस्मिल (या'नी ज़ब्ह होने वाले मुर्ग़) की त़रह तड़पने लगते और इतना रोते कि आप की दाढ़ी आंसूओं से तर हो जाती। (سیرت ابن جوزی ص ۲۱۴)

नर्म ह़दीष बयान करता

हज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान عَلَیْہِ رَحْمَۃُالرَّحْمٰن से मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने मुझे कहा : ऐ मैमून ! मुझे कोई ह़दीष सुनाइये तो मैं ने उन्हें एक ह़दीष सुनाई जिसे सुन कर वोह इतना ज़ियादा रोए कि मुझे कहना पड़ा : या **अमीरल मोअमिनीन** ! अगर मुझे मा'लूम होता कि आप इस को सुन कर इतना रोएंगे तो मैं इस से कुछ नर्म ह़दीष बयान करता।

(حلیۃ الاولیاء ج ۵ ص ۳۰۶)

रोंगटे खड़े हो जाते

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी अ़रूबा رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का बयान है : كَانَ عُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيْزِ إِذَا ذَكَرَ الْمَوْتَ اِضْطَرَبَتْ أَوْصَالُهٗ *या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز जब मौत को याद करते तो उन के रोंगटे खड़े हो जाते।* (حلیۃ الاولیاء ج۵ ص ۳۴۹)

कितना सफ़र बाक़ी है ?

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز ने एक ख़त़ में किसी को समझाते हुए लिखा : मेरे भाई ! तुम बहुत सा सफ़र तै कर चुके और थोड़ा सा बाक़ी है, ख़ुद को दुन्या के धोके में मुबतला होने से बचाना क्यूंकि दुन्या उस का घर है जिस का कोई घर न हो और उस का माल है जिस के पास माल न हो, मेरे भाई ! तुम मौत के क़रीब हो चुके हो लिहाज़ा तुम ख़ुद ही अपने आप को समझा लो न कि लोग तुम्हें समझाएं। (سیرت ابن جوزی ص ۲۴۴)

मेज़बान के पास कब तक रहेंगे ?

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز ने एक शख़्स से फ़रमाया कि मैं ने गुज़श्ता रात एक सूरए मुबा-रका पढ़ी जिस में ज़ियारत का ज़िक्र है, या'नी

اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ۙ﴿۱﴾ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ؕ﴿۲﴾ (پ۳۰، التکاثر: ۱، ۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हें ग़ाफ़िल रखा माल की ज़ियादा त़-लबी ने यहां तक कि तुम ने क़ब्रों का मुंह देखा।

फिर पूछा अब बताओ कि ज़ियारत करने वाला अपने मेज़बान (या'नी क़ब्र) के पास कब तक रहेगा ? आख़िरे कार उसे वहां से वापस लौटना है मगर मा'लूम नहीं कि जन्नत की त़रफ़ या जहन्नम की त़रफ़ !

(سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۱۶)

उठने वाले जनाज़ों से इ़ब्रत पकड़ो

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने अपने आख़िरी ख़ुत़बे में इरशाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! तुम्हारे पास जो माल है वोह मरने वालों का छोड़ा हुवा है, बिल आख़िर तुम भी उसे यहीं छोड़ जाओगे, क्या तुम नहीं जानते कि तुम रोज़ाना सुब्ह़ या शाम के वक़्त इस दुन्या से रुख़सत होने वाले के जनाज़े में पीछे पीछे चलते हो, तुम उसे क़ब्र के उस घड़े में उतार आते हो जहां बिछोना है न तकिया, येह मरने वाला अपना सारा मालो मताअ़ यहीं छोड़ जाता है, दोस्त अह़बाब से जुदा हो कर मिट्टी को अपना मसकन बना देता है, ह़िसाबो किताब का सामना करता है, उसी का मोह़ताज होता है जो उस ने आगे भेजा होता है और जो कुछ वोह पीछे छोड़ जाता है उस से बे नियाज़ होता है। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز आंखों पर कपड़ा रख कर रोने लगे और मिम्बर से नीचे उतर आए।

(حلیۃ الاولیاء ج ۵ ص ۳۰۰)

मौत को याद किया करो

एक क़ुरेशी जो ख़ु–लफ़ा के हां जब भी अपनी ज़रूरत ले कर आता तो नाकाम नहीं जाता था। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز के पास भी आया और कोई ज़रूरत पेश की, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "لَا يَجُوْزُ هٰذَا *या'नी येह तो जाइज़ नहीं।*"

ख़िलाफ़े मा'मूल वोह अपने मक़सद में ख़ुद को ना काम होता देख कर ग़ुस्से से चल दिया। हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने उसे दोबारा बुलाया, वोह समझा शायद अब इन की राय बदल गई हो और येह मेरा काम कर देंगे। जब वोह वापस आया तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया :

إِذَا رَأَيْتَ شَيْئًا مِنَ الدُّنْيَا فَأَعْجَبَكَ فَاذْكُرِ الْمَوْتَ فَإِنَّهُ يُقَلِّلُهُ فِي نَفْسِكَ وَإِذَا كُنْتَ فِي شَيْءٍ مِّنْ أَمْرِ الدُّنْيَا قَدْ غَمَّكَ وَنَزَلَ بِكَ فَاذْكُرِ الْمَوْتَ فَإِنَّهُ يُسَهِّلُهُ عَلَيْكَ وَهٰذَا أَفْضَلُ مِنَ الَّذِي طَلَبْتَ

या'नी जब दुन्या की किसी चीज़ को देखो और वोह तुम्हें पसन्द आ जाए तो मौत को याद कर लिया करो क्यूंकि उस चीज़ की वुक़्अ़त तुम्हारी नज़र में कम हो जाएगी और जब तुम दुन्या की किसी चीज़ को देखो जो तुम्हें न मिलने की वजह से परेशान कर दे तो मौत को याद कर लिया करो उस चीज़ के न मिलने का ग़म हलका हो जाएगा, जाओ येह नसीह़त उस चीज़ से बेहतर है जिस का तुम ने मुत़ा-लबा किया था। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۴۳)

इसी त़रह़ की नसीह़त एक मोक़अ़ पर अ़म्बसा बिन सईद को भी की :

أَكْثِرْ مِنْ ذِكْرِ الْمَوْتِ ، فَإِنْ كُنْتَ فِي ضِيقٍ مِّنَ الْعَيْشِ وَسَّعَهُ عَلَيْكَ ، وَإِنْ كُنْتَ فِي سَعَةٍ مِّنَ الْعَيْشِ ضَيَّقَهُ عَلَيْكَ

या'नी मौत को अकषर याद किया करो इस के दो फ़ाएदे हैं अगर तुम मह़नत व तकलीफ़ में मुब्तला हो तो यादे मौत से तुम को तसल्ली होगी और अगर फ़ारग़त व आसूदगी ह़ासिल है तो मौत का ज़िक्र तुम्हारे ऐ़श को तल्ख़ कर देगा। (سیرت ابن جوزی ص ۱۳۹)

वाकेई ! जब इन्सान सिद्क़े दिल से अपनी मौत और उस के बा'द दर पेश मुआ़-मलात के बारे में ग़ौरो तफ़क्कुर करता है तो दुन्यावी आज़माइशें उसे आसान और आ़रिज़ी दिखाई देती है और अगर उसे

आसाइशें मुयस्सर हों तो इन की रुख़्सती का ख़याल उस की दिलचस्पी को कम कर देता है उस का नतीजा येह निकलता है कि उस का दिल फ़ुज़ूलियात व लग़्वियात से दूर हो कर इबादत व रियाज़त की त़रफ़ माइल हो जाता है। रह़मते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी मौत को कषरत से याद करने की तरग़ीब इरशाद फ़रमाई है, चुनान्चे

लज़्ज़तों को मिटाने वाली

जलीलुल क़द्र सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि मह़बूबे रह़मान, सरवरे ज़ीशान, रह़मते आ़–लमिय्यान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद में दाख़िल हुए तो कुछ लोगों को हंसते देख कर फ़रमाया : अगर तुम लज़्ज़ात को मिटा देने वाली (मौत) को कषरत से याद करते तो वोह तुम्हें इस चीज़ से बाज़ रखती जिस में, मैं तुम्हें मश्ग़ूल देख रहा हूं। फिर फ़रमाया : اَکْثِرُوْا ذِکْرَھَاذِمِ اللَّذَّاتِ *या'नी लज़्ज़तों को मिटा देने वाली मौत को कषरत से याद करो।* (شُعَبُ الایمان ج۱ ص۲۹۸ حدیث۸۲۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعالٰی علٰی محمَّد

ख़ौफ़े क़ियामत

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز रोज़े क़ियामत से भी निहायत ख़ौफ़ ज़दा रहते थे, यज़ीद बिन ह़ौशब का क़ौल है : "मैं ने ह़सन ब–सरी और उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا) से ज़ियादा किसी शख़्स को क़ियामत से डरने वाला नहीं देखा, गोया दोज़ख़ सिर्फ़ इन्ही दोनों के लिये पैदा की गई है।"

(سیرت ابن جوزی ص۲۲۶)

अमीरुल मोअमिनीन का जन्नतियों और दोज़ख़ियों के बारे में ग़ौरो फ़िक्र

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि एक दिन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ العَزِيز की मजलिस में गुफ़्त-गू का सिल्सिला जारी था मगर आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه बिलकुल ख़ामोश बैठे थे, पूछा गया : हुज़ूर ! क्या बात है आप ख़ामोश क्यूं हैं ? फ़रमाया : "मैं अहले जन्नत के बारे में सोच रहा हूं कि वोह किस त़रह़ खुशी खुशी एक दूसरे से मुलाक़ात किया करेंगे ! मगर दोज़ख़ी लोग एक दूसरे को बे क़रारी से मदद के लिये पुकारा करेंगे।" इतना कहने के बा'द आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه रोने लगे। (سیرت ابن جوزی ص ۲۱۴)

कहीं में दोज़ख़ियों में से न होऊं

एक दिन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ العَزِيز ने सूरए यूनुस की आयत 61 पढ़ी :

وَمَا تَكُوْنُ فِیْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ اِلَّا كُنَّا عَلَیْكُمْ شُهُوْدًا اِذْ تُفِیْضُوْنَ فِیْهِ (پ۱۱، یونس:۶۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और तुम किसी काम में हो और उस की त़रफ़ से कुछ क़ुरआन पढ़ो और तुम लोग कोई काम करो हम तुम पर गवाह होते हैं जब तुम इस को शुरूअ़ करते हो।

तो रो दिये, आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के रोने की आवाज़ अहले ख़ाना तक पहुंची तो ज़ौजए मोह़तरमा ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा बिन्ते अ़ब्दुल मलिक رحمة الله تعالى عليها लपक कर आईं जब आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को रोते हुए देखा तो वोह भी पास बैठ कर रोने लगीं, बक़िय्या घर वाले भी आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के आस पास जम्अ़ हो गए। कुछ देर बा'द आप के शहज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق भी आ गए और सब को रोते देख कर पूछा : अब्बू जान ! ख़ैरिय्यत तो है ! आप क्यूं रो रहे हैं ? फ़रमाया : "बेटा ! ख़ैरिय्यत ही है, तुम्हारे बाप की ख़्वाहिश है कि काश वोह दुन्या वालों को और वोह उसे न जानते।" थोड़े तवक्क़ुफ़ के बा'द फ़रमाया : मुझे येह ख़ौफ़ लाह़िक़ हो गया था कि कहीं मैं दोज़ख़ियो में से न होऊं। (سیرت ابن جوزی ص ۲۱۷)

जन्नत व दोज़ख़ के ज़िक्र पर रो दिये

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन क़ैस رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का बयान है कि एक मरतबा दोपहर के वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ الْعَزِيْز ने मुझ से फ़रमाया : जन्नत और दोज़ख़ के बारे में तज़्किरा करो। जब मैं ने जन्नत व दोज़ख़ के अह़वाल बयान किये तो इतना रोए कि मैं ने किसी को इतना रोते हुए नहीं देखा।

(سیرت ابن جوزی ص ۲۱۸)

ह़ौज़े कौषर के छलक्ते जाम पीने की तड़प

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सलाम असवद رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ الْعَزِيْز

से कहा कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना षौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को फ़रमाते हुए सुना है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मेरा ह़ौज़ "अ़दन" से "उ़म्मान" की मसाफ़त जितना वसीअ़ है, इस का पानी दूध से ज़ियाद सफ़ेद और शहद से ज़ियादा मीठा है और इस के जाम सितारों की ता'दाद के बराबर हैं, जो शख़्स इस में से एक घूट पी लेगा उस के बा'द कभी प्यासा न होगा और इस ह़ौज़ पर सब से पहले आने वाले वोह मुहाजिरीन फु–क़रा होंगे जिन के सर गर्द आलूद और कपड़े बोसीदा होंगे जो ख़ूब सूरत और नाज़ो नअ़्म वाली औ़रतों से निकाह़ नहीं कर सकते थे और न उन के लिये दरवाज़े खोले जाते थे।" येह फ़रमाने बिशारत निशान सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ने ह़सरत से फ़रमाया : "मगर मैं ने तो ख़ूब सूरत औ़रतों में से फ़ातिमा बिन्ते अ़ब्दुल मलिक से निकाह़ कर लिया है और मेरे लिये दरवाज़े खोल दिये गए हैं लेकिन अब मैं अपना सर नहीं धोऊंगा जब तक परागन्दा न हो जाए और अपने पहने हुए कपड़े नहीं धोऊंगा जब तक बोसीदा न हो जाएं।"

(ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، الحدیث ۲۴۵۲، ج۴، ص ۲۰۱)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।* اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

क़ियामत के इम्तिहान की फ़िक्र

एक शख़्स हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز के पास किसी काम से आया और अर्ज़ की : ऐ **अमीरुल मोअमिनीन** ! उस वक़्त मैं आप के सामने खड़ा होऊं, इसी मन्ज़र से आप बारगाहे इलाही में अपना खड़ा होना याद कीजिये जिस दिन दा'वा करने वालों की कषरत आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ओझल नहीं कर सकेगी, जिस दिन आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सामने पेश होंगे उस दिन अमल पर भरोसा होगा न गुनाह से छुटकारे की कोई सूरत होगी। हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने येह सुन कर फ़रमाया : भाई ! येही बात दोबारा कहना, उस ने अपनी बात दोहराई तो हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز रो पड़े और फ़रमाने लगे : वोही बात ज़रा फिर से कहना।

(سیرت ابن عبد الحکم ص ۱۴۱)

क़ियामत के 5 सुवालात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हम ख़्वाह रोएं या हंसें, तड़पें या ग़फ़्लत की नींद सोते रहें, **क़ियामत का इम्तिहान** बरहक़ है। तिरमिज़ी शरीफ़ में इस इम्तिहान के बारे में फ़रमाया जा रहा है : "इन्सान उस वक़्त तक क़ियामत के रोज़ क़दम न हटा सकेगा जब तक कि इन पांच सुवालात के जवाबात न दे ले। (1) तुम ने ज़िन्दगी कैसे बसर की ? (2) जवानी कैसे गुज़ारी ? (3) माल कहां से कमाया ? और (4) कहां कहां ख़र्च किया ? (5) अपने इल्म के मुताबिक़ कहां तक अमल किया ?" (جامع ترمذی حدیث ۲۴۲۴ ج ۴ ص ۱۸۸)

इम्तिह़ान सर पर है

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इस रिवायत को नक़्ल करने के बा'द लिखते हैं : आज दुन्या में जिस त़ालिबे इ़ल्म का इम्तिह़ान क़रीब आ जाए वोह कई रोज़ पहले ही से परेशान हो जाता है, उस पर हर वक़्त बस एक ही धुन सुवार होती है, "इम्तिह़ान सर पर है" वोह रातों को जाग कर उस की तय्यारी और अहम सुवालात पर ख़ूब कोशिश करता है कि शायद येह सुवाल आ जाए शायद वोह सुवाल आ जाए, हर इम्कानी सुवाल को ह़ल करता है ह़ालांकि दुन्या का इम्तिह़ान बहुत आसान है, इस में धान्दली हो सकती है, रिश्वत चल सकती है, और इस का फ़ाएदा भी फ़क़त़ इतना कि काम्याब होने वाले को एक साल की तरक़्क़ी मिल जाती है जब कि फे़ल होने वाले को जेल में नहीं डाला जाता, सिर्फ़ इतना नुक़्सान होता है कि एक साल की मिलने वाली तरक़्क़ी से उस को मह़रूम कर दिया जाता है। देखिये तो सही ! इस दुन्यवी इम्तिह़ान की तय्यारी के लिये इन्सान कितनी भाग दोड़ करता है, ह़त्ता कि नींद कुशा गोलियां खा खा कर सारी रात जाग कर इस इम्तिह़ान की तय्यारी करता है आह ! **क़ियामत** के **इम्तिह़ान** के लिये आज मुसलमान की कोशिश न होने के बराबर है, जिस का नतीजा काम्याब होने की सूरत में जन्नत की न ख़त्म होने वाली अ-बदी राहतें और फे़ल होने की सूरत में अ़ज़ाबे जहन्नम का इस्तिह़्क़ाक़ है। (माख़ूज़ अज़ क़ियामत का इम्तिह़ान, स. 9)

सिर्फ़ एक नेकी चाहिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हम सभी को क़ियामत के होशरुबा ह़ालात पर ग़ौर करना चाहिये और गुनाहों से बाज़ रहते हुए

नेकियां कमाने की कोशिश करनी चाहिये, उस दिन हमें एक एक नेकी की क़द्र मह़सूस होगी, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अह़मद अन्सारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی अपनी मश्हूरे ज़माना तफ़्सीर "तफ़्सीरे कुर्तुबी" में लिखते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इ़करमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है : क़ियामत के दिन एक शख़्स अपने बाप के पास आ कर कहेगा : अब्बू जान ! क्या मैं आप का फ़रमां बरदार न था ? क्या मैं आप से मह़ब्बत भरा सुलूक न करता था ? क्या मैं आप के साथ भलाई न करता था ? आप देख रहे हैं कि मैं किस मुसीबत में गिरिफ़्तार हूं ! मुझे अपनी नेकियों में से सिर्फ़ एक नेकी अ़ता कर दीजिये या मेरे एक गुनाह का बोझ उठा लीजिये । बाप कहेगा : "मेरे बेटे ! तूने मुझ से जो चीज़ मांगी वोह आसान तो है लेकिन मैं भी उसी चीज़ से डरता हूं जिस से तुम डरते हो ।" इस के बा'द बाप बेटे को अपने एह़सानात याद दिला कर येही मुता-लबा करेगा तो बेटा जवाब देगा : "आप ने बहुत थोड़ी चीज़ का सुवाल किया है लेकिन मुझे भी इसी बात का ख़ौफ़ है जिस का आप को डर है। यूं ही एक शोहर भी अपनी बीवी से कहेगा : क्या मैं तेरे साथ हुस्ने सुलूक न करता था ? मेरे एक गुनाह का बोझ उठा ले, हो सकता है मैं नजात पा जाऊं। बीवी जवाब देगी : "आप ने एक ही चीज़ मांगी है लेकिन मैं भी इसी त़रह़ डरती हूं जिस त़रह़ आप डरते हैं ।" ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : बरोज़े क़ियामत एक मां अपने बेटे से कहेगी : "मेरे लाल क्या मेरा पेट तेरे लिये जाए क़रार न था ? क्या मेरा सीना तेरे लिये (दूध का) मश्कीज़ा न था ? क्या मेरी गोद तेरे लिये आराम गाह न थी ? ।" वोह ए'तिराफ़ करते हुए

कहेगा : "क्यूं नहीं, अम्मी जान !" मां बोलेगी : आज में गुनाहों के भारी बोझ तले दबी हुई हूं, तू इन में से सिर्फ़ एक गुनाह का बोझ उठा ले।" बेटा इन्कार करते हुए कहेगा : "अम्मी जान ! जाइये क्यूंकि मुझे तो ख़ुद अपने गुनाहों की फ़िक्र पड़ी है।" (قرطبی ج ۷ ص ۲۴۷)

क़ियामत की गर्मी में साया अ़ता हो करम से तेरे अ़र्श का या इलाही
ख़ुदाया मुझे बे हिसाब बख़्श देना मेरे ग़ौस का वासित़ा या इलाही
जवार अपनी जन्नत में मुझ को अ़ता कर
तेरे प्यारे मह़बूब का या इलाही

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعالٰی علٰی محمَّد

पुल सिरात़ से गुज़रो

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز की एक कनीज़ आप की बारगाह में ह़ाज़िर हुई और अ़र्ज़ करने लगी : "आ़लीजाह ! मैं ने ख़्वाब में अ़जीब मुआ़-मला देखा।" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के दरयाफ़्त करने पर वोह यूं अ़र्ज़ गुज़ार हुई : "मैं ने देखा कि जहन्नम को भड़काया गया और उस पर पुल सिरात़ रख दिया गया फिर उ-मवी ख़ु-लफ़ा को लाया गया। सब से पहले ख़लीफ़ा अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान को उस पुल सिरात़ से गुज़रने का हुक्म दिया गया, चुनान्चे वोह पुल सिरात़ पर चलने लगा लेकिन अफ़सोस ! वोह थोड़ा सा चला कि पुल उलट गया और वोह जहन्नम में गिर गया।" हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ने दरयाफ़्त किया : "फिर क्या हुवा।" कनीज़ ने कहा :

"फिर उस के बेटे वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक को लाया गया, वोह भी इसी त़रह़ पुल सिरात़ पार करने लगा कि अचानक पुल सिरात़ फिर उलट गया, जिस की वजह से वोह दोज़ख़ में जा गिरा।" आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه ने सुवाल किया कि, "इस के बा'द क्या हुवा ?" अ़र्ज़ की : "इस के बा'द सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक को ह़ाज़िर किया गया, उसे भी हुक्म हुवा कि पुल सिरात़ से गुज़रो, उस ने भी चलना शुरूअ़ किया लेकिन यकायक वोह भी दोज़ख़ की गहराइयों में उतर गया।" आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه ने पूछा : "मज़ीद क्या हुवा ?" उस ने जवाब दिया, "या **अमीरल मोअमिनीन** ! इन सब के बा'द आप को लाया गया।" कनीज़ का येह जुम्ला सुनते ही सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمة اللّٰهِ العَزِیز ने ख़ौफ़ ज़दा हो कर चीख़ मारी और ज़मीन पर गिर गए। कनीज़ ने जल्दी से कहा "ऐ **अमीरल मोअमिनीन** ! रह़मान عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने देखा कि आप ने सलामती के साथ पुल सिरात़ पार कर लिया।" लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمة اللّٰهِ العَزِیز कनीज़ की बात न समझ पाए क्यूंकि आप पर ख़ौफ़ का ऐसा ग़-लबा त़ारी था कि आप बे होशी के आ़लम में भी इधर उधर हाथ पाऊं मार रहे थे। (احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ۴، ص ۲۳۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ालांकि ग़ैरे नबी का ख़्वाब शरीअ़त में हुज्जत नहीं फिर भी आप ने देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمة اللّٰهِ العَزِیز पुल सिरात़ पर गुज़रने के मुआ़-मले में किस क़दर ह़स्सास थे। वाक़ेई पुल सिरात़ का मुआ़-मला बड़ा ही नाज़ुक है। पुल सिरात़ बाल से बारीक और तल्वार की धार से

तेज़ तर है और येह जहन्नम की पुश्त पर रखा हुवा होगा, ख़ुदा की क़सम ! येह सख़्त तश्वीश नाक मर्ह़ला है, हर एक को इस पर से गुज़रना ही पड़ेगा, (पुल सिरात़ की दहशत, स. 3 मुल-त-क़त़न)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

अ़ज़ाबे इलाही का ख़ौफ़

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز को दुन्या में भी अ़ज़ाबे इलाही का ख़ौफ़ लगा रहता था, एक बार ज़ोर से हवा चली तो उन के चेहरे का रंग सियाह पड़ गया एक शख़्स ने पूछा : **अमीरुल मोअमिनीन** ! आप का येह क्या ह़ाल हो गया ? फ़रमाया : दुन्या में एक क़ौम को हवा ही ने तबाह किया है। (سیرت ابن جوزی ص۲۲۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز की इस हिकायत में सीरते सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की झलक दिखाई देती है, चुनान्चे

बादलों में कहीं अ़ज़ाब न हो

हज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से मरवी है कि जब रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तेज़ आंधी को मुला-ह़ज़ा फ़रमाते और जब बादल आसमान पर छा जाते तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए अक़्दस का रंग मु-तग़य्यिर हो जाता और आप कभी हुजरे से बाहर तशरीफ़ ले जाते और कभी वापस आ जाते, फिर जब बारिश हो जाती तो येह कैफ़िय्यत ख़त्म हो जाती। मैं ने इस की वजह पूछी तो इरशाद फ़रमाया :

''اِنِّی خَشِیْتُ اَن یَّکُوْنَ عَذَاباً سُلِّطَ عَلٰی اُمَّتِی'' *या'नी मुझे येह ख़ौफ़ हुवा कि कहीं येह बादल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अ़ज़ाब न हो जो मेरी उम्मत पर भेजा गया हो।''* (شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالٰی، ج۱، ص۵۴۶، رقم الحدیث ۹۹۴)

कोई जन्नत में जाएगा और कोई दोज़ख़ में

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز एक मरतबा रोने लगे, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ को रोता देख कर आप की ज़ौजए मोह़तरमा ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा बिन्ते अ़ब्दुल मलिक رحمۃاللہ تعالٰی علیہا भी रोने लगीं। बा'द में दीगर घर वाले भी रोने लगे, जब रोने का सिल्सिला थमा तो अ़र्ज़ की गई : या **अमीरल मोअमिनीन** आप क्यूं रो रहे थे ? इरशाद फ़रमाया : मुझे बारगाहे इलाही में ह़ाज़िर होना याद आ गया था जिस के बा'द कोई जन्नत में जाएगा तो कोई दोज़ख़ में। (حلیۃ الاولیاء ج۵ ص ۳۰۳)

फिर मरते दम तक नहीं हंसे

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز के एक गुलाम का बयान है कि मैं रात के वक़्त आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर रहता था, अकषर अवक़ात आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ की गिर्या व ज़ारी की वजह से ठीक से सो नहीं सकता था, एक रात आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने मा'मूल से ज़ियादा आहो ज़ारी की। जब सुब्ह़ हुई तो मुझे बुला कर नसीह़त फ़रमाई : भलाई इस में नहीं कि तुम्हारी बात सुनी जाए और इत़ाअ़त की जाए बल्कि इस में है कि तुम्हें तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ से

रोका जाए फिर भी तुम उस की इत़ाअ़त करो। फिर ताकीद की : सुब्ह़ के वक़्त जब तक खूब दिन न चढ़ जाए किसी को मेरे पास न आने दिया करो क्यूंकि लोग मेरे मुआ़-मलात समझ नहीं पाएंगे। मैं ने अ़र्ज़ की : आप पर मेरे मां बाप कुरबान ! आज रात तो आप ऐसा रोए कि पहले कभी नहीं रोए। मेरी येह बात सुन कर हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز रो दिये और फ़रमाया : खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझे बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में खड़े होने का मन्ज़र याद आ गया था। इतना कहने के बा'द आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ पर बेहोशी त़ारी हो गई और काफ़ी देर के बा'द होश में आए, इस के बा'द मैं ने आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को कभी मुस्कराते नहीं देखा यहां तक कि इस दुन्या से सफ़रे आख़िरत पर रवाना हो गए। (سیرت ابن جوزی ص ۲۱۶)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बा'दे मौत क़ब्र में त़वील अ़र्से तक क़ियाम करने के बा'द क़ियामत क़ाइम होने पर जब हम मैदाने मह़शर में अपने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पहुंचेंगे तो हमारे तमाम आ'माल को हमारे सामने लाया जाएगा, जैसा कि सूरतुन्नबा में है :

یَوۡمَ یَنۡظُرُ الۡمَرۡءُ مَا قَدَّمَتۡ یَدٰہُ *तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन आदमी देखेगा जो कुछ उस के हाथ ने आगे भेजा।* (پ ۳۰، النبا ۴۰)

सिर्फ़ येही नहीं बल्कि हमें अपने नामए आ'माल को सब के सामने पढ़ कर सुनाना होगा और अपने किये का ह़िसाब देना होगा जैसा कि पारह 15 सूरए नबी इसराईल आयत 13 और 14 में इरशाद होता है :

وَنُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ كِتٰبًا يَّلْقٰىهُ مَنْشُوْرًا ﴿۱۳﴾ اِقْرَاْ كِتٰبَكَ ؕ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا ﴿۱۴﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उस के लिये क़ियामत के दिन एक नौश्ता (या'नी नामए आ'माल) निकालेंगे जिसे खुला हुवा पाएगा, फ़रमाया जाएगा कि अपना नामा पढ़ आज तू खुद ही अपना हिसाब करने को बहुत है (پ۱۵، بنی اسرائیل: ۱۳، ۱۴) इस के बा'द हमें इन आ'माल का पूरा पूरा बदला जज़ा या सज़ा की सूरत में दिया जाएगा, जैसा कि सूरए ज़िलज़ाल में इरशाद होता है :

يَوْمَىٕذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا ۙ۬ لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ؕ﴿۶﴾ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ؕ﴿۷﴾ وَ مَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ﴿۸﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : उस दिन लोग अपने रब की त़रफ़ फिरेंगे कई राह हो कर ताकि अपना किया दिखाए जाएं तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे उसे देखेगा। (پ۳۰، الزلزال ۶، ۷، ۸)

फिर जिस किसी को बख़्शिश व नजात का परवाना मिलेगा वोह खुशी से फूले न समाएगा, जैसा कि सूरए अ़बस में इरशाद होता है :

وُجُوْهٌ يَّوْمَىٕذٍ مُّسْفِرَةٌ ﴿۳۸﴾ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ﴿۳۹﴾ *तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : कितने मुंह उस दिन रोशन होंगे, हंसते खुशियां मनाते।"* (پ۳۰، عبس ۳۸، ۳۹)

और जिसे उस की शामते आ'माल के बाइ़ष दोज़ख़ में जाने का हुक्म सुनाया जाएगा, वोह इन्तिहाई मग़मूम होगा जैसा कि सू-रतुल हाक़्क़ह में इरशाद होता है :

وَاَمَّا مَنۡ اُوۡتِیَ کِتٰبَہٗ بِشِمَالِہٖ ۬ۙ فَیَقُوۡلُ یٰلَیۡتَنِیۡ لَمۡ اُوۡتَ کِتٰبِیَہۡ ﴿ۚ۲۵﴾ وَلَمۡ اَدۡرِ مَا حِسَابِیَہۡ ﴿ۚ۲۶﴾

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और वोह जिसे अपना नामए आ'माल बाएं हाथ में दिया जाएगा कहेगा हाए किसी त़रह़ मुझे अपना नौश्ता (या'नी नामए आ'माल) न दिया जाता और मैं न जानता कि मेरा ह़िसाब क्या है।"

(پ۲۹، الحاقۃ:۲۵،۲۶)

हर **आ़क़िल** शख़्स ब ख़ूबी समझ सकता है कि मैदाने मह़शर में शरमिन्दगी और जहन्नम के दिल हिला देने वाले अ़ज़ाबात से बचने के लिये हमें किस क़दर एह़तियात़ की ज़रूरत है ? लिहाज़ा ! हमें चाहिये कि अपना मुह़ा-सबा करें कि हम अपने नामए आ'माल में किस क़िस्म के आ'माल दर्ज करवा रहे हैं ? कहीं ऐसा न हो कि हमें यूं ही ग़फ़्लत की ह़ालत में मौत आ जाए और सिवाए पछतावे के हमारे हाथ कुछ न आए।

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

अमीरुल मोअमिनीन का इश्के़ रसूल

सय्यिदुल मुर्सलीन, जनाबे रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत और अदबो एह़तिराम हर मुसलमान का जुज़्वे ईमान है और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیْز में इश्के़ रसूल का वस्फ़ बहुत नुमायां था।

बारगाहे रिसालत में सलाम भेजा करते

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیْز **मदीनए मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّ تَعظِیْماً وَّ تَکْرِیْماً में ख़ुसूसी तौ़र पर क़ासिद को भेजा करते थे ताकि वोह उन की त़रफ़ से नबिय्ये पाक, साह़िबे

लौलाक صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बे कस पनाह में सलाम अ़र्ज़ करे । (درمنثور ج۲ ص۵۷۰) हज़रते सुलैमान बिन सुहैम رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़्वाब में नूर वाले आक़ा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत का शरबत पिया तो अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जो लोग आप की बारगाह में सलाम अ़र्ज़ करते हैं क्या आप उन के सलाम को समझते हैं ? इरशाद फ़रमाया : हां !और उन का जवाब भी देता हूं । (اَیضاً)

मुक़द्दस तह़रीर चूम ली

अगर कहीं रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की कोई यादगार मिल जाती थी तो सर और आंखों पर रखते और उस से ब-रकत अन्दोज़ होते । किसी ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز के ख़िलाफ़ एक मुक़द्दमा दाइर किया कि उन्हों ने आप को एक खेत फ़रोख़्त किया था फिर उस में कानें निकल आईं । मुक़द्दमे में कहा गया कि हम ने आप को खेत फ़रोख़्त किया था, कानें फ़रोख़्त नहीं की थीं और बत़ौरे दलील उन्हों ने आप को रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की एक तह़रीर दिखाई । ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ने लपक कर वोह तह़रीर चूम ली और उसे अपनी आंखों से लगाया और अपने मुन्तज़िम से फ़रमाया : "इस की आ़मदनी और ख़र्च का अन्दाज़ा लगाओ ।" फिर आप ने ख़र्च वज़्अ़ कर के बाक़ी रक़म उन्हें दे दी । (فتوح البلدان ج۱ ص۳۱)

चूम कर आंखों पर रखा

रह़मते दारैन, ताजदारे ह़-रमैन صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक

सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को जागीरें दी थी और उस के मु-तअ़ल्लिक़ एक सनद लिख दी थी, उन के ख़ानदान के एक शख़्स ने ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को वोह सनद दिखाई तो उस को चूम कर आंखों पर रख लिया। (اسد الغابہ ج ۵ ص ۱۴۱)

ह़ज की ख़्वाहिश

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ الۡعَزِیۡز ने ह़-रमैन त़य्यिबैन की ह़ाज़िरी के शौक़ से बे क़रार हो कर अपने ग़ुलाम मुज़ाह़िम से फ़रमाया : मेरा ह़ज करने को जी चाहता है, क्या तुम्हारे पास कुछ रक़म है ? अ़र्ज़ की : दस दिरहम के क़रीब मौजूद हैं। कफ़े अफ़सोस मलते हुए फ़रमाया : इतनी सी रक़म में ह़ज क्यूं कर हो सकता है ! कुछ ही दिन गुज़रे थे कि मुज़ाह़िम ने अ़र्ज़ की : **अमीरुल मोअमिनीन** तय्यारी कीजिये, हमें बनू मरवान के माल से 17 हज़ार दीनार मिल गए हैं। फ़रमाया : उन को बैतुल माल में जम्अ़ करवा दो, अगर येह ह़लाल के हैं तो हम ब क़-दरे ज़रूरत ले चुके हैं और अगर ह़राम के हैं तो हमें नहीं चाहिये। मुज़ाह़िम का बयान है कि जब **अमीरुल मोअमिनीन** ने देखा की येह बात मुझ पर गिरां गुज़री है तो फ़रमाया : देखो मुज़ाह़िम ! जो काम मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये किया करूं उसे गिरां न समझा करो, मेरा नफ़्स तरक़्क़ी पसन्द है और ख़ूबतर का मुश्ताक़ है, जब भी इसे कोई मर्तबा मिला इस ने फ़ौरन उस से बुलन्द मर्तबे के ह़ुसूल की कोशिश शुरूअ़ कर दी, दुन्यावी मनासिब में

से बुलन्द तर मन्सब ख़िलाफ़त है जो मेरे नफ़्स को हासिल हो चुका है, अब येह सिर्फ़ और सिर्फ़ जन्नत का मुश्ताक़ है। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۵۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हि़साब मग़्फ़िरत हो।* اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हि़कायत में उन लोगों के लिये दर्से अ़ज़ीम है जो रिश्वत, सूद ख़ोरी और जूए जैसे ना जाइज़ ज़राएअ़ से दौलत इकट्ठी करते हैं और इसी में से ह़ज कर के समझते हैं कि हम ने बहुत बड़ी काम्याबी ह़ासिल कर ली है, ऐसों को संभल जाना चाहिये कि येह काम्याबी नहीं बल्कि चोरी और सीना ज़ोरी वाला मुआ़-मला है और इस का अन्जाम बहुत भयानक है, एक इ़ब्रत नाक हि़कायत मुला-ह़ज़ा हो :

लूट के माल से ह़ज करने वाले का अन्जाम

एक क़ाफ़िला ह़ज को जा रहा था कि रास्ते में एक मुसाफ़िर चल बसा, क़ाफ़िले वालों ने किसी से एक फावड़ा उधार लिया और उस से क़ब्र खोद कर उसे वहीं दफ़्न कर दिया। जब क़ब्र बन्द कर चुके तो उन्हें याद आया कि फावड़ा भी क़ब्र ही में रह गया। उन्हों ने उसे निकालने के लिये क़ब्र खोदी। अब जो अन्दर देखा तो उस शख़्स के हाथ पैर फावड़े के ह़ल्क़े में जकड़े हुए हैं। येह ख़ौफ़नाक मन्ज़र देख कर क़ब्र फ़ौरन बन्द कर दी और फावड़े वाले को कुछ पैसे दे कर जान छुड़ाई। ह़ज से वापसी पर उस की बीवी से उस के आ'माल के बारे में सुवाल

किया तो उस ने बताया कि एक मरतबा उस के हमराह एक माल दार शख़्स ने सफ़र किया। रास्ते में इस ने उस को मार डाला, अब तक येह ह़ज और जिहाद सब कुछ उसी के माल से करता रहा है। (شرح الصدور، ص ۱۷۴)

मिटा दे सारी ख़त़ाएं मेरी मिटा या रब　　बना दे नेक बना नेक दे बना या रब
अन्धेरी क़ब्र का दिल से नहीं निकलता डर　　करूंगा क्या जो तू नाराज़ हो गया या रब
गुनाह गार हूं मैं लाइक़े जहन्नम हूं　　करम से बख़्श दे मुझ को न दे सज़ा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 93)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب!　صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

अमीरुल मोअमिनीन की तबर्रुकात से महृब्बत

नबिय्ये मुह़्तशम, शाफ़ेए़ उमम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मु-तबर्रक यादगारों में से गदा मुबारक, पियाला, चादर, चक्की, तरकश और अ़सा शरीफ़ को ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने एक कमरे में ह़िफ़ाज़त से रखा हुवा था और रोज़ाना उस की ज़ियारत करते थे। अगर कभी क़ुरैश उन के पास जम्अ़ होते तो उन को ले जा कर इन मुक़द्दस तबर्रुकात की ज़ियारत करवाते और कहते कि येह उस मुक़द्दस ज़ात صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के तबर्रुकात हैं जिस के ज़रीए़ से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने तुम लोगों को इ़ज़्ज़त दी है। (سیرت ابن جوزی ۲۵۳)

आप का इन्तिक़ाल होने लगा तो सब से ज़ियादा फ़िक्र इसी ज़ादे बा ब-रकत की हुई चुनान्चे वसिय्यत की, कि कफ़न में नूरे मुजस्सम, नबिय्ये मुह़्तशम, शाफ़ेए़ उमम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के चन्द मूए मुबारक व नाख़ुने पाक रखे जाएं।

क़ब्र में मय्यित के साथ तबर्रुकात रखिये

जब किसी इस्लामी भाई या इस्लामी बहन का इन्तिक़ाल हो जाए तो तदफ़ीन के वक़्त कुछ न कुछ तबर्रुकात मय्यित के साथ रख दीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह अ़मल मय्यित के लिये सुकून व इत़मीनान और नकीरैन के सुवालात के जवाब देने में मददगार षाबित होगा।

हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की वसिय्यत

कातिबे वह्य हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने भी अपने इन्तिक़ाल के वक़्त वसिय्यत फ़रमाई थी : "एक दिन हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ाजत के लिये तशरीफ़ ले गए। मैं लोटा ले कर हमराहे रिकाब सआ़दत मआब हुवा हुज़ूरे पुर नूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना पहना हुवा एक कुर्ता मुझे बत़ौरे इन्आ़म अ़त़ा फ़रमाया, वोह कुर्ता मैं ने आज के लिये संभाल रखा था। और एक रोज़ हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने नाख़ुन व मूए मुबारक तराशे, वोह मैं ने ले कर इस दिन के लिये संभाल रखे थे, जब मैं मर जाऊं तो क़मीसे पुर तक़्दीस को मेरे कफ़न में रखना और मूए मुबारक व नाख़ुनहाए मुक़द्दसा को मेरे मुंह और आंखों और पेशानी वग़ैरा मवाज़ेए सुजूद पर रख देना।" (الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، معاویہ بن سفیان، ج۳، ص ۴۷۳)

तबर्रुकात रखने का त़रीक़ा

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الرَّحۡمٰن फ़रमाते हैं : "**श-ज-रए त़य्यिबा** (और दीगर तबर्रुकात) **क़ब्र** में त़ाक़ बना कर रखें ख़्वाह सिरहाने कि नकिरैन

पाइंती की त़रफ़ से आते हैं उन के पेशे नज़र हो, ख़्वाह जानिबे क़िब्ला कि मय्यित के पेश रू (या'नी सामने) रहे और इस के सुकून व इत़्मीनान व इआ़नते जवाब का बाइ़ष हो।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 9, स.134)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मैं भी ग़ुलामे अ़ली हूं

एक बार **अमीरुल मोअमिनीन** हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تعالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيم के आज़ाद शुदा ग़ुलाम यज़ीद बिन उ़मर बिन मोरिक़ उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ العَزِيز ने दरयाफ़्त फ़रमाया : तुम किस त़-बक़े से तअ़ल्लुक़ रखते हो ? बोले : मैं मौला बनी हाशिम में हूं और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيم का नाम लिया, तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعالٰی عَلَيْه की आंखों में आंसू जारी हो गए और कहा कि मैं ख़ुद ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تعالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيم का ग़ुलाम हूं क्यूंकि रसूलुल्लाह صَلَّى الله تَعالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि मैं जिस का मौला हूं अ़ली भी उस के मौला है। फिर अपने वज़ीर मुज़ाह़िम से पूछा कि इस क़िस्म के लोगों को क्या वज़ीफ़ा देते हो ? उन्हों ने कहा : 100 या 200 दिरहम। फ़रमाया : विलायते अ़ली की बिना पर इस को पचास दीनार दिया करो। (سیرت ابن جوزی ص ۲۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

अमीरुल मोअमिनीन का रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहना

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز से एक मरतबा पूछा गया : مَا تَشْتَھِی *या'नी आप की क्या ख़्वाहिश है ?* फ़रमाया : مَا یَقْضِی اللّٰہُ *या'नी जो **अल्लाह** तआ़ला का हुक्म हो ।*

(احیاء العلوم، ج ۱ ص ۲۶)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह तआ़ला की रिज़ा पर राज़ी रहना सआ़दत मन्दों का शैवा है, और क्यूं न हो कि हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم येह दुआ़ मांगा करते थे : या **अल्लाह** मैं तुझ से तन्दुरुस्ती, पाक दामनी, अमानत दारी, अच्छे अख़्लाक़ और तक़्दीर पर रिज़ा मांगता हूं । (کتاب الادب للبخاری، ص ۸۶، الحدیث ۳۰۷)

इस पर मेरी रह़मत है

रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहने वाले को बेश बहा ब-र-कतें मिलती हैं ! चुनान्चे हुज़ूरे अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बन्दा **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा तलाश करता रहता है, इसी जुस्त-जू में रहता है, **अल्लाह** तआ़ला जिब्रील से फ़रमाता है कि फ़ुलां मेरा बन्दा मुझे राज़ी करना चाहता है आगाह रहो कि उस पर मेरी रह़मत है । तब ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام कहते हैं : फ़ुलां पर **अल्लाह** की रह़मत है, येही बात ह़ामिलीने अ़र्श फ़िरिश्ते कहते हैं, येही उन के इर्द गिर्द के फ़िरिश्ते कहते हैं ह़त्ता कि सातवें आसमान वाले येह कहने लगते हैं फिर येह रह़मत उस शख़्स के लिये ज़मीन पर नाज़िल होती है ।

(مسند احمد، الحدیث ۲۲۴۶۴، ج ۸، ص ۳۲۸)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان इस ह़दीषे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : "(बन्दा **अल्लाह** की रिज़ा तलाश करता रहता है) इस त़रह़ कि अपने दीनी व दुन्यावी कामों से रब तआ़ला की रिज़ा चाहता है कि खाता, पीता, सोता, जागता भी है तो रिज़ाए इलाही के लिये, नमाज़ व रोज़ा तो बहुत ही दूर है ख़ुदा तआ़ला उस की तौफ़ीक़ नसीब करे।" ह़दीषे पाक के इस ह़िस्से कि "इस पर मेरी रह़मत है" की वज़ाह़त करते हुए लिखते हैं : या'नी इस पर मेरी कामिल रह़मत है इस त़रह़ कि मैं उस से राज़ी हो गया, ख़याल रहे कि **अल्लाह** की रिज़ा तमाम ने'मतों से आ'ला ने'मत है, जब रब तआ़ला बन्दे से राज़ी हो गया तो कौनैन (या'नी दोनों जहान) बन्दे के हो गए, आसमानों में उस के नाम की धुम मच जाती, शोर मच जाता है कि "رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ" येह कलिमए दुआ़इया है, या'नी **अल्लाह** तआ़ला उस पर रह़मत करे, येह दुआ़ या तो फ़िरिश्तों की मह़ब्बत की वजह से होती है या ख़ुद वोह फ़िरिश्ते अपना क़ुर्बे इलाही बढ़ाने के लिये येह दुआ़एं देते हैं, अच्छों को दुआ़एं देना क़ुर्बे इलाही का ज़रीआ़ हैं जैसे हमारा दुरूद शरीफ़ पढ़ना। (मिरआत, जि. 3 स. 389)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

नर्मी का फ़ाएदा

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز फ़रमाया करते थे : وَمَا رَفَقَ عَبْدٌ بِعَبْدٍ فِی الدُّنْیَا إِلاَّ رَفَقَ اللّٰہُ بِہٖ یَوْمَ الْقِیَامَةِ *या'नी जो शख़्स दुन्या में दूसरों पर नर्मी करता है बरोज़े क़ियामत* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *उस पर नर्मी फ़रमाएगा।* (سیرت ابن جوزی،ص ۲۴۳)

“नर्मी” के चार हुरूफ़ की निस्बत से नर्मी की फ़ज़ीलत पर

4 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

{1} “ اِنَّ الرِّفْقَ لَا يَكُونُ فِي شَيْءٍ اِلَّا زَانَهُ وَلَا يُنْزَعُ مِنْ شَيْءٍ اِلَّا شَانَهُ या'नी नर्मी जिस चीज़ में होती है उसे ज़ीनत बख़्शती है और जिस चीज़ से नर्मी छीन ली जाती है उसे ऐबदार कर देती है।” (مسلم، کتاب البر والصلۃ، الحدیث ۲۵۹۲، ص ۱۳۹۸)

{2} اِنَّ اللّٰهَ عَزَّ وَجَلَّ لَيُعْطِي عَلَى الرِّفْقِ مَا لَا يُعْطِي عَلَى الْخُرْقِ وَاِذَا اَحَبَّ اللّٰهُ عَبْدًا اَعْطَاهُ الرِّفْقَ مَا مِنْ اَهْلِ بَيْتٍ يُحْرَمُوْنَ الرِّفْقَ اِلا قَدْ حُرِمُوْا

या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नर्मी पर वोह इन्आ़म अ़त़ा फ़रमाता है जो जहालत व ह़माक़त पर अ़त़ा नहीं फ़रमाता है और जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे से मह़ब्बत फ़रमाता है तो उसे नर्मी अ़त़ा फ़रमाता है और जो घर नर्मी से मह़रूम रहा वो मह़रूम ही है।

(المعجم الکبیر، مسند جریر بن عبد اللہ، الحدیث ۲۲۷۴، ج ۲، ص ۳۰۶)

{3} “اَلَا اُخْبِرُكُمْ بِمَنْ يَحْرُمُ عَلَى النَّارِ اَوْ بِمَنْ تَحْرُمُ عَلَيْهِ النَّارُ عَلٰى كُلِّ قَرِيبٍ هَيِّنٍ سَهْلٍ या'नी क्या मैं तुम्हें उस शख़्स के बारे में ख़बर न दूं जो जहन्नम पर ह़राम है, (या येह फ़रमाया कि) जिस पर जहन्नम ह़राम है? जहन्नम हर नर्म ख़ू नर्म दिल और अच्छी ख़ू वाले शख़्स पर ह़राम है।”

(ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، رقم باب ۴۵، الحدیث ۲۴۹۶، ج ۴، ص ۲۲۰)

{4} "مَنْ اُعْطِیَ حَظَّهٗ مِنَ الرِّفْقِ فَقَدْ اُعْطِیَ حَظَّهٗ مِنَ الْخَیْرِ وَمَنْ حُرِمَ حَظَّهٗ مِنَ الرِّفْقِ فَقَدْ حُرِمَ حَظَّهٗ مِنَ الْخَیْرِ"

या'नी जिसे नर्मी में से हिस्सा दिया गया उसे भलाई में से हिस्सा दिया गया और जो नर्मी के हिस्से से महरूम रहा वोह भलाई में से अपने हिस्से से महरूम रहा।" (ترمذی،کتاب البر والصلۃ، باب فی الرفق،الحدیث ۲۰۲۰،ج ۳،ص ۴۰۷)

है फ़लाहो कामरानी नर्मी व आसानी में
हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

वालिदैन के ना फ़रमान के साथ तअ़ल्लुक़ न जोड़ना

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ने एक मरतबा किसी को नसीहत फ़रमाई : वालिदैन के ना फ़रमान से हरगिज़ दोस्ती न करना क्यूंकि जिस ने अपने मां बाप से क़त्ए़ रेहूमी की वोह तुम से क्यूं कर हुस्ने सुलूक करेगा ?

(سیرت ابن جوزی ص ۲۴۶)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस म-दनी फूल में वालिदैन के ना फ़रमानों के लिये इ़ब्रत ही इ़ब्रत है, वालिदैन की फ़रमां बरदारी का इन्आ़म और ना फ़रमानी का अन्जाम मुला-हज़ा हो, चुनान्चे

जन्नत या जहन्नम का दरवाज़ा

सुल्ताने दो जहान صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जिस ने इस ह़ाल में सुब्ह़ की, कि अपने मां बाप का फरमां बरदार है, उस के लिये सुब्ह़ ही को जन्नत के दो दरवाज़े खुल जाते हैं और मां बाप में से एक ही हो तो एक दरवाज़ा खुलता है। और जिस ने इस ह़ाल में शाम की, कि मां बाप के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी करता है उस के लिये सुब्ह़ ही को जहन्नम के दो दरवाज़े खुल जाते हैं और (मां बाप में से) एक हो तो एक दरवाज़ा खुलता है। एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : अगर्चे मां बाप उस पर ज़ुल्म करें। फ़रमाया : अगर्चे ज़ुल्म करें, अगर्चे ज़ुल्म करें, अगर्चे ज़ुल्म करें।"[1]

(شُعَبُ الْاِیمان ج۶ص۲۰۶حدیث۷۹۱۶)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

ग़फ़्लत भी एक त़रह़ से ने'मत है

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने फ़रमाया : اِنَّمَا جَعَلَ اللّٰہُ ھٰذِہِ الْغَفْلَۃَ فِیْ قُلُوْبِ الْعِبَادِ رَحْمَۃً کَیْلَا یَمُوْتُوْا مِنْ خَشْیَۃِ اللّٰہِ تَعَالٰی *या'नी* ***अल्लाह*** *तआ़ला ने ग़फ़्लत को अपने ख़ाइफ़ीन (या'नी ख़ौफ़ रखने वाले बन्दों) के दिलों के लिये रह़मत बनाया है ताकि वोह ख़ौफ़े ख़ुदा से मर ही न जाएं।* (احیاء العلوم، ج۴ص۲۲۸)

---

1 : वालिदैन के हुक़ूक़ के बारे में ज़रूरी मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना के मत़बूआ़ रिसाले "समुन्दरी गुम्बद" का मुत़ा-लआ़ कीजिये।

हक़ीक़ी मा'नों में ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले को खाने पीने और सोने में लुत्फ़ आ ही नहीं सकता, शायद इसी वजह से उन की तवज्जोह कुछ देर के लिये दुन्यावी कामों की त़रफ़ कर दी जाती है, इस म–दनी फूल की वज़ाह़त आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के फ़रमान से भी होती है, चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक–त–बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 561 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "मलफ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत" के सफ़्ह़ा 496 पर है : अकाबिर औलिया पर भी अक़्ल व शुर्बो नौम (या'नी खाने, पीने और सोने) के वक़्त एक गोना (या'नी चन्द लम्ह़ों के लिये) ग़फ़लत दी जाती है वरना खाने पीने पर क़ादिर न हों।

(मलफ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत स. 496)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ए'तिराफ़े ज़हानत

एक वफ़्द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمة اللّٰهِ العَزِیز की ख़िदमत में आया, एक नौ जवान गुफ़्त–गू करने के लिये खड़ा हुवा तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : किसी बड़े को बात करने दो। उस ने अ़र्ज़ की : या **अमीरल मोअमिनीन** ! अगर उ़म्र का ज़ियादा होना ही मे'यार है तो आप की जगह भी किसी बड़ी उ़म्र वाले को होना चाहिये था। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उस का ज़हानत भरा जवाब सुन कर उसे बोलने की इजाज़त दे दी। (احیاء العلوم، ج ۴ ص ۱۰۴)

जल्द इत़ाअ़त का इन्आ़म

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمة اللّٰهِ العَزِیز ने फ़रमाया कि जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़िरिश्तों को हुक्म दिया कि आदम (عَلَیْهِ السَّلام) को सजदा करें तो सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना

इसराफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام ने सजदा किया इस का इन्आ़म येह मिला कि उन की पेशानी पर कुरआने करीम लिखा गया। (سیرت ابن جوزی ص ٢٧٤)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अमीरुल मोअमिनीन और ज़बान का कुफ़्ले मदीना

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने फ़रमाया : مَنْ لَّمْ يَعُدَّ كَلَامَهٗ مِنْ عَمَلِهٖ كَثُرَتْ ذُنُوْبُهٗ *या'नी जो शख़्स अपने कलाम को अ़मल में शुमार नहीं करता उस के गुनाह बढ़ जाते हैं।* (سیرت ابن جوزی ص ٢٤٩)

त़न्ज़ व मिज़ाह़ करने वालों पर इन्फ़िरादी कोशिश

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز मज़ाक़ मस्ख़री को अच्छी निगाह से नहीं देखते थे, एक बार ख़ानदाने बनू उमय्या के चन्द लोग जम्अ़ हुए और उन के सामने ज़राफ़त आमेज़ गुफ़्त-गू शुरूअ़ कर दी तो फ़रमाया : "क्या तुम लोग इसी लिये जम्अ़ हुए हो ? अपनी महफ़िलों में कुरआने मजीद के मु-तअ़ल्लिक़ गुफ़्त-गू करो, वरना कम अज़ कम शरीफ़ाना बातें तो ज़रूर होना चाहिये।" (سیرت ابن جوزی ص ٧٧ ملخصا) एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया : आपस में हंसी मज़ाक़ से बचो क्यूंकि येह दिल में कीना और खोट पैदा करता है। (سیرت ابن عبدالحکم ص ١١٤)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सन्जीदगी को अपने मिज़ाज का हिस्सा बना लीजिये और मज़ाक़ मस्ख़री की आदत पालने से परहेज़ करें। लेकिन याद रहे कि रोनी सूरत बनाए रखने का नाम सन्जीदगी नहीं

और न ही ब क़-दरे ज़रूरत गुफ़्त-गू करना या कभी कभार (जाइज़) मिज़ाह़ कर लेना और मुस्कराना सन्जीदगी के मुनाफ़ी है। हां ! कषरते मिज़ाह़ और ज़ियादा हंसने से परहेज़ करें कि इस से वक़ार जाता रहता है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि "जो शख़्स ज़ियादा हंसता है, उस का दबदबा और रो'ब चला जाता है और जो आदमी (कषरत से) मिज़ाह़ करता है वोह दूसरों की नज़रों से गिर जाता है।"(احیاء العلوم ج۳،ص ۲۸۳) मिज़ाह़ भी ऐसा होना चाहिये जिस कि वजह से किसी गुनाह का इरतिकाब न करना पड़े म-षलन किसी का दिल दुखाना या ग़ीबत करना या झूट बोलना वग़ैरा। सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "एक शख़्स कोई ऐसी बात कहता है जिस के ज़रीए वोह अपने पास बैठने वालों को हंसाता है, लेकिन वोह उसे आसमान के ज़मीन से फ़ासिले से भी ज़ियादा फ़ासिले तक दूर जहन्नम में ले जाएगी।" (مجمع الزوائد، ج۸،ص ۱۷۹، رقم:۱۳۱۴۹)

शोरो गुल को ना पसन्द फ़रमाते

ह़ज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز मतानत और सन्जीदगी की वजह से शोरो गुल को निहायत ना पसन्द करते थे। एक बार एक शख़्स ने उन के पास बुलन्द आवाज़ से गुफ़्त-गू की तो फ़रमाया : اِخْفِضْ مِنْ صَوْتِكَ فَاِنَّمَا يَكْفِى الرَّجُلَ مِنَ الْكَلَامِ قَدْرَ مَا يُسْمِعُ *या'नी अपनी आवाज़ पस्त रखो क्यूंकि इन्सान के लिये इतनी आवाज़ से बात करना काफ़ी है कि उस की बात उस का हम नशीन सुन ले।*

(سیرت ابن جوزی ص ۷۷)

शर्मो ह़या का पैकर

जिन आ'ज़ा के नाम लेने से शर्म आती है ह़ज़रते सय्यिदुना

उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز उन का नाम नहीं लेते थे, एक बार बग़ल में फोड़ा निकला, लोगों ने पूछा : कहां फोड़ा निकला है ? फ़रमाया मेरे हाथ के बत़न में। (سیرت ابن جوزی ص ۷۸)

ख़ामोश त़ब्अ़ की सोह़बत में रहो

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ने फ़रमाया : जब तुम किसी ख़ामोश त़ब्अ़ और लोगों से दूर रहने वाले शख़्स को देखो तो उस के क़रीब हो जाओ क्यूंकि वोह ह़कीम (या'नी ह़िक्मत वाला) होगा। (سیرت ابن جوزی ص ۲۴۸)

ज़बान ख़ज़ाने की चाबी है

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ने फ़रमाया :

اَلْقُلُوْبُ اَوْعِیَۃُ السَّرَائِرِ وَالْاَلْسِنُ مَفَاتِیْحُھَا ، فَلْیَحْفَظْ کُلُّ امْرِءٍ مِّنْکُمْ مِفْتَاحَ وِعَاءِ سِرِّہٖ

या'नी दिल राज़ों का ख़ज़ाना और ज़बान उस की चाबी है लिहाज़ा हर एक को चाहिये कि वोह ख़ज़ाने की चाबी की ह़िफ़ाज़त करे। (سیرت ابن جوزی ص ۲۷۷)

बोलने वाला फ़ाएदे में रहा

एक आ़लिमे दीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز के पास तशरीफ़ ले गए तो दौराने गुफ़्त-गू फ़रमाने लगे कि इ़ल्म होने के बा वुजूद ख़ामोश रहने वाला और इ़ल्म होते हुए बोलने वाला दोनों बराबर हैं। हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ने फ़रमाया : मगर मेरा ख़याल येह है कि

बोलने वाला अफ़्ज़ल है क्यूंकि उस ने लोगों को नफ़्अ़ पहुंचाया जब कि ख़ामोश रहने वाले का फ़ाएदा सिर्फ़ उसी की ज़ात को पहुंचा।

(سیرت ابن جوزی ص ۲۲۰)

भलाई का सिखाना ख़ामोशी से बेहतर है

फ़रमाने **मुस्तफ़ा** صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है : "तन्हाई बुरे हम नशीन से बेहतर है, अच्छा हम नशीन तन्हाई से बेहतर है, भलाई का सिखाना ख़ामोशी से बेहतर है और बुराई की ता'लीम से ख़ामोशी बेहतर है।" (مشکوۃ المصابیح، کتاب الادب، رقم ۴۸۶۴، ج ۳، ص ۴۵)

कलाम को अपने अ़मल में शुमार करने का फ़ाएदा

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने एक ख़त़ में ह़म्दो सलात के बा'द लिखा :

مَنْ عَدَّ کَلَامَہٗ مِنْ عَمَلِہٖ، قَلَّ کَلَامُہٗ اِلَّا فِیْمَا یَنْفَعُہٗ *या'नी जो अपने कलाम को अ़मल में शुमार करता है वो सिर्फ़ नफ़्अ़ बख़्श गुफ़्त-गू करता है।* (سیرت ابن جوزی ص ۲۴۲)

ज़बान की ह़िफ़ाज़त

हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز से बढ़ कर अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने वाला शख़्स नहीं देखा।

(سیرت ابن جوزی ص ۱۹۳)

दुआ़ देने को भी सलीक़ा चाहिये

एक शख़्स हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز के पास आया और कहा تَصَدَّقَ عَلَیَّ ، تَصَدَّقَ اللّٰہُ عَلَیْکَ بِالْجَنَّۃِ

*या'नी आप मुझ पर स-दक़ा कीजिये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जन्नत में आप पर स-दक़ा करेगा ।* आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस की इस्लाह़ करते हुए फ़रमाया : إِنَّ اللّٰهَ لَا يَتَصَدَّقُ ، وَلٰكِنَّ اللّٰه يَجْزِى الْمُتَصَدِّقِيْنَ *या'नी बेशक **अल्लाह** तआ़ला स-दक़ा नहीं करता बल्कि स-दक़ा करने वालों को जज़ा अ़ता फ़रमाता है ।* (درمنثور ج۴ ص۵۷۷)

त़वील नहीं पाकीज़ा ज़िन्दगी की दुआ़ दो

हज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन यह़्या رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز के पास बैठा हुवा था, एक आदमी आया और आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को मुख़ात़ब कर के कहने लगा : "اَبْقَاكَ اللّٰهُ يَا اَمِيْرَالْمُوْمِنِيْنَ مَادَامَ الْبَقَاءُ خَيْرًا لَّكَ *या'नी या **अमीरल मोअमिनीन अल्लाह** तआ़ला आप को उस वक़्त तक ज़िन्दा रखे जब तक ज़िन्दा रहने में आप के लिये भलाई हो ।"* मगर हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने फ़रमाया : मुझे यूं दुआ़ दो : "اَحْيَاكَ اللّٰه حَيَاةً طَيِّبَةً وَّتَوَفَّاكَ مَعَ الْاَبْرَارِ *या'नी **अल्लाह** तआ़ला तुम्हें पाकीज़ा ज़िन्दगी अ़त़ा करे और अच्छों के साथ ह़श्र करे ।"* (سیرت ابن جوزی ص۲۷۷)

यक्सूई से दुआ़ मांगो

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز एक ऐसे शख़्स के पास से गुज़रे जो अपने हाथ में मौजूद कंकरियों से खेलते हुए येह दुआ़ कर रहा था : اَللّٰهُمَّ زَوِّجْنِى مِنَ الْحُوْرِ الْعِيْن

या'नी या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ *! हूराने ऐन से मेरे निकाह़ करवा दे ।* आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَیْه उस के पास खड़े हो गए और फ़रमाया : कंकरियां फेंक कर ख़ालिस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मु-तवज्जेह हो कर दुआ़ क्यूं नहीं करते ?[1] (سیرت ابن جوزی ص ۷۹)

बोलने में रुकावट

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِیز के कातिब नुऐ़म बिन अ़ब्दुल्लाह फ़रमाते हैं कि आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते : फ़ख़्र व मुबाहात में मुब्तला होने का ख़ौफ़ मुझे ज़ियादा बोलने से रोक देता है । (سیرت ابن جوزی ص ۱۹۵)

तीन नुक़्सान देह आ़दतें

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِیز ने हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन का'ब رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَیْه से दरयाफ़्त किया : कौन सी आ़दतें इन्सान को नुक़्सान पहुंचाती हैं ? उन्हों ने फ़रमाया : كَثْرَةُ كَلَامِهٖ ، وَاِفْشَاءُ سِرِّهٖ ، وَالثِّقَةُ بِكُلِّ وَاحِدٍ *या'नी बहुत ज़ियादा बोलना, अपना राज़ किसी पर ज़ाहिर कर देना और हर एक पर ए'तिमाद कर लेना ।*

(باب السلک فی طبائع الملک، السیاسۃ الثانیۃ، ص ۲۷۹)

जाहिल कौन ?

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِیز ने फ़रमाया : जब भी किसी जाहिल से तुम्हारा वास्त़ा पड़ेगा तुम उस में

مدینہ

1 : दुआ़ के आदाब व फ़ज़ाइल जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 318 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "फ़ज़ाइले दुआ़" का ज़रूर मुत़ा-लआ़ कीजिये ।

दो ख़स्लतें ज़रूर पाओगे : كَثْرَةُ الْاِلْتِفَاتِ وَسُرْعَةُ الْجَوَابِ *या'नी बहुत ज़ियादा इधर उधर देखना और हर बात का जल्दी जल्दी जवाब दे देना।*

(آداب الشرعیۃ، فصل فی حسن الخلق، ج۲ ص ۳۱۱)

बयान रोक दिया

हज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि एक रात हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللهِ الْعَزِيز बयान फ़रमा रहे थे कि उन की नज़र एक शख़्स पर पड़ी जो बयान से मु-तअष्षिर हो कर ज़ारो कि़त़ार आंसू बहा रहा था, येह देख कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक दम ख़ामोश हो गए, मैं ने अ़र्ज़ की : या **अमीरल मोअमिनीन** आप बयान जारी रखिये ताकि सुनने वालों को फ़ाएदा पहुंचे तो फ़रमाया : मैमून ! कलाम करना भी एक आज़माइश है और कुछ कहने से कर के दिखाना अफ़्ज़ल है। (طبقات ابن سعد، ج۵، ص ۲۸۸، ملخصًا)

कम गोई की आदत

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللهِ الْعَزِيز अकषर फ़रमाया करते : मुझे येह पसन्द नहीं कि बोलने के बदले मुझे इतना कुछ मिल जाए (या'नी मुझे ख़ामोशी पसन्द है)। (سیرت ابن عبد الحکم ص ۲۴)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने ज़बान की हि़फ़ाज़त (कुफ़्ले मदीना) के ह़वाले से हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللهِ الْعَزِيز के अ़त़ा कर्दा म-दनी फूल मुला-ह़ज़ा किये, इस में कोई शक नहीं कि ज़बान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा कर्दा ने'मतों में से एक अ़ज़ीम ने'मत है। इस ज़बान के ज़रीए नेकियां भी कमाई जा

सकती है और येही ज़बान हमें जहन्नम की गहराइयों में भी पहुंचा सकती है। अफ़सोस ! फ़ी ज़माना ज़बान की हिफ़ाज़त का तसव्वुर तक़रीबन मफ़्क़ूद हो चुका है, हमें एहसास ही नहीं है कि गोश्त का येह छोटा सा टुकड़ा जो दो होंटो और दो जबड़ों और 32 दांतों के पहरे में है, किस त़रह़ हमारे पूरे वुजूद को दुन्यवी व उख़रवी मसाइब में मुब्तला करवा सकता है, जैसा कि **मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमियान** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़िक्मत निशान है कि "बन्दा ज़बान से भलाई का एक कलिमा निकालता है ह़ालांकि वोह उस की क़-दरो क़ीमत नहीं जानता तो इस के बाइ़ष **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत तक अपनी रिज़ामन्दी लिख देता है, और बेशक एक बन्दा अपनी ज़बान से एक बुरा कलिमा निकालता है और वोह उस की ह़क़ीक़त नहीं जानता तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस की बिना पर उस के लिये क़ियामत तक की अपनी नाराज़ी लिख देता है।"

(ترمذی، کتاب الزھد، باب فی قلۃ الکلام، ج۴، ص۱۴۳، الحدیث ۲۳۲۶)

ख़ामोशी बाइ़षे नजात है

नबियों के सरवर, शाहे बह़्रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : *"مَنْ صَمَتَ نَجَا या'नी जो ख़ामोश रहा उस ने नजात पाई।"*

(ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، رقم:۲۵۰۹، ج۴، ص۲۲۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई कम बोलने वाला फ़ाएदे में रहता है, हम में से हर एक को ग़ौर करना चाहिये कि हम बोल कर बारहां पछताए होंगे क्या कभी ख़ामोश रह कर भी पछताए ? *ऐ काश ! हमें ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना नसीब हो जाए।*

आप ख़ामोश क्यूं हैं ?

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْھُما से मरवी है कि जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना **आदम सफ़िय्युल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को ज़मीन पर उतारा तो आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की कषीर अवलाद हुई। एक दिन आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बेटे, पोते और पड़ पोते सब आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के इर्द गिर्द जम्अ़ हो कर बाते करने लगे मगर हज़रते सय्यिदुना **आदम सफ़िय्युल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام बिलकुल ख़ामोश थे, अवलाद ने पूछा : "आप हम से बातचीत क्यूं नहीं फ़रमाते, ख़ामोश क्यूं हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "मेरे बच्चो ! जब से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे अपने जवार से ज़मीन की तरफ़ उतारा है, उस ने मुझ से अ़हद लिया है कि "ऐ आदम ! **कम बोलना** यहां तक कि तुम मेरे जवार की तरफ़ जन्नत में लौट आओ" ।"

(تاریخ دمشق ج۷ص۴۴۷)

कलाम की अक़्साम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़बान की मुकम्मल हिफ़ाज़त उसी वक़्त मुमकिन है जब हमें कलाम की अक़्साम और उन के अह़काम मा'लूम हों। हर कलाम की बुन्यादी तौ़र पर चार अक़्साम होती है : (1) वोह कलाम जिस में नुक़्सान ही नुक़्सान है, जैसे किसी को गाली देना, फ़ोह़्श कलामी करना वग़ैरा (2) वोह कलाम जिस में नफ़्अ़ ही नफ़्अ़ हो म-षलन तिलावते क़ुरआन करना, दुरूदे पाक पढ़ना, ना'त पढ़ना, **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ करना, किसी को नेकी की दा'वत देना वग़ैरा (3) वोह कलाम जो बा'ज़ सूरतों में नफ़्अ़ बख़्श है और बा'ज़ सूरतों में

नुक़्सान देह जैसे किसी मुक़्तदा (म-षलन पीर या उस्ताज़) का अपनी नेकियों को इस निय्यत से ज़ाहिर करना कि लोग उस की पैरवी में उन नेकियों को अपनाने की त़रफ़ राग़िब होंगे लेकिन अगर उस ने अपनी वाह वाह करवाने की निय्यत से नेकियां ज़ाहिर कीं तो येह कलाम उसे नुक़्सान पहुंचाएगा। (4) वोह कलाम जिस में न तो कोई नफ़्अ़ हो और न ही नुक़्सान, उसे फ़ुज़ूल गोई भी कहा जाता है जैसे मोसिम वग़ैरा पर तबसेरा करना म-षलन आज बड़ी गर्मी है, या ऐसे सुवालात करना जिस से न कोई दुन्यावी फ़ाएदा ह़ासिल हो और न ही उख़रवी म-षलन ट्राफ़िक सिग्नल न जाने कब खुलेगा ?

ख़ामोश रहने की आ़दत कैसे बनाएं ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ामोश रहने की आ़दत बनाने के लिये इन म-दनी फूलों पर अ़मल करना बेह़द मुफ़ीद होगा : (1) लिख कर गुफ़्त-गू करने की कोशिश करें क्यूंकि इस में नफ़्स के लिये मशक़्क़त है और नफ़्स मशक़्क़त से बहुत घबराता है। चुनान्चे हमारी गुफ़्त-गू मह़ज़ ज़रूरत तक मह़दूद रहेगी। ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡغَفَّار फ़रमाते हैं : "अगर लोगों को लिख कर गुफ़्त-गू करने का मुकल्लफ़ बनाया जाता तो येह बहुत कम गुफ़्त-गू करते।" (موسوعہ ابن ابی الدنیا،ج۷،ص۵۸) इस सिलसिले में एक म-दनी पेड़ और क़लम हर वक़्त अपनी जेब में रखिये और कम बोलने की आ़दत बनाने के लिये रोज़ाना कुछ न कुछ बात चीत लिख कर कीजिये।

(2) इशारे से गुफ़्त-गू करना भी ज़बान को कषरते कलाम का आ़दी होने से बचाने के लिये बेहद मुफ़ीद है। (3) अगर कभी ज़बान से फ़ुजूल बात निकल जाए तो इस पर नादिम हो कर दुरूदे पाक पढ़िये और नफ़्अ़ से महरूमी का इज़ाला करने की कोशिश कीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुरूदे पाक की ब-रकत से फ़ुजूल गोई से नजात मिल ही जाएगी।

अल्लाह हमें कर दे अ़ता क़ुफ़्ले मदीना — हर एक मुसलमान ले लगा क़ुफ़्ले मदीना

या रब न ज़रूरत के सिवा कुछ कभी बोलूं — अल्लाह ज़बां का हो अ़ता क़ुफ़्ले मदीना

(वसाइले बख़्शिश, स.114)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

ह़ासिद ज़ालिम भी मज़्लूम भी

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने फ़रमाया : मैं ने ह़ासिद के इलावा कोई ऐसा नहीं देखा जो ज़ालिम भी हो और मज़्लूम भी क्यूंकि वोह त़वील ग़म और अपने आप को थका देने वाले काम (या'नी ह़सद) में मसरूफ़ हो जाता है।

(الرسالۃ القشیریۃ، باب الحسد، ج۱ ص ۲۷)

ह़सद किसे कहते हैं

"**ह़सद**" का मा'ना है किसी से ने'मत के छीन जाने की तमन्ना करना। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 4, स. 428)

ह़सद नेकियों को खा जाता है

सरकारे वाला तबार, बे कसों के मदद गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "ह़सद नेकियों को इस त़रह़ खा जाता है

जिस त़रह़ आग लकड़ियों को खा जाती है और स-दक़ा गुनाहों को इस त़रह़ मिटा देता है जिस त़रह़ पानी आग को बुझा देता है, नमाज़ मोमिन का नूर है और रोज़े ढाल हैं।" (ابن ماجہ ج۴ص ۴۷۳، الحدیث ۴۲۱۰)

ह़सद के चार द-रजे

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَّان लिखते हैं : **ह़सद के चाद द-रजे हैं :**

पहला येह है कि ह़ासिद दूसरों की ने'मत का ज़वाल चाहे कि ख़्वाह मुझे न मिले मगर इस के पास से जाती रहे, इस क़िस्म का ह़सद मुसलमानों पर गुनाहे कबीरा है और काफ़िर, फ़ासिक़ के ह़क़ में जाइज़ म-षलन कोई मालदार अपने माल से कुफ़्र या ज़ुल्म कर रहा है उस के माल की इस लिये बरबादी चाहना कि दुन्या कुफ़्र व ज़ुल्म से बचे, "जाइज़" है। **दूसरा** द-रजा येह है कि ह़ासिद दूसरे की ने'मत ख़ुद लेना चाहे कि फुलां का बाग़ या उस की जाएदाद मेरे पास आ जाए या उस की रियासत का मैं मालिक बनूं, येह ह़सद भी मुसलमानों के ह़क़ में ह़राम है। **तीसरा** द-रजा येह है कि ह़ासिद इस ने'मत के ह़ासिल करने से ख़ुद तो आ़जिज़ है इस लिये आरज़ू करता है कि दूसरों के पास भी न रहे ताकि वोह मुझ से बढ़ न जाए येह भी मन्अ़ है। **चोथा** द-रजा येह है कि वोह तमन्ना करे कि येह ने'मत औरों के पास भी रहे मुझे भी मिल जाए या'नी औरों का ज़वाल नहीं चाहता, अपनी तरक़्क़ी का ख़्वाहिश मन्द है इसे **ग़िब्त़ा** या **तनाफ़ुस** कहते हैं येह दुन्यवी बातों में मन्अ़ और दीनी बातों में अच्छा और कभी वाजिब भी है, रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है,

وَ فِیْ ذٰلِكَ فَلْیَتَنَافَسِ الْمُتَنٰفِسُوْنَ ﴿۲۶﴾ (پ30، المطففين 26)

(तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और इसी पर चाहिये ललचाएं ललचाने वाले)

ह़दीष शरीफ़ में है कि दो शख़्सों पर ह़सद या'नी **गि़ब्ता़** जाइज़ है, **एक** वोह आ़लिमे दीन जो अपने इ़ल्म से लोगों को फ़ाएदा पहुंचाता हो, **दूसरा** वोह सख़ी मालदार जिस के माल से फ़ैज़ जारी हो।

(بخاری ج۱ص ۴۳، الحدیث ۷۳ ملتقطاً)

ह़सद का इ़लाज

ख़याल रहे कि **ह़सद** एक आ़लमगीर मरज़ है जिस से बहुत कम लोग ख़ाली हैं, इस लिये इस का इ़लाज बहुत ज़रूरी है, इस के सिर्फ़ दो ही इ़लाज हैं : **एक** इ़ल्मी इ़लाज, **दूसरा** अ़-मली इ़लाज।

(1) **इ़ल्मी इ़लाज :** येह है कि ह़ासिद येह अ़क़ीदा रखे कि हर एक चीज़ तक़दीर से होती है और मैं **ह़सद** कर के अपनी बद नसीबी और दूसरों की नेक बख़्ती को बदल नहीं सकता और येह भी जाने कि ह़सद ईमान की आंख का तिन्का और ख़ाक है जैसे कि दिमाग़ की आंख इन चीज़ो से गदली हो जाती है ऐसे ही ह़ासिद का ईमान बल्कि इस के दीनो दुन्या ह़सद से **मुकद्दर** (और ख़राब) हो जाते हैं कि दुन्या में रन्ज और आख़िरत में अ़ज़ाब के सिवा कुछ नहीं मिलता

(2) **अ़-मली इ़लाज :** येह है कि **ह़ासिद** (या'नी ह़सद करने वाला), **मह़सूद** (या'नी जिस से ह़सद हो उस) के साथ त़बीअ़त के ख़िलाफ़ बरताव करे म-षलन अगर दिल चाहता है कि **मह़सूद** की ग़ीबत करूं तो फ़ौरन उस की ता'रीफ़ करने लग जाए अगर नफ़्स कहता है कि **मह़सूद** के सामने अकड़ कर बैठूं तो फ़ौरन उस के सामने आ़जिज़ी व

नर्मी करे, अगर दिल येह कहता है कि इस से नफ़रत करूं तो तकल्लुफ़न उस से महृब्बत करे, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इन इलाजों से बहुत फ़ाएदा होगा और येह भी ख़याल रहे कि बे इख़्तियारी नफ़रत या महृब्बत की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के यहां पकड़ नहीं। (تفسیر کبیر، ج۱، ص۶۴۹، ملخصًا)

हसद के इलाज के लिये कुतुबे **तसव्वुफ़ ख़ुसूसन हुज्जतुल इस्लाम** हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَالِی की किताबें जैसे एहयाउल उ़लूम वग़ैरा का मुता़-लआ़ कीजिये।

हसद, वा'दा ख़िलाफ़ी, झूट, चूग़ली, ग़ीबतो गाली
मुझे इन सब गुनाहों से हो नफ़रत या रसूलल्लाह

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

सब्र मोमिन का मददगार है

जब सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक का बेटा फ़ौत हुवा तो उस ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللہِ العَزِیز से दरयाफ़्त किया : क्या मोमिन इतना सब्र करे कि उसे मुसीबत महसूस ही न हो ? फ़रमाया : पसन्द और ना पसन्द आप के लिये यक्सां नहीं हो सकते मगर इतना ज़रूर है कि सब्र मोमिन का मददगार है। (درمنثور، ج۱، ص۳۱۵)

ना पसन्द काम पर रद्दे अ़मल

इमाम औज़ाई رَحْمَۃُاللہِ تعالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि जब हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللہِ العَزِیز को जब कभी ना पसन्दीदा मुआ़-मला पेश आता तो सब्र करते और फ़रमाते : येह मुक़द्दर में था और अ़न क़रीब हमें भलाई भी मिलेगी। (سیرت ابن جوزی ص۲۷۵)

सब्र ने'मत से अफ़्ज़ल है

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز ने फ़रमाया : जिस शख़्स को कोई ने'मत मिली फिर उस से वापस ले ली गई और उसे सब्र की तौफ़ीक़ दी गई तो येह सब्र उस ने'मत से अफ़्ज़ल है, फिर आप ने येह आयत पढ़ी :

اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۱۰﴾ (پ۲۳،زمر:۱۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : साबिरों ही को उन का षवाब भर पूर दिया जाएगा बे गिनती । (سیرت ابن جوزی ص ۲۴۳)

सब से बेहतर भलाई

आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबिय्यों के ताजवर, महबूबे रब्बे अकबर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''مَنْ يَّصْبِرْ يُصَبِّرْهُ اللّٰهُ وَمَا اُعْطِىَ اَحَدٌ مِّنْ عَطَاءٍ خَيْرٌ وَّ اَوْسَعُ مِنَ الصَّبْرِ *या'नी जो सब्र करना चाहेगा* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *उसे सब्र की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा देगा और सब्र से बेहतर और वुस्अ़त वाली अ़ता किसी पर नहीं की गई ।''* (صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب فضل التعفف والصبر، الحدیث ۱۰۵۳، ص ۵۲۴)

सब्र की तीन क़िस्में

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ''**सब्र**'' की तीन क़िस्में हैं : (1) मुसीबत में **सब्र** (2) इबादत और इत़ाअ़त की मशक़्क़तों पर **सब्र** (3) नफ़्स को गुनाह की त़रफ़ जाने से रोकने पर **सब्र**, म-षलन मुसीबत

में बे क़रारी और बेचैनी के इज़्हार को जी चाहा मगर दिल को क़ाबू में रखा और कोई शिक्वा व शिकायत ज़बान पर न लाए बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहे तो येह पहली क़िस्म का **सब्र** है, सर्दी के मोसिम में ठन्डे पानी से वुज़ू करने की हिम्मत नहीं पड़ती या नमाज़े फ़ज्र में उठने को जी नहीं चाहता मगर दिल पर जब्र कर के इन कामों को कर गुज़रे येह दूसरी क़िस्म का **सब्र** है, इसी त़रह़ हम देखते हैं कि कोई ह़राम के पैसों से ऐ़श कर रहा है हमारा भी दिल ऐ़श को चाहता है मगर दिल को **ह़राम** की त़रफ़ जाने से रोक लिया, येह तीसरी क़िस्म का **सब्र** है।

(احیاء العلوم، ج ۴ ص ۸۲)

दिल के लिये मुफ़ीद शै

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने फ़रमाया : दिल के लिये वोही बात मुफ़ीद है जो दिल से निकले।

(حلیۃ الاولیاء ج ۵ ص ۳۲۱)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی علٰی محمَّد

सांप और बिच्छू से बचने का वज़ीफ़ा

आफ़्रिक़ा के गवर्नर ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز की ख़िदमत में बिच्छू वग़ैरा की शिकायत लिख कर भेजी तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه ने जवाबी मकतूब में लिखा : तुम रोज़ाना सुब्ह़ शाम इस आयते मुबा-रका को अपना वज़ीफ़ा [1] बना लो :

1 : सेंकड़ों अवरादो वज़ाइफ़ और दुआ़ओं के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब “म-दनी पंज सूरह” का मुत़ा-लआ़ बेह़द मुफ़ीद है।

وَمَالَنَآ اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَ قَدْ هَدٰىنَا سُبُلَنَا ؕ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَآ اٰذَيْتُمُوْنَا ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿۱۲﴾

(پ ۱۳، ابراھیم: ۱۲)

*तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और हमें क्या हुवा कि **अल्लाह** पर भरोसा न करें उस ने तो हमारी राहें हमें दिखा दीं और तुम जो हमें सता रहे हो हम ज़रूर इस पर सब्र करेंगे और भरोसा करने वालों को **अल्लाह** ही पर भरोसा चाहिये।*

(سیرت ابن جوزی ص ۱۱۵)

एह़सान क़बूल न करो

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने फ़रमाया : لَا تَقْبَلِ الْمَعْرُوْفَ مِمَّنْ لَّا يَصْطَنِعَهٗ اِلٰى اَهْلِ بَيْتِهٖ *या'नी ऐसे शख़्स का एह़सान क़बूल न करो जो अपने घर वालों से हुस्ने सुलूक न करता हो।* (سیرت ابن جوزی ص ۲۴۶)

काम्याब कौन ?

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने फ़रमाया : वोह शख़्स काम्याब हुवा जिस ने अपने आप को मसाइल में उलझने, गुस्सा करने और ह़िर्स से दूर रखा। (حلیۃ الاولیاء ج ۵ ص ۳۲۳)

ह़िर्स किसे कहते हैं ?

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان लिखते हैं : "किसी चीज़ से सैर न होना (या'नी जी न भरना), **हमेशा** ज़ियादती की ख़्वाहिश रखना **ह़िर्स** है।"

(मिरआतुल मनाजीह़, जि.7, स.86)

इन्सान का पेट तो मिट्टी ही भर सकती है

दूसरों की दौलतों और ने'मतों को देख देख कर खुद भी उस को ह़ासिल करने के चक्कर में परेशान ह़ाल रहना और इस मक़्सद के हुसूल के लिये ग़लत़ व सह़ीह़ हर क़िस्म की तदबीरों में दिन रात लगे रहने के पीछे ह़िर्स व लालच का जज़्बा कार फ़रमा होता है और येह दर ह़क़ीक़त इन्सान की एक पैदाइशी ख़स्लत है। चुनान्चे सरकारे **मदीनए मुनव्वरा,** सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

لَوْ كَانَ لِابْنِ آدَمَ وَادِيَانِ مِنْ مَالٍ لَابْتَغَى وَادِيًا ثَالِثًا وَلَا يَمْلَا جُوْفَ ابْنِ آدَمَ إِلَّا التُّرَابُ وَيَتُوبُ اللّٰهُ عَلَى مَنْ تَابَ

*या'नी अगर इन्सान के लिये माल की दो वादियां हों तो वोह तीसरी वादी की तमन्ना करेगा और इन्सान के पेट को **तो सिर्फ़ मिट्टी ही भर सकती है** और जो शख़्स तौबा करता है **अल्लाह** तआ़ला उस की तौबा क़बूल फ़रमाता है।"*

(صحیح مسلم،ص ۵۲۲،حدیث ۱۰۵۰)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़नाअ़त फ़िक़्हे अकबर है

हुरैष बिन उ़षमान अपने बेटे के साथ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللهِ العَزِيز की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो फ़रमाया : अपने बेटे को फ़िक़्हे अकबर सिखाओ। अ़र्ज़ की : फ़िक़्हे अकबर क्या है ? फ़रमाया : اَلْقَنَاعَةُ وَكَفُّ الْاَذٰى *या'नी क़नाअ़त करना और तकलीफ़ पहुंचाने से बाज़ रहना।* (سیرت ابن جوزی ص ۲۷۶)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़नाअ़त येह है कि जो थोड़ा सा मिल जाए उसी को काफ़ी समझे, उसी पर सब्र करे। जो क़नाअ़त करेगा اِن شاءَ اللّٰہ الغفّار عَزَّوَجَلَّ खुश गवार ज़िन्दगी गुज़ारेगा। दिल में दुन्या की **ह़िर्स** जितनी ज़ियादा होगी उतनी ही ज़िन्दगी में बद मज़गी बढ़ेगी, मक़ूला है : اَلْحِرصُ مِفْتاحُ الذُّلِّ *या'नी ह़िर्स, ज़िल्लत की कुंजी है* और اَلْقَنَاعَۃُ مِفْتاحُ الرَّاحَۃِ *या'नी क़नाअ़त, राह़त की कुंजी है।*

कामयाबी का राज़

नबिय्ये मोह़्तरम, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : قَدْ اَفْلَحَ مَنْ أَسْلَمَ وَرُزِقَ كَفَافًا وَقَنَّعَهُ اللّٰهُ بِمَا آتَاهُ *या'नी वोह काम्याब हो गया जो मुसलमान हुवा और ब क़-दरे किफ़ायत रिज़्क़ दिया गया और* **अल्लाह** *तआ़ला ने उसे दिये हुए पर क़नाअ़त दी।* (مسلم،الحدیث۱۰۵۴،ص۵۲۴)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان इस ह़दीषे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी जिसे ईमान व तक़्वा ब क़-दरे ज़रूरत माल और थोड़े माल पर सब्र, येह चार ने'मतें मिल गईं, उस पर **अल्लाह** तआ़ला का बड़ा ही करम व फ़ज़्ल हो गया। वोह काम्याब रहा और दुन्या से काम्याब गया।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7 स. 9)

इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی की नसीह़त

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی नक़्ल करते हैं : **ऐ़श** चन्द घड़ियों का है जो गुज़र जाएगा और चन्द दिनों में ह़ालत बदल जाएगी। अपनी ज़िन्दगी में

क़नाअ़त इख़्तियार कर, राज़ी रहेगा, और अपनी ख़्वाहिश तर्क कर दे, आज़ादी के साथ ज़िन्दगी गुज़ारेगा। कई मरतबा मौत सोने, याक़ूत और मोतियों के सबब (डाकूओं के ज़रीए) आती है। (احیاء العلوم ج ۳ ص ۲۹۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

अमीरुल मोअमिनीन के घर में ख़ास साज़ो सामान न था

एक बार इराक़ से एक ग़रीब औरत ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز के घर आई, जब देखा कि उन के अपने घर में किसी क़िस्म का साज़ो सामान नहीं है तो बोली : मैं इस वीरान घर से अपना घर आबाद करने आई हूं ? ज़ौजए मोह़तरमा ने कहा : तुम्हीं जैसे लोगों के घर की आबादी ने ही इस घर को वीरान कर रखा है। (سیرت ابن عبدالملک ص ۱۴۵)

दाबक़ की रातें

एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने अपनी अहलियाए मोह़तरमा ह़ज़रते फ़ातिमा बिन्ते अ़ब्दुल मलिक رحمۃاللہ تعالٰی علیہا के कन्धे पर हाथ रख कर फ़रमाया : फ़ातिमा ! आज की ब निस्बत दाबक़ की रातों में हम ज़ियादा ऐ़श व राह़त में थे। अ़र्ज़ की : आज आप को जितने इख़्तियारात ह़ासिल हैं इस से पहले कभी नहीं थे (या'नी ऐ़श व राह़त का सामान क्या मुश्किल है ?) येह सुन कर **अमीरुल मोअमिनीन** की चीख़ निकल गई और ग़मनाक लहजे में येह कहते हुए उठ गए :

یَافَاطِمَۃُ! اِنِّیْ اَخَافُ اِنْ عَصَیْتُ رَبِّیْ عَذَابَ یَوْمٍ عَظِیْمٍ *या'नी फ़ातिमा ! अगर मैं अपने परवर्द गार* عَزَّوَجَلَّ *की ना फ़रमानी करूं तो बड़े दिन के अ़ज़ाब से डरता हूं।*

वोह इस पुरदर्द जुम्ले को सुन कर रो पड़ीं और दुआ़ करने लगीं : اَللّٰهُمَّ اَعِذْهُ مِنَ النَّارِ या'नी या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन को दोज़ख़ से नजात दे ।" (سیرت ابن جوزی ص ۲۲۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत को सुन कर फ़क़त़ नारए दादो तह़सीन बुलन्द कर के दिल को ख़ुश कर लेने के बजाए हमें भी तक़्वा और क़नाअ़त का दर्स ह़ासिल करना चाहिये । बिल ख़ुसूस अरबाबे इक़्तिदार व हुकूमती अफ़्सरान और मुख़्तलिफ़ इस्लामी शो'बाजात से वाबस्ता ज़िम्मादारान के लिये इस हिकायत में क़नाअ़त व ख़ुद्दारी अपनाने, ह़िर्स व त़म्अ़ से ख़ुद को बचाने और अपनी आख़िरत को बेहतर बनाने के लिये ख़ूब ख़ूब ख़ूब सामाने इब्रत है । काश ! हम क़लील आमदनी पर क़नाअ़त करते हुए नेकियों में कषरत के तमन्नाई बन जाएं ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ज़ाहिद तो उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ हैं

किसी ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को **"ऐ ज़ाहिद !"** कह कर पुकारा तो उन्हों ने फ़रमाया **"ज़ाहिद"** तो उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) हैं क्यूंकि दुन्या का माल उन के हाथ में है और वोह क़ुदरत रखने के बा वुजूद ज़ोहद को इख़्तियार किये हुए हैं, मैं **"ज़ाहिद"** कहलाने के लाइक़ नहीं । (احیاء العلوم، ج ۴ ص ۲۶۸) इसी त़रह़ का क़ौल ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار से भी मन्क़ूल है कि फ़रमाया :

النَّاس يَقُوْلُوْنَ مَالِكٌ زَاهِدٌ! إِنَّمَا الزَّاهِدُ عُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيْزِ الَّذِىْ أَتَتْهُ الدُّنْيَا فَتَرَكَهَا

या'नी लोग कहते हैं कि मालिक बिन दीनार "ज़ाहिद" है, "ज़ाहिद" तो उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه) हैं जिस के पास दुन्या आई भी तो उन्हों ने तर्क कर दी। (حلیۃ الاولیاء ج۵ ص۲۹۱)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।* اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

ज़ोहद किसे कहते हैं ?

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "दुन्या से बे रग़बती माल को ज़ाएअ़ कर देने और ह़लाल को ह़राम कर देने का नाम नहीं, बल्कि **दुन्या से कनारा कशी** तो येह है कि जो कुछ तेरे हाथ में है वोह उस से ज़ियादा क़ाबिले ए'तिमाद न हो जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पास है।" (جامع الترمذی،کتاب الزھد،الحدیث:۲۳۴۷،ج۴،ص۱۵۲)

दुन्या से बे रग़बती का इन्आ़म

हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : "या ज़ल जलाले वल इकराम ! तूने नेक बन्दों के लिये क्या तय्यार किया है और तू उन्हें क्या बदला अ़त़ा फ़रमाएगा ?" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : "**दुन्या से बे रग़बती** रखने वालों के लिये तो मैं अपनी **जन्नत** को मुबाह़ कर दूंगा वोह इस में जहां चाहें ठिकाना बना लें और अपनी **ह़राम कर्दा चीज़ों से परहेज़** करने वालों को येह इन्आ़म दूंगा

कि जब क़ियामत का दिन आएगा तो में परहेज़ गारों के इ़लावा हर बन्दे से सख़्त ह़िसाब लूंगा क्यूंकि मैं परहेज़ गारों से ह़या करूंगा और उन्हें इ़ज़्ज़त व इकराम से नवाज़ूंगा फिर उन्हें बिग़ैर ह़िसाब जन्नत में दाख़िल फ़रमाऊंगा और **मेरे ख़ौफ़ से रोने** वालों के लिये **रफ़ीक़े आ'ला** होगा जिस में उन का कोई शरीक नहीं होगा।" (مجمع الزوائد ج۱۰ص۵۲۹،الحدیث ۱۸۱۲۵)

कोई ज़ाती इ़मारत ता'मीर नहीं की

मन्सब व वजाहत के ह़ामिल लोग उ़मूमन मह़ल्लात व आ़लीशान मकानात ता'मीर किया करते हैं मगर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने उ़म्र भर ज़ाती हैषिय्यत से कोई इ़मारत ता'मीर नहीं की बल्कि फ़रमाते थे कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत येही है कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ईंट को ईंट पर और शहतीर को शहतीर पर नहीं रखा और इस दुन्या से रुख़्सत हो गए। (سیرت ابن جوزی ص۱۸۰)

एक ईंट भी दूसरी ईंट पर न रखूंगा

यहां तक कि घर में एक ऊंचा कमरा था जिस के ज़ीने की एक ईंट हिलती थी और उतरते चढ़ते वक़्त गिरने का ख़ौफ़ रहता था। एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز के ग़ुलाम ने उस को मिट्टी से जोड़ दिया, इस के बा'द आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ऊपर चढ़े तो उस ईंट की ह़-रकत मह़सूस नहीं हुई, ग़ुलाम से पूछा तो उस ने वाक़ेआ बयान किया, फ़रमाया : मिट्टी को उखेड़ डालो, मैं ने

ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से अ़हद किया था कि जब तक मैं ख़लीफ़ा रहूंगा एक ईंट भी दूसरी ईंट पर न रखूंगा। (سیرت ابن جوزی ص ۱۸۶)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

ग़ैर ज़रूरी ता'मीरात की ह़ौसला शिक्नी

हज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, मालिके कौनो मकान, रसूले ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

"مَا اَنْفَقَ مُؤْمِنٌ مِنْ نَفَقَةٍ اِلاَّ اُجِرَ فِیْھَا اِلَّا نَفَقَتَہٗ فِی ھٰذَا التُّرَابِ *या'नी मुसलमान को हर ख़र्च के इवज़ अज्र दिया जाता है सिवाए इस मिट्टी के।"*

(مشکوٰۃ المصابیح، ج۲، ص۲۴۶، حدیث ۵۱۸۲)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलहाज, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان इस ह़दीष की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : "(अच्छी निय्यत के साथ शरीअ़त के मुत़ाबिक़) खाने, पीने, लिबास वग़ैरा पर ख़र्च करने में षवाब मिलता है कि येह चीज़ें इ़बादात का ज़रीआ़ हैं मगर बिला ज़रूरत मकानात बनाने में कोई षवाब नहीं, लिहाज़ा इमारात साज़ी का शौक़ न करो कि इस में वक़्त और माल दोनों की बरबादी है। **ख़याल रहे!** यहां दुन्यवी इ़मारतें वोह भी बिला ज़रूरत बनाना मुराद हैं। मस्जिद, मद्रसा (مَد۔رَ۔سہ), ख़ानक़ाह, मुसाफ़िर ख़ाने (अच्छी निय्यत के साथ) बनाना तो इ़बादत है कि येह तो स–दक़ाते जारिय्या हैं। यूं ही (अच्छी निय्यत के साथ) ब क़–दरे ज़रूरत मकान

बनाना भी षवाब है कि इस में सुकून से रह कर अल्लाह तआ़ला की इ़बादत करेगा। बा'ज़ लोग देखे गए हैं कि वोह हमेशा मकान के तोड़ फोड़, हर साल नए नुमूने के मकानात बनाने ही में मश्गूल रहते हैं यहां येही मुराद हैं।" (मिरआत शर्हे मिश्कात, जि. 7 स. 19)

ऊंचे ऊंचे मकान थे जिन के तंग क़ब्रों में आज आन पड़े
आज वोह हैं न हैं मकां बाक़ी नाम को भी नहीं है निशां बाक़ी

(माखूज़ अज़ जन्नती महल का सौदा, स. 42)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

हर सफ़र के लिये तोशा लाज़िमी है

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ الْعَزِیز ने एक खुत़्बे में फ़रमाया : हर सफ़र के लिये ज़ादे राह ज़रूरी होता है लिहाज़ा तुम दुन्या से सफ़रे आख़िरत के लिये सामान तय्यार करो, क्या तुम्हें नहीं मा'लूम कि जन्नत और जहन्नम के दरमियान कोई मन्ज़िल नहीं और तुम्हें इन दोनों में से एक में जाना होगा। (حلیۃ الاولیاء ج۵ ص۲۱۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्यावी सफ़र के लिये मुख़्तलिफ़ पहलू सामने रख कर सफ़र की तय्यारी की जाती है कि कहां जाना है ? कब जाना है ? किस चीज़ पर जाना है ? कितनी दूर जाना है ? कितने दिन के लिये जाना है ? ऐ काश इसी त़रह़ हम अपने सफ़रे आख़िरत के लिये भी ख़ूब सोच बिचार किया करें और नेकियां इकठ्ठी करने के लिये कोशां रहें कि इस सफ़र में दुन्यावी साज़ो सामान नहीं बल्कि नेकियां काम आएंगी।

कुछ नेकियां कमा ले जल्द आख़िरत बना ले
कोई नहीं भरोसा ऐ भाई ज़िन्दगी का

(वसाइले बख़्शिश, स.108)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

अमीरुल मोअमिनीन का अफ़्व व दर गुज़र

बदले की भरपूर ताक़त रखते हुए भी किसी के ना ज़ैबा रविय्ये, ना मुनासिब सुलूक या ज़ियादती को बरदाश्त कर जाना बड़े दिल वालों का ही हिस्सा है और इस की बड़ी फ़ज़ीलत है, चुनान्चे कन्ज़ुल उ़म्माल में है कि सरकारे **मदीनए मुनव्वरा,** सुल्ताने मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जो **गुस्सा** पी जाएगा हालांकि वोह नाफ़िज़ करने पर कुदरत रखता था तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस के दिल को अपनी रिज़ा से मा'मूर फ़रमा देगा। (کنزالعُمّال ج۳ص۲۳ احدیث۷۱۶۰)

दो बेहतरीन आ़दतें

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ने फ़रमाया : इ़ल्म के साथ आ़दाते हि़ल्म और कुदरत के साथ अ़फ़्व (या'नी मुआ़फ़ कर देने) की आ़दत मिल जाने से बेहतर कोई शै नहीं है।

(آداب الشرعیۃ، فصل فی حسن الخلق، ج ۲ ص ۲۱۶)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز में येह दोनों आ़दतें ब ख़ूबी मौजूद थीं, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के अफ़्व व दर गुज़र और सब्रो तह़म्मुल की 13 हिकायात मुला-हज़ा हों, चुनान्चे :

(1) सर झुका लिया

हुज्जतुल इस्लाम, हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی नक्ल फ़रमाते हैं : किसी शख़्स ने हज़रते **अमीरुल मोअमिनीन** सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَدِیْر से सख़्त कलामी की। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने सर झुका लिया और फ़रमाया : "क्या तुम येह चाहते हो कि मुझे **गुस्सा** आ जाए और शैतान मुझे **तकब्बुर** और **हुकूमत** के गुरूर में मुब्तला करे और मैं तुम को ज़ुल्म का निशाना बनाऊं और बरोज़े क़ियामत तुम मुझ से इस का बदला लो मुझ से येह हरगिज़ नहीं होगा।" येह फ़रमा कर ख़ामोश हो गए। (کیمیائے سعادت ج۲ ص۵۹۷)

(2) सज़ा देने में एहतियात

हज़रते सय्यिदुना औज़ाई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز का मा'मूल था कि जब किसी शख़्स को सज़ा का हुक्म सुनाते तो इस अन्देशे के तहत उसे तीन दिन तक क़ैद में रखते कि कहीं मैं ने सज़ा का हुक्म गैज़ व ग़ज़ब की हालत में तो नहीं दिया। (تاریخ دِمشق، ج۴۵ ص۲۰۶)

(3) मैं तुम से क़िसास लेता

एक बार हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز के आमिल अब्दुल हमीद बिन अब्दुर्रहमान ने उन को लिखा कि मेरे सामने एक शख़्स इस जुर्म में पेश किया गया है कि वोह

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को गालियां देता है, मैं ने उस की गरदन उड़ा देनी चाही थी लेकिन फिर इस ख़याल से क़ैद कर दिया कि पहले इस बारे में आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की राय ले लूं। हज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیْز ने जवाब में लिखा कि अगर तुम उस को क़त्ल कर देते तो मैं तुम से क़िसास लेता, नबिय्ये मुअ़ज़्ज़म, रसूले मोह़तरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सिवा किसी और को गाली देने पर कोई शख़्स क़त्ल नहीं किया जा सकता, इस लिये अगर तुम्हारा जी चाहे तो उस को गाली दे कर बदला लो वरना रिहा कर दो। (تاریخ دِمشق، ج۴۵،ص ۲۰۷ملتقطاً)

(4) तक़्वा ने मुंह में लगाम डाल दी है

किसी ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیْز को एक मोक़अ़ पर ना मुनासिब कलिमात कहे, लोग बोले, आप चुप क्यूं हैं ? फ़रमाया : اِنَّ التَّقِیَّ مُلْجَمٌ *या'नी तक़्वा ने मुंह में लगाम डाल दी है।* (سیرت ابن جوزی ص ۲۰۸)

(5) गाली देने वाले को कुछ न कहा

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیْز को किसी ने एक शख़्स के बारे में निशान देही की, कि येह आप को गाली देता है। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस की त़रफ़ से मुंह फैर लिया, बताने वाले ने फिर कहा, मगर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने नज़र अन्दाज़ किया, जब उस ने तीसरी बार कहा तो फ़रमाया : "**उ़मर**" इस (या'नी गाली देने वाले) को इस त़रह़ ढील दे रहा है कि इस को ख़बर तक नहीं होती। (سیرت ابن جوزی ص ۲۰۸)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर कोई हमारी दिल आज़ारी कर दे या गाली भी दे दे तो भी बह़ष व तकरार से इजतिनाब कर के दर गुज़र से काम लेते हुए झगड़े से बचने में ही भलाई है। सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जो ह़क़ पर होने के बा वुजूद झगड़ा नहीं करता मैं उस के लिये जन्नत के गिर्द एक घर का ज़ामिन हूं।"

(سنن ابی داؤد، ج۴، ص۳۳۲، الحدیث ۴۸۰۰)

(6) बुरा भला कहने वाले से हुस्ने सुलूक

एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز सुवारी पर कहीं जा रहे थे कि एक पैदल चलने वाला शख़्स सुवारी की झपट में आ गया और उस ने गुस्से से कहा : देख कर नहीं चल सकते ! जब सुवारियां आगे निकल गईं तो उस शख़्स ने कहा : कोई है जो मुझे अपने पीछे बिठाए ? ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने अपने ग़ुलाम से कहा कि इस को अपने साथ बिठा कर चश्मे तक ले चलो। (سیرت ابن جوزی ص ۲۰۸)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों के अख़्लाक़ निहायत ही उ़म्दा होते हैं और वोह तक्लीफ़ पहुंचने पर भी गुस्से में नहीं आते और सब्र का दामन नहीं छोड़ते और न सिर्फ़ ख़त़ाकार की ख़त़ा मुआ़फ़ कर देते हैं बल्कि बसा अवक़ात तो हुस्ने सुलूक से नवाज़ देते हैं।

(7) मैं पागल नहीं हूं

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ الۡعَزِيز रात के वक़्त मस्जिद में गए, वहां एक शख़्स सो रहा था, अन्धेरे में उस को आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَيۡه के पाऊं की ठोकर लग गई, तो उस ने झल्ला कर कहा : أَمَجۡنُوۡنٌ اَنۡتَ *या'नी क्या तुम पागल हो ?* फ़रमाया : नहीं। ख़ादिम ने इस गुस्ताख़ी पर उस को सज़ा देनी चाही लेकिन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ الۡعَزِيز ने रोक दिया और फ़रमाया : इस ने मुझ से सिर्फ़ येह पूछा था कि तुम पागल हो ? मैं ने जवाब दे दिया : "नहीं।" (سیرت ابن جوزی ص۲۰۹)

سُبۡحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन का अख़्लाक़ किस क़दर पाकीज़ा था, मुक़ाबिल कोई कमज़ोर होता तो उन के लहजे में नर्मी आ जाती थी मगर हमारा गुस्सा बड़ा "**अक़्ल मन्द**" है कि "कमज़ोर" को सामने देख कर ख़ूब फलता फूलता और सर चढ़ कर बोलता है।

(8) गालों से ख़ून निकल आया

एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ الۡعَزِيز क़ैलूला (या'नी दोपहर का मुख़्तसर आराम) करने के लिये उठने लगे तो एक आदमी हाथ में काग़ज़ात की एक बड़ी फ़ाइल लिये हुए आगे बढ़ा और जल्द बाज़ी में वोह फ़ाइल उन की त़रफ़ फैंक दी, आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَيۡه ने मुड़ कर देखा तो फ़ाइल मुंह पर जा लगी जिस की वजह से गालों से ख़ून निकलने लगा लेकिन सीख़ पा होने के बजाए हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ الۡعَزِيز ने निहायत ख़ामोशी के साथ उस की दरख़्वास्त पढ़ी और उस की ह़ाजत को पूरा किया। (سیرت ابن جوزی ص۲۰۸)

(9) सज़ा के बजाए वज़ीफ़ा मुक़र्रर कर दिया

एक बच्चे ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز के बेटे को मारा, लोग उस बच्चे को पकड़ कर उन की ज़ौजा फ़ातिमा बिन्ते अ़ब्दुल मलिक के पास ले गए। हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز दूसरे कमरे में थे, शोर सुना तो कमरे से निकल आए। इसी दौरान एक औ़रत आई और कहने लगी : येह मेरा बच्चा है और यतीम है। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने पूछा : इस यतीम को वज़ीफ़ा मिलता है ? अ़र्ज़ की : नहीं। ख़ादिम से फ़रमाया : इस का नाम वज़ीफ़ा ख़्वार बच्चों में लिख लो। (سیرت ابن جوزی ص ۲۰۷)

सच है कि हर बुलन्द मर्तबा शख़्स मुन्कसिरुल मिज़ाज और दूसरों की दिल जूई करने वाला होता है। इस की मिषाल तो उस दरख़्त की सी होती है , जिस पर जितने ज़ियादा फल आते हैं उस की शाखें उसी क़दर झुक जाती हैं, जो खुश नसीब कमज़ोरों के साथ नर्मी और मुरुव्वत का बरताव करते हैं, वोह क़ियामत के दिन शादां व फ़रहां होंगे, लेकिन मग़रूरों को शरमिन्दगी के सिवा कुछ हाथ न आएगा।

(10) ग़ुस्से की ह़ालत में सज़ा न दो

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने अपने एक गवर्नर को लिखा कि ग़ुस्से की ह़ालत में किसी मुजरिम को सज़ा मत दो बल्कि उसे क़ैद कर दो जब तुम्हारा ग़ुस्सा ठन्डा हो जाए तो उसे उस के जुर्म के मुताबिक़ सज़ा दो। (احیاء العلوم، ج ۳ ص ۲۰۵)

(11) बिला वजह दाग़ना नहीं चाहिये

चन्द ख़ारिजी ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ الْعَزِيز की ख़िदमत में आए और मुना-ज़रा शुरूअ़ कर दिया। किसी ने मश्वरा दिया : या **अमीरल मोअमिनीन** इन को ज़रा जलाल दिखा कर मरऊ़ब कीजिये मगर आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه निहायत नर्मी से गुफ़्त-गू करते रहे यहां तक कि वोह एक ख़ास शर्त़ पर राज़ी हो कर चले गए। उन के जाने के बा'द आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मश्वरा देने वाले से फ़रमाया : जब तक दवा से शिफ़ा की उम्मीद हो किसी को दाग़ना नहीं चाहिये। (سیرت ابن جوزی ص ۷۷)

(12) बुरा भला न कहो

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ الْعَزِيز अगर्चे ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ को उस की ज़ालिमाना रविश की वजह से पसन्द नहीं करते थे और यहां तक फ़रमाते थे कि अगर क़ियामत के रोज़ उम्मतों का ख़बाषत में मुक़ाबला हो और हर उम्मत अपने खबीष लाए तो अगर हम ह़ज्जाज को लाएं तो उन पर ग़ालिब रहेंगे। (حلیۃ الاولیاء ج ۵ ص ۳۵۹)

येही वजह थी कि ह़ज्जाज के ख़ानदान को जिला वत़न कर दिया था मगर इस के बा वुजूद जब किसी ने आप के सामने ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ को गाली दी तो फ़ौरन रोका और फ़रमाया : जब मज़्लूम ज़ालिम को ख़ूब बूरा भला कह कर अपना बदला ले लेता है तो ज़ालिम को इस पर एक त़रह़ से बरतरी ह़ासिल हो जाती है। (سیرت ابن جوزی ص ۱۰۹)

(13) सज़ा मुआ़फ़ कर दी

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ الْعَزِيز

एक शख़्स पर किसी वजह से सख़्त बरहम हुए यहां तक कि उसे कोड़े मारने का हुक्म दे दिया लेकिन जब कोड़े लगाने का वक़्त आया तो खुद्दाम से फ़रमाया : خَلُّوْا سَبِيْلَهٗ *या'नी इस को रिहा कर दो,* और उस शख़्स से फ़रमाया : अगर मैं गुस्से में न होता तो तुम्हें ज़रूर सज़ा देता, फिर येह आयत पढ़ीं,

وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۳۴﴾

(پ۴، اٰل عمران:۱۳۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और गुस्सा पीने वाले और लोगों से दर गुज़र करने वाले और नेक लोग ***अल्लाह*** *के महबूब हैं।*

(سیرت ابن جوزی ص ۲۰۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمۃُ اللّٰهِ الْعَزِيْز के अफ़्व व दर गुज़र के अन्वार देखे। यक़ीनन **गुस्सा** अपने साथ तबाहकारियों की त़वील दास्तान ले कर आता है क्यूंकि **गुस्सा** ही अकषर दंगा फ़साद, दो भाइयों में इफ़्तिराक़, मियां बीवी में त़लाक़, आपस में मुना-फ़रत और क़त्लो ग़ारत का मूजिब होता है। जब किसी पर **गुस्सा** आए और मार धाड़ और तोड़ ताड़ कर डालने को जी चाहे तो अपने आप को इस त़रह़ समजाएं : मुझे दूसरों पर अगर कुछ कुदरत ह़ासिल भी है तो इस से बेह़द ज़ियादा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझ पर क़ादिर है और अगर मैं ने **गुस्से** में किसी की दिल आज़ारी या ह़क़ त-लफ़ी कर डाली तो क़ियामत के रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब से मैं किस त़रह़ मह़फ़ूज़ रह सकूंगा ? [1]

1 : गुस्से के बारे में तफ़्सीलात जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ रिसाले "गुस्से का इलाज" का ज़रूर मुत़ा-लआ़ कीजिये।

अमीरुल मोअमिनीन की रह़्म दिली

एक बार एक देहाती आया और अपनी ह़ाजत को ऐसे पुर दर्द अल्फ़ाज़ में पेश किया कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने गरदन झुका ली और आंखों से मुसल्सल आंसू जारी हो गए ह़त्ता कि सामने की ज़मीन गीली हो गई। जब कुछ इफ़ाक़ा हुवा तो पूछा : तुम कुल कितने अफ़राद हो ? उस ने कहा : एक मैं और आठ बेटियां। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने बैतुल माल से सब के वज़ाइफ़ मुक़र्रर कर दिये और सो दिरहम ज़ाती तौर पर अपनी जेब से दिये।

(سیرت ابن جوزی ۹۱ ملخصا)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تَعالٰی عَلَیْہِ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

जानवर को तीन दिन आराम करने दो

येह रह़्म सिर्फ़ इन्सानों तक मह़्दूद न था बल्कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز को जानवरों तक की तकलीफ़ गवारा न थी, उन के पास एक ख़च्चर था जिस को उन का गुलाम किराए पर चलाता था। किराए की आमदनी रोज़ाना एक दिरहम थी। एक दिन गुलाम डेढ़ दिरहम लाया तो दरयाफ़्त किया : येह इज़ाफ़ा क्यूं कर हुवा ? उस ने कहा : आज बाज़ार तेज़ था। फ़रमाया : नहीं ! तुम ने जानवर से ज़ियादा काम लिया, अब इस को तीन दिन आराम कर लेने दो।

(سیرت ابن جوزی ص ۹۷)

जानवरों के बारे में हिदायात

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने बाज़ारों के निगरान के नाम बा क़ाएदा येह हुक्म नामा तह़रीर फ़रमाया : "जानवरों को भारी लगाम न दी जाए और न उन्हें ऐसी छड़ी से हांका जाए जिस पर लोहे का ख़ोल चढ़ा हो।" और गवर्नरे मिस्र को लिखा : "मुझे इत्तिलाअ़ मिली है कि मिस्र में बोझ उठाने वाले ऊंटों पर हज़ार रित़ल (तक़रीबन 500 सेर) तक बोझ लादा जाता है, जब मेरा येह ख़त़ मिले तो इस के बा'द किसी ऊंट पर छे सो रित़ल (तक़रीबन 300 सेर) से ज़ियादा बोझ लादने की इत्तिलाअ़ न आए।" (سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۳۶)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सुल्ह़ करवाई

बड़ी उ़म्र का एक शख़्स अपने भतीजे के साथ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ القَدِير की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा। दोनों का किसी बात में तनाज़ुअ़ था, बड़े मियां पहले पहले तो सुल्ह़ सफ़ाई की त़रफ़ माइल थे, फिर अचानक उन्हें गुस्सा आया और उन के नफ़्स ने उन्हें क़त़ए़ रेह़्मी की पट्टी पढ़ाई। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ القَدِير ने बूढ़े पर **इन्फ़िरादी** कोशिश करते हुए फ़रमाया : "बड़े मियां ! मैं ने न तुम से ज़ियादा शीरीं किसी को देखा न तुम से ज़ियादा तल्ख़ ,न तुम से ज़ियादा क़रीब किसी को देखा न तुम से ज़ियादा बई़द, अभी अभी तुम सुल्ह़ सफ़ाई की बातें कर रहे थे कि अचानक तुम्हारे नफ़्स ने तुम्हें क़त़ए़ रेह़्मी और ज़ुल्म की राह पर लगा दिया।" बड़े मियां की लम्बीं (मुंछे) इतनी बढ़ी हुई थीं कि मुंह ढक रहा

था, हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِيْر ने अपने हज्जाम से फ़रमाया : "इसे ले जाओ और इस की लबें काट कर वापस लाओ।" वोह लबें बनवा कर वापस आया तो फ़रमाया : "देखो ! येह कैसी अच्छी लगती हैं, इस से नज़ाफ़त भी ह़ासिल होती है और फ़ित़रते सह़ीह़ा से मुत़ाबिक़त भी।" फिर बड़ी नर्मी से फ़रमाया : "बड़े मियां ! आओ अब अपने भतीजे से सुल्ह़ कर लो।" उस ने अ़र्ज़ की : "बहुत बेहतर।" आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने दोनों के माबैन सुल्ह़ करा दी और हाथ आसमान की त़रफ़ उठा कर कहा : "اَلْحَمْدُ لِلّٰه" (سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۰۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसलमान मुसलमान का भाई होता है और इन्हें आपस में मह़ब्बत व इत्तिफ़ाक़ से रहना चाहिये मगर शैत़ान को येह क्यूं कर गवारा हो सकता है चुनान्चे वोह मर्दूद मुसलमानों में फूट डलवाता, लड़वाता और क़त्लो ग़ारतगरी तक करवाता है, बा'ज़ अवक़ात दुश्मनी का सिल्सिला नस्ल दर नस्ल चलता है, जिस से हो सके उन के बीच में पड़ कर सुल्ह़ करवाने की कोशिश करे, हमारा प्यारा रब عَزَّوَجَلَّ पारह 26 सूरए ह़ुजुरात की दसवीं आयते करीमा में इरशाद फ़रमा रहा है :

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۱۰﴾ (پ ۲۶،الحجرات:۱۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मुसलमान मुसलमान भाई हैं अपने दो भाइयों में सुल्ह़ करो और ***अल्लाह*** *से डरो कि तुम पर रह़मत हो।*

सुल्ह़ करवाना सुन्नत है

सुल्ह़ करवाना ताजदारे ह़रम, नबिय्ये मुकर्रम, रसूले मोह़तरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस सुन्नत भी है, चुनान्चे ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान में हैं, सरकारे मदीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم दराज़ गोश पर कहीं तशरीफ़ लिये जा रहे थे कि अन्सार के पास से गुज़र हुवा, वहां कुछ देर तवक़्क़ुफ़ फ़रमाया, उस जगह दराज़ गोश ने पेशाब किया तो इब्ने अबी ने नाक बन्द कर ली। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दराज़ गोश का पेशाब तेरे मुश्क से ज़ियादा ख़ुश्बूदार है। ताजदारे मदीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तो तशरीफ़ ले गए। उन दोनों की बात बढ़ गई और दोनों की क़ौमें आपस में लड़ गईं और हाथापाई तक नौबत पहुंची। आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم वापस तशरीफ़ लाए और दोनों में सुल्ह़ करवा दी। इस मुआ़-मले में येह आयत नाज़िल हुई :

وَ اِنْ طَآىٕفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَیْنَهُمَا

(پ۲۶،الحجرات:۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अगर मुसलमानों के दो गुरोह आपस में लड़ें तो उन में सुल्ह़ कराओ।

सुल्ह़ करवाने का षवाब

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, सुल्त़ाने बह़्रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

مَنْ اَصْلَحَ بَیْنَ النَّاسِ اَصْلَحَ اللّٰہُ اَمْرَہٗ وَاَعْطَاہُ بِکُلِّ کَلِمَۃٍ تَکَلَّمَ بِھَا عِتْقَ رَقَبَۃٍ وَرَجَعَ مَغْفُوْراً لَّہٗ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِہٖ

"या'नी जो शख़्स लोगों के दरमियान सुल्ह़ कराएगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ *उस का मुआ़-मला दुरुस्त फ़रमा देगा और उसे हर कलिमा बोलने पर एक गुलाम आज़ाद करने का षवाब अ़ता फ़रमाएगा और वोह जब लौटेगा तो अपने पिछले गुनाहों से मग़्फ़िरत याफ़्ता हो कर लौटेगा।"*

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب، الحدیث۹، ج۳، ص۳۲۱)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इयादत व ता'ज़ियत

उ-मरा व सलात़ीन इयादत व ता'ज़िय्यत के लिये बहुत कम घर से बाहर क़दम निकालते हैं लेकिन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز दोस्त दुश्मन की इयादत व ता'ज़िय्यत को बे तकल्लुफ़ जाया करते और उन को तसल्ली देते थे। चुनान्चे एक बार हज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ शाम में बीमार हुए तो हज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز उन की इयादत को तशरीफ़ ले गए और बे तकल्लुफ़ी से कहा : یَا اَبَاقِلَابَۃَ تَشَدَّدْ وَلَا تُشْمِتْ بِنَا الْمُنَافِقِیْنَ *या'नी अबू क़िलाबा ! चाक व चोबन्द हो जाइये और हम पर मुनाफ़िक़ीन को हंसने का मोक़अ़ न दीजिये।*

(سیرت ابن جوزی ص ۳۰۶)

मुर्दा मुर्दे की ता'ज़िय्यत करता है

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन उ़बैदुल्लाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के वालिद साहिब का इन्तिक़ाल हुवा तो हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़

عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने उन के पास एक ता'ज़िय्यत नामा भेजा जिस में लिखा : "हम आख़िरत में रहने वाली क़ौम के अफ़राद हैं मगर हम ने दुन्या को अपना ठिकाना बना लिया है, हम मुर्दे हैं और मर जाने वालों की अवलाद हैं, हैरत है एक मुर्दे पर कि वोह मुर्दे को ख़त़ लिखता है और मुर्दे की ता'ज़िय्यत करता है।" (حلیۃ الاولیاء ج۵ ص۳۰۰)

ता'ज़िय्यत का अन्दाज़

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز का एक दोस्त फ़ौत हो गया तो आप उस के पास घर वालों के पास ता'ज़िय्यत के लिये गए। वोह आप को देख कर शदीद आहो ज़ारी करने लगे, हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने उन से फ़रमाया : दुन्या से जाने वाला तुम्हारा राज़िक़ न था, तुम्हारा राज़िक़ ज़िन्दा है जिस पर मौत नहीं आनी और मर्हूम ने तुम्हारे नहीं बल्कि अपने रिज़्क़ का रास्ता बन्द किया है, और तुम में से हर आदमी पर एक दिन ऐसा आएगा कि उस का रिज़्क़ बन्द हो जाएगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जब से दुन्या को पैदा किया उस के लिये फ़ना लिख दी, उस के बासियों पर भी फ़ना होना मुक़र्रर कर दिया, जो यहां जम्अ़ हुए बिल आख़िर मुन्तशिर हो गए, इस लिये तुम अपनी फ़िक्र करो क्यूंकि जिस त़रफ़ आज तुम्हारा येह अ़ज़ीज़ गया है तुम सब कल उसी (या'नी मौत की) त़रफ़ जाने वाले हो। (حلیۃ الاولیاء ج۵ ص۳۶۴)

सब्र और रिज़ा में फ़र्क़

एक शख़्स का बेटा फ़ौत हो गया तो हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ख़लीफ़ा सुलैमान बिन अ़ब्दुल

मलिक की हमराही में उस के हां ता'ज़िय्यत के लिये तशरीफ़ ले गए। वोह शख़्स बड़ी ख़ामोशी से इस सदमे को सह रहा था, उस की येह कैफ़िय्यत देख कर किसी ने आवाज़ लगाई : रिज़ा पर राज़ी होना तो इस को कहते हैं। येह सुनते ही ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز बोल उठे : रिज़ा पर राज़ी होना कहेंगे या सब्र करना ? सुलैमान ने उस की वज़ाहत की : वाक़ेई सब्र और रिज़ा में फ़र्क़ है, रिज़ा का मत़लब येह है कि इन्सान मुसीबत नाज़िल होने से पहले अपना ज़ेह्न बनाए कि कैसी ही मुसीबत टूट पड़े मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहूंगा, जब कि सब्र मुसीबत नाज़िल होने के बा'द किया जाता है।

(سیرت ابن جوزی ص۲۰۶)

अमीरुल मोअमिनीन की अश्कबारियां

परनाले से आंसू बह निकले

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ जा रहे थे कि रास्ते में एक जगह पड़ाव किया, ठीक इसी जगह कभी ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने भी क़ियाम किया था। वहां एक राहिब की ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ से मुलाक़ात हुई। जब उस से पूछा कि तुम ने उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ) में कोई मुन्फ़रिद बात देखी हो तो बताओ। राहिब कहने लगा : ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने यहां छत पर क़ियाम किया था, रात के वक़्त

परनाले से मुझ पर पानी के चन्द क़तरे गिरे, मैं ने फ़ौरन आसमान की त़रफ़ देखा मगर वहां बारिश के कोई आषार न थे, मैं ने छत पर चढ़ कर देखा तो हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِیز सजदे में गिरे हुए थे, वोह रो रहे थे और उन की आंखों से निकलने वाले आंसू परनाले के ज़रीए नीचे गिर रहे थे।

(سیرت ابن جوزی ص ۲۱۸)

दाढ़ी आंसूओं से तर थी

जस्र अबू जा'फ़र फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़ुनासिरा में हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِیز को ख़ुत़्बा देने के लिये मिम्बर पर चढ़ते हुए देखा तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की दाढ़ी आंसूओं से तर थी और जब मिम्बर से नीचे उतरे तो भी रो रहे थे।

(موسوعہ ابن ابی الدنیا، کتاب الرقۃ والبکاء، ج۳، ص۱۹۱)

आंसूओं को ग़नीमत समझो

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِیز ने फ़रमाया : اِغْتَنِمِ الدَّمْعَةَ تُسِیْلُهَا عَلٰی خَدِّكَ لِلّٰهِ *या'नी रिज़ाए इलाही के लिये अपने रुख़्सारों पर बहने वाले आंसूओं को ग़नीमत समझो।*

(سیرت ابن جوزی ص ۲۳۶)

सजदा गाह आंसूओं से तर थी

एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِیز नमाज़ पढ़ा कर फ़ारिग़ हुए तो लोगों ने देखा कि उन के सजदा करने की जगह आंसूओं से तर थी। (سیرت ابن جوزی ص ۲۱۸)

आंसूओं में ख़ून

हज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान और हज़रते सय्यिदुना हसन बिन हुसैन رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْھِما फ़रमाते हैं : हम ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ الْعَزِیز को रोते हुए देखा ह़त्ता कि आप के आंसूओं में ख़ून बहने लगा। (سیرت ابن جوزی ص ۲۱۹)

दुन्या को तीन त़लाक़ें दे चुका हूं

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ الْعَزِیز के पड़ोसी हज़रते सय्यिदुना ह़ारिष बिन ज़ैद رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब रात की त़ारीकी छा जाती और सितारे रोशन हो जाते तो आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ मरीज़ की त़रह़ बेचैन व मुज़्तरिब हो जाते और ग़मज़दा इन्सान की त़रह़ रोने लगते और फ़रमाते : "ऐ दुन्या ! तू क्यूं मेरा पीछा करती है ? जा, मुझ से दूर हो जा, किसी और को धोका दे, मैं तो तुझे तीन त़लाक़ें दे चुका हूं, अब तुझ से रुजूअ़ नहीं हो सकता। तेरी उ़म्र कम, तेरी लज़्ज़तें ह़क़ीर और तेरे ख़त़रात बहुत ज़ियादा हैं। हाए अफ़सोस ! मेरे पास ज़ादे राह कम, सफ़र त़वील और रास्ता पुर ख़त़र है।" (الروض الفائق، ص ۲۰۰)

सब रोने लगे

बा'ज़ अवक़ात दौराने ख़ुत़्बा मिम्बर शरीफ़ पर ऐसा रोते कि ख़ुत़्बा जारी रखना दुश्वार हो जाता, चुनान्चे एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना

उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ने दौराने बयान सूरए तकवीर की येह आयात पढ़ीं :

إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ﴿١﴾ وَإِذَا النُّجُومُ انكَدَرَتْ ﴿٢﴾ وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ﴿٣﴾ وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ﴿٤﴾ وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ﴿٥﴾ وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ﴿٦﴾ وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ ﴿٧﴾ وَإِذَا الْمَوْءُودَةُ سُئِلَتْ ﴿٨﴾ بِأَيِّ ذَنبٍ قُتِلَتْ ﴿٩﴾ وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ﴿١٠﴾ وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ﴿١١﴾ وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِّرَتْ ﴿١٢﴾

(پ۳۰،التکویر:۱تا۱۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जब धूप लपेटी जाए और जब तारे झड़ पड़ें और जब पहाड़ चलाए जाएं और जब थलकी ऊंटनियां छूटी फिरें और जब वह्शी जानवर जम्अ़ किये जाएं और जब समुन्दर सुलगाए जाएं और जब जानों के जोड़ बनें और जब ज़िन्दा दबाई हुई से पूछा जाए : किस ख़त़ा पर मारी गई ? और जब नामए आ'माल खोले जाएं और जब आसमान जगह से खींच लिया जाए और जब जहन्नम भड़काया जाए ।

जब आयत 13 पर पहुंचे :

وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ ﴿١٣﴾

(پ۳۰،التکویر:۱۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जब जन्नत पास लाई जाए ।

तो अगली आयत :

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا أَحْضَرَتْ ﴿١٤﴾

(پ۳۰،التکویر:۱۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : हर जान को मा'लूम हो जाएगा जो हाज़िर लाई ।

न पढ़ सके और फ़िक्रे आख़िरत से मग़लूब हो कर रो दिये, मस्जिद में मौजूद लोग भी रोने लगे यहां तक कि आहो बुका से मस्जिद गूंजने लगी। (سیرت ابن جوزی ص ۲۱۸)

ख़लीफ़ा का असर रिआ़या पर

मशहूर है कि "ख़रबूज़े को देख कर ख़रबूज़ा रंग पकड़ता है" इसी त़रह़ हुक्मरानों के तर्ज़े ज़िन्दगी का असर रिआ़या पर भी पड़ता है, हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ العَزِیز की इबादत व रियाज़त का रंग अ़वाम में भी मुन्तक़िल हुवा चुनान्चे एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ख़लीफ़ा वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक इमारात वग़ैरा का बानी था, लोग जब उस के ज़माने में आपस में मिलते थे तो सिर्फ़ इमारतों को बनाने ख़रीदने के बारे में ही गुफ़्त-गू होती थी, फिर जब सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक का दौर आया तो वोह खाने पीने और निकाह़ का शौक़ीन था इस लिये उस के अ़-हद में लोग शादियों और कनीज़ों की बातें किया करते और जब हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ العَزِیز का दौरे मुबारक आया तो आप ने अपनी हुकूमत का सुतून रूह़ानिय्यत को बनाया चुनान्चे उस वक़्त जब लोग आपस में मिलते तो इबादात के बारे में ही गुफ़्त-गू होती और वोह एक दूसरे से पूछते कि तुम कौन सा वज़ीफ़ा पढ़ते हो ? तुम ने कितना क़ुरआने पाक याद कर लिया ? तुम क़ुरआने करीम कब ख़त्म करोगे ? और कब ख़त्म किया था ? और महीने में कितने रोज़े रखते हो ? वग़ैरा वग़ैरा (البدایۃ والنھایۃ ج ۶ ص ۲۹۹ ملخصاً)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मुनाजाते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ الۡعَزِيز

اَللّٰھُمَّ رَضِّنِیۡ بِقَضَائِكَ وَبَارِكۡ لِیۡ فِیۡ قَدۡرِكَ حَتّٰی لَا اُحِبَّ تَعۡجِیۡلَ مَااَخَّرۡتَ وَلَاتَاخِیۡرَ مَاعَجَّلۡتَ {1}

*या'नी : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू मुझे अपनी क़ज़ा पर राज़ी रहने वाला बना और अपनी तक़्दीर में मुझे ब-रकत अ़ता फ़रमा यहां तक कि जिस चीज़ को तू मोअख़्ख़र कर दे मैं उस की ता'जील को पसन्द न करूं और जो कुछ तू मुझे जल्दी दे मैं उस की ताख़ीर को पसन्द न करूं ।*

आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه फ़रमाया करते थे : येह दुआ़ मुझे इस क़दर रासिख़ हो गई है कि अब मेरे लिये क़ज़ा व क़द्र के इ़लावा किसी चीज़ की कोई ख़्वाहिश ही नहीं रही । (سیرت ابن جوزی ص ۲۳۰ وسیرت ابن عبدالحکم ص ۹۳)

اَللّٰھُمَّ اِنۡ لَّمۡ اَکُنۡ اَھۡلاً اَنۡ اَبۡلُغَ رَحۡمَتَكَ فَاِنَّ رَحۡمَتَكَ اَھۡلٌ اَنۡ تَبۡلُغَنِیۡ فَاِنَّ رَحۡمَتَكَ وَسِعَتۡ کُلَّ شَیۡءٍ وَاَنَا شَیۡءٌ فَتَسۡعُنِیۡ رَحۡمَتُكَ یَااَرۡحَمَ الرّٰحِمِیۡنَ {2}

*या'नी : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर मैं तेरी रह़मत का अहल नहीं हूं मगर तेरी रह़मत तो मुझ तक पहुंचने की अहल है क्यूंकि तेरी रह़मत ने हर शै को घेर रखा है और मैं भी "शै" हूं लिहाज़ा तेरी रह़मत मुझे भी अपने घेरे में ले ले, या अर-ह़मर्राह़िमीन عَزَّوَجَلَّ !* (سیرت ابن جوزی ص ۲۲۹)

اَللّٰھُمَّ اِنَّ رِجَالًا اَطَاعُوۡكَ فِیۡمَا اَمَرۡتَھُمۡ وَانۡتَھَوۡا عَمَّا نَھَیۡتَھُمۡ اَللّٰھُمَّ وَاِنَّ تَوۡفِیۡقَكَ اِیَّاھُمۡ کَانَ قَبۡلَ طَاعَتِھِمۡ اِیَّاكَ فَوَفِّقۡنِیۡ {3}

*या'नी : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! बिला शुबा जो ख़ुश नसीब लोग तेरे हुक्म की इत़ाअ़त और तेरी ना फ़रमानी से बचते हैं, यक़ीनन उन के इत़ाअ़त करने से पहले तेरी तौफ़ीक़ उन्हें मिलती है, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे भी (अपनी इत़ाअ़त) की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा ।* (سیرت ابن جوزی ص ۲۲۹)

{4} اَللّٰھُمَّ اَصْلِحْ مَنْ كَانَ فِیْ صَلَاحِہٖ صَلَاحُ اُمَّةِ مُحَمَّدٍ
اَللّٰھُمَّ اَھْلِكْ مَنْ كَانَ فِیْ ھَلَاكِہٖ صَلَاحُ اُمَّةِ مُحَمَّدٍ

या'नी : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर उस शख़्स को सलामत रख जिस की सलामती में उम्मते सरकार की सलामती है और हर उस शख़्स को तबाह कर दे जिस की हलाकत में उम्मते सरकार की सलामती है। (سیرت ابن جوزی ص۲۲۹)

{5} اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَطَعْتُكَ فِیْ اَحَبِّ الْاَشْیَاءِ اِلَیْكَ وَھُوَالتَّوْحِیْدُ وَلَمْ اَعْصِكَ فِیْ اَبْغَضِ الْاَشْیَاءِ اِلَیْكَ وَھُوَالْكُفْرُ فَاغْفِرْ لِیْ مَابَیْنَھُمَا

या'नी : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं ने तेरी सब से महबूब शै या'नी तौहीद में तेरी इताअ़त की है और तेरी सब से ना पसन्दीदा शै या'नी "कुफ़्र" के मुआ-मले में तेरी ना फ़रमानी नहीं की (या'नी कुफ़्र को इख़्तियार नहीं किया) तो ऐ मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ जो कुछ इन दोनों के दरमियान है इस में मुझे मुआफ़ फ़रमा दे। (سیرت ابن جوزی ص۲۳۰)

{6} اَللّٰھُمَّ سَلِّمْ سَلِّمْ या'नी : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! आ़फ़िय्यत व सलामती अ़ता फ़रमा। (سیرت ابن جوزی ص۲۳۰)

{7} जब ख़ानए का'बा में दाख़िल होते तो येह दुआ़ पढ़ा करते : اَللّٰھُمَّ اِنَّكَ وَعَدْتَّ الْاَمَانَ دُخَّالَ بَیْتِكَ وَاَنْتَ خَیْرُ مَنْزُوْلٍ بِہٖ فِیْ بَیْتِہٖ اَللّٰھُمَّ اجْعَلْ اَمَانَ مَاتُؤْمِنُنِیْ بِہٖ اَنْ تَكْفِیَنِیْ مَؤُوْنَةَ الدُّنْیَا حَتّٰی تُبَلِّغَنِیْھَا بِرَحْمَتِكَ یَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِیْنَ

या'नी : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तूने अपने घर में दाख़िल होने वालों के लिये अम्न का वा'दा किया है और तू अपने घर में आने वालों के लिये सब से बेहतर मेहमान नवाज़ है, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे ऐसा परवानए अम्न

अ़त़ा फ़रमा जिस के ज़रीए़ मुझे अम्नो अमान ह़ासिल हो, वोह येह कि तू दुन्या की मशक़्क़तों से मेरी किफ़ायत फ़रमा यहां तक कि या अर-ह़मर्राह़िमीन عَزَّوَجَلَّ तू मुझे अपनी रह़मत के तुफ़ैल जन्नत में पहुंचा दे।

नीज़ येह दुआ़ किया करते थे :

اَللّٰھُمَّ اَلْبِسْنِی الْعَافِیَةَ حَتّٰی تُھَنِّئَنِیَ الْمَعِیْشَةُ وَاخْتِمْ لِیْ بِالْمَغْفِرَةِ حَتّٰی لَاتَضُرُّنِی الذُّنُوْبُ وَاكْفِنِیْ كُلَّ ھَوْلٍ دُوْنَ الْجَنَّةِ حَتّٰی تَبْلُغَنِیْھَا بِرَحْمَتِكَ یَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِیْنَ

*या'नी : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे लिबासे आ़फ़िय्यत अ़त़ा फ़रमा ताकि मेरी ज़िन्दगी खुश गवार हो और बख़्शिश पर मेरा ख़ातिमा फ़रमा ताकि गुनाह मुझे नुक़्सान न दे सकें और जन्नत से पहले जितनी होलनाकियां हैं उन से मेरी किफ़ायत फ़रमा यहां तक कि या अर-ह़मर्राह़िमीन عَزَّوَجَلَّ तू मुझे अपनी रह़मत के तुफ़ैल जन्नत में पहुंचा दे।* (سیرت ابن عبدالحکم ص ۹۴)

{8} अ़-रफ़ात के मैदान में येह दुआ़ किया करते थे :

اَللّٰھُمَّ اِنَّكَ دَعَوْتَ اِلٰی حَجِّ بَیْتِكَ وَوَعَدْتَّ بِهٖ مَنْفَعَةً عَلٰی شُھُوْدِ مَنَاسِكِكَ وَقَدْ جِئْتُكَ اَللّٰھُمَّ اجْعَلْ مَنْفَعَةَ مَاتَنْفَعُنِیْ بِهٖ اَنْ تُؤْتِیَنِیْ فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً

*या'नी : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू ने अपने घर की ज़ियारत (या'नी ह़ज) के लिये बुलाया और इन मक़ामाते इ़बादत की ह़ाज़िरी पर बहुत से मनाफ़ेअ़ अ़त़ा करने का वा'दा फ़रमाया, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तेरे दरबार में ह़ाज़िर हो गया हूं, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे येह मन्फ़अ़त अ़त़ा फ़रमा कि मुझे दुन्या में भी भलाई मिले और आख़िरत में भलाई मिले।* (سیرت ابن عبدالحکم ص ۹۴)

{9} اَللّٰھُمَّ لَاتُعْطِنِیْ فِی الدُّنْیَا عَطَاءً یُبْعِدُنِیْ مِنْ رَحْمَتِكَ فِی الْاٰخِرَةِ

या'नी : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ! मुझे दुन्या में ऐसी चीज़ न दे जो मुझे आख़िरत में तेरी रह़मत से दूर कर दे। (سیرت ابن عبد الحکم ص ۹۴)

{10} "या रब عَزَّوَجَلَّ ! तू ने मुझे पैदा किया और मुझे कुछ कामों के करने का हुक्म फ़रमाया और कुछ कामों से मन्अ़ फ़रमाया और हुक्म मानने की सूरत में मुझे षवाब की तरग़ीब दी और ना फ़रमानी की सज़ा से डराया और मुझ पर एक दुश्मन (शैत़ान) मुसल्लत़ किया, मैं अगर बुराई का क़स्द करता हूं तो वोह मुझे हिम्मत दिलाता है और अगर नेकी का इरादा करता हूं तो ह़ौसला शिक्नी करता है, मैं ग़ाफ़िल हो जाता हूं मगर वोह चोकन्ना रहता है और मैं भूल जाता हूं मगर वोह नहीं भूलता, वोह मुझे शहवतों में ला खड़ा करता है और मुझे शुबहात में डालता है अगर तू उस के मक्रो फ़रेब से मेरी ह़िफ़ाज़त न फ़रमाएगा तो मुझे वोह फुसला कर रहेगा। या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ! तू उसे मग़लूब कर दे और मुझे कषरते ज़िक्र की तौफ़ीक़ दे कर उसे ज़लील कर दे ताकि मैं इन पाकीज़ा लोगों की सोह़बत में काम्याबी ह़ासिल करूं जो तेरी तौफ़ीक़ के तुफ़ैल शैत़ान के शर से मह़फ़ूज़ हैं, बुराई से बचने और नेकी पर जमने की तौफ़ीक़ तेरी ही जानिब से है।" (سیرت ابن عبد الحکم ص ۹۴)

{11} जब कभी किसी ने'मत पर निगाह पड़ती तो येह दुआ़ मांगा करते : اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ اَنْ اُبَدِّلَ کُفْرًا اَوْ اَکْفُرَ بِھَابَعْدَ مَعْرِفَتِھَا اَوْاَنْسَاھَا فَلَااُثْنِیْ بِھَا

या'नी या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं इस से तेरी पनाह चाहता हूं कि मैं ना शुक्री करूं या मैं इस ने'मत को पहचानने के बा'द इस का इन्कार करूं या मैं इस ने'मत को फ़रामोश कर दूं और इस पर तेरी ह़म्दो षना न करूं।

(تاریخ دمشق، ج ۴۵، ص ۲۲۸)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

अमीरुल मोअमिनीन की ज़िम्मादारान पर इन्फ़िरादी कोशिशें

एक अहम मक्तूब

हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَدِیر ने हुकूमती ज़िम्मादारान के नाम एक अहम ख़त तहरीर फ़रमाया था, जिस में हमारे लिये बे शुमार म-दनी फूल हैं, चुनान्चे आप رَحْمَۃُ اللّٰہ تَعالٰی عَلَیْہ लिखते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे उमर बिन अब्दुल अज़ीज़, **अमीरुल मोअमिनीन** की त़रफ़ से उ-मराए लश्कर के नाम :

अम्मा बा'द ! जो शख़्स हुक्मरानी व सल्त़नत में मुब्तला हुवा उसे बहुत सी ना गवारियों और बड़ी मुसीबतों व आज़्माइशों का सामना होता है अगर वोह एक दिन पेश न आईं तो दूसरे दिन लाज़िमन पेश आ कर रहेंगी, साहिबे सल्त़नत से बढ़ कर कोई शख़्स अपने नफ़्स की जानिब से मश्ग़ूल और कज़्रवी के दर पै नहीं होता इल्ला येह कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही किसी को आफ़िय्यत में रखे और उस पर अपना रह्म फ़रमाए, इस लिये जितना हो सके **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरते रहो और अपने इस मन्सब को जिस पर तुम फ़ाइज़ हो और इन ज़िम्मादारियों को जो तुम पर डाली गई हैं हमेशा ज़ेहन में रखो, अपने नफ़्स से इसी त़रह जिहाद करो जिस त़रह कि तुम अपने दुश्मन से लड़ते हो और जब कोई ना गवार मुआ-मला पेश आए तो अपने नफ़्स को इस पर षाबित

क़दम रखो मह़ज़ उस षवाब की ख़ातिर जो इस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के यहां मिलेगा और जिस का वा'दा मुत्तक़ीन से मौत के बा'द किया गया है, जब तुम्हारे पास कोई ऐसा जाहिल और नादान फ़रीक़ आए जिस का मुआ़-मला तक़दीरे इलाही ने तुम्हारे सिपुर्द कर दिया है और तुम उस की जानिब से बद ख़ुल्क़ी और बद तमीज़ी का मुज़ाहिरा देखो तो जहां तक मुमकिन हो उसे राहे रास्त पर लाने की कोशिश करो, उस से नर्मी का बरताव करो और उसे समझाओ पस अगर वोह समझ जाए और इ़ल्म व बसीरत से काम लेने लगे तो येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की जानिब से इन्आ़म व फ़ज़्ल होगा और अगर उसे इ़ल्म व बसीरत ह़ासिल न हो सके तो तुम ने हुज्जत तो पूरी कर दी। अगर तुम किसी शख़्स को देखो कि उस ने ऐसे गुनाह का इरतिकाब किया है जिस की वजह से वोह सज़ा का मुस्तह़िक़ है तो उसे अपने नफ़्सियाती ग़ैज़ व ग़ज़ब की बिना पर सज़ा न दो बल्कि ख़ूब ग़ौरो फ़िक्र के बा'द येह देखो कि उस का गुनाह कितना है और ब तक़ाज़ए इन्साफ़ इस पर उसे कितनी सज़ा मिलनी चाहिये। सज़ा गुनाह के ब क़दर होनी चाहिये अगर गुनाह की सज़ा सिर्फ़ एक कोड़ा बनती है तो एक ही कोड़ा लगाओ और अगर गुनाह इस से बड़ा है और तुम्हारे ख़याल में वोह इस की सज़ा में क़त्ल का या इस से कम सज़ा का मुस्तह़िक़ है तो उसे फ़िलह़ाल जेल भेज दो। इस बात का ख़ूब ख़याल रखो कि जो लोग तुम्हारी मजलिस में आते हैं कहीं उन की ह़ाज़िरी तुम्हें मुलज़िम की सज़ा में जल्दी करने पर आमादा न करे, क्यूंकि बसा अवक़ात ऐसा होता है कि ह़ाकिम मह़ज़ अपने हम नशीनों की मौजूदगी में शहरियों को अदब सिखाने और उन को मरऊ़ब

करने की ख़ातिर सज़ाएं जारी करता है और कोई क़ौम ऐसी नहीं कि वोह हाकिम के किसी फ़ैसले को सुने और फिर उस के पास अपनी ख़्वाहिश के मुवाफ़िक़ मुख़्तलिफ़ सिफ़ारिशें ले कर न आए। अलबत्ता इस से वोह लोग मुस्तषना हैं जिन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का रह़्म हो, क्यूंकि जिन लोगों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने रह़्म फ़रमाया हो वोह ह़क़ व इन्साफ़ के फ़ैसले में इख़्तिलाफ़ नहीं करते, ह़क़ तआ़ला का इरशाद है :

وَلَا يَزَالُوْنَ مُخْتَلِفِيْنَ ﴿۱۱۸﴾ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ *(तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह हमेशा इख़्तिलाफ़ में रहेंगे मगर जिन पर तुम्हारे रब ने रह़्म किया)।*

(پ۱۲، ھود:۱۱۸،۱۱۹)

अगर कोई मुआ़-मला मजहूल और मुबहम हो तो उस की अच्छी त़रह़ तह़क़ीक़ कर लो, और जब तुम्हारे गिर्दो पेश के लोग येह देखें कि तुम अपनी रिआ़या के किसी बे वुक़ूफ़ आदमी के साथ जिस ने ह़िमाकत या ग़-लत़ी की हो क्या बरताव करते हो तो उस के बारे में वोह फ़ैसला करो जो तुम्हारे नज़दीक ज़ियादा इन्साफ़ पर मबनी हो और जो मौत के बा'द तुम्हारे लिये बेहतर हो, मह़ज़ लोगों का तुम को देखना और तुम्हारे कारनामों का तज़किरा करना तुम्हारे लिये इतराने का बाइ़ष नहीं होना चाहिये, क्यूंकि जो बात भी उन के दिल में हो ख़्वाह वोह उसे पसन्द करें, या ना पसन्द, कमो बेश उसे ज़ाहिर कर के रहते हैं। तुम हर उस दिन और रात को ग़नीमत समझो जो आ़फ़िय्यत व सलामती से गुज़र जाए और किसी को ना जाइज़ सज़ा देने का वबाल तुम्हारी गरदन पर न हो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अपने और अपनी रिआ़या के लिये ब कषरत आ़फ़िय्यत की दुआ़ किया करो, क्यूंकि रिआ़या के ठीक होने से

जो फ़ाएदा तुम्हें ह़ासिल होगा वोह उन में से किसी को भी ह़ासिल नहीं होगा और रिआ़या के सिर्फ़ एक आदमी के बिगाड़ से जो तुम्हें नुक़्सान होगा वोह उन में से किसी को भी नहीं होगा, अगर तुम ने रिआ़या से भलाई की या उन की इस्लाह़ व दुरुस्ती की तो इस से सिला मत चाहो, अगर रिआ़या के लिये तुम ने कोई नेक अ़मल और अच्छा कारनामा अन्जाम दिया हो तो उन से जज़ा व षवाब की ख़्वाहिश रखो न किसी मदह़ो षना और माद्दी मन्फ़अ़त की बल्कि जज़ा व षवाब की तवक़्क़ोअ़ सिर्फ़ रब तआ़ला से रखी जाए जो हर ख़ैर को अ़ता करने और शर को दूर करने वाला है। और हां ! अपने दरबान, पूलीस और तमाम मा तह़्त हुक्काम पर कड़ी नज़र रखो, वोह तुम्हारे ज़ेरे दस्त किसी क़िस्म का ज़ुल्म और धान्दली न करने पाएं, उन के बारे में लोगों से ब कषरत दरयाफ़्त करते रहो। पस उन में से जो शख़्स नेक सीरत षाबित हो इस में उसी का फ़ाएदा है और जो शख़्स बद ख़स्लत हो उसे हटा कर उस की जगह किसी अच्छे आदमी को रखो।

हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस की रह़मत और उस की क़ुदरत का वास्त़ा दे कर सुवाल करते हैं कि हमारे गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमाए, हमारे तमाम कामों को आसान कर दे, नेकी व तक़्वा और अपने पसन्दीदा कामों के लिये हमारे सीने खोल दे, तमाम ना पसन्दीदा कामों से बचाए रखे और हमें उन मुत्तक़ियों में शामिल करे जिन का अन्जाम ब ख़ैर है। والسلام عليك (سیرت ابن عبدالحکم ص ۷۳)

सिपह सालार के नाम ख़त़

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِيْر ने अपने एक लश्कर के सिपह सालार मन्सूर बिन ग़ालिब के नाम जो

ख़त तहरीर फ़रमाया उस में येह भी था : तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से जो हालत भी पेश आए उस में तक़्वा को लाज़िम पकड़ लो क्यूंकि तक़्वा सब से बेहतर सामान, सब से उ़म्दा तदबीर और सब से बड़ी कुव्वत है, अपने रु-फ़क़ा के लिये किसी दुश्मन से बचने का जिस क़दर एहतिमाम करते हो उस से कहीं बढ कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी से बचने का एहतिमाम करो क्यूंकि मेरे नज़दीक गुनाह दुश्मन की साज़िशों से ज़ियादा ख़ौफ़नाक हैं, किसी इन्सान की अ़दावत से बढ़ कर अपने गुनाहों से डरो और येह बात हमेशा पेशे नज़र रखो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की जानिब से तुम पर फ़िरिश्ते मुक़र्रर हैं जो तुम्हारे तमाम आ'माल को लिख रहे हैं, अपने सफ़र व ह़ज़र में उन से ह़या करो और उन की अच्छी सोह़बत का ह़क़ अदा करो और उन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानियों से ईज़ा न दो। अपने नफ़्स के मुक़ाबले में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मदद की इसी त़रह दुआ़ करो जिस त़रह तुम अपने दुश्मनों के मुक़ाबले में मदद की दुआ़ करते हो। والسلام عليك

(سیرت ابن عبدالحکم ص ۷۳)

तक़्वा बेहतरीन तोशा है

एक बयान में म-दनी फूल लुटाते हुए फ़रमाया : दुन्या तुम्हारे क़ियाम की जगह नहीं, येह ऐसा घर है जिस के मु-तअ़ल्लिक़ अल्लाह तआ़ला ने फ़ना मुक़र्रर कर दी है और यहां से उस के रहने वालों पर कूच करना फ़र्ज़ कर दिया, बहुत से आबाद करने वाले यक़ीनन अ़न क़रीब ख़राब करने वाले हैं और बहुत से इक़ामत पज़ीर हिर्स करने वाले थोड़ी देर बा'द रखते सफ़र बांधने वाले हैं। अल्लाह तआ़ला तुम पर रह़्म करे, उस जगह से जितना जल्द हो सके अच्छा सफ़र करो और तोशा ले

जाओ, बेहतर तोशा तक़्वा है, दुन्या तो हटने वाले साए की त़रह़ है जो थोड़ा चल कर ख़त्म हो जाता है। (حلیۃ الاولیاء ج۵ ص ۳۲۵)

हमारी हैसिय्यत ज़र ख़रीद ग़ुलाम की सी है

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَدِیْر ने उ़म्माल (या'नी हुकूमती ओ़-हदे दारान) के नाम तह़रीर फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे **अमीरुल मोअमिनीन** उ़मर की त़रफ़ से हुक्काम के नाम, **अम्मा बा'द !** मैं तो साह़िबे सल्त़नत की हैसिय्यत उस ज़र ख़रीद ग़ुलाम की सी पाता हूं जिसे आक़ा ने अपनी ज़मीन की निगरानी पर मुक़र्रर कर दिया हो। उस पर लाज़िम है कि वोह उस ज़मीन की इस्लाह़ की हर मुमकिन कोशिश करे अगर वोह उ़म्दा कार कर्दगी दिखाएगा तो अच्छे अज्र का मुस्तह़िक़ होगा। पस तुम अपने आप को तमाम मुआ़-मलात में इसी मर्तबे में समझो, अपनी पसन्द के ह़ुसूल और ना पसन्द के दफ़्अ़ करने में सब्र से काम लो और हर पोशीदा और ज़ाहिरी मुआ़-मले में अपने नफ़्स को उस चीज़ पर मजबूर करो जिस के ज़रीए़ तुम्हें अपने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ के यहां नजात की उम्मीद हो सकती है, यहां तक कि जब तुम अपनी इस दुन्या से जुदा हो और मुमकिन है कि येह जुदाई बहुत जल्द हो जाए तो नेको कार और मुस्तह़िक़े अज्र ठहरो, अपने गुज़श्ता ज़माने के आ'माल का मुह़ासबा किया करो फिर इन में जो ना पसन्दीदा हों उन की इस्लाह़ कर लो क़ब्ल उस के कि किसी दूसरे को उन की इस्लाह़ करना पड़े और इस सिल्सिले में तुम्हें लोगों की चेह मगोइयों का अन्देशा नहीं होना चाहिये क्यूंकि जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जानता है कि तुम येह काम उस की ख़ात़िर कर रहे हो तो इस पर दुन्या में पेश आने वाले ख़त़रात से वोह ख़ुद ही तुम्हारी किफ़ायत फ़रमाएगा,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जिस रिआ़या का तुम्हें निगरान बनाया है उन के दीन और इज़्ज़त के मुआ़-मलात में उन के ख़ैर ख़्वाह बन कर रहो, जहां तक मुमकिन हो उन के उ़यूब की पर्दा पोशी करो अलबत्ता ऐसी चीज़ जिस को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ज़ाहिर कर दिया हो उस की पर्दा पोशी तुम्हारे लिये रवा (या'नी जाइज़) नहीं होगी । अपनी चाहत और अपने ग़ुस्से के वक़्त ज़ब्ते नफ़्स से काम लो, ताकि ह़त्तल इम्कान वोह मुआ़-मला बेहतरी और ख़ुश उस्लूबी से तै़ हो जाए, और जब तुम से कोई फ़ैसला जल्दी में हो जाए या किसी मुआ़-मले में अपनी चाहत या अपने ग़ुस्से का दख़्ल हो तो इस फ़ैसले से रुजूअ़ कर लिया करो। येह नसीह़तें जो मैं ने तुम को लिखी हैं अपनी इस्तित़ाअ़त के मुत़ाबिक़ ह़क़ समझ कर लिखी हैं, हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मदद चाहते हैं और उस से दरख़्वास्त करते हैं कि वोह हमारे आ'माल की इस्लाह़ फ़रमाए। **वस्सलाम**

ह़ज्जाज की रविश से बचना

गवर्नर अ़दी बिन अरत़ात को लिखा कि मुझे येह ख़बर मिली है कि तुम ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ के त़रीक़े को अपनाते हो, उस की रविश इख़्तियार न करना क्यूंकि वोह नमाज़ अपने वक़्त में नहीं पढ़ता था, ना ह़क़ ज़कात लेता था और इस के इ़लावा कामों को ज़ियादा ज़ाएअ़ करने वाला था। (حلیۃ الاولیاء ج ۵ ص ۳۷۹)

यज़ीद को अमीरुल मोअमिनीन कहने वाले को 20 कोड़े मारे

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیْز अगर्चे ख़लीफ़ा के इन्तिख़ाब के मु-तअ़ल्लिक़ इस्लाम के निज़ाम को दोबारा क़ाइम न कर सके और उन्हें मजबूरन सुलैमान बिन अ़ब्दुल

मलिक की वसिय्यत के मुवाफ़िक़ इस अमानत को यज़ीद बिन अ़ब्दुल मलिक के सिपुर्द करना पड़ा, ता हम वोह दिल से इस शख़्सी निज़ाम को पसन्द नहीं करते थे। शायद येही वजह थी ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز क़ातिले हुसैन "यज़ीदे पलीद" को ख़लीफ़ा नहीं तस्लीम करते थे, चुनान्चे एक बार दौराने गुफ़्त-गू किसी ने यज़ीद को **अमीरुल मोअमिनीन** कहा तो उस से फ़रमाया : तुम यज़ीद को **अमीरुल मोअमिनीन** कहते हो ? फिर उसे 20 कोड़े मारने का हुक्म दिया। (تاریخ الخلفاء ص ۱۶۲)

बुराई को न रोकने का अन्जाम

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने नेकी की दा'वत की अहमिय्यत उजागर करते हुए अपने बा'ज़ गवर्नरों को ख़त़ में लिखा : " **अम्मा बा'द !** कभी ऐसा न हुवा कि किसी क़ौम में कोई बुराई ज़ाहिर हो और उस क़ौम के नेक लोग इस पर रोक टोक न करें फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस क़ौम को किसी अ़ज़ाब में न पकड़ा हो। येह अ़ज़ाब कभी ब राहे रास्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की जानिब से आता है और कभी बन्दों के हाथों ज़ुहूर पज़ीर होता है और लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की गिरिफ़्त और सज़ा से उसी वक़्त तक मह़फ़ूज़ रहते हैं जब तक कि अहले बात़िल को दबा कर रखा जाए और गुनाह अ़लानिया न होने पाए, लोगों में येह सलाह़िय्यत हो कि जूंही किसी से इरतिकाबे ह़राम का ज़ुहूर हो फ़ौरन उस की रोक थाम करें, लेकिन जब ह़राम कामों का इरतिकाब खुले बन्दों होने लगे और मुआ़शरे के नेक और सालेह़ अफ़राद भी रोक टोक करने में सुस्ती करें तो आसमान से ज़मीन पर अ़ज़ाबों का नुज़ूल शुरूअ़ हो जाता है जो गुनहगारों और तसाहुल पसन्द दीन दारों दोनों को

अपनी लपेट में ले लेता है, क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद में जहां ऐसे अ़ज़ाब का ज़िक्र फ़रमाया, वहां मैं ने येह नहीं सुना कि एक को हलाक कर दिया हो और एक को बचा लिया हो सिवाए उन लोगों के जो बुराई से रोकते थे। अगर बिल फ़र्ज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ गुनहगारों को न तो आसमानी अ़ज़ाब से पकड़े, न बन्दों के हाथों कोई अ़ज़ाब नाज़िल करे तब भी येह ज़रूर होगा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरतिकाबे गुनाह में मुब्तला इन लोगों पर ख़ौफ़ व ह़िरास और ज़िल्लत मुसल्लत कर देगा, बसा अवक़ात वोह एक फ़ाजिर से दूसरे फ़ाजिर के ज़रीए और एक ज़ालिम से दूसरे ज़ालिम के ज़रीए इन्तिक़ाम लेता है, फिर दोनों फ़रीक़ अपने आ'माले बद के साथ जहन्नम रसीद हो जाते हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह कि हम ज़ालिम या ज़ालिमों के ज़ुल्म पर ख़ामोश रहने वाले बनें, मुझे येह ख़बर मिली है कि तुम्हारे हां बदकारी आ़म हो रही है और फ़ासिक़ व बदकार शहरों में मामून और बे ख़ौफ़ हैं और वोह अ़लानिया ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाले कामों का इरतिकाब करते हैं, येह बात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को निहायत ना पसन्द है और वोह इस पर चश्म पोशी को बरदाश्त नहीं करता।"

वल्लाह! अहले मह़ारिम पर हाथ और ज़बान से सख़्ती करना और उन की ख़ातिर मशक़्क़तें बरदाश्त करना भी **जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह** ही का एक शो'बा है, ख़्वाह वोह बाप हो, बेटे हों या क़बीले और बरादरी के लोग। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का रास्ता, उस की फ़रमां बरदारी है। मुझे येह ख़बर पहुंची है कि लोग, मलामत के अन्देशे से اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف और نَہْیٌ عَنِ الْمُنْکَر *(या'नी नेकी की दा'वत देने और बुराई से रोकने)* में सुस्ती करते हैं ताकि लोग उन्हें ख़ुश अख़्लाक़, बे तकल्लुफ़ और सिर्फ़

अपनी फ़िक्र करने वाला समझें, मगर येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक ख़ूश अख़्लाक़ नहीं बद अख़्लाक़ हैं और उन्हों ने अपनी फ़िक्र नहीं की बल्कि अपने आप से मुंह फैर लिया है और येह तकल्लुफ़ से बरी नहीं बल्कि इस में बुरी त़रह़ घिर चुके हैं, क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने اَمر بِالْمَعْرُوف और نَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَر के हुक्म से जो ह़ालत उन के लिये तजवीज़ की थी उसे छोड़ कर उन्हों ने दूसरी रविश इख़्तियार कर ली है। हां ! बहुत से लोगों की ज़बान पर एक आयत बार बार आती है, जिसे वोह बे मह़ल पढ़ते हैं और इस की ग़लत़ तावील करते हैं या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह इरशाद :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ؕ (پ۷،المآئدہ۱۰۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो तुम अपनी फ़िक्र रखो तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा जो गुमराह हुवा जब कि तुम राह पर हो।

बिला शुबा किसी गुमराह की गुमराही हमारे लिये मुज़िर नहीं जब कि हम हिदायत पर हों, न किसी की हिदायत हमारे लिये मुफ़ीद है जब कि ख़ुदा न ख़्वास्ता हम गुमराह हों, कोई किसी का बोझ नहीं उठाएगा, मगर जो चीज़ ख़ुद अपनी ज़ात पर और उन लोगों पर लाज़िम है इस पर اَمر بِالْمَعْرُوف और نَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَر का हुक्म भी तो शामिल है, या'नी जब कुछ लोग ह़राम का इरतिकाब करें तो ख़्वाह वोह कोई हों और कहीं रहते हों मगर लाज़िम है कि उन का बदला लिया जाए। जो लोग येह कहते हैं कि "हमारे लिये अपना मश्ग़ला काफ़ी है" और येह कि "हमें लोगों से क्या पड़ी ?" अगर सब इसी नज़रिये पर चल पड़ें तो न **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के किसी हुक्म पर अ़मल होगा न किसी मा'सिय्यत

से बचाव की कोई सूरत होगी, नतीजा येह निकलेगा कि बाति़ल परस्त, ह़क़ परस्त पर ग़ालिब आ जाएंगे और येह दुन्या इन्सानों की नहीं बल्कि चोपायों और जानवरों की हो जाएगी।

इसी लिये फ़ासिकों पर तसल्लुत़ रखो ख़्वाह तुम्हारी और उन की हैषिय्यत कैसी भी हो, अपनी सच्चाई से उन के बाति़ल को और अपनी बीनाई से उन के अन्धे पन को दूर करो, क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला ने फ़ाजिर और बदकारों के मुक़ाबले में नेकोंकारों को खुला ग़-लबा दिया है और उन पर इन का दबदबा रखा है, ख़्वाह येह न ह़ाकिम हों न रईस और जो शख़्स अपने हाथ और अपनी ज़बान से बुराई को रोकने से आ़जिज़ हो उसे इमाम (ख़लीफ़ा) से कहना चाहिये क्यूंकि येह भी नेकी और तक़्वा में तआ़वुन की एक सूरत है।" (سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۳۷)

अ़त़ा कर दो मुझे इस्लाम की तब्लीग़ का जज़्बा
*मैं बस देता फिरूं नेकी की दा'वत **या रसूलल्लाह***

(वसाइले बख़्शिश, स. 147)

ग़ैर मुस्लिमों की मनासिब से मा'ज़ूली

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने अपने उ़म्माल (या'नी गवर्नरों) को लिखा : **अम्मा बा'द :** मुशरिकीन नापाक हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन को शैत़ान का लश्कर ठहराया है और उन्हें ऐसे लोग क़रार दिया है जो आ'माल के लिह़ाज़ से सरासर ख़सारे में हैं, जिन की सारी मह़नत दुन्यवी ज़िन्दगी में खप गई और वोह ब ज़ो'मे ख़ुद अच्छे काम कर रहे हैं। **वल्लाह** येह वोह लोग हैं जिन पर उन की मह़नत की वजह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की और ला'नत करने

वालों की ला'नत पड़ती है। गुज़श्ता दौर में मुसलमान जब ऐसी बस्ती में जाते जहां मुशरिक आबाद होते, तो उन से (भी कारोबारे ममलुकत में) मदद लिया करते थे क्यूंकि येह लोग तह़सील दारी, किताबत और नज़्मो नसक़ से वाक़िफ़ होते थे और इस से मुसलमानों को मदद मिलती थी मगर अब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने **अमीरुल मोअमिनीन** के ज़रीए येह ज़रूरत पूरी कर दी, इस लिये अगर तुम्हारे ज़ेरे सल्त़नत अ़लाक़े में कोई ग़ैर मुस्लिम कातिब (क्लर्क) या कोई और मन्सबदार हो तो उसे मा'ज़ूल कर के उस की जगह मुसलमानों को मुक़र्रर करो क्यूंकि ग़ैर मुस्लिमों के ओ़–हदे और मन्सब का मिटाना दर ह़क़ीक़त उन के दीनों का मिटाना है, ह़क़ारत व ज़िल्लत का जो मक़ाम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन के लिये तजवीज़ किया है उन्हें उसी मक़ाम पर रखना मुनासिब है, इस लिये इस हुक्म की ता'मील करो और अपनी कार गुज़ारी की इत्तिलाअ़ मुझे दो और देखो कोई नसरानी ज़ीन पर सुवार न हो बल्कि वोह पालान पर सुवार हुवा करें। उन की कोई औ़रत ऊंट के कजावे में सुवार न हो बल्कि पालान पर बैठें और येह लोग चोपायों पर टांगें कुशादा कर के न बैठें, बल्कि दोनों पाऊं एक त़रफ़ को कर के बैठें और इस सिल्सिले में अपने तमाम मा तह़्त अफ़सरान को भी पाबन्द करो और उन्हें सख़्ती से इस की ताकीद करो, मेरे लिये सिर्फ़ तुम्हें लिखना काफ़ी होना चाहिये।

(سیرت ابن عبد الحکم ص ۱۳۵)

नौ मुस्लिम पर जिज़्या नहीं

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز के दिल में येह जज़्बा मौ–जज़न रहता था कि इस्लाम सारी दुन्या में फैल

जाए और लोग राहे कुफ़्र छोड़ कर सहीह राह पर गामज़न हो जाएं। आप निहायत ज़ोरो शोर से उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السّلام और अपने गवर्नरों को लिखते कि : "ज़िम्मियों को इस्लाम की खूब दा'वत दो।" (طبقات ابن سعد، ج۵ص ۳۰۱) ज़िम्मियों के मुसलमान होने की सूरत में अगर कोई गवर्नर जिज़्ये की आमदनी कम होने की वजह से ख़ज़ाना ख़ाली होने की शिकायत करता तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه उसे डांट देते थे। एक मरतबा आप ने गवर्नर अ़ब्दुल ह़मीद बिन अ़ब्दुर्रह़मान को लिखा : तुम ने मुझे लिखा है कि हिरा के बहुत से यहूदी, ईसाई और मजूसी मुसलमान हो गए हैं और उन के ज़िम्मे जिज़्या (शरई मह़सूल) की भारी रक़म वाजिबुल अदा है, तुम ने उन से जिज़्या वुसूल करने की इजाज़त त़लब की है। याद रखो ! अल्लाह तआ़ला ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़ैर की दा'वत देने वाला बना कर भेजा है जिज़्या वुसूल करने वाला बना कर नहीं भेजा लिहाज़ा अगर ग़ैर मुस्लिम दाइरए इस्लाम में दाख़िल हो जाएं तो उन के माल में स-दक़ा है जिज़्या नहीं। (الكامل في التاريخ، ج۴ص ۳۲۱ملتقطاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

निज़ामे सल्त़नत की बुन्याद ख़ौफ़े ख़ुदा पर थी

सियासी काम उ़मूमन मस्लह़त और ज़रूरत के तह़त अन्जाम दिये जाते हैं लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز के निज़ामे सल्त़नत की बुन्याद सिर्फ़ ख़ौफ़े ख़ुदा पर क़ाइम थी, वोह जो कुछ करते थे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के डर, क़ियामत की पकड़ और मौत के ख़ौफ़ से करते थे। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल

अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيماً وَّ تَكرِيماً हाज़िर हुए, जब वापस आ रहे थे तो गवर्नर समेत कुछ लोग अल वदाअ़ कहने के लिये आप के साथ साथ थे, इसी दौरान एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **अमीरुल मोअमिनीन** को भलाई से नवाज़े, मुझ पर ज़ुल्म हुवा है और मुश्किल येह है कि मैं इसे बयान भी नहीं कर सकता क्यूंकि गवर्नर ने मुझ से क़सम ली हुई है। आप ने गवर्नर को मुख़ात़ब कर के फ़रमाया : बडे अफ़सोस की बात है तुम ने इस से क़सम ले रखी है ? फिर आप ने उस शख़्स से फ़रमाया : "अगर तुम सच्चे हो तो बिला ख़ौफ़ो ख़त़र ठीक ठीक बताओ।" उस ने डरते डरते गवर्नर की त़रफ़ इशारा कर के अ़र्ज़ की : इस ने मुझ से मेरे माल का 6000 दिरहम में सौदा करना चाहा मगर मैं इतनी रक़म पर फ़रोख़्त करने पर आमादा न था, इसी दौरान मेरे एक क़र्ज़ ख़्वाह ने इस के पास दा'वा दाइर किया, उसे तो गोया बदला चुकाने का मोक़अ़ मिल गया और इस ने पकड़ कर मुझे जेल में डाल दिया, फिर जब तक मैं ने अपना माल इसे तीन हज़ार में नहीं बेचा, इस ने मुझे रिहा नहीं किया और इस ने मुझ से शिकायत न करने की त़लाक़ की क़सम ले रखी है। (या'नी अगर कभी मैं ने इस की शिकायत की तो मेरी बीवी को त़लाक़ हो) हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने गुस्से से गवर्नर की त़रफ़ देखा, फिर अपने हाथ की छड़ी उस की आंखों के दरमियान निशान में चुभोते हुए फ़रमाया : "तुम्हारी इस मेह़राब ने मुझे फ़रेब दिया।" फिर उस शख़्स से फ़रमाया : जाओ तुम्हारा माल वापस किया जाता है।"

(سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۱۴)

गवर्नर नहीं बनूंगा

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز के पास उन के एक गवर्नर की कोई शिकायत पहुंची तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उसे मकतूब रवाना किया जिस में मौत और अ़ज़ाबे नार की याद थी, उस ने जैसे ही वोह मकतूब पढ़ा, त़वील सफ़र कर के ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز की बारगाह में ह़ाज़िर हो गया, जब आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने दरयाफ़्त फ़रमाया : कैसे आना हुवा ? अ़र्ज़ की : आप के मकतूब ने मुझे हिला कर रख दिया है अब मैं मरते दम तक कभी गवर्नर नहीं बनूंगा। (سیرت ابن جوزی ص ۱۲۰)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تَعالٰی عَلَیْہِ واٰلِہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالىٰ على محمَّد

ज़िम्मादारान को मुख़्तलिफ़ नसीह़तें

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने अपने ज़िम्मादारान को म-दनी फूल देते हुए इरशाद फरमाया : ❁ अपनी ज़िम्मादारियों की बजा आवरी में रब तआ़ला से डरो और उस की गिरिफ़्त में ताख़ीर की वजह से उस की ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ न रहो क्यूंकि गिरिफ़्त करने में जल्दी वोही करता है जो मौत से हम कनार होने वाला हो (और रब तबा-र-क व तआ़ला मौत से पाक है) ❁ जब तुम्हारे इख़्तियारात तुम्हें लोगों पर ज़ुल्म ढाने पर आमादा करें तो खुद पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत को याद कर लिया करो।

۞ اِعْمَلْ لِلدُّنْيَا عَلٰى قَدْرِ مَقَامِكَ فِيْهَا وَاعْمَلْ لِلْاٰخِرَةِ عَلٰى قَدْرِ مَقَامِكَ فِيْهَا *या'नी दुन्या के लिये उतनी तय्यारी करो जितना अ़र्सा दुन्या में रहना है और आख़िरत के लिये उतनी तय्यारी करो जितना वहां रहना है।* (سیرت ابن جوزی ص ۱۲۱)

अमीन कैसे हों

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने गवर्नर अ़दी बिन अरत़ात को लिखा : तुम्हारे अमीन दरमियाने त़-बक़े के लोग होने चाहिये क्यूंकि वोह बेहतरीन लोग होते हैं न ह़क़ को छोड़ते हैं न बात़िल कमाते हैं। (سیرت ابن عبد الحکم ص ۱۴۲)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

येह हमारे लिये रिश्वत है

एक बार हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने दौराने गुफ़्त-गू सेब की ख़्वाहिश ज़ाहिर की, उन के ख़ानदान का एक शख़्स उठा और उन की ख़िदमत में एक सेब हदिय्यतन भेज दिया। जब आदमी सेब ले कर आया तो उस को क़बूल तो नहीं किया लेकिन अख़्लाक़न फ़रमाया : जा कर कह दो कि आप का हदिया क़बूल हुवा। उन से कहा : "येह तो घर की चीज़ है क्यूंकि आप के रिश्तेदार ने भेजी है, आप को मा'लूम है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हदिया क़बूल फ़रमाते थे।" फ़रमाया : रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये हदिया बिला शुबा हदिया ही था लेकिन हमारे ह़क़ में रिश्वत है। (تاریخ دمشق، ج ۴۵، ص ۲۲۰)

सेबों के त़बाक़

मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1548 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल बैनल अक़्वामी शोहरत याफ़्ता किताब **"फ़ैज़ाने सुन्नत"** जिल्द अव्वल के सफ़ह़ा 541 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुरात बिन मुस्लिम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم का बयान है : एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز को सेब खाने की ख़्वाहिश हुई मगर घर में कोई ऐसी चीज़ न मिली जिस के बदले **सेब** ख़रीद सकें। चुनान्चे हम उन के साथ सुवार हो कर निकले। देहात की जानिब कुछ लड़के मिले जिन्हों ने **सेबों** के **त़बाक़** (तोह़फ़तन पेश करने के लिये) उठाए हुए थे। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने एक त़बाक़ उठा कर सूंघा और फिर वापस कर दिया। मैं ने उन से इस बारे में अ़र्ज़ की तो फ़रमाया, मुझे इस की ह़ाजत नहीं। मैं ने अ़र्ज़ की, क्या सय्यिदुना रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर और सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا तोह़फ़ा क़बूल नहीं फ़रमाया करते थे ? इरशाद फ़रमाया, बिला शुबा येह उन के लिये **तह़ाइफ़** ही थे मगर उन के बा'द के उ़म्माल (या'नी हुक्काम या उन के नुमाइन्दों) के लिये **रिश्वत** हैं।

(عمدۃ القاری ج۹ص۴۱۸)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने **तोह़फ़े** के **सेब क़बूल फ़रमाने से इन्कार कर दिया** क्यूंकि आप जानते थे कि येह तोह़फ़ा ब हैषिय्यते ख़लीफ़ए वक़्त दिया जा रहा है अगर मैं ख़लीफ़ा न होता तो

कोई क्यूं देता ? और येह बात तो हर ज़ी शुऊ़र आदमी समझ सकता है कि **वु-ज़रा, क़ौमी व सूबाई एसेम्बली** के **मिम्बरान या दीगर हुकूमती अफ़सरान व मुन्तख़ब नुमाइन्दगान नीज़ जज साहि़बान ह़त्ता कि पूलीस वग़ैरा** को लोग क्यूं तोह़्फ़ा देते हैं और उन की किस सबब से ख़ुसूसी दा'वतें करते हैं। ज़ाहिर है या तो "काम" निकलवाना मक़्सूद होता है या येह ज़ेह्न होता है कि आइन्दा इस की ज़रूरत पड़ने की सूरत में आसानी से तरकीब बन जाएगी। इन दोनों वुजूहात की बिना पर ऐसे लोगों को तोह़्फ़ा देना और उन की ख़ुसूसी दा'वत करना **रिश्वत** के हुक्म में है और रिश्वत देने और लेने वाला जहन्नम का ह़क़दार है। ऐसे मोक़अ़ पर ईदी, मिठाई, चाए पानी या ख़ुशी से पेश कर रहा हूं, मह़ब्बत में दे रहा हूं वग़ैरा ख़ूब सूरत अल्फ़ाज़ **रिश्वत** के गुनाह से नहीं बचा सकते। अगर्चे वाक़ेई इख़्लास के साथ पेश किया गया हो और रिश्वत की कोई सूरत न बनती हो तब भी ऐसों का अपने मा तह़तों से तोह़्फ़ा या ख़ुसूसी दा'वत क़बूल करना "**मज़िन्नए तोहमत**" या'नी तोहमत की जगह खड़ा होना है, जब कि सरदारे मक्कए मुकर्रमा, सुल्ताने मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हि़फ़ाज़त निशान है : जो **अल्लाह** तआ़ला और आख़िरत पर ईमान रखता हो वोह तोहमत की जगह खड़ा न हो। (كشف الخفاء ج۲ص ۲۲۷ حديث ۲۴۹۹)

इस लिये यहां **मज़िन्नए तोहमत** से बचना वाजिब है लिहाज़ा देना भी ना जाइज़ और लेना भी ना जाइज़। हां अगर ओ़-हदा मिलने से क़ब्ल ही आपस में तह़ाइफ़ के लेन देन और **ख़ुसूसी दा'वत** की तरकीब थी तो अब ह़रज नहीं मगर पहले कम था और अब मिक़्दार बढ़ा दी तो

ज़ाइद हिस्सा ना जाइज़ हो जाएगा। अगर देने वाला पहले की निस्बत मालदार हो गया है और उस ने इस वजह से बढ़ाया है तो लेने में ह़रज नहीं। इसी त़रह़ पहले के मुक़ाबले में अब जल्दी जल्दी ख़ुसूसी दा'वत होने लगी है तब भी ना जाइज़ है। अगर देने वाला ज़विल अरह़ाम या'नी ख़ूनी रिश्ते वालों में से है तो देने लेने में ह़रज नहीं। (वालिदैन, भाई, बहन, नाना, नानी, दादा, दादी, बेटा, बेटी, चचा, मामूं, ख़ाला, फूफी, वग़ैरा मह़रम रिश्तेदार हैं जब कि फूफा, बहनोई, चची, ताई, मुमानी, भाभी, चचाज़ाद, फूफीज़ाद, खालाज़ाद, मामूंज़ाद वग़ैरा ज़ी रेह़्म या'नी मह़रम रिश्तेदारों से ख़ारिज हैं) म-षलन बेटा या भतीजा जज है उस को वालिद या चचा ने तोह़्फ़ा दिया या ख़ुसूसी दा'वत दी तो क़बूल करना जाइज़ है। हां बिलफ़र्ज़ बाप का मुक़द्दमा जज बेटे के यहां चल रहा हो तो अब मज़िन्नए तोहमत की वजह से ना जाइज़ है। बयान कर्दा अह़काम सिर्फ़ हुकूमती अफ़राद के लिये ही नहीं हर समाजी, सियासी और मज़हबी लीडर व क़ाइद के लिये भी हैं। ह़त्ता कि **दा'वते इस्लामी की तमाम तन्ज़ीमी मजालिस के जुम्ला निगरान व ज़िम्मादारान भी अपने अपने मा तह़्तों से तोह़्फ़ा या ख़ूसीसी दा'वत क़बूल नहीं कर सकते।** छोटा ज़िम्मादार अपने से बडे ज़िम्मादार से क़बूल कर सकता है। म-षलन दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा का रुक्न, निगराने शूरा से क़बूल कर सकता है मगर दीगर दा'वते इस्लामी वालों से क़बूल नहीं कर सकता और निगराने शूरा अपने किसी भी मा तह़्त दा'वते इस्लामी वाले का तोह़्फ़ा नहीं ले सकता। मुदर्रिस अपने शागिर्दों या उस के सर परस्त का बिला इजाज़ते शरई तोह़्फ़ा नहीं ले सकता। हां ता'लीम से फ़राग़त के बा'द अगर शागिर्द तोह़्फ़ा या ख़ुसूसी दा'वत दे

तो क़बूल कर सकता है। वोह उ़–लमा व मशाइख़ जिन को लोग इल्मो फ़ज़्ल की ता'ज़ीम के सबब नज़्राने पेश करते हैं और वोह क़बूल भी करते हैं और लोग उन पर रिश्वत की तोहमत भी नहीं लगाते चुनान्चे ऐसे ह़ज़रात का तोह़्फ़ा क़बूल करना मज़िन्नए तोहमत से ख़ारिज होने की वजह से जाइज़ है।

सूदो रिश्वत में नहूसत है बड़ी
नीज़ दोज़ख़ में सज़ा होगी कड़ी

(वसाइले बख़्शिश, स. 668)

क़लम बारीक कर लो

आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने दफ़्तरी अख़राजात में कमी कर दी। दफ़्तर के लिये बैतुल माल से काग़ज़ के लिये जो रक़म मिलती थी, उस की निस्बत गवर्नर अबू बक्र बिन ह़ज़्म को लिखा कि क़लम को बारीक कर लो और सत़रें क़रीब क़रीब लिखो और तमाम ज़रूरियात में किफ़ायत शिआ़री से काम लो क्यूंकि मैं मुसलमानों के ख़ज़ाने में से ऐसी रक़म सर्फ़ करना पसन्द नहीं करता जिस का फ़ाएदा उन को न पहुंचे। (سیرت ابن جوزی ص ۱۰۱)

शम्अ़ की जगह चराग़ जलाओ

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَدِیْر ने अबू बक्र बिन ह़ज़्म जो **मदीनए मुनव्वरा** زادَھَااللّٰہُ شَرَفًاوَّ تَعظِیْماً وَّ تَکرِیماً के गवर्नर थे, लिखा : **अम्मा बा'द !** मैं ने तुम्हारा वोह ख़त़ पढ़ा जो तुम ने सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक (ख़लीफ़ए साबिक़) को लिखा था, उस में था कि तुम से पहले गवर्नरों को शम्अ़ की मद में इतनी रक़म मिलती थी जिस से वोह अपनी आ़मदो रफ़्त के रास्तों में रोशनी का इन्तिज़ाम

करते थे। (सुलैमान का चूंकि इन्तिक़ाल हो चुका है इस लिये) इस के जवाब की ज़िम्मादारी मुझ पर आ़इद होती है, ऐ अबू बक्र ! मुझे तुम्हारा वोह वक़्त अच्छी त़रह़ याद है जब तुम सर्दियों की सख़्त अन्धेरी रातों में रोशनी के बिग़ैर अपने घर से निकलते थे, आज तुम्हारी ह़ालत उस दिन से कहीं ज़ियादा बेहतर है, लिहाज़ा अपने घर के चराग़ों से काम चलाओ। (سیرت ابن جوزی ص ۱۰۰)

अ़द्ल का क़ल्अ़ा बना दो

एग गवर्नर ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز की ख़िदमत में ख़त़ लिखा : हमारा शहर ख़स्ता ह़ाल हो चुका है, इमारतें टूट फूट गई हैं अगर **अमीरुल मोअमिनीन** की इजाज़त हो तो कुछ रक़म मख़्सूस कर के इस की अज़ सरे नौ ता'मीर व मरम्मत कर दें? आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जवाब में लिखा : حَصِّنْهَا بِالْعَدْلِ، وَنَقِّ طُرُقَهَا مِنَ الظُّلْمِ فَاِنَّهٗ مُرَمَّتُهَا *या'नी तुम अपने शहर को अ़द्ल का क़ल्अ़ा बना लो और उस के रास्तों को ज़ुल्म से पाक करों, येही उस की ता'मीर व मरम्मत है।* (سیرت ابن جوزی ص ۱۱۰)

गवाहियों पर फ़ैसला करो

यह़्या ग़सानी कहते हैं कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने मुझे शाम के शहर मोसिल का ह़ाकिम मुक़र्रर किया तो मैं ने वहां जा कर देखा कि चोरी और नक़्ब ज़नी की वारदातें ब कषरत होती है, मैं ने येह तमाम अह़्वाल ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز को लिख कर भेजे और दरयाफ़्त किया कि मैं चोरियों के इन मुक़द्दमात में लोगों की तोहमत पर इन्ह़िसार कर के अपनी राय के मुत़ाबिक़ सज़ा दूं या गवाहियों

पर फ़ैसला करूं ? आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने जवाबन तह़रीर फ़रमाया : गवाहियों पर फ़ैसला करो, अगर ह़क़ व अ़द्ल ने उन की इस्लाह़ नहीं की तो रब तआ़ला कभी उन की इस्लाह़ नहीं फ़रमाएगा। यह़्या कहते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمةُ اللّٰہِ العَزِیز की हिदायत के मुत़ाबिक़ ही मुक़द्दमात के फ़ैसले किये जिस का नतीजा येह निकला कि जब मेरा मूसिल से तबा–दला हुवा तो वोह पुर अम्न शहर बन चुका था जहां चोरी और डकेती की वारदातें न होने के बराबर थीं। (تاریخ الخلفاء ص ۱۹۰)

क़ाज़ी कैसा होना चाहिये ?

मुज़ाह़िम बिन ज़ुफ़र का बयान है कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمةُ اللّٰہِ العَزِیز को फ़रमाते सुना : क़ाज़ी में पांच ख़स्लतें होनी चाहिये :

(1) क़ुरआनो सुन्नत का आ़लिम हो (2) ह़िल्म वाला हो (3) ख़ुद्दार हो (4) परहेज़ गार हो (5) मश्वरा करने वाला हो। जब येह पांच चीज़ें क़ाज़ी में पाई जाएं तो वोह क़ाज़ी है वरना इन्साफ़ के नाम पर धब्बा है। (سیرت ابن جوزی ص ۲۷۵)

ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले को क़ाज़ी मुक़र्रर कर दिया

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمةُ اللّٰہِ العَزِیز के ज़मानए ख़िलाफ़त से पहले सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक के पास अहले मिस्र का एक वफ़्द आया, जिस में इब्ने ख़ुज़ामिर नामी एक शख़्स भी शरीक था, ख़लीफ़ा सुलैमान ने उन लोगों से अहले मग़रिब के ह़ालात पूछे तो इब्ने ख़ुज़ामिर के सिवा सब ने वहां के ह़ालात बयान

किये और "**सब अच्छा है**" की रिपोर्ट दी। जब वफ़्द रुख़्सत होने लगा तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने इब्ने ख़ुज़ामिर से ख़ामोशी की वजह पूछी, उस ने कहा : झूट बोलते हुए मुझे ख़ुदा का ख़ौफ़ मह़सूस होता है। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने इस वाक़ेए को याद रखा, यहां तक कि जब ख़लीफ़ा हुए तो "इब्ने ख़ुज़ामिर" को मिस्र का क़ाज़ी मुक़र्रर कर दिया। (تاریخ دمشق، ج۳۳،ص۳۸۵)

गवर्नर बनाने से पहले ठोक बजा कर देखा

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز जब किसी को क़ाज़ी या गवर्नर मुक़र्रर करते तो उस के बारे में तह़क़ीक़ करवा कर सारी मा'लूमात जम्अ़ करते कि येह तक़्वा व त़हारत में कैसा है ? इल्मो अ़मल में इस का क्या मर्तबा है ? इस के ज़ाहिरो बात़िन में कोई फ़र्क़ तो नहीं ? येह तह़क़ीक़ इस लिये करते कि कहीं आप किसी के ज़ाहिरी ह़ालात से धोका न खाएं। जब पूरा पूरा इत़्मीनान हो जाता तो फिर आप उस को क़ाज़ी या गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाते चुनान्चे बिलाल बिन अबी बुर्दा को आप ने इसी तह़क़ीक़ व तफ़्तीश से रद किया था। बिलाल बिन अबी बुर्दा एक होशयार, ज़हीन, ज़की और निहायत अ़क़्ल मन्द शख़्स था। येह "ख़ुनासिरा" में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और आप को इन अल्फ़ाज़ में ख़िलाफ़त की मुबारक बाद दी : "**अमीरुल मोअमिनीन** ! अगर ख़िलाफ़त को किसी से शरफ़ ह़ासिल हुवा तो आप से ह़ासिल हुवा है और अगर ख़िलाफ़त को किसी से ज़ीनत मिली हो तो आप से मिली है।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز की

ता'रीफ़ करने के बा'द येह शख़्स मस्जिद में गया और एक सुतून के पास खड़ा हो कर नमाज़ पढ़ने लगा। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ الْعَزِيز ने अपने मो'तमिदे ख़ास से कहा कि अगर इस का बातिन भी ज़ाहिर की त़रह़ है तो येह वाक़ेई इराक़ का गवर्नर बनने का अहल है और इस की ख़िदमात से फ़ाएदा उठाना ज़रूरी है। रफ़ीक़े ख़ास ने कहा : अभी तह़क़ीक़ कर के इस के मुकम्मल ह़ालात आप के सामने पेश करता हूं। चुनान्चे वोह उसी वक़्त मस्जिद में गए और बिलाल बिन अबी बुर्दा से बात का आग़ाज़ इस त़रह़ किया : आप को पता है कि **अमीरुल मोअमिनीन** की निगाह में मेरा क्या मक़ाम है अगर मैं **अमीरुल मोअमिनीन** के सामने इराक़ की गवर्नरी के लिये आप का नाम पेश कर दूं तो आप मुझे क्या देंगे ? बिलाल ने उन्हें ज़मानत देते हुए कहा : मैं इस बदले में आप को बहुत सा माल दूंगा। उन्हों ने सारा माजरा **अमीरुल मोअमिनीन** के सामने कह सुनाया तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰى عَلَيْه ने उसे गवर्नर बनाने का इरादा तर्क कर दिया और अहले इराक़ को लिख कर भेजा : इस शख़्स को बोलना तो बहुत आता था मगर अ़क़्ल कम थी। (سیرتِ ابن جوزی ص ۱۱۳ ملتقطاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

किसी काम का फ़ैसला कैसे करे ?

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ الْعَزِيز ने फ़रमाया :

اَلْاُمُوْرُ ثَلَاثَةٌ اَمْرٌ اِسْتَبَانَ رُشْدُهٗ فَاتَّبِعْهُ ، وَاَمْرٌ اِسْتَبَانَ ضِدُّهٗ فَاجْتَنِبْهُ ، وَاَمْرٌ اَشْكَلَ فَرُدَّهٗ اِلَى اللّٰهِ

या'नी काम तीन क़िस्म के होते हैं : (1) जिस का दुरुस्त होना बिलकुल

वाज़ेह़ हो, इस काम को कर डालो (2) जिस का ग़लत़ होना यक़ीनी हो, इस काम से बचो और (3) वोह जिस का दुरुस्त या ग़लत़ होना वाज़ेह़ न हो तो ऐसे काम के करने या न करने पर **अल्लाह** *तआ़ला से इस्तिख़ारा करो (या'नी हिदायत चाहो)।* (باب السلک فی طبائع الملک،مشورۃ ذوی رأی،ج۱ص۱۶۷)

उसी वक़्त इस्लाह़ करते

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَدِیْر ने किसी मुक़द्दमे का फ़ैसला सुनाया तो ह़ज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ भी वहीं मौजूद थे। जब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ वहां से उठ खड़े हुए तो ह़ज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कहा : या **अमीरुल मोअमिनीन** ! मेरी राय में आप ने दुरुस्त फ़ैसला नहीं दिया। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : आप को उसी वक़्त कहना चाहिये था। अ़र्ज़ की : मुझे अच्छा नहीं लगा कि लोगों के सामने आप को शरमिन्दा करूं। फ़रमाया : फिर भी आप को कह देना चाहिये था ताकि लोगों को पता चले कि बादशाही ह़क़ की है। (تاریخ دِمشق،ج۴۵،ص۲۰۰)

नसीह़त करने का ह़क़

ह़ज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ الْعَزِیز ने मुझे ताकीद की : قُلْ لِیْ فِیْ وَجْھِیْ مَا اَکْرَہُ فَاِنَّ الرَّجُلَ لَا یَنْصَحُ اَخَاہُ حَتّٰی یَقُوْلَ لَہٗ فِیْ وَجْھِہٖ مَا یَکْرَہُ *या'नी जो बात मुझे ना पसन्द हो वोह मेरे मुंह पर कह दिया करें क्यूंकि इन्सान अपने भाई को उस वक़्त तक ह़क़ीक़ी मा'नों में नसीह़त नहीं कर सकता जब तक उस के सामने ना गवार गुज़रने वाली बात कहने की हिम्मत न रखता हो।*

(باب السلک فی طبائع الملک،مشورۃ ذوی رأی،ج۱ص۱۷۱)

मेरे ग़ैर शरई हुक्म को दीवार पर दे मारना

हज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَدِیْر ने मुझे किसी चीज़ की ज़िम्मादारी दी और फ़रमाया :

اِنْ جَاءَكَ كِتَابِی بِغَيْرِ الْحَقِّ فَاضْرِبْ بِهِ الْحَائِطَ *या'नी अगर आप के पास मेरा कोई ग़ैर शरई हुक्म आए तो उसे दीवार पर दे मारियेगा।* (تاریخ دِمشق،ج۴۵،ص۲۰۰)

मुआ़फ़ करने में ख़त़ा सज़ा देने में ख़त़ा से बेहतर है

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ने फ़रमाया : शुबहा की सूरत में सज़ा में ह़त्तल मक्दूर नर्मी इख़्तियार करो, क्यूंकि ह़ाकिम की मुआ़फ़ करने में ख़त़ा, सज़ा देने में ख़त़ा से बेहतर है। (سیرت ابن جوزی ص ۱۲۳)

आ़दिल अ़दालत का आ़दिल फ़ैसला

समर क़न्द के ज़िम्मियों ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَدِیْر के पास एक वफ़्द भेजा जिस ने शिकायत की, कि मुस्लिम सिपह सालार ने इस्लामी लश्कर कुशी के उसूलों से इन्ह़िराफ़ करते हुए समर क़न्द को फ़त्ह़ किया था, लिहाज़ा हमें इन्साफ़ दिलाया जाए। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने समर क़न्द के गवर्नर सुलैमान बिन अबी सरा को ख़त़ लिखा कि समर क़न्द वालों ने मुझ से अपने ऊपर होने वाले ज़ुल्म की शिकायत की है, मेरा ख़त़ मिलते ही उन का मुक़द्दमा सुनने के लिये क़ाज़ी मुक़र्रर करो, अगर क़ाज़ी उन के ह़क़ में फ़ैसला कर

दे तो येह लोग अपनी छावनी में रहेंगे और मुसलमान पहले वाली जगह पर वापस आ जाएं। गवर्नर ने हस्बे हुक्म क़ाज़ी का तक़र्रुर कर दिया जिस ने इस्लामी अद्ल के म-दनी फूलों (या'नी उसूलों) को मद्दे नज़र रखते हुए ज़िम्मियों के हक़ में फ़ैसला कर दिया और हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِيْر की हिदायत के मुवाफ़िक़ ज़िम्मियों को छावनी में रहने और मुसलमानों को छावनी से बाहर निकल जाने का हुक्म दिया नीज़ जदीद मसा-लहत या जंग का फ़ैसला करने का हुक्म दिया। अदलो इन्साफ़ के शाहकार फ़ैसले को सुन कर समर क़न्दी पुकार उठे : नहीं, हम पहले वाली हालत में ही रहना चाहते हैं, जंग नहीं चाहते क्यूंकि मुसलमान हमारे साथ अम्नो अमान की ज़िन्दगी बसर करते हैं हमें कोई तकलीफ़ नहीं देते, अगर हमें जंग में धकेल दिया गया तो न जाने काम्याबी किस की हो ? इस लिये हमें हस्बे साबिक़ मुसलमानों के तहत रहना क़बूल है। (تاریخ طبری، ج۴،ص۲۵۱)

ज़िम्मी को इन्साफ़ दिलाया

एक बार किसी मुसलमान ने हीरा के किसी ज़िम्मी को क़त्ल कर डाला, हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने वहां के गवर्नर को लिखा कि क़ातिल को मक़्तूल के वारिष के हवाले कर दो, चाहे वोह क़त्ल करे चाहे वोह मुआफ़ कर दे, चुनान्चे क़ातिल को मक़्तूल के वारिष के हवाले कर दिया गया जिसे उस ने बदले में क़त्ल कर दिया। (نصب الرایۃ فی تخریج احادیث الھدایۃ ج5 ص90)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللّٰهُ تعالٰی علٰی محمَّد

हज्जाज के साथ काम करने वाले को गवर्नर न बनाया

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने एक शख़्स को गवर्नर बनाया, बा'द में मा'लूम हुवा कि वोह हज्जाज बिन यूसुफ़ का गवर्नर रह चुका है तो उसे मा'ज़ूल कर दिया। वोह मा'ज़िरत के लिये आप के पास आया और कहा : मैं बहुत थोड़े अ़र्से के लिये ही हज्जाज का गवर्नर रहा हूं। फ़रमाया : बुरे आदमी की एक आध दिन की सोहबत भी तुम्हें नुक़्सान पहुंचाने के लिये काफ़ी है।

(سیرت ابن جوزی ص ١٠٨)

क्या येह ना फ़रमानी थी ?

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने एक शख़्स को गवर्नर बनाना चाहा तो उस ने मा'ज़िरत कर ली, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का इसरार बढ़ा तो उस ने क़सम खा ली : मैं येह काम नहीं करूंगा। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : ना फ़रमानी मत करो। वोह कहने लगा : या **अमीरल मोअमिनीन** ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَاَبَیْنَ اَنْ یَّحْمِلْنَهَا وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا

(پ ٢٢، احزاب: ٧٢)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हम ने अमानत पेश फ़रमाई आसमानों और ज़मीन और पहाड़ों पर तो उन्हों ने इस के उठाने से इन्कार किया और इस से डर गए।

अब येह बताइये कि क्या ज़मीन व आसमान का इन्कार करना ना फ़रमानी थी ? येह सुन कर हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने उसे जाने दिया। (حلیۃ الاولیاء، ج٥، ص ٣٠٤)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत से हमें एक ज़बर दस्त म–दनी फूल मिला और वोह येह कि हमें अपने मा तह़्त से "**ना**" सुनने का भी ह़ौसला रखना चाहिये, हो सकता है कि वोह बे चारा किसी ह़क़ीक़ी मजबूरी की वजह से हमारे कहे पर अ़मल न कर सकता हो ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

खुली आज़माइश

एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा, अ़र्ज़ की : या **अमीरुल मोअमिनीन** ! मुझ पर बड़ा ज़ुल्म हुवा है । फ़रमाया : "किस ने किया ?" वोह शख़्स ख़ामोश रहा, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰى عَلَيْه ने बार बार दरयाफ़्त फ़रमाया मगर उस शख़्स की ज़बान से ज़ुल्म करने वाले का नाम नहीं निकल पाता था जो ग़ालिबन आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰى عَلَيْه का कोई अ़ज़ीज़ था, बिल आख़िर उस ने कहा कि फ़ुलां शख़्स ने मेरा इतना माल ज़बर दस्ती ले लिया है । आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰى عَلَيْه ने फ़ौरन ग़ुलाम से क़लम, दवात और काग़ज़ त़लब किया और अपने गवर्नर के नाम लिखा : फ़ुलां आदमी ने मेरे पास येह शिकायत की है, अगर येह सह़ीह़ है तो मुझे इत्तिलाअ़ देने से पहले इस का माल इसे वापस मिल जाना चाहिये । तह़रीर लिखने के बा'द आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰى عَلَيْه ने एक हाथ से दूसरे हाथ को मलते हुए येह आयत पढ़ी :

اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْبَلٰٓؤُا الْمُبِيْنُ ﴿۱۰۶﴾
(پ۲۳، الصافات:۱۰۶)

तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान : बे शक येह रोशन जांच थी ।

(سیرت ابن عبدالحکم ص ۵۳)

चालीस कोड़े लगवाए

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز का हुक्म था कि कोई मुसलमान किसी ज़िम्मी के माल पर दस्त दराज़ी न करे, इस हिदायत के अषरात थे कि कोई मुसलमान किसी ग़ैर मुस्लिम के माल और ज़मीन पर दस्त दराज़ी नहीं कर सकता था अगर ऐसा करता तो उसे क़रार वाक़ेइ़ सज़ा मिलती थी। चुनान्चे एक मरतबा एक मुसलमान रबीआ़ ने एक सरकारी ज़रूरत के तह़त किसी का घोड़ा बेगार (बिला उजरत मह़ज़ सरकारी दबाव) में पकड़ लिया और उस पर सुवारी की। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से पहले येह एक मा'मूली बात हुवा करती थी लेकिन जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز को इस बात का पता चला तो इस ओ़-हदे दार को चालीस कोड़े लगवाए ताकि दूसरों के लिये बाइ़षे इ़ब्रत हो।

(طبقات ابن سعد، ج۵، ص۲۹۱)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تعالٰی علٰی محمَّد

मुलज़म और मुजरिम का फ़र्क़

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز की त़रफ़ से मुक़र्रर होने वाले उ़म्माल बा'ज़ अवक़ात ख़ुद इत्तिलाअ़ देते कि हम से पहले जो उ़म्माल थे, उन्हों ने माल ग़सब किया था, अगर **अमीरुल मोअमिनीन** का इरशाद हो तो येह माल उन से ज़ब्त़ कर लिया जाए? ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز

उन को हुक्म लिखवा कर भेजते कि इस मुआ़-मले में मुझ से मश्वरा करने की ज़रूरत नहीं, अगर शहादत हो तो शहादत की रू से और इक़रार हो तो इक़रार की रू से माल वापस लो, वरना ह़लफ़ ले कर छोड़ दो जैसा कि ब-सरा के गवर्नर अ़दी बिन अरत़ात को लिखा : **अम्मा बा'द** ! तुम ने ख़त़ के ज़रीए़ बताया था कि तुम्हारे अ़लाके़ में अहल कारों की ख़ियानत का इन्किशाफ़ हुवा है और उन्हें सज़ा देने के लिये मुझ से इजाज़त मांगी थी, गोया तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की गिरिफ़्त से बचने के लिये मुझे ढाल बनाना चाहते थे, जब तुम्हें मेरा येह ख़त़ मिले तो अगर उन के ख़िलाफ़ शहादत मौजूद हो तो उन से मुआ़-ख़ज़ा करो और सज़ाएं दो वरना नमाज़े अ़स्र के बा'द उन से येह क़सम ले लो : "उस ज़ात की क़सम जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, हम ने मुसलमानों के माल में ज़रा भी ख़ियानत नहीं की।" अगर वोह येह क़सम खा लें तो उन्हें छोड़ दो क्यूंकि हम येही कुछ कर सकते हैं, **वल्लाह** ! उन का अपनी ख़ियानतें ले कर बारगाहे इलाही में पहुंचना मेरे लिये आसान है बजाए इस के कि मैं उन के ख़ून का वबाल अपनी गरदन पर ले कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर होऊं। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۵۵)

हमेशा हाथ भलाई के वास्ते उठें
बचाना ज़ुल्मो सितम से मुझे सदा या रब

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

किसी की त़रफ़ गुनाह की निस्बत करना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हि़कायत से हमें येह दर्स भी मिला कि बिला षुबूते शरई किसी की त़रफ़ गुनाह की निस्बत न की

जाए या'नी किसी को उस वक़्त तक ख़ाइन, राशी, सूद ख़ोर न क़रार दिया जाए, जब तक हमारे पास शरई षुबूत न हो, **हुज्जतुल इस्लाम** इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : "अगर किसी शख़्स के मुंह से शराब की बू आ रही हो तो उस को शरई ह़द लगाना जाइज़ नहीं क्यूंकि हो सकता है कि उस ने शराब का घूंट भरते ही कुल्ली कर दी हो या किसी ने उसे ज़बर दस्ती शराब पिला दी हो, जब येह सब एह़तिमाल मौजूद हैं तो (षुबूते शरई के बिग़ैर) मह़्ज़ क़ल्बी ख़यालात की बिना पर तस्दीक़ कर देना और उस मुसलमान के बारे में **बद गुमानी** करना जाइज़ नहीं है।" (احیاء علوم الدین، کتاب آفات اللسان، ج۳ص۱۸۶)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दिखावे का अन्जाम

वलीद बिन हिशाम ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ الْعَزِيز को ख़त़ में लिखा : "मैं ने अपने माहाना अख़राजात का हि़साब लगाया है तो पता चला है कि मेरी तन ख़्वाह मेरी ज़रूरियात से ज़ियादा है अगर आप मन्ज़ूर फ़रमाएं तो इस ज़ाइद रक़म को मेरी तन ख़्वाह से कम कर दिया जाए।" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : لَوْ كُنْتُ عَازِلاً اَحَداً عَلٰى ظَنٍّ لَعَزَلْتُهٗ *या'नी अगर मैं मह़्ज़ गुमान की बिना पर किसी को मा'ज़ूल करता तो इसे कर देता।* फिर उस की दरख़्वास्त को मन्ज़ूर करते हुए तनख़्वाह कम कर दी मगर अपने वली अ़हद यज़ीद बिन अ़ब्दुल मलिक के नाम येह तह़रीर लिखवाई : वलीद बिन हिशाम ने मुझे इस मज़्मून की दरख़्वास्त भेजी है अगर्चे मुझे इत़्मीनाने क़ल्ब नहीं मगर मैं ने ज़ाहिर पर अ़मल किया है क्यूंकि ग़ैब का इल्म **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पास है, मैं तुम्हें क़सम देता हूं कि अगर

मुझे कोई ह़ादिषा पेश आ जाए और तुम मसनदे ख़िलाफ़त पर बेठो और वलीद तुम से येह दरख़्वास्त करे कि उस की वोही पुरानी तनख़्वाह बह़ाल की जाए जिस में मैं ने कमी कर दी थी तो उसे हरगिज़ उस की मुरादे ना मुराद में काम्याब न होने देना। चुनान्चे येही बात हुई कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز का विसाल हुवा और ख़िलाफ़त यज़ीद बिन अ़ब्दुल मलिक के सिपुर्द हुई तो वलीद का ख़त़ आ पहुंचा कि उ़मर ने मुझ पर ज़ुल्म किया और मेरी तनख़्वाह में कमी कर दी थी लिहाज़ा मेरी तनख़्वाह बह़ाल की जाए। यज़ीद बिन अ़ब्दुल मलिक उस की दग़ाबाज़ी पर इतना ग़ज़ब नाक हुवा कि उसे मा'ज़ूल कर दिया और ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز के ज़माने से अब तक जितनी तनख़्वाह वुसूल कर चुका था वोह भी वापस ले ली और वलीद को मरते दम तक फिर कभी कोई ओ़-हदा न मिला। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۳۱)

जव शरीफ़ का दलया

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز को इत्तिलाअ़ मिली कि सिपह सालार के बावर्ची ख़ाने का यौमिया ख़र्च एक हज़ार दिरहम है। इस ख़बरे वहशत अषर से आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को सख़्त अफ़सोस हुवा। उस की इस्लाह़ के लिये इन्फ़िरादी कोशिश का ज़ेहन बनाया और उस को अपने यहां मदऊ़ फ़रमाया। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बावर्चियों को हुक्म दिया कि पुर तकल्लुफ़ खाने के साथ ही **जव शरीफ़ का दलया** भी तय्यार किया जाए। सिपह सालार जब दा'वत पर ह़ाज़िर हुवा तो ख़लीफ़ा ने क़सदन खाना मंगवाने में इस क़दर ताख़ीर फ़रमा दी कि सिपह सालार भूक से बे ताब हो गया। बिल आख़िर

अमीरुल मोअमिनीन ने पहले **जव शरीफ़ का दलया** मंगवाया। सिपह सालार चूंकि बहुत भूका था इस लिये उस ने **जव शरीफ़ का दलया** खाना शुरूअ़ कर दिया और जब पुर तकल्लुफ़ खाने दस्तर ख़्वान पर आए उस वक़्त उस का पेट भर चुका था। दाना ख़लीफ़ा ने पुर तकल्लुफ़ खानों की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया : आप का खाना तो अब आया है, खाइये ! सिपह सालार ने इन्कार किया और कहा कि हुज़ूर ! मेरा पेट तो दलया ही से भर चुका है। **अमीरुल मोअमिनीन** ने फ़रमाया : سُبۡحٰنَ اللّٰہ ! दलया भी कितना उ़म्दा खाना है कि पेट भी भर देता है और है भी इतना सस्ता कि एक दिरहम में दस आदमियों को सैर कर दे ! येह कह कर नसीह़त के म-दनी फूल लुटाते हुए फ़रमाया : जब आप दलया से भी गुज़ारा कर सकते हैं तो आख़िर रोज़ाना एक हज़ार दिरहम अपने खाने पर क्यूं ख़र्च करते हैं ? सिपह सालार साहिब ! ख़ुदा से डरिये और अपने आप को ज़ियादा ख़र्च करने वालों में दाख़िल न कीजिये। अपने बावर्ची ख़ाने में जो रक़म बे तहाशा सर्फ़ करते हैं वोह रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये भूकों, ह़ाजत मन्दों और ग़रीबों को दे दीजिये। **मुत्तक़ी ख़लीफ़ा** की **इन्फ़िरादी कोशिश** ने सिपह सालारे लश्कर के दिल पर गहरा अषर डाला और उस ने अ़हद कर लिया कि आइन्दा खाने में सादगी अपनाऊंगा और कम ख़र्च से काम चलाऊंगा।

(مغنی الواعظین ص ۱۹۴)

इस हिकायत को नक़्ल करने के बा'द अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ लिखते हैं **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! हम नफ़्स को जिस क़दर लज़ीज़ ग़िज़ाएं खिलाएंगे उसी क़दर वोह बेहतर से बेहतर त़लब करता रहेगा। आज हमारी अकषरिय्यत बे ब-र-कती

की शाकी है नीज़ तंगदस्ती और फिर ऊपर से कमर तोड़ महंगाई का रोना रोती है और आज तक़रीबन हर एक कहता सुनाई देता है "पूरा नहीं होता !" यक़ीन मानिये, महंगाई, बे ब-र-कती और तंग दस्ती का फ़ी ज़माना एक बहुत बड़ा सबब ग़ैर ज़रूरी अख़राजात भी हैं। ज़ाहिर है जब फ़ुज़ूल ख़र्चियों का सिल्सिला जारी रखेंगे नीज़ आ'ला खानों, उ़म्दा मकानों, फिर उन के अन्दर सजा़वटों के बेश क़ीमत सामानों, महंगे महंगे फ़ेन्सी लिबासों से दिल लगाए रहेंगे, तो इन कामों के लिये ख़त़ीर रक़मों की ज़रूरत रहेगी और फिर "बे ब-र-कती" और "पूरा नहीं होता" की रागनियां भी जारी ही रहेंगी। हज़रते सय्यिदुना इमामे जा'फ़रे सादिक़ عليه رحمة الرّازق का फ़रमाने हिदायत निशान है, जिस ने अपना माल फ़ुज़ूल ख़र्चियों में खो दिया, अब कहता है ऐ रब ! मुझे और दे। **अल्लाह** तआ़ला (ऐसे शख़्स से) फ़रमाता है, क्या मैं ने तुझे मियाना रवी का हुक्म न दिया था ? क्या तू ने मेरा (येह) इरशाद न सुना था ?

وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ﴿٦٧﴾ (پ ۱۹ فرقان ٦٧)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह कि जब ख़र्च करते हैं, न ह़द से बढ़ें और न तंगी करें और उन दोनों के बीच ऐ'तिदाल पर रहें।

(مُلَخَّصاً احسن الوِعاء لِآداب الدُّعاء ص ۵۷) बहर ह़ाल अगर क़नाअ़त और सादगी के साथ सस्ते खानों और सादा लिबासों को अपना लिया जाए। फ़क़त़ ह़स्बे ज़रूरत मकानात रखे जाएं, बे जा सजा़वटों और नुमाइशी दा'वतों के मुआ़-मले में ख़ुद पर पाबन्दी डाली जाए तो ख़ुद ब ख़ुद महंगाई का ख़ातिमा हो और ग़ुर्बत रुख़्सत हो जाए।

(फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1, स. 464, मुल-त-क़तन)

एक ह़बशन कनीज़ का ख़त़ ख़लीफ़ा के नाम और मस्अले का फ़ौरी ह़ल

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز के ज़माने में सरकारी डाक लाने वाले का येह दस्तूर था कि जब वोह डाक ले कर चलता तो रास्ते में जो लोग उसे कोई ख़त़ देते उन से वुसूल कर लेता, एक बार वोह मिस्र जा रहा था कि "ज़ी अस्बह़" की आज़ाद कर्दा : "फ़रतूना" नामी ह़बशन कनीज़ ने उसे ख़त़ दिया जिस में ख़लीफ़ा के नाम तह़रीर था कि उस के इह़ाते़ की दीवारें छोटी हैं लोग उन्हें फलांग कर अन्दर आ जाते हैं और उस की मुर्गियां चोरी हो जाती हैं। क़ासिद ने जब येह ख़त़ ला कर **अमीरुल मोअमिनीन** को दिया तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जवाब में तह़रीर फ़रमाया : بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ **अमीरुल मोअमिनीन** ! उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की जानिब से ज़ी अस्बह़ की कनीज़ फ़रतूना के नाम ! तुम्हारा ख़त़ मिला जिस में लिखा था कि तुम्हारे मकान की दीवारें नीची हैं और लोग उन्हें फलांग कर तुम्हारी मुर्ग़ियां चुरा लेते हैं, मै ने अय्यूब बिन शुरह़बील को जो मिस्र में नमाज़ के इमाम और जंग के अफ़्सरे आ'ला हैं लिख दिया है कि वोह तुम्हारे मकान की मरम्मत करा कर उसे पूरी त़रह़ मह़फ़ूज़ करा दें। **वस्सलाम**

और अय्यूब बिन शुरह़बील को ख़त़ लिखा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे **अमीरुल मोअमिनीन** उ़मर की जानिब से इब्ने शुरह़बील के नाम, **अम्मा बा'द** ! ज़ी अस्बह़ की कनीज़ "फ़रतूना" ने मुझे लिखा है कि उस के मकान की दीवारें छोटी हैं और उस की मुर्ग़ियों की

चोरी हो जाती है, वोह चाहती है कि उस का मकान मह़फ़ूज़ कर दिया जाए, जब मेरा येह ख़त़ मिले तो ख़ुद सुवार हो कर वहां पहुंचो और अपनी निगरानी में उस का मकान मरम्मत कराओ, **वस्सलाम**।"

जब अय्यूब बिन शुरह़बील को ख़लीफ़ा का येह फ़रमान पहुंचा तो उन्हों ने फ़ौरन अपने ऊंट पर सुवार हो कर मज़्कूरा अ़लाक़े का रुख़ किया वहां पूछते पूछाते "फ़रतूना" नामी कनीज़ के घर पहुंचे तो देखा कि वोह बेचारी निहायत मिस्कीन क़िस्म की बुढ़िया है। अय्यूब बिन शुरह़बील ने उसे बताया कि **अमीरुल मोअमिनीन** ने तुम्हारे बारे में मुझे येह हुक्मनामा भेजा है, फिर उस के मकान की मरम्मत करवा दी। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۵٦)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! इस **हि़कायत** में **ह़ाजत रवाई** और दिल जूई का तज़्किरा है, यक़ीनन मुसलमानों की दिल जूई की अहम्मिय्यत बहुत ज़ियादा है चुनान्चे ह़दीषे पाक में है : "फ़राइज़ के बा'द सब आ'माल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ज़ियादा प्यारा मुसलमान का दिल ख़ुश करना है।" (المعجم الکبیر ج۱۱ ص۵۹ حدیث ۱۱۰۷۹) वाक़ेई अगर हम सब एक दूसरे की ग़म ख़्वारी व ग़म गुसारी में लग जाएं तो आनन फ़ानन दुन्या का नक़्शा ही बदल कर रह जाए। लेकिन आह ! अब तो भाई भाई के साथ टकरा रहा है, आज मुसलमान की इ़ज़्ज़त व आबरू और उस के जानो माल मुसलमान ही के हाथों पामाल होते नज़र आ रहे हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें नफ़रतें मिटाने और मह़ब्बतें बढ़ाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَبَارَکَ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

अमीरुल मोअमिनीन की थका देने वाली मसरूफ़िय्यात

इन्सान में मुख़्तलिफ़ क़ाबेलिय्यतें बहुत कम जम्अ़ होती हैं म-षलन जो लोग दिमाग़ी और अ़क़्ली हैषिय्यत से मुमताज़ होते हैं उन में अख़्लाक़ी अवसाफ़ उ़मूमन बहुत कम पाए जाते हैं और जो लोग मुल्क़ी व सियासी कामों को निहायत सर गर्मी के साथ अन्जाम देते हैं वोह **इन्फ़िरादी** इ़बादत व रियाज़त पर ख़ातिर ख़्वाह तवज्जोह नहीं दे पाते लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز जिस पाबन्दी और मुस्ता'दी के साथ ख़िलाफ़त के फ़राइज़ अन्जाम देते थे, इसी शौक़ व शग़फ़ के साथ **इन्फ़िरादी** इ़बादत व रियाज़त भी किया करते थे, आ़म मा'मूल येह था कि दिन भर रिआ़या के मुआ़-मलात और मुक़द्दमात के फ़ैसले में मश्ग़ूल रहते, नमाज़े इ़शा के बा'द चराग़ जला के बैठते और फिर येही काम शुरूअ़ हो जाता, इस के बा'द अरबाबे राय से उमूरे ख़िलाफ़त के मु-तअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ मश्वरे लेते, फिर जो वक़्त बचता वोह इ़बादत व रियाज़त और इस्तिराह़त में सर्फ़ किया करते। उन की थका देने वाली मसरूफ़िय्यात को देख कर बा'ज़ ह़ज़रात तर्स खाते थे और उन को आराम करने की तरग़ीब देते लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز पर उन की नसीह़तों का कोई अषर नहीं पड़ता था। चुनान्चे एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जो उन के मुशीरे ख़ास थे, कहा : **अमीरुल मोअमिनीन**! दिन भर आप के अवक़ात रिआ़या

के मुआ-मलात में सर्फ़ होते हैं, रात गए फ़ुर्सत का थोड़ा सा जो वक़्त मिलता है उस को हमारी सोहबत में सर्फ़ कर देते हैं ! जवाब दिया : लोगों की मुलाक़ात से अक़्ल बढ़ती है। (تاریخ دِمشق، ج ۴۵، ص ۲۲۷)

सैरो तफ़रीह का मश्वरा देने वाले को जवाब

एक दिन हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز के भाई रियान बिन अब्दुल अज़ीज़ ने उन्हें मश्वरा दिया कि कभी कभी सैरो तफ़रीह के लिये भी निकल जाया कीजिये। फ़रमाया : "كَیْفَ لِیْ بِعَمَلِ ذٰلِكَ الْیَوْمِ *या'नी फिर इस दिन का काम किस तरह अन्जाम पाएगा ?* उन्हों ने कहा : یَكُوْنُ فِی الْیَوْمِ الَّذِیْ یَلِیْہِ *या'नी दूसरे दिन हो जाएगा।* फ़रमाया : حَسْبِیْ عَمَلُ یَوْمٍ فِیْ یَوْمِہٖ فَكَیْفَ بِعَمَلِ یَوْمَیْنِ فِیْ یَوْمٍ *या'नी मेरे लिये येही बहुत है कि रोज़ का काम रोज़ अन्जाम पा जाए, दो दिन का काम एक दिन में क्यूं कर पूरा होगा ?"* (سیرت ابن جوزی ص ۲۲۵)

बा'ज़ हज़रात ने उन से फ़ुर्सत के अवक़ात में फ़ैज़याब होने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की तो फ़रमाया : मुझे फ़ुर्सत कहां ! अब तो सिर्फ़ खुदा عَزَّوَجَلَّ के यहां ही फ़ुर्सत नसीब होगी।" (طبقات ابن سعد، ج ۵، ص ۳۱۰)

वक़्त की क़द्र

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वक़्त ऐसी अनमोल दौलत है जो अमीर व ग़रीब को यक्सां मिलती है मगर हमारी अकषरिय्यत वक़्त की अहम्मिय्यत से ना आश्ना है और इस अहम तरीन ने'मत (या'नी वक़्त) को फ़ुज़ूलियात में बरबाद करती है म-षलन कई लोग आंख खुलने के बा वुजूद बिला वजह काफ़ी देर तक बिस्तर नहीं छोड़ते, गुस्ल

खा़ने मे बेकार काफ़ी वक़्त निकाल देते हैं, खाना खाने में बहुत ज़ियादा वक़्त लेते हैं, काफ़ी देर आइने के हुज़ूर हाज़िरी देते हैं, कहीं चाय पीने बैठे तो फुज़ूल व लग़्व गुफ़्त-गू म-षलन मुल्की व सियासी ह़ालात, मैचों पर तबसरे वगै़रा में घन्टों वक़्त का ज़ियाअ़ करते हैं। ऐसे अफ़राद की भी कमी नहीं जो ग़ीबत, चुग़ली, मोसीक़ी, बद गुमानी, दिल आज़ारी, तोहमत व बोहतान,मख़्लूत तफ़रीह़ गाह व होटल, टीवी वगै़रा पर फ़िल्में डिरामे, खेल कूद के गै़र शरई प्रोग्राम देख कर वक़्त जैसी अ़ज़ीम ने'मत को बरबाद करते और अपनी दुन्या व आख़िरत का नुक़्सान उठाते हैं। प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "दो ने'मतें हैं जिन में लोग बहुत घाटे में है **तन्दुरुस्ती** और **फ़राग़त**।" (بخاری،کتاب الرقاق،ج۴،ص۲۲۲،الحدیث:۶۴۱۲) लिहाज़ा हम में से हर एक को चाहिये कि दौलते वक़्त को **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी वाले कामों में ख़र्च करने की कोशिश करें और इस मुख़्तसर ज़िन्दगी के क़ीमती लमहा़त को फुज़ूल व ह़राम ख़्वाहिशात की तक्मील में सर्फ़ करने से बचें क्यूंकि जो वक़्त को ज़ाएअ़ करता है वक़्त उसे ज़ाएअ़ कर देता है।[1]

दिन लह्व में खोना तुझे, शब सुब्ह़ तक सोना तुझे
शर्मे नबी ख़ौफ़े ख़ुदा, येह भी नहीं वोह भी नहीं

(ह़दाइक़े बख़्शिश अज़ इमामे अहले सुन्नत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت)

1 : वक़्त की अहम्मिय्यत को समझने के लिये मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ रिसाले "**अनमोल हीरे**" का मुता़-लआ़ फ़रमाइये।

वक़्त बर्फ़ की मानिन्द है

इमामे फ़ख़्रुद्दीन राज़ी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं कि मैं ने सू-रतुल अ़स्र का मत़लब एक बर्फ़ फ़रोश से समझा, जो बाज़ार में सदा लगा रहा था कि रह्म करो उस शख़्स पर कि जिस का सरमाया घुलता जा रहा है, रह्म करो उस शख़्स पर जिस का सरमाया घुलता जा रहा है। उस की येह बात सुन कर मैं ने कहा : وَالْعَصْرِ ﴿۱﴾ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِیْ خُسْرٍ ﴿۲﴾ का मत़लब, कि जो ज़िन्दगी इन्सान को दी गई है वोह बर्फ़ के पिघलने की त़रह़ तेज़ी से गुज़र रही है, इस को अगर ज़ाएअ़ किया जाए या ग़लत़ कामों में सर्फ़ कर दिया जाए तो इन्सान का **ख़सारा ही ख़सारा** है।

(تفسیر کبیر، ج۱۱، ص۲۷۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बैतुल माल की इस्लाह़

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِیز ने जिन जिन शो'बों की इस्लाह़ की, उन में बैतुल माल (या'नी क़ौमी ख़ज़ाना) भी है। तफ़्सील मुला-ह़ज़ा हो :

(1) बैतुल माल मुख़्तलिफ़ क़िस्म की आमदनियों के मजमूए़ का नाम है जिन में हर एक के मसारिफ़ व मदाख़िल जुदा जुदा हैं, ग़ालिबन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِیز के ज़माने से पहले येह तमाम आमदनियां एक ही जगह जम्अ़ होती थीं, लेकिन उन्हों ने आमदनियों के मु-तअ़ल्लिक़ अलग अलग शो'बा जात क़ाइम किये, और हर एक क़िस्म की आमदनी को अलग अलग जम्अ़ किया। (طبقات ابن سعد، ج۵، ص۳۱۲ ملخصًا)

(2) बैतुल माल दर ह़क़ीक़त मुसलमानों का मुश-त-रका ख़ज़ाना है जिस से हर मुसलमान बराबर फ़ाएदा उठा सकता है, लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز के दौर से पहले तमाम ख़ानदाने शाही को आ़म मुसलमानों से अलग अलग मख़्सूस वज़ीफ़ा मिलता था, जिस को वज़ीफ़ए ख़ास्सा कहते थे आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस को मुकम्मल तौ़र पर बन्द कर दिया।

(3) क़साइद (या'नी ता'रीफ़ी अश्आ़र कहने) के सिले में शो'रा को बैतुल माल से जो इन्आ़मात मिलते थे उन को ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने बिलकुल मौक़ूफ़ कर दिया।

(4) ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز के दौर से पहले येह दस्तूर था कि गवर्नर इशा और फ़ज्र के वक़्त नमाज़ को जाते थे तो आदमी साथ साथ शम्अ़ ले कर चलता था और इस के मसारिफ़ का बार बैतुल माल पर पड़ता था, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने इस की रक़म बन्द कर दी।

(سیرت ابن عبدالحکم ص ۵۵ ملخصًا)

(5) बैतुल माल की आ़मदनियों में ख़ुम्स के पांच मसारिफ़ मु-तअ़य्यिन हैं जिन के इ़लावा उन को किसी दूसरी जगह सर्फ़ नहीं किया जा सकता, लेकिन ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز से पहले के ख़ु-लफ़ा इन मसारिफ़ का लिह़ाज़ नहीं करते थे, मसारिफ़े ख़ुम्स में सब से मुक़द्दम मसरफ़ अहले बैत हैं, लेकिन वलीद और सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक ने बा वुजूद ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز के समझाने बुझाने के इन

को बिलकुल इस ह़क़ से मह़रूम कर दिया था। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने ख़लीफ़ा बनते ही ख़ुम्स को उन के सह़ीह़ मसारिफ़ में सर्फ़ किया और अहले बैत को उन का ह़क़ दिया। (طبقات ابن سعد، ج۵،ص ۳۰۵ ملخصًا)

आप क़सम खाइये

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ العَزِیز के नज़दीक बैतुल माल (क़ौमी ख़ज़ाने) की ह़िफ़ाज़त की बहुत अहम्मिय्यत थी। हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ जो ख़ुद एक मुत्तक़ी परहेज़ गार बुज़ुर्ग थे, बैतुल माल के मुन्तज़िम थे और बैतुल माल से कुछ रक़म कम हो गई, आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ العَزِیز को लिखा कि बैतुल माल में चन्द दीनार कम हैं, हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ العَزِیز ने उन को जवाब में लिखा : "मैं आप को इल्ज़ाम नहीं देता, मुझ से इस माल के बारे में मुसलमान पूछ गछ करने वाले हैं, उन्हें आप की क़सम ही मुत़्मइन कर सकती है इस लिये आप ह़लफ़ उठाइये।" (سیرت ابن عبدالحکم ص ۵۸)

मुह़ासिल की इस्लाह़

मुल्की मुह़ासिल की वजह से क़ौमी ख़ज़ाने को अच्छी ख़ासी रक़म वुसूल हुवा करती थी लेकिन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ العَزِیز के अ़-हदे ख़िलाफ़त से पहले इन तमाम चीज़ों का निज़ाम इस क़दर अबतर हो गया था कि येह मुह़ासिल रिआ़या के लिये बिलकुल एक जब्री चीज़ बन गए थे। इस्लाम में जिज़्या सिर्फ़ ग़ैर क़ौमों के लिये मख़्सूस था इस लिये अगर कोई ईसाई,

यहूदी या मजूसी मज़हबे इस्लाम में दाख़िल हो जाता था तो वोह इस से बिलकुल बरी हो जाता, लेकिन ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ ने इस फ़र्क़ व इम्तियाज़ को बिलकुल मिटा दिया था, और वोह नौ मुस्लिमों से भी जिज़्या वुसूल करता था। इस की निस्बत ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ने ह़यान बिन शरीह़ को लिखा कि ज़िम्मियों में जो लोग मुसलमान हो गए हैं उन का जिज़्या साक़ित कर दिया जाए क्यूंकि परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

فَاِنْ تَابُوْا وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا سَبِيْلَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝۵ (پ ۱۰، التوبۃ: ۵)

*तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : फिर अगर वोह तौबा करें और नमाज़ क़ाइम रखें और ज़कात दें तो उन की राह छोड़ दो बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।*

सूरए तौबा की आयत 29 में इरशाद होता है :

قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ لَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ لَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ وَ لَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّ هُمْ صٰغِرُوْنَ ۝۲۹

(پ ۱۰، التوبۃ: ۲۹)

*तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : लड़ो उन से जो ईमान नहीं लाते **अल्लाह** पर और क़ियामत पर और ह़राम नहीं मानते उस चीज़ को जिस को ह़राम किया **अल्लाह** और उस के रसूल ने और सच्चे दीन के ताबेअ़ नहीं होते या'नी वोह जो किताब दिये गए जब तक अपने हाथ से जिज़्या न दें ज़लील हो कर*

इस हुक्म की बिना पर इतनी कषरत से लोग इस्लाम लाए कि जिज़्ये की आमदनी अचानक कम हो गई, चुनान्चे ह़यान बिन शरीह़ ने

उन को इत्तिलाअ़ दी कि ज़िम्मियों के इस्लाम ने जिज़्ये को इस क़दर नुक़्सान पहुंचाया कि मैं ने तीस हज़ार अशरफ़ियां क़र्ज़ ले कर मुसलमानों के अ़तिये तक़्सीम किये, लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने इस की कुछ परवाह नहीं की, और लिखा कि मैं ने जब तुम्हें मिस्र का आ़मिल मुक़र्रर किया था। उसी वक़्त तुम्हारी कमज़ोरी से वाक़िफ़ था, मैं ने क़ासिद को हुक्म दिया है कि तुम्हारे सर पर कोड़े लगाए, जिज़्ये को मोक़ूफ़ करो। (المواعظ والاعتبار، ج۱،ص ۹۷)

जिज़्या न लो

"ह़य्यरा" के यहूदी, ईसाई और मजूसी जिन से जिज़्ये की रक़्म वुसूल होती थी, जब इस्लाम लाए तो गवर्नर अ़ब्दुल ह़मीद बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने उन से जिज़्या वुसूल करना चाहा और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز से इस की इजाज़त त़लब की, उन्हों ने लिखा कि ख़ुदा ने मुह़म्मदे **मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को इस्लाम की दा'वत के लिये भेजा था न कि ख़िराज जम्अ़ करने के लिये, इन मज़ाहिब के लोगों में जो लोग इस्लाम लाएं उन के माल में सिर्फ़ स-दक़ा है जिज़्या नहीं। (طبقات ابن سعد، ج ۵،ص ۲۹۹ ملخصًا)

नौ मुस्लिमों से जिज़्या लेने वाले गवर्नर को मा'ज़ूल कर दिया

गवर्नर जराह़ की निस्बत जब उन को मा'लूम हुवा कि वोह नौ मुस्लिमों से जिज़्या वुसूल कर रहे हैं तो उन को मा'ज़ूल कर दिया। नौ मुस्लिमों के जिज़्ये की मौक़ूफ़ी पर उन को इस क़दर इसरार था कि एक बार लिखा कि अगर एक ज़िम्मी का जिज़्या तराज़ू के पलड़े में रखा जा चुका हो और उसी ह़ालत में वोह इस्लाम क़बूल कर ले तो उस का

जिज़्या मुआफ़ कर दिया जाए, इसी तरह एक मरतबा फ़रमाया : अगर साल मुकम्मल होने से एक दिन पहले भी कोई ज़िम्मी मुसलमान हो जाए तो उस से जिज़्या न लिया जाए। (طبقات ابن سعد، ج ۵، ص ۲۷۵)

टेक्स ख़त्म कर दिये

पहले खु-लफ़ा के दौर में रिआया पर मुख़्तलिफ़ क़िस्म के टेक्स लगाए गए थे : रूपया ढालने पर टेक्स, चांदी पिघलाने पर टेक्स, अ़राइज़ नवेसी पर टेक्स, दूकानों पर टेक्स, घरों पर टेक्स, पन चक्कियों पर टेक्स, अल ग़रज़ कोई चीज़ टेक्स से बरी न थी और येह तमाम टेक्स माहवार वुसूल किये जाते थे और इस लिये इस को माले हिलाली (या'नी माहाना हासिल होने वाला माल) कहा जाता था। ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز तख़्ते ख़िलाफ़त पर मु-तमक्किन हुए तो देखा कि उन में बा'ज़ क़िस्म की आमदनियां शरअ़न ना जाइज़ हैं और बा'ज़ से रिआया पर ग़ैर मा'मूली बार पड़ रहा है, इस लिये उन्हों ने उन को यक लख़्त मौक़ूफ़ कर दिया। अ-रबी ज़बान में इस क़िस्म के टेक्सों को **मक्स** कहते हैं मगर आप ने फ़रमाया : येह **मक्स** नहीं बल्कि नजिस है, वोह **नजिस** जिस की निस्बत खुदावन्दे तआ़ला फ़रमाता है :

وَلَا تَبۡخَسُوا النَّاسَ اَشۡيَآءَهُمۡ وَلَا تَعۡثَوۡا فِى الۡاَرۡضِ مُفۡسِدِيۡنَ (پ۱۹، الشعراء:۱۸۳)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और लोगों की चीज़ें कम कर के न दो और ज़मीन में फ़साद फैलाते न फिरो।

लिहाज़ा जो अपने माल की ज़कात दे वोह क़बूल कर लो जो न दे अल्लाह तआ़ला खुद उस से हिसाब लेगा। (طبقات ابن سعد، ج ۵، ص ۲۹۸ ملتقطاً)

बैतुल माल में ब-रक़त

येह अ़जीब बात है कि इस क़दर नर्मी के बा वुजूद ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز के ज़माने में जो माल गुज़ारी वुसूल हुई, इस से ह़ज्जाज के पुर मज़ालिम ज़माने को कोई निस्बत नहीं, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز फख़्रिया फ़रमाया करते थे कि ह़ज्जाज को न दीन की लियाक़त थी न दुन्या की, उस ने काश्तकारों को 20 लाख दिरहम ज़मीन की आबादी के लिये बत़ौरे क़र्ज़ के दिये तो मह़सूलात की मद में 1 करोड़ 60 लाख और वुसूल हुए, लेकिन बा वुजूद इस वीरानी के इराक़ मेरे क़बज़े में आया तो मैं ने 10 करोड़ 24 लाख दिरहम वुसूल किये, और अगर ज़िन्दा रहा तो इस से भी ज़ियादा वुसूली करूंगा।

(معجم البلدان، باب السین والواو وما یلیھما، ج۳ص ۸۷ ملخصًا)

सरकारी ओ़-हदों पर तक़र्रुरी का त़रीक़ए कार

ज़मानए क़दीम का निज़ामे सल्त़नत मौजूदा ज़माने के निज़ामे हुकूमत से बिलकुल मुख़्तलिफ़ था आज के दौर में हुकूमत की शख़्सिय्यतें बदल जाती है, निज़ामे हुकूमत उलट पलट जाता है लेकिन सल्त़नत के आ'ज़ा व जवारेह़ या'नी उ़म्माल (या'नी गवर्नर वग़ैरा) पर उन का कोई अषर नहीं पड़ता, लेकिन क़दीम ज़माने में सलात़ीन की शख़्सिय्यत का तग़य्युर व तबद्दुल गोया निज़ामे सल्त़नत की तब्दीली था, और येह इनकिलाब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز के दौरे ख़िलाफ़त में सब से ज़ियादा नुमाया नज़र आता है उन्हों ने तख़्ते ख़िलाफ़त पर मु-तमक्किन होने के साथ ही तमाम मफ़ासिद की इस्लाह़ करनी चाही लेकिन उस के लिये सब से बड़ी ज़रूरत उन पुरज़ों की थी

जो निहायत नेक निय्यती और खुलूस के साथ सल्त़नत की कुल को चलाएं और उन के ज़माने में इस क़िस्म के अहल अफ़राद तक़रीबन मफ़्क़ूद हो चुके थे। हज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز को साफ़ नज़र आता था कि उन्हें जिस क़िस्म के मददगारों की ज़रूरत है वोह सरकारी दफ़्तरों में नहीं मिल सकते, इस लिये वोह अपनी निगाह को दूर दूर तक दौड़ाते थे और जहां कहीं कोई मुर्ग़ बुलन्द आशयां नज़र आता था उस को इस जाल मे फंसाना चाहते थे जिस में खुद गिरिफ़्तार हो चुके थे। अहल अफ़राद मिलें न मिलें उ़म्माले सल्त़नत का तक़र्रुर फ़ौरी त़ौर पर करना ज़रूरी था इस लिये हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने तख़्ते हुकूमत पर बैठते ही मुख़्तलिफ़ अश्ख़ास को ज़िम्मादारी के मुख़्तलिफ़ ओ़-हदे दिये जिन के नामों की तफ़्सील हस्बे ज़ैल है :

अबू बक्र बिन मुह़म्मद बिन ह़ज़्म को सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक ने **मदीनए मुनव्वरा** का गवर्नर मुक़र्रर किया था और ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने भी उन को इस ओ़-हदे पर क़ाइम रखा। **अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ख़ालिद** को मक्के का गवर्नर मुक़र्रर किया। **अ़ब्दुल ह़मीद बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ैद बिन ख़त्ताब** को कूफ़े का गवर्नर मुक़र्रर किया। **अ़दी बिन अरत़ात** को बसरा का गवर्नर मुक़र्रर किया। **मसीह़ बिन मालिक ख़ौलानी** को इन्दलुस का गवर्नर मुक़र्रर किया। **उ़मर बिन हबीर** को जज़ीरा का गवर्नर मुक़र्रर किया। **इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह मख़ज़ूमी** को अफ़्रिक़ा का गवर्नर मुक़र्रर किया। **जराह़ बिन अ़ब्दुल्लाह अल ह़क्मी** को ख़ुरासान का गवर्नर मुक़र्रर किया।

(الکامل فی التاریخ، ج۴، ص۱۶۳، ۲۲۳ و تاریخ طبری، ج۴، ص۲۴۱ ملتقطاً)

ज़िम्मादारान की तक़र्रुरी के म-दनी फूल

उ़म्माल की तक़र्रुरी और मा'ज़ूली का दारो मदार जिन म-दनी फूलों (या'नी उसूलों) पर था उन की तफ़्सील मुला-ह़ज़ा हो :

(1) कोई शख़्स जो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز का क़राबत दार होता उस को कभी आ़मिल मुक़र्रर नहीं करते थे, बेटे से ज़ियादा कौन अ़ज़ीज़ हो सकता है, लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने उन में से किसी को कोई ओ़-हदा नहीं दिया। ((تاریخ دمشق، ج ۴۵،ص ۱۹۸ ملتقطاً))

एक बार जराह़ बिन अ़ब्दुल्लाह ह़कमी ने अ़ब्दुलल्लाह बिन अहतम को आ़मिल मुक़र्रर किया। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز को ख़बर हुई तो लिखा कि इस को हटा दो, क्यूंकि और बातों के इ़लावा वोह ख़ुद मेरा रिश्तेदार है। (ابن جوزی ص ۱۰۵)

(2) जो लोग किसी ओ़-हदे के ख़्वास्त गार होते थे ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز उन को वोह ओ़-हदे नहीं देते थे और म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत भी येही थी।

(3) जो लोग सफ़्फ़ाक़ और ज़ालिम होते थे ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز उन को भी कोई ओ़-हद नहीं देते थे, एक बार जराह़ बिन अ़ब्दुल्लाह ह़-कमी ने अ़म्मारा को आ़मिल मुक़र्रर किया, तो उन्हों ने लिखा कि मुझ को न अ़म्मारा की ज़रूरत है न अ़म्मारा की मार पीट की, न उस शख़्स की जिस ने अपने हाथ को मुसलमानों के ख़ून से रंगीन किया है, इस लिये इस को मा'ज़ूल

कर दो। (ابن جوزی ص ۱۰۵) खुद जराह और यज़ीद बिन मुहल्लब की मा'ज़ूली का सबब भी येही ज़ुल्मो उदवान था येही वजह है कि हज्जाज के मुलाज़िमों और उस के क़बीले के लोगों को कोई जगह नहीं देते थे, अबू मुस्लिम जो हज्जाज का जल्लाद और हम क़बीला था, एक फ़ौज में शरीक हुवा तो हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने उस को वापस बुला लिया। (ابن جوزی ص ۱۰۸)

(4) हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز उम्माल के तक़र्रुर में येह लिहाज़ भी रखते थे कि कुरआनो हदीष का आलिम हो चुनान्चे इस वस्फ़ को पेशे नज़र रख कर उन्हों ने तमाम उम्माल के नाम एक आम फ़रमान भेजा कि अहले इल्म के सिवा और कोई शख़्स किसी ओ-हदे पर मामूर न किया जाए लेकिन तमाम उम्माल की तरफ़ से जवाब आया कि हम ने उन से काम लिया, मगर वोह ख़ाइन निकले लेकिन हज़रते उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز को अब भी इस पर इसरार रहा, और लिखा कि ख़बर दार मुझे येह न मा'लूम होने पाए कि तुम ने अहले इल्म के सिवा किसी को आमिल बनाया, अगर अहले इल्म में भलाई नहीं है तो किसी और में क्यूं कर होगी? (سیرتِ ابن جوزی ص ۱۲۰)

(5) अगर्चे हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز की नेक शोहरत ने जैसा कि मैमून बिन मेहरान ने उन को यक़ीन दिलाया था, उन के तख़्ते हुकूमत के गिर्द बेहतरीन अश्ख़ास जम्अ कर दिये थे, लेकिन येह तमाम शख़्सिय्यतें हज़रते उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ के ज़ेरे अषर थीं और उन्हीं के इशारों से येह तमाम पुर्ज़े ह-रकत करते थे। हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल

अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ الۡعَزِیۡز का क़ाइदा था कि बात बात पर उ़म्माल को हिदायतें करते रहते थे, अह़काम भेजते रहते थे, उन को काम करने की तरग़ीब व तरहीब देते रहते थे, इस लिये तबीअ़तों पर ख़्वाह म ख़्वाह उन का अख़्लाक़ी अषर पड़ता था म-षलन गवर्नर अबू बक्र बिन मुह़म्मद बिन अ़म्र बिन ह़ज़्म अपनी ज़िम्मादारियां निभाने के लिये दिन रात एक कर देते थे और येह सिर्फ़ ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की तरग़ीब व तह़रीस का अषर था। (سیرت ابن جوزی ص ۱۰۲)

ह़ज्जाज की रविश अपनाने से रोका

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ الۡعَزِیۡز ने उ़म्माल को सख़्त ताकीद की थी कि ह़ज्जाज की रविश इख़्तियार न करें, एक बार अ़दी बिन अरत़ात को लिखा कि मैं तुम्हें ह़ज्जाज की रविश से रोकता हूं क्यूंकि ह़ज्जाज एक मुसीबत था, एक क़ौम ने अपने अ़मल से उस की ग़लत़ कारियों की मुवा-फ़क़त की, इस लिये अपने ज़माने में उस ने जो चाहा किया लेकिन अब वोह ज़माना गुज़र गया और सलामती के दिन वापस आ गए और अगर सिर्फ़ एक ही दिन रहे तब भी येह ख़ुदा का अ़तिय्या होगा, मैं ने तुम्हें नमाज़ के मु-तअ़ल्लिक़ उस की पैरवी से रोका है क्यूंकि वोह वक़्त में ताख़ीर करता था, मैं ने ज़कात के मु-तअ़ल्लिक़ उस की तक़्लीद से रोका है क्यूंकि वोह बे मह़ल लेता था और बे मह़ल सर्फ़ करता था। (سیرت ابن جوزی ص ۱۰۷)

एक और आ़मिल ने ज़िम्मियों के खलयानों (या'नी गोदामों) की ह़दबन्दी की तो उस को लिखा कि ऐसा न करो, येह ह़ज्जाज का त़रीक़ा था और मैं इस को पसन्द नहीं करता। (سیرتِ ابن جوزی ص ۱۰۸)

कार कर्दगी की तहक़ीक़ात भी करते थे

हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز को सिर्फ़ इन हिदायात ही पर क़नाअत न थी बल्कि मुनासिब त़रीक़ों से वोह उम्माल के तर्ज़े अमल की तहक़ीक़ात भी करते रहते थे ताकि वोह राहे ए'तिदाल से हटने न पाएं, रियाह बिन उबैदा का बयान है कि मैं ने एक बार हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز से कहा कि इराक़ में मेरी जाएदाद और मेरे अहलो इयाल हैं, अगर इजाज़त हो तो मैं उन को देख आऊं ? उन्हों ने पहले तो मुझे रोका मगर मेरे इसरार के बा'द इजाज़त दी जब मैं रुख़्सत होने लगा तो मैं ने कहा कि अगर आप की कोई ज़रूरत हो तो इरशाद फ़रमाइये ? बोले : मेरी ज़रूरत सिर्फ़ येह है कि अहले इराक़ और उन के साथ हुक्काम व उम्माल के तर्ज़े अमल के मु-तअल्लिक़ हालात दरयाफ़्त करो। मैं ने लोगों से इस के मु-तअल्लिक़ सुवाल किया तो सब को उम्माल का मद्दाह पाया, वापस आ कर हज़रते उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ को इस की इत्तिलाअ दी, तो उन्हों ने ख़ुद्दाम का शुक्र अदा किया और फ़रमाया : अगर तुम ने उस के ख़िलाफ़ ख़बर दी होती तो मैं उन को मा'ज़ूल कर देता।

ज़िम्मियों के हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त

ज़िम्मियों के हुक़ूक़ की निगहदाश्त इस्लामी हुकूमत की ज़िम्मादारी होती है, हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने जिस त़रह इन तमाम चीज़ों की निगहदाश्त की उस की नज़ीर ख़िलाफ़ते राशीदा के सिवा और ख़ु-लफ़ा के दौर में ब

मुश्किल मिल सकती है, उन्हों ने ज़िम्मियों की जाएदाद की हिफ़ाज़त में ख़ानदानी ता'ल्लुक़ात की भी परवाह नहीं की, उन के अ़हद में ज़िम्मियों की तमाम चीज़ें इस क़दर महफ़ूज़ थीं कि उन से ज़र्रा बराबर भी तअ़र्रुज़ नहीं किया जा सकता था, जान जाएदाद से भी ज़ियादा अ़ज़ीज़ शै है और हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने ज़िम्मियों की जान को मुसलमानों की जान के बराबर समझा।

गिरजा घर का मुक़द्दमा

दिमिश्क़ में ईसाइयों का एक गिर्जा था, जो ख़ानदाने बनू नस्र की जागीर में आ गया था, ईसाइयों ने हज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की ख़िदमत में इस का दा'वा किया और उन्हों ने उस को वापस दिला दिया, एक और मुसलमान ने एक गिर्जे की निस्बत दा'वा किया कि वोह उस की जागीर में है लेकिन हज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने कहा कि अगर येह ईसाइयों के मुआ़-हदे में दाख़िल है तो तुम उस को नहीं पा सकते। (فتوح البلدان ج ۱ ص ۱۴۷ تا ۱۴۹)

जिज़्ये की वुसूली में तख़्फ़ीफ़

जिज़्ये की तख़्फ़ीफ़ और वुसूली में हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ العَزِیز ने हमेशा ज़िम्मियों के साथ निहायत नर्मी का बरताव किया। वोह पहले अपने जिज़्ये में मुसा-ल-ह़तन सालाना कपड़े दिया करते थे, उस के बा'द जब उन की ता'दाद में कमी वाक़ेअ़ होना शुरूअ़ हुई तो हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान और हज़रते सय्यिदुना अमीर मुआ़विया رَضِی اللّٰہ تعالٰی عَنْھُمَا ने कपड़ों की ता'दाद में कमी कर दी। इराक़ में जब इबनुल अशअ़स़ ने ह़ज्जाज से बग़ावत की, तो उस ने वहां के ज़िम्मादारों पर उस की इआ़नत का

इल्ज़ाम क़ाइम किया और उस के ख़िराज व जिज़्ये को बहुत ज़ियादा सख़्त कर दिया और उस में ग़ैर मा'मूली इज़ाफ़ा कर दिया, या'नी सालाना आठ सो रंगीन कपड़े उन पर लाज़िम कर दिये, ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز के दौरे ख़िलाफ़त में उन लोगों ने अपने मसाइब का इज़्हार किया तो उन्हों ने घटा कर दो सो कपड़े कर दिये जिन की क़ीमत आठ हज़ार दिरहम थी। (فتوح البلدان، ج۱،ص۸۰، ملخصًا)

नर्मी करो

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز उ़म्माल को हुक्म भेजते रहते थे कि ज़िम्मियों के साथ हर क़िस्म की अख़्लाक़ी रिआ़यतें की जाएं, चुनान्चे एक बार अ़दी बिन अरत़ात को लिखा कि ज़िम्मियों के साथ नर्मी करो, अगर उन में कोई शख़्स बूढ़ा हो जाए और वोह नादार हो तो उस के अख़राजात के कफ़ील बन जाओ और अगर इस का कोई रिश्तेदार हो तो उस को हुक्म दो कि वोह उस के अख़राजात बरदाश्त करे, जिस त़रह़ तुम्हारा कोई ग़ुलाम बूढ़ा हो जाए तो उस को आज़ाद करना पड़ेगा, या ता दमे मर्ग उस को खिलाना पड़ेगा। (طبقات ابن سعد، ج۵،ص۲۹۶)

ज़ुल्म की निशानियां मिटा दीं

अगर्चे येह ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز की ख़ुश क़िस्मती थी कि सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक ने ह़ज्जाज के तमाम मुक़र्रर कर्दा उ़म्माल को मा'ज़ूल कर के उस के जब्बाराना इक़्तिदार को बहुत कुछ मिटा दिया था, ता हम अब तक उस के ज़ुल्मो सितम की जो यादगारें बाक़ी थीं, ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल

अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने उन का भी ख़ातिमा कर दिया, ह़ज्जाज के तमाम ख़ानदान को यमन की त़रफ़ जिला वत़न कर दिया और वहां के आ़मिल को लिखा कि मैं तुम्हारे पास ह़ज्जाज के ख़ानदान को भेजता हूं, उन को अपनी हुकूमत में इधर उधर मुन्तशिर कर दो। (سیرت ابن جوزی ص ۱۰۹)

ज़ाइद रक़्म वापस लौटा दी

स–दक़ात में पहले जो ज़ाइद रक़्में वुसूल की जाती थी, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने उन तमाम रक़्मों को वापस कर दिया। एक बार आ़मिल स–दक़ा वुसूल कर के आया तो ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने उस की मिक़्दार पूछी, उस ने मिक़्दार बताई तो पूछा कि तुम से पहले किस मिक़्दार में स–दक़ा वुसूल होता था ? उस ने इस से ज़ियादा मिक़्दार बताई, फ़रमाया : येह कहां से वुसूल होती थी ? उस ने कहा : घोड़ों और ख़ुद्दाम वग़ैरा पर ली जाती थी, येह सुन कर आप ने उन रक़्मों को बिलकुल मुआ़फ़ कर दिया और फ़रमाया : मैं ने मुआ़फ़ नहीं किया ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ने मुआ़फ़ किया।

(طبقات ابن سعد، ج ۵، ص ۲۹۳)

***अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।* اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़ैदियों को सहूलतें दीं

मुजरिमों को जराइम पर सज़ा देना अगर्चे क़ियामे अम्न के लिये ज़रूरी है ता हम उ़र्फ़ व तमद्दुन के लिह़ाज़ से सज़ा की नोइय्यत

और मुजरिमीन की ह़ालत में इख़्तिलाफ़ होता रहता है, इस्लाम चूं कि एक मु–तमद्दन सल्त़नत का बानी था इस लिये इस ने क़ैदियों के साथ उन तमाम मुराआ़त को क़ाइम रखा जो मुक़्तज़ाए इन्सानिय्यत थीं म–षलन आ़म हुक्म दिया कि किसी मुसलमान क़ैदी को इतनी भारी बेड़ियां न पहनाई जाएं कि वोह नमाज़ न पढ़ सके। (سیرت ابن جوزی ص ۸۹)

क़ैदियों की मुख़्तलिफ़ नोइय्यत और मुख़्तलिफ़ ह़ालात के लिह़ाज़ से उन के लिये अलग अलग अह़काम जारी किये, चुनान्चे तमाम सूबों के गवर्नरों को लिखा कि अगर बीमार क़ैदियों के अ़ज़ीज़ो अक़ारिब न हों या उन के पास माल न हो तो उन की ख़बरगीरी करो, जो लोग क़र्ज़ के बारे में क़ैद किये जाएं उन को और मुजरिमों के साथ एक कोठड़ी में न रखो, औ़रतों को अलग क़ैद करो, क़ैदियों को सर्दियों और गर्मियों में लिबास फ़राहम करो और जेलर ऐसा शख़्स मुक़र्रर करो जो क़ाबिले ए'तिमाद हो और रिश्वत न ले। इन अह़काम के साथ अबू बक्र बिन ह़ज़्म को ख़ुसूसिय्यत के साथ लिखा कि हफ़्ते के रोज़ जेल खाने का मुआ़इना किया करें इन के इ़लावा दीगर उ़म्माल को भी क़ैदियों के साथ हुस्ने सुलूक करने की हिदायत की। (طبقات ابن سعد، ج ۵، ص ۲۷۶ ملخصًا)

मुसलमान क़ैदियों का फ़िदया

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने अपने गवर्नरों को ताकीदी मकतूब रवाना किया कि मुसलमान क़ैदियों का फ़िदया अदा कर के उन्हें रिहाई दिलवाएं चाहे सारा ख़ज़ाना सर्फ़ करना पड़े। (سیرت ابن جوزی ص ۱۲۰)

सज़ा की ह़द मुक़र्रर कर दी

इस्लाम ने खुद जिन जराइम पर सज़ाएं मुक़र्रर कर दी हैं उन में तो किसी क़िस्म की तब्दीली नहीं हो सकती, ता हम इस्लाम ने ता'ज़ीर (या'नी क़ाज़ी या ह़ाकिमे इस्लाम की त़रफ़ से दी जाने वाली सज़ा) की कोई तह़दीद (या'नी ह़द मुक़र्रर) नहीं की है और उस को खुद ह़ाकिमे इस्लाम व क़ाज़िये इस्लाम की राय पर छोड़ दिया है, ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز के ज़माने में उ़म्माल ने इस में इस क़दर सख़्तियां कर दी थीं कि बा'ज़ जराइम पर बल्कि सिर्फ़ इल्ज़ाम व शुबहा पर तीन तीन सो कोड़े मारते थे। ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने कानूनी त़ौर पर ता'ज़ीर की तह़दीद कर दी जिस की इन्तिहाई मिक़्दार 30 कोड़े थी। (طبقات ابن سعد، ج٥، ص ٢٨٣)

लोगों को मशक़्क़त का आ़दी बना रहा हूं

इन सब अक़्दामात के बा वुजूद अभी तक ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز इस त़रह़ काम नहीं कर पाए थे जिस त़रह़ करना चाहते थे, चुनान्चे जब आप के शहज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡخَالِق ने इस बारे में आप की ख़िदमत में अ़र्ज़ की तो फ़रमाया : मुझे अपनी और तुम्हारी जान की परवाह नहीं मगर मैं लोगों को मशक़्क़त का आ़दी बना रहा हूं, अगर ज़िन्दगी बाक़ी रही तो अपनी राय के मुत़ाबिक़ ही अ़मल करूंगा और अगर इस से पहले दुन्या से चला गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ निय्यतों का ह़ाल जानता है, मुझे डर है कि अगर लोगों के साथ अचानक सख़्ती की तो वोह मुझे तल्वार के इस्ति'माल पर मजबूर कर देंगे और जो अच्छा काम तल्वार के बिग़ैर नहीं हो सकता उस में कोई अच्छाई नहीं। (حلیۃ الاولیاء، ج٥، ص ٣١٥)

तुम्हारे दिलों से ह़िर्स व लालच निकालना चाहता हूं

ह़ज़रते मैमून बिन मेहरान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡحَنَّان फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمة اللّٰهِ الۡعَزِيز को येह फ़रमाते हुए खुद सुना है कि अगर मैं पचास साल भी तुम्हारा ख़लीफ़ा रहूं तब भी मैं इन्साफ़ के जुम्ला मुरातिब तुम को नहीं सिखा सकता, मैं तुम्हारे दिल से दुन्यावी ह़िर्स व लालच निकाल देना चाहता हूं लेकिन डरता हूं कि त़म्अ़ के साथ तुम्हारे दिल भी सीने से निकल पड़ेंगे, मेरी आरज़ू है कि तुम बुराइयों को सच्चे दिल से बुरा समझो ताकि अ़दलो इन्साफ़ से दिलों को तस्कीन हो। (تاریخ الخلفاء ص۱۸۸)

मुसलमान को तक्लीफ़ पहुंचाना गवारा नहीं

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمة اللّٰهِ الۡعَزِيز ने जअ़्-वना बिन ह़ारिष को "म-लत़्या" की त़रफ़ भेजा, उन्हों ने वहां पर ह़म्ला किया और बहुत सा माले ग़नीमत ह़ासिल किया। जब वोह आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه के पास आए और अपनी कार कर्दगी पेश की तो दरयाफ़्त फ़रमाया : किसी मुसलमान को तो नुक़्सान नहीं पहुंचा ? अ़र्ज़ की : या **अमीरल मोअमिनीन** ! सिवाए एक मा'मूली आदमी के किसी को नुक़्सान नहीं पहुंचा। तड़प कर फ़रमाया : "मा'मूली आदमी ?" फिर जअ़्-वना को डांटा : तुम एक मुसलमान को नुक़्सान पहुंचा कर मेरे पास गाय और बकरियां लाते हो ! जब तक मैं ज़िन्दा हूं तुम किसी ओ़-हदे पर दोबारा फ़ाइज़ नहीं हो सकते।

(حلیۃ الاولیاءج۵ص۳۶۸رقم۷۴۳۴)

अपने हाथ, पेट और ज़बान की हि़फ़ाज़त करो

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने एक गवर्नर को नसीहत फ़रमाई : तुम अपने हाथ को मुसलमानों के ख़ून से, पेट को उन के माल से और ज़बान को उन की बे इ़ज़्ज़ती से बचाना, अगर तुम ने येह काम कर लिये तो गोया अपनी ज़िम्मादारी निभा ली। (سیرت ابن جوزی ص ۱۱۴)

नेक बन्दे चूंटियों को भी ईज़ा नहीं देते

अल्लाह के नेक बन्दे की एक अ़लामत येह भी है कि वोह **ग़ुस्से** में आ कर मुसलमानों को तो क्या तक्लीफ़ देगा चूंटियों तक को ईज़ा देने से गुरेज़ करता है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ह़सन ब-सरी رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ﴿اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِیْ نَعِیْمٍ ﴿۲۲﴾﴾ *(तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बे शक नेकोकार ज़रूर चैन में हैं)* (پ۳۰،المطففین ۲۲) की तफ़्सीर करते हुए फ़रमाते हैं : اَلَّذِیْنَ لَا یُؤْذُوْنَ الذَّرّ *या'नी नेक बन्दे वोह हैं जो चूंटियों को भी अज़िय्यत न दें।* (تفسیر حسن بصری ج ۵ ص ۲۶۴)

तलवार के इस्ति'माल से रोका

जराह़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز को अहले ख़ुरासान की सूरते ह़ाल से आगाह करते हुए लिखा कि येह लोग बहुत बिगड़े हुए हैं इन की इस्लाह़ तलवार और दुर्रों के बिग़ैर नहीं हो सकती, आप मेरी राहनुमाई फ़रमाइयें। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने उन को जवाब

में लिखा : "तुम ने येह ग़लत़ लिखा कि अहले ख़ुरासान तलवार के बिग़ैर नहीं सुधरेंगे, अ़द्ल और ह़क़ ऐसी चीज़ें हैं जिन की ब दौलत येह ख़ुद ब ख़ुद दुरुस्त हो जाएंगे लिहाज़ा तुम इन में ह़क़ व इन्साफ़ का बोल बाला करो, **वस्सलाम**।" (تاریخ الخلفاء ص ۱۹۴)

ख़ून रेज़ी की इजाज़त नहीं दी

दो अफ़राद को ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने इराक़ के किसी काम पर मुक़र्रर किया था तो उन्हों ने भी लिखा था कि लोग बिग़ैर तलवार के दुरुस्त नहीं होते, आप ने उन दोनों को लिखा, बे वुक़ूफ़ो ! तुम मुझ से मुसलमानों के ख़ून के बारे में अ़र्ज़ों मा'रूज़ करते हो ? लोगों में से किसी एक शख़्स के ख़ून के बजाए मेरे लिये तुम दोनों के ख़ून बे क़ीमत हैं। (حلیۃ الاولیاء ج۵ ص ۳۴۰ رقم ۷۳۲۱)

मुसलमान एक दूसरे के मुहाफ़िज़ होते हैं चुनान्चे हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى "**एह्याउल उलूम**" में नक़्ल करते हैं, हमारे प्यारे प्यारे और मीठे मीठे आक़ा मक्की म-दनी **मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : जानते हो "मुसलमान" कौन होता है ? सब ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم बेहतर जानते हैं। फ़रमाया : "मुसलमान वोह है जिस के हाथ और ज़बान से दूसरे मोमिनों को माल और जिस्मानी लिहाज़ से कोई ख़त़रा न हो।" फिर पूछा, मुहाजिर कौन होता है ? फ़रमाया : "जो बूरे काम करना छोड़ दे।" और इरशाद फ़रमाया कि "मुसलमान के लिये जाइज़

नहीं कि दूसरे मुसलमान की त़रफ़ आंख से इस त़रह़ इशारा करे जिस से उसे तक्लीफ़ पहुंचे और येह भी ह़लाल नहीं कि ऐसी ह़–रकत की जाए जो किसी मुसलमान को ख़ौफ़ ज़दा कर दे।''

(کتاب الزھد لابن مبارک، ص ٢٤٠، الحدیث ٦٨٨، ٦٩٠، ١٧٤، اتحاف السادة المتقین، ج ٧، ص ١٧٥، ١٧٧)

खेती के मालिक की शिकायत

एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِیز की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर शिकायत की : मैं ने खेती काश्त की थी कि अहले शाम का लश्कर वहां से गुज़रा और उसे ख़राब कर दिया। ह़ज़रते उ़मर ने उस के बदले उसे दस हज़ार दिरहम दिये। (سیرت ابن جوزی ص ٩٧)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه इसी नोइय्यत की एक हि़कायत के बा'द लिखते हैं : इस **हि़कायत** से उन लोगों को दर्स ह़ासिल करना चाहिये जो लोगों की दीवारों और सीढ़ियों के कोनों वग़ैरा को पीक (या'नी पान के रंगीन थूक) की पिचकारियों से बदनुमा कर देते हैं, इसी त़रह़ बिग़ैर इजाज़ते मालिक मकानों और दुकानों की दीवारों और दरवाज़ों नीज़ साइन बोर्डज़ और गाड़ियों, बसों वग़ैरा के बाहर या अन्दर स्टिकर्ज़ और पोस्टर लगाने वाले, दीवारों पर मालिक की इजाज़त के बिग़ैर ''चॉकिंग'' करने वाले भी दर्स ह़ासिल करें कि इस त़रह़ करने से लोगों के हुक़ूक़ पामाल होते हैं। बेशक हुक़ूकु़ल्लाह ही अ़ज़ीम तर हैं मगर तौबा के ता'ल्लुक़ से हुक़ूकु़ल इबाद का मुआ़–मला हुक़ूकु़ल्लाह से सख़्त तर है, दुन्या में जिस किसी का ह़क़ ज़ाएअ़ किया

हो अगर उस से मुआ़फ़ी तलाफ़ी की तरकीब दुन्या ही में न बनी होगी तो क़ियामत के रोज़ उस साहि़बे ह़क़ को नेकियां देनी पड़ेगी और अगर इस त़रह़ भी ह़क़ अदा न हुवा तो उस के गुनाह अपने सर लेने होंगे। म-षलन जिस ने बिला उ़ज़्रे शरई किसी को झाड़ा होगा, घूर कर या किसी भी त़रह़ डराया होगा, दिल दुखाया होगा, किसी को मारा होगा, किसी के पैसे दबा लिये होंगे, पीक, पोस्टर या चॉकिंग वग़ैरा के ज़रीए़ किसी की दीवार ख़राब की होगी, किसी की दुकान या मकान के आगे जगह घेर कर उस के लिये ना ह़क़ परेशानी का सामान किया होगा, किसी की इमारत से क़रीब ग़ैर वाजिबी तौ़र पर ज़बरदस्ती अपनी इमारत बना कर उस की हवा और रोशनी में रुकावट खड़ी की होगी, किसी की स्कूटर या कार वग़ैरा को अपनी गाड़ी से डैन्ट डाल कर या ख़राश लगा कर राहे फ़िरार इख़्तियार की होगी, या भाग न सकने की सूरत में अपना क़ुसूर होने के बा वुजूद अपनी चर्ब ज़बानी या रो'ब दाब से उसी को मुजरिम बावर करा कर उस की ह़क़ त-लफ़ी की होगी, ईदे क़ुर्बां वग़ैरा के मोक़अ़ पर साहि़बे मकान की रिज़ामन्दी के बिग़ैर उस के घर के आगे जानवर बांध कर या ज़ब्ह़ कर के उस की दीवार या घर से निकलने का रास्ता गोबर, ख़ून और कीचड़ वग़ैरा से आलूदा कर के उस के लिये ईज़ा का सामान किया होगा, किसी के मकान या दुकान के पास या उस की छत या प्लॉट पर परेशान कुन गन्दा कचरा फेंका होगा, अल ग़रज़ लोगों के हु़क़ूक़ पामाल करने वाला अगर्चे नमाज़ें, ह़ज, उ़-मरे, ख़ैरातें, और बड़ी बड़ी नेकियां ले कर गया होगा, मगर ब रोज़े क़ियामत उस की इबादतें वोह लोग ले जाएंगे जिन को नाह़क़ नुक़्सान पहुंचाया

होगा या बिला इजाज़ते शरई किसी त़रह़ से उन की दिल आज़ारी का बाइ़ष बना होगा। नेकियां देने के बा वुजूद हुक़ूक़ बाक़ी रहने की सूरत में उन के गुनाह इस "नेक नमाज़ी" के सर थोप दिये जाएंगे और यूं दूसरों की ह़क़ त-लफ़ी करने के सबब ह़ाजी, नमाज़ी, रोज़ादार और तहज्जुद गुज़ार होने के बा वुजूद वोह जहन्नम में जा पड़ेगा। وَالْعِيَاذُ بِاللّٰہِ تَعَالٰی (और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह) हां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस के लिये चाहेगा मह़्ज़ अपने फ़ज़्लो करम से सुल्ह़ कराएगा। मज़ीद तफ़्सीलात के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** का मत़्बूआ़ रिसाला **"ज़ुल्म का अन्जाम"** मुला-ह़ज़ा फ़रमा लीजिये।

(माख़ूज़ अज़ "अश्कों की बरसात", स.16)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़लाहे़ आ़म्मा के काम

अ़वाम की फ़लाहो़ बहबूद के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیْز ने तमाम ममालिके मह़रूसा में निहायत कषरत से मुसाफ़िर ख़ाने बनवाए, चुनान्चे ख़ुरासान के आ़मिल को लिखा कि वहां के रास्ते में बहुत से मुसाफ़िर ख़ाने ता'मीर कराए जाएं।

(الطبقات الکبری ج ۵ ص ۲۶۶)

मुसाफ़िरों की ख़ैर ख़्वाही करो

समर क़न्द के आ़मिल सुलैमान बिन अबीस्सरा के पास फ़रमान भेजा कि वहां के शहरों में सराएं (या'नी मुसाफ़िर ख़ाने) ता'मीर कराओ, जो मुसलमान उधर से गुज़रें एक दिन और रात उन की मेहमान नवाज़ी

करो, उन की सुवारियों की हिफ़ाज़त करो जो मुसाफ़िर मरीज़ हो उस को दो रात और दो दिन मुक़ीम रखो। अगर किसी के पास घर तक पहुंचने का सामान न हो तो इस क़दर सामान कर दो कि अपने वत़न में पहुंच जाए। (الکامل فی التاریخ، ج۴، ص۳۲۷)

अ़वामी लंगर ख़ाना

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने एक आ़म लंगर ख़ाना क़ाइम किया, जिस में तमाम फु-क़रा मसाकीन और मुसाफ़िरों को ख़ाना मिलता था। (تاریخ دمشق ج۴۵ ص۲۱۸)

चरागाहों को खोल दिया

मा तह़्त ममालिक में जो चरागाहें थीं उन में नक़ीअ़ के सिवा तमाम चरागाहों को आ़म कर दिया (الطبقات الکبری ج۵ ص۲۶۶) और उन के मु-तअ़ल्लिक़ एक आ़मिल को लिखा :

فَمَا حُمِيَ مِنَ الْاَرْضِ اَلَّا يُمْنَعُ اَحَدٌ مَوَاقِعَ الْقَطْرِ فَاَبِحِ الْاَحْمَاءَ ثُمَّ اَبِحْهَا

जो ज़मीनें चरागाह बनाई गई हैं तो जहां जहां बरसात का पानी गिरे उन से किसी को न रोका जाए, इस लिये चरागाहों को आ़म कर दो और ज़रूर आ़म कर दो।

(الطبقات الکبری ج۵ ص۲۹۶)

ज़रूरत मन्दों की तलाश

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز की त़रफ़ से एक शख़्स बा क़ाइ़दा ए'लान किया करता : कहां हैं क़र्ज़ दार ? कहां हैं निकाह़ की ख़्वाहिश रखने वाले ? कहां हैं मसाकीन ? कहां हैं यतीम ? और जब येह लोग निदा करने वाले से राबित़ा करते तो वोह उन की ज़रूरियात को पूरा किया करता था। (البدایة والنهایة، ج۶، ص۳۴۰)

नाबीनाओं, फ़ालिज ज़दों और यतीमों की ख़ैर ख़्वाही

गुलामों के निगरान ने ह़ाज़िर हो कर उन के खाने पीने और रहने सहने के अख़राजात मांगे तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने गुलामों की ता'दाद दरयाफ़्त फ़रमाई तो बताया गया कि इतने हज़ार गुलाम हैं। आप ने शाम के शहरों में मकतूब रवाना किया कि नाबीनाओं और फ़ालिज ज़दों की तफ़्सीलात भेजी जाएं, जब मा'लूमात आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْہ तक पहुंचीं तो हर नाबीना को एक और दो फ़ालिज ज़दों को एक ख़ादिम अ़ता किया, इस के बा'द भी कुछ गुलाम बाक़ी थे चुनान्चे आप ने यतीमों और क़र्ज़ दारों की फ़ेहरिस्त मंगवाई और हर पांच अफ़राद को एक गुलाम अ़ता कर दिया।

(سیرت ابن جوزی ص ۱۸۳)

अन्धों और अपाहिजों की देख भाल के लिये गुलाम अ़ता फ़रमाते

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَدِیْر के पास जब "ख़ुमुस"[1] के गुलाम ज़ियादा हो जाते तो दो दो अपाहिजों को ख़िदमत के लिये एक गुलाम और हर नाबीना को राह दिखाने के लिये एक गुलाम दे दिया करते थे। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۴۸)

مدینہ

1 : मुसलमान जो माल कुफ़्फ़ार से बत़ौरे कुव्वत व ग़-लबा और लश्कर कुशी के ह़ासिल करें उस को माले ग़नीमत कहा जाता है। इस माले ग़नीमत को पांच हिस्सों में तक़्सीम किया जाता है जिन में से चार हिस्से मुजाहिदीन में तक़्सीम किये जाते हैं और पांचवां हिस्सा अलग कर दिया जाता है जिस को ख़ुमुस कहा जाता है।

(तफ़्सीरे नईमी जि. 10, स. 6-7 मुलख़्ख़सन)

अपाहिजों के वज़ाइफ़ मुक़र्रर किये

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر ने अपाहिजों के भी वज़ाइफ़ मुक़र्रर किये और इस फ़ैसले पर इस शिद्दत के साथ अ़मल किया कि जो आ़मिल इस की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करता था वोह मा'तूब होता था। एक बार दिमिश्क़ के बैतुल माल से एक अपाहिज का वज़ीफ़ा मुक़र्रर किया गया तो एक आ़मिल ने कहा कि इस क़िस्म के लोगों के साथ हुस्ने सुलूक तो किया जा सकता है लेकिन तन्दुरुस्त आदमी के बराबर वज़ीफ़ा नहीं मुक़र्रर किया जा सकता, लोगों ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر की ख़िदमत में इस की शिकायत कर दी। लिहाज़ा आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه ने उस आ़मिल की खूब ख़बर ली।

क़ह़त ज़दगान की मदद

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ الْعَزِيْز के ज़माने में एक मरतबा ज़बर दस्त क़ह़त पड़ा तो अ़रब के कुछ लोग एक वफ़्द की शक्ल में आप के पास आए और अ़र्ज़ की : "या **अमीरल मोअमिनीन** हम एक शदीद ज़रूरत की वजह से आप के पास ह़ाज़िर हुए हैं, फ़ाक़ों के सबब हमारे जिस्म की चमड़ी सुख गई है और हमारी मुश्किल का ह़ल सिर्फ़ बैतुल माल के ज़रीए़ मुमकिन है। इस माल की ह़ैषिय्यत तीन में से एक हो सकती है, या तो येह माल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये है या बन्दों के लिये या फिर आप के लिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को इस की ज़रूरत नहीं वोह बे नियाज़ है, अगर

बन्दगाने ख़ुदा के लिये है तो इस में से हमें भी दे दीजिये, अगर आप का है तो स-दक़े के त़ौर पर ही हमें दे दीजिये, **अल्लाह** तआ़ला स-दक़ा करने वालों को जज़ाए ख़ैर देगा।" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز अपने जज़्बात पर क़ाबू न रख सके और आप की आंखों से आंसूओं की झड़ी लग गई चुनान्चे आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने हुक्म दिया कि उन लोगों की तमाम ज़रूरियात बैतुल माल से पूरी की जाएं। (التبر المسبوک فی نصیحۃ الملوک، باب فی ذکر العدل والسیاسۃ، ج۱، ص۲۲)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

ह़या आती है

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौला मुश्किल कुशा अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के पोते ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ह़सन رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपनी किसी ज़रूरत की वजह से ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز के पास आए तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उन्हें ताकीद की :

اِذَا كَانَتْ لَكَ حَاجَةٌ فَاَرْسِلْ اِلَیَّ اَوِاكْتُبْ ، فَاِنِّی اَسْتَحِی مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰی اَنْ يَّرَاكَ عَلٰی بَابِی

*या'नी जब आप को कोई ह़ाजत दरपेश हो तो किसी की ज़बानी या लिख कर पैग़ाम भिजवा दिया करें क्यूंकि मुझे इस बात पर **अल्लाह** तआ़ला से ह़या आती है कि वोह आप जैसी हस्ती को मेरे दरवाज़े पर खड़ा देखे।*

(باب السلک فی طبائع الملک، ظہور العنایۃ بمن لہ حق، ج۱، ص۹۳)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

बच्चों के वज़ीफ़े

मुल्क में जितने मुसलमान थे उन में बच्चे बच्चे का वज़ीफ़ा मुक़र्रर किया, चुनान्चे मुह़म्मद बिन उ़मर का बयान है कि मैं 100 हि. में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز के बा ब-रकत दौरे ख़िलाफ़त में पैदा हुवा तो मेरी दाया मुझ को गवर्नर अबू बक्र बिन ह़ज़्म की ख़िदमत में ले गई और उन्हों ने मुझ को एक दीनार दिया। और हैषम बिन वाक़िद कहते हैं कि मैं 97 हि. में पैदा हुवा, जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ख़लीफ़ा बने तो मुझे उन की ख़िलाफ़त में सालाना तीन दीनार बतौरे वज़ीफ़ा मिले। (طبقات ابن سعد، ج۵،ص ۲٦۷)

हर एक को बराबर वज़ीफ़ा मिलता था

येह वज़ाइफ़ तमाम लोगों को मुसावी मिलते थे सिर्फ़ आज़ाद शुदा गुलामों के वज़ाइफ़ में कुछ फ़र्क़ था। (طبقات ابن سعد، ج۵،ص ۲۹۲)

यहां तक कि जो लोग हमेशा से तफ़व्वुक़ व इम्तियाज़ के ख़ूगर (या'नी आ़दी) थे वोह इस मुसावात को देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز से बिलकुल अलग हो गए।

वज़ाइफ़ में इज़ाफ़ा होता रहता

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز वज़ाइफ़ में उ़र्फ़ व आ़दत के मुत़ाबिक़ इज़ाफ़ा भी करते रहते थे, चुनान्चे एक बार हर एक के वज़ीफ़े में दस दीनार या दस दिरहम का इज़ाफ़ा किया जिस से सब लोग यक्सां तौर पर मुस्तफ़ीद हुए। (سیرت ابن جوزی ص ۱۰۷)

इस पुर फ़य्याज़ तर्ज़े अ़मल से बैतुल माल को सख़्त नुक़्सान पहुंचा, चुनान्चे बा'ज़ उ़म्माल ने उन को इस त़रफ़ तवज्जोह भी दिलाई लेकिन **अमीरुल मोअमिनीन** ने इस की कुछ परवाह नहीं की बल्कि उ़म्माल को यहां तक लिखा : اَعْطِ مَافِيهِ فَاِذَا لَمْ يَبْقَ فِيهِ شَيْءٌ فَامْلَأْهُ زُبَلاً *या'नी जब तक ख़ज़ाने में रक़म है देते चले जाओ, जब कुछ न रहे तो उस में घास फूंस भर दो।* (سیرت ابن جوزی ص ۱۰۴)

ग़रीबों की इमदाद के दीगर ज़राएअ़

वज़ाइफ़ व अ़तिय्यात के इलावा गु-रबा व मसाकीन की इमदाद व इआ़नत के मुख़्तलिफ़ ज़राएअ़ भी इख़्तियार किये म-षलन : (1) तमाम लोगों के लिये मुसावियाना त़ौर पर ग़ल्ला मुक़र्रर किया। (طبقات ابن سعد، ج ۵، ص ۲۶۷) (2) ग़रीबों के पास जो खोटे सिक्के होते थे उन की निस्बत बैतुल माल के अफ़्सरों को लिखा कि अगर येह लोग इन सिक्कों को बदलना चाहें तो खरे सिक्कों से बदल दिये जाएं। (سیرت ابن جوزی ص ۱۱۰)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ग़ुलाम को आज़ादी कैसे मिली ?

हज़रते सय्यिदुना ज़ियाद बिन अबी ज़ियाद मदीनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : "मुझे मेरे आक़ा इब्ने इयाश बिन अबी रबीआ़ ने **अमीरुल मोअमिनीन** हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللهِ العَزِيز के पास अपने किसी काम से भेजा। जब मैं उन की बारगाह में हाज़िर हुवा तो उस वक़्त एक कातिब उन के पास बैठा कुछ लिख रहा था। मैं ने "السلام علیکم" कहा। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने "وعلیکم السلام" कहा और कातिब को अह़कामात लिखवाने में मसरूफ़

रहे। जब आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه इस काम से फ़ारिग़ हुए तो मेरे सिवा कमरे में मौजूद तमाम लोगों को बाहर जाने का हुक्म दिया। सर्दियों का मोसिम था मैं ने ऊनी जुब्बा पहना हुवा था। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه मेरे सामने बैठ गए और इरशाद फ़रमाया : "वाह भई ! तुम सर्दियों में गर्म जुब्बा पहन कर कितने पुर सुकून हो।" फिर मुझ से अहले मदीना के सालिहीन, बच्चों, औ़रतों और मर्दों के मु–तअ़ल्लिक़ ह़ाल दरयाफ़्त किया यहां तक कि हर हर शख़्स के बारे में पूछा। फिर **मदीनए मुनव्वरा** زَادَهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِیْماً وَّ تَكرِیماً के हुकूमती निज़ाम के मु–तअ़ल्लिक़ पूछा। मैं ने तफ़्सील बताई तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه बड़े ग़ौर से हर हर बात सुनते रहे फिर फ़रमाया : "ऐ इब्ने ज़ियाद ! तुम देख रहे हो कि मैं किस मुसीबत में फंस गया हूं !" मैं ने कहा : "या **अमीरुल मोअमिनीन** ! मैं आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه के बारे में ख़ैर की ही उम्मीद रखता हूं।" मगर आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه आ़जिज़ी करते हुए फ़रमाने लगे : "अफ़सोस ! हाए अफ़सोस ! कैसी ख़ैर, क्या भलाई ! मैं लोगों को डांटता हूं लेकिन मुझे कोई नहीं डांटता, मैं लोगों को तक्लीफ़ पहुंचाता हूं लेकिन मुझे कोई तक्लीफ़ नहीं पहुंचाता।" आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه येह कलिमात दोहराते जाते और रोते जाते यहां तक कि मुझे आप पर तर्स आने लगा। फिर आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه ने मेरी ह़ाजात पूरी फ़रमाईं और मेरे आक़ा की त़रफ़ लिख कर भेजा : "येह ग़ुलाम हमारे हाथ फ़रोख़्त कर दो।" फिर अपने बिस्तर के नीचे से बीस (20) दीनार निकाले और मुझे देते हुए फ़रमाया : "येह लो, इन्हें अपने इस्ति'माल में लाना, अगर

तुम्हारा ग़नीमत में हिस्सा बनता तो वोह भी ज़रूर तुम्हें देता लेकिन क्या करूं तुम गुलाम हो इस लिये माले ग़नीमत में तुम्हारा कुछ हिस्सा नहीं।" मैं ने दीनार लेने से इन्कार किया तो फ़रमाया : "येह मैं अपनी ज़ाती रक़म में से दे रहा हूं।" मैं ने फिर इन्कार किया मगर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पैहम (या'नी मुसल्सल) इसरार से मजबूर हो कर मुझे वोह दीनार लेने ही पड़े। फिर मैं वापस आ गया। जब आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का येह पैग़ाम मेरे आक़ा को मिला कि : "येह गुलाम हमारे हाथ फ़रोख़्त कर दो।" तो उन्हों ने फ़र्ते अक़ीदत में मुझे बेचने के बजाए आज़ाद कर दिया। यूं हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَدِیْر की ब-रकत से मुझे आज़ादी नसीब हो गई।" (عیون الحکایات، ص ۴۰۱)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हर दिल अ़ज़ीज़ ख़लीफ़ा

फ़रमाने **मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है :

اِذَا اَحَبَّ اللّٰہُ عَبۡدًا نَادٰی جِبۡرَئِیۡلَ اِنَّ اللّٰہَ یُحِبُّ فُلَانًا فَاَحِبَّہٗ فَیُحِبُّہٗ جِبۡرَئِیۡلُ فَیُنَادِیۡ جِبۡرَئِیۡلُ فِیۡ اَھۡلِ السَّمَاءِ اِنَّ اللّٰہَ یُحِبُّ فُلَانًا فَاَحِبُّوۡہُ فَیُحِبُّہٗ اَھۡلُ السَّمَاءِ ثُمَّ یُوۡضَعُ لَہُ الۡقَبُوۡلُ فِی اَھۡلِ الۡاَرۡضِ

या'नी ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ जब किसी बन्दे से मह़ब्बत करता है तो जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام से कहता है कि मैं फ़ुलां से मह़ब्बत करता हूं तुम भी उस से मह़ब्बत करो चुनान्चे ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام उस से मह़ब्बत करते हैं, फिर आसमान के रहने वालों में निदा करते हैं कि ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ फ़ुलां से मह़ब्बत रखता है तुम

लोग भी उस से महब्बत करो, चुनान्चे आसमान वाले उस से महब्बत करने लगते हैं, इस के बा'द ***अल्लाह*** عَزَّ وَجَلَّ *उस को दुन्या में मक़्बूले आ़म बना देता है।* (بخاری، ج۴،ص۱۱۰،الحدیث۶۰۴۰)

मक़्बूलिय्यत और हर दिल अ़ज़ीज़ी भी एक बहुत बड़ा द–रजा है, हुस्ने अख़्लाक़ और अ़दलो इन्साफ़ की ब दौलत हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز को येही द–रजा ह़ासिल था, चुनान्चे वोह एक बार मोसिमे ह़ज में मैदाने अ़–रफ़ात से गुज़रे तो लोगों की तवज्जोह का मर्कज़ बन गए। हज़रते सय्यिदुना सुहैल बिन अबी सालेह़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ जो मज़्कूरा बाला ह़दीष के रावी हैं, वोह भी इस मज्मअ़ में मौजूद थे, उन्हों ने येह ह़ालत देखी तो अपने वालिदे मोह़्तरम से कहा कि मेरे ख़याल में ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ) को मह़बूब रखता है, उन्हों ने इस की वजह पूछी तो कहा कि लोगों के दिलों में उन की जगह है, फिर येही ह़दीष बयान की। (تاریخ دِمشق، ج۴۵،ص۱۴۵)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।* اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मल्लाह़ों की ख़ैर ख़्वाही

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ القَدِیر ने मिस्र के गवर्नर को ख़त़ लिखा कि दरयाए नील के किनारे शजरकारी न की जाए क्यूंकि इस से मल्लाह़ों को किश्तियों का लंगर खींचने में दिक़्क़त पेश आती है। (سیرت ابن عبدالحکم ص۵۷)

ख़र्चे सफ़र अ़ता किया

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز एक मरतबा ह़म्स के बाज़ार में तशरीफ़ ले गए तो वहां पर उन से एक शख़्स मिला और पूछा : या **अमीरुल मोअमिनीन** ! क्या आप ने येह हुक्म जारी किया है कि जो शख़्स मज़्लूम है वोह आप के पास आ जाए ? फ़रमाया : हां । उस ने अ़र्ज़ की : तो फिर बहुत दूर से एक मज़्लूम आप के पास ह़ाज़िर हुवा है । दरयाफ़्त फ़रमाया : कहां के रहने वाले हो ? अ़र्ज़ की : अ़दन का । फ़रमाया : तुम पर क्या ज़ुल्म हुवा है ? अ़र्ज़ की : एक शख़्स ने ज़बर दस्ती मेरी ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर लिया है । हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने अ़दन के गवर्नर "उ़र्वा बिन मुह़म्मद" को लिखा : इस शख़्स के दा'वे को सुनो और गवाहों की बुन्याद पर इस का ह़क़ इसे दिलाओ । फिर मुहर लगा कर येह ख़त़ उस शख़्स के ह़वाले कर दिया । जब वोह जाने लगा तो फ़रमाया : तुम इतनी दूर से यहां आए हो, येह बताओ तुम्हारा ख़र्चे सफ़र कितना है ? उस ने ह़िसाब लगा कर बताया : ग्यारह दीनार । आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उसे ज़ाती जैब से ग्यारह दीनार तोह़फ़तन अ़ता कर दिये ।

(حلیۃ الاولیاء،ج۵،ص۳۱۳،رقم ۷۲۳۲)

मक़रूज़ों के क़र्ज़े अदा करने का हुक्म

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने अपने उ़म्माल को लिखा कि मक़रूज़ों के क़र्ज़े बैतुल माल से अदा करो । उ़म्माल ने वज़ाह़त चाही कि वोह मक़रूज़ जिस के पास मकान, ख़ादिम, सुवारी और घर का सामान मौजूद है क्या उस का क़र्ज़ भी बैतुल माल से अदा किया जाएगा ? फ़रमाया : हर मुसलमान के पास

मकान का होना ज़रूरी है जिस में वोह सर छुपा सके और एक ख़ादिम का जो उस का हाथ बटा सके और एक घोड़ा जिस पर सुवार हो कर वोह जिहाद कर सके और घर के सामान का जो उस के काम आ सके और अगर इन सब चीज़ों के बा वुजूद कोई मक़रूज़ है तो उस का क़र्ज़ बैतुल माल से ही अदा किया जाए। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۴۰)

फ़ौत शुदगान के क़र्ज़ की बैतुल माल से अदाई

गवर्नर अबू बक्र बिन ह़ज़्म को यहां तक लिखा कि जिस शख़्स का इन्तिक़ाल हो जाए और उस के ज़िम्मे क़र्ज़ हो, उस का क़र्ज़ बैतुल माल से अदा कर दो बशर्त़ कि वोह क़र्ज़ किसी हि़माकत की बिना पर न हो। (سیرت ابن عبدالحکم، ص ۱۵۷)

अ़वाम की ख़ुश ह़ाली

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز तक़रीबन अढ़ाई साल या'नी 30 महीने ख़लीफ़ा रहे मगर ना जाइज़ आमदनियों के रोक थाम, ज़ुल्म के सद्दे बाब और माल की दियानत दाराना तक़्सीम के नतीजे में एक साल में ही लोगों के माली ह़ालात इतने बेहतर हो गए थे कि कोई शख़्स भारी रक़म लाता और किसी अहम शख़्सिय्यत से कहता कि आप की नज़र में जो ज़रूरत मन्द हो, उन को येह माल दे दीजिये तो बड़ी दौड़ धूप और पूछगछ के बा' द भी कोई ऐसा आदमी न मिलता जिसे येह माल दे दिया जाए, बिल आख़िर उसे वोह माल वापस ले जाना पड़ता। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۰۶ وسیرت ابن جوزی ص ۹۴)

अल्लाह *عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।* اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تَعالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعالٰى علٰى محمَّد

ख़ुश हा़ली की चन्द झलकियां

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز के दौर में ख़ुश हा़ली का किस त़रह़ दौर दौरा हो गया था, इस की चन्द मज़ीद झलकियां मुला-ह़ज़ा हों : चुनान्चे

स-दक़ा लेने वाले स-दक़ा देने वाले बन गए

त़-बक़ाते इब्ने सा'द में मुह़म्मद बिन क़ैस से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने हुक्म दिया कि मुस्तह़िक़ीन पर स-दक़ा तक़्सीम किया जाए लेकिन मैं ने दूसरे ही साल देखा कि जो लोग स-दक़ा लिया करते थे वोह ख़ुद स-दक़ा देने के क़ाबिल हो गए। (طبقات ابن سعد، ج۵،ص۲۶۸)

स-दक़ा देने के लिये फ़क़ीर नहीं मिला

यह़्या बिन सईद का बयान है कि हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने मुझे अफ़्रिक़ा में स-दक़ा वुसूल करने के लिये भेजा मैं ने स-दक़ा वुसूल कर के फु-क़रा को तलाशा कि उन पर तक़्सीम कर दूं लेकिन मुझ को कोई फ़क़ीर नहीं मिला क्यूंकि हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने लोगों को दौलत मन्द बना दिया था, लिहाज़ा मैं ने स-दक़े की रक़म से ग़ुलाम ख़रीद कर आज़ाद कर दिये।

(سیرت ابن عبدالحکم ص۵۹)

अब हम चारा नहीं बेचते

एक बार **मदीनए मुनव्वरा** زَادَهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِیماً وَّ تَکرِیماً से कोई शख़्स आया और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیہِ رحمۃُ اللّٰهِ العَزِیز ने उस से अहले मदीना के ह़ालात पूछे फिर दरयाफ़्त किया कि उन मिस्कीनों का क्या ह़ाल है जो फुलां फुलां जगह बैठते थे ? उस शख़्स ने बताया : "अब वोह वहां से उठ गए हैं।" येह वोह ग़रीब लोग थे जो अपनी गुज़र बसर के लिये मुसाफ़िरों को जानवरों का चारा बेचा करते थे लेकिन जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیہِ رحمۃُ اللّٰهِ العَزِیز के ज़माने में उन से चारा मांगा गया तो कहने लगे : ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیہِ رحمۃُ اللّٰهِ العَزِیز की अ़ताओं ने हमें इस क़िस्म की तिजारत से बिलकुल बे नियाज़ कर दिया है।

(سیرت ابن جوزی ص ۹۴)

माल में ब-रकत

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیہِ رحمۃُ اللّٰهِ العَزِیز ने गवर्नर अ़ब्दुल ह़मीद बिन अ़ब्दुर्रह़मान को लिखा कि बैतुल माल से लोगों को वज़ाइफ़ अदा कर दो। उन्हों ने लिखा : मैं ने वज़ाइफ़ दे दिये हैं लेकिन बैतुल माल में अभी भी माल बाक़ी है तो आप رَحمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیہ ने लिखा : हर उस मक़रूज़ का क़र्ज़ अदा करो जिस का क़र्ज़ किसी ह़िमाक़त की बिना पर न हो। उन्हों ने जवाब में लिखा : मैं ने क़र्ज़े अदा कर दिये हैं लेकिन माल अभी भी बाक़ी है। फ़रमाया : उन कंवारों को

तलाश करो जो मुफ़्लिस हों और उन को शादी के लिये अख़राजात मुहय्या कर दो, अ़र्ज़ की : मैं ने शादियां करवा दी है मगर माल अभी भी बाक़ी है। (تاریخ دِمشق، ج۴۵،ص ۲۱۳)

रिआ़या की ख़ुशहा़ली पर मसर्रत

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز की आ़दत थी कि सुवार हो कर शहर से बाहर निकल जाते और आने जाने वाले क़ाफ़िलों से मिल कर उन से मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों के ह़ालात दरयाफ़्त फ़रमाते। एक बार इसी मक़्सद के लिये आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ अपने ख़ादिम व मुशीरे ख़ास मुज़ाहि़म की मइय्यत में सुवार हो कर निकले, उन्हें एक मुसाफ़िर मिला जो **मदीनए मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا से आ रहा था, उस से दरयाफ़्त फ़रमाया कि वहां के लोगों की क्या ह़ालत है ? मुसाफ़िर बोला : आप फ़रमाएं तो इजमालन मुख़्तसर सी बात कह दूं और फ़रमाएं तो हर चीज़ अलग अलग तफ़्सील से बयान करूं ? फ़रमाया : बस मुख़्तसर ही कहो। उस ने कहा : "मैं मदीनए पाक को इस ह़ालत में छोड़ कर आया हूं कि वहां ज़ालिम बेबस और मग़लूब हैं, मज़लूम की दाद रसी होती है, मालदार के पास दौलत की कमी नहीं और तंगदस्त भी ख़ुश ह़ाल है और उस की ज़रूरियात अब ख़ूब पूरी हो रही हैं।" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز बेह़द ख़ुश हुए और फ़रमाया : **वल्लाह** ! अगर तमाम शहरों की ह़ालत येही हो तो येह मुझे उन तमाम चीज़ों से ज़ियादा मह़बूब है जिन पर सूरज की शुआ़एं पड़ती हैं। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۱۱)

ने'मतों का शुक्र अदा करें

अ़दी बिन अरत़ात ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر की ख़िदमत में ख़त़ लिखा कि लोगों की ख़ुशह़ाली और माल की फ़रावानी इस क़दर बढ़ गई है कि मुझे डर है कि कहीं इन में झगड़े और तकब्बुर न पैदा हो जाए। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जवाब में लिखा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब जन्नतियों को जन्नत और दोज़ख़ियों को दोज़ख़ में दाख़िल फ़रमाएगा तो अहले जन्नत के इस क़ौल पर राज़ी हो जाएगा : اَلْحَمْدُلِلّٰهِ الَّذِیْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ *या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बेह़द शुक्र है जिस ने हम से अपना वा'दा सच्चा कर दिखाया।*

लिहाज़ा अपने यहां के लोगों को कहो कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र किया करें (या'नी शुक्र की ब-रकत से तकब्बुर से ह़िफ़ाज़त रहेगी, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) (سیرت ابن عبدالحکم ص ۵۸)

ने'मत की ह़िफ़ाज़त का त़रीक़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने फ़रमाया : اَیُّهَاالنَّاسُ قَیِّدُوا النِّعَمَ بِالشُّکْرِ *या'नी ने'मत की ह़िफ़ाज़त शुक्र से करो।* (سیرت ابن جوزی ص ۲۷۶)

ने'मत का ज़िक्र भी शुक्र है

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने फ़रमाया : ذِکْرُ النِّعَمِ شُکْرٌ *या'नी ने'मत का ज़िक्र भी शुक्र है।*

(سیرت ابن جوزی ص ۲۷۶)

शुक्र की तौफ़ीक़ मिलना भी सआ़दत है

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने एक मकतूब में लिखा : اِنَّ اللّٰهَ لَمْ يُنْعِمْ عَلٰى عَبْدٍ نِعْمَةً فَحَمِدَ اللّٰهَ عَلَيْهَا اِلَّا كَانَ حَمْدُهٗ اَفْضَلَ مِنْ نِعْمَتِهٖ *या'नी जब अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *किसी बन्दे को ने'मत अ़ता फ़रमाए और वोह बन्दा उस की ह़म्द करे तो येह ह़म्द करना उस ने'मत से अफ़्ज़ल है।*

(درمنثور ج۶ ص ۳۴۴)

शुक्र कैसे करें ?

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने फ़रमाया : شُكْرُ اللّٰهِ تَرْكُ الْمَعْصِيَةِ *या'नी अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करने का त़रीक़ा येह है कि बन्दा उस की ना फ़रमानी छोड़ दे।*

(درمنثور ج۱ ص ۳۷۱)

नेकी करने पर अल्लाह का शुक्र अदा करो

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने फ़रमाया : مَنْ اَحْسَنَ مِنْكُمْ فَلْيَحْمِدِ اللّٰهَ وَمَنْ اَسَاءَ فَلْيَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ *या'नी नेकी पर अल्लाह का शुक्र और गुनाह हो जाने पर उस से मग़्फ़िरत त़लब करो।* (سیرت ابن جوزی ص ۲۳۳)

शुक्र से ने'मतों में इज़ाफ़ा होता है

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने एक ख़त़ में लिखा : मैं तुम्हें शुक्र की तरग़ीब देता हूं क्यूंकि शुक्र से ने'मतों में इज़ाफ़ा और ना शुक्री से उन का ख़ातिमा होता है, तुम इ़ल्म

को उस वक़्त तक ह़ासिल नहीं कर सकते जब तक उसे जहालत पर तरजीह़ न दो, इसी त़रह ह़क़ को नहीं पा सकते जब तक बाति़ल को न छोड़ दो। (حلیۃ الاولیاء ج۵ ص۳۰۲)

बहन के जनाज़े में शिर्कत करने वालों का शुक्रिया अदा किया

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन नाफ़ेअ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز की बहन फ़ौत हो गई, उस की तदफ़ीन के बा'द लोग आप के साथ घर तक गए, दरवाज़े पर पहुंच कर उन का शुक्रिया अदा करते हुए फ़रमाया : आप लोगों ने अपना ह़क़ अदा कर दिया है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को इस का षवाब अ़त़ा फ़रमाए। (سیرت ابن جوزی ص ۲۷۴)

***अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।* اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बत़ौरे मुजद्दिद

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **हुज़ूर सरापा नूर, फ़ैज़ गन्जूर, शाहे ग़यूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

اِنَّ اللّٰہَ یَبْعَثُ لِھٰذِہِ الْاُمَّۃِ عَلٰی رَاْسِ کُلِّ مِائَۃِ سَنَۃٍ مَنْ یُّجَدِّدُ لَھَا دِیْنَھَا

*"तर्जमा : बे शक **अल्लाह** तआ़ला इस उम्मत के लिये हर सदी (सो साल) के सिरे पर ऐसे शख़्स को भेजेगा जो इस **दीन की तजदीद** करेगा।"*

(سنن ابو داوٗد، الحدیث ۴۲۹۱ ج۴ ص ۱۴۸)

शैख़ुल इस्लाम बदरुद्दीन अबदाल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "उ़मूमन ऐसा ही होता है कि सदी के ख़त्म होते होते उ़–लमाए उम्मत भी ख़त्म हो जाते हैं। दीनी बातें मिटने लगती हैं, बद मज़हबी और बिदअ़त ज़ाहिर होती है, **इस वास्ते दीन की तजदीद की ज़रूरत पड़ती है।** उस वक़्त **अल्लाह** तआ़ला ऐसे आ़लिम को ज़ाहिर करता है जो उन ख़राबियों को दूर कर देता है और उन बुराइयों को सब के सामने अ़लल ए'लान बयान कर के दीन को अज़ सरे नौ नया कर देता है। वोह सलफ़ सालिह़ीन का बेहतर इ़वज़, ख़ैरुल ख़लफ़ (या'नी अच्छा जा नशीन) और ने'मुल बदल होता है।"

(ह़याते आ'ला ह़ज़रत जि.3, स.126 ब ह़वाला रिसाला مرضیہ فی نصرۃ مذھب الاشعریۃ)

तजदीदे दीन का मा'ना बयान करते हुए ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत मलिकुल उ़–लमा, ह़ज़रते अ़ल्लामा **मुह़म्मद ज़फ़रुद्दीन** बिहारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : "तजदीद के मा'ना येह हैं कि उन में एक सिफ़त या सिफ़तें ऐसी पाई जाएं, जिन से उम्मते मुह़म्मदिया علی صاحبہا افضل الصلوۃ والتسلیم को दीनी फ़ाएदा हो। जैसे ता'लीम व तदरीस, वा'ज़, اَمر بِالْمَعْرُوْف, نَہْیٌ عَنِ الْمُنْکَر लोगों से मकरूहात का दफ़्अ़ अहले ह़क़ की इमदाद।" (ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि.3, स.124)

सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक के ज़मानए ख़िलाफ़त तक तारीख़े इस्लाम पर पूरी एक सदी गुज़र चुकी थी, इस त़वील अ़र्से में इस्लाम का निज़ामें हुकूमत, निज़ामें सियासत, निज़ामें अख़्लाक़ और निज़ामें मआ़–शरत तजदीद चाहता था जिस के लिये एक मुजद्दिद की ज़रूरत थी, चुनान्चे इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हम ने पहली सदी में ग़ौरो फ़िक्र किया तो वोह मुजद्दिद उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) हैं और दूसरी सदी में ग़ौरो फ़िक्र किया तो वोह

इमाम शाफेई (رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه) हैं। (سیرت ابن جوزی ص ۷۴) यूं तो एह्याए सुन्नत व बक़ाए इस्लाम के लिये इन्क़िलाबी जिद्दो जहद करने वाली शख़्सिय्यात हर सदी में अपना फ़ैज़ान आ़म करती है लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَدِیْر को येह इम्तियाज़ ह़ासिल था कि ख़लीफ़ा होने की हैषिय्यत से इस्लाम के कुल निज़ाम या'नी मज़हब, अख़्लाक़, सियासत और तमद्दुन पर पूरा इक़्तिदार ह़ासिल था, इस लिये उन्हों ने हर चीज़ की तजदीद व इस्लाह़ की।

तदवीने अह़ादीष का एहतिमाम

कुरआने मजीद के बा'द शरई अह़्काम का माख़ज़ वोह मुक़द्दस कलिमात हैं जो ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबूव्वत صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने मुबारक से निकले। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمةُ اللّٰہِ العَزِیز का सब से बड़ा ता'लीमी कारनामा अह़ादीषे न-बवी की ह़िफ़ाज़त व इशाअ़त है। अगर आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه ने इस त़रफ़ तवज्जोह न की होती तो शायद कुतुबे ह़दीष का येह ज़ख़ीरा वुजूद में न आता जो आज बुख़ारी शरीफ़, मुस्लिम शरीफ़, मोअत़्ता इमाम मालिक वग़ैरा की सूरत में हमारे सामने मौजूद है। जब आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه ने देखा कि वक़्त गुज़रने के साथ साथ इ़ल्मे ह़दीष जानने वाले उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام भी कम होते जा रहे हैं जिस की वजह से उ़लूमे शरइय्या के मिट जाने का भी अन्देशा है तो उन्हों ने क़ाज़ी अबू बक्र बिन ह़ज़्म को जो उन की त़रफ़ से मदीने के गवर्नर थे लिखा :

اُنْظُرْ مَا كَانَ مِنْ حَدِيْثِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاكْتُبْهُ فَاِنِّي خِفْتُ
دُرُوْسَ الْعِلْمِ وَذَهَابَ الْعُلَمَاءِ وَلَا تَقْبَلْ اِلَّا حَدِيْثَ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

या'नी अहादीषे न-बविय्या की तलाश कर के उन को लिख लो क्यूंकि मुझे इल्म के मिटने और उ़-लमा के फ़ना होने का ख़ौफ़ मा'लूम होता है और सिर्फ़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم *की ह़दीष क़बूल की जाए।"*

(فتح الباری، باب کیف یقبض العلم، ج ۲، ص ۱۷٦)

तमाम गवर्नरों को अहादीष जम्अ़ करने का काम सोंपा

येह हुक्म सिर्फ़ **मदीनए मुनव्वरा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا और इस के गवर्नर के साथ मख़्सूस न था बल्कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ने तमाम सूबों के गवर्नरों के पास इसी क़िस्म का फ़रमान भेजा था। बहर ह़ाल इस हुक्म की ता'मील की गई और जम्अ़ शुदा अहादीष के मु-तअ़ल्लिक़ मज्मूए तय्यार करा के तमाम मा तह़्त ममालिक में तक़्सीम किये गए। ह़ज़रते सा'द बिन इब्राहीम رَحۡمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं :

اَمَرَنَا عُمَرُ بۡنُ عَبۡدِالۡعَزِیۡزِ بِجَمۡعِ السُّنَنِ فَکَتَبۡنَاھَادَفۡتَراً دَفۡتَراً فَبَعَثَ اِلٰی کُلِّ اَرۡضٍ لَّہٗ عَلَیۡھَا سُلۡطَانٌ دَفۡتَراً

हम को उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحۡمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہ *ने जमए ह़दीष का हुक्म दिया है और हम ने बहुत सारी ह़दीषें लीखीं और उन्हों ने एक एक मज्मूआ़ हर जगह जहां जहां उन की हुकूमत थी भेजा।*

(جامع بیان العلم وفضلہ، باب ذکر الرخص فی کتاب العلم، ص ۱۰۷)

इत्तिबाए सुन्नत की ताकीद

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ने फ़रमाया : "नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के खु-लफ़ाए राशिदीन की बहुत सी सुन्नतें हैं, इन पर अ़मल करना गोया

किताबुल्लाह को मज़बूती से पकड़ना है, इन में तब्दीली करने का किसी को कोई ह़क़ नहीं, जो शख़्स इन सुन्नतों से हिदायत ह़ासिल करे वोह हिदायत पर होगा जो इन से मदद ले उस की मदद होगी और जो इन को छोड़ दे और अहले ईमान के रास्ते से हट कर कोई और रास्ता अपनाए तो वोह जिधर जाता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उसी त़रफ़ फेर देगा और उसे जहन्नम में डालेगा।" इमाम मालिक رَحْمَةُاللهِ تعالٰی علیہ फ़रमाया करते थे : एह़याए सुन्नत के बारे में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِیز का अ़ज़्म मुझे बेह़द पसन्द है। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۳۵)

सुन्नत की अहम्मिय्यत

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर अ़मल करना दुन्या व आख़िरत की ढेरों भलाइयों के ह़ुसूल का ज़रीआ़ है। ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

مَنْ اَحَبَّ سُنَّتِی فَقَدْ اَحَبَّنِی وَمَنْ اَحَبَّنِی کَانَ مَعِی فِی الْجَنَّةِ

"या'नी जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।"

(جامع الترمذی، کتاب العلم، الحدیث: ۲۶۸۷، ج ۴، ص ۳۰۹)

सो शहीदों का सवाब

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

مَنْ تَمَسَّكَ بِسُنَّتِيْ عِنْدَ فَسَادِ اُمَّتِيْ فَلَهٗ اَجْرُ مِأَةِ شَهِيْدٍ

"या'नी फ़सादे उम्मत के वक़्त जो शख़्स मेरी सुन्नत पर अ़मल करेगा उसे सो शहीदों का षवाब अ़ता होगा।" (كتاب الزهد الكبير للبيهقي، الحديث ٢٠٧، ج١، ص١١٨)

देता हूं तुझे वासित़ा मैं प्यारे नबी का — उम्मत को ख़ुदाया रहे सुन्नत पे चला दे
अ़त्तार से महबूब की सुन्नत की ले ख़िदमत — डंका येह तेरे दीन का दुन्या में बजा दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 100)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ऐसे नाज़ुक ह़ालात में कि जब दुन्या भर में गुनाहों की यलग़ार, ज़राएअ़ इबलाग़ में फ़ह़्ह़ाशी की भरमार और फ़ैशन परस्ती की फिटकार मुसलमानों की अकषरिय्यत को बे अ़मल बना चुकी है, नीज़ इल्मे दीन से बे रग़बती और हर ख़ासो आ़म का रुजह़ान सिर्फ़ और सिर्फ़ दुन्यावी ता'लीम की त़रफ़ होने की वजह से और दीनी मसाइल से अ़दमे वाक़िफ़िय्यत की बिना पर जहालत के बादल मंडला रहे हैं, हमे अपनी ज़िन्दगी सुन्नतों के सांचे में ढ़ालने की कोशिश करनी चाहिये और इस के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी से वाबस्ता होना बेह़द मुफ़ीद है। आप की तरग़ीब के लिये एक म-दनी बहार पेश की जाती है, चुनान्चे

शराबी की तौबा

बाबुल मदीना (कराची) के अ़लाक़े ख़ारादर के मुक़ीम इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है : हमारे अ़लाक़े में एक इन्तिहाई **बद किरदार शख़्स** रिहाइश पज़ीर था। वोह अपनी ह़-र-कतों की वजह से

बहुत बदनाम था, लोग उसे बहुत **समझाते** मगर उस के कानों पर जूं तक न रेंकती। दीगर बुराइयों के साथ साथ दिन रात **शराब** के नशे में बदमस्त रहा करता। उस के शबो रोज़ बह़्रे गुनाह में ग़ोत़ाज़नी करते गुज़र रहे थे कि एक दिन किसी इस्लामी भाई ने उसे **दा'वते इस्लामी** के हफ़्ता वार **सुन्नतों भरे इजतिमाअ़** में शिर्कत की दा'वत दी। उस की खुश नसीबी कि वोह इजतिमाअ़ में शरीक हो गया। जूं ही इजतिमाअ़ में शैखे त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **का सुन्नतों भरा बयान** शुरूअ़ हुवा वोह सरापा इश्तियाक़ बन गया। जब रिक़्क़त अंगेज़ बयान की ताषीर कानों के रास्ते उस के दिल में उतरी तो वहां से **नदामत** के **चश्मे** फूट निकले जो आंखों के रास्ते आंसूओं की सूरत में बहने लगे। **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ के सबब उस पर इतनी रिक़्क़त त़ारी हुई कि बयान के ख़त्म हो जाने के बा'द भी वोह बहुत देर तक सर झुकाए ज़ारो क़ित़ार **रोता** रहा। फिर उस ने शैखे़ त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के हाथ बैअ़त हो कर हुज़ूर गौषे आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की गुलामी का पट्टा अपने गले में डाल लिया। उस ने अपने साबिक़ा **गुनाहों से तौबा** कर के शराब को हमेशा के लिये तर्क करने का इरादा कर लिया। अचानक शराब छोड़ने की वजह से उस की **तबीअ़त** शदीद ख़राब हो गई, किसी ने मश्वरा भी दिया कि शराब यक दम नहीं छोड़ी जा सकती लिहाज़ा फ़िलह़ाल थोड़ी बहुत पी लिया करो, थोड़ा सुकून मिल जाएगा फिर कम करते करते छोड़ देना, लेकिन उस ने शराब पीने से **साफ़ इन्कार** कर दिया और तक्लीफ़ें उठा कर शराब से **छुटकारा** पा ही लिया। पांचों **नमाज़ें** मस्जिद में जमाअ़त के साथ पढ़ने

को अपना मा'मूल बना लिया और चेहरे पर सुन्नत के मुताबिक़ **दाढ़ी शरीफ़** भी सजा ली। **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे म-दनी माहोल ने उस इस्लामी भाई की ज़िन्दगी बदल कर रख दी। दिन भर सुन्नत के मुताबिक़ **सफ़ेद लिबास** में मलबूस नज़र आते, हफ़्ते में एक दिन अ़लाक़ाई दौरा बराए **नेकी की दा'वत** में शरीक होते। दा'वते इस्लामी का **म-दनी काम** करने की ब-रकत से उन्हें ऐसी मिलन सारी नसीब हुई कि जो कोई उन से मिलता, उन का **गिरवीदा** हो जाता।

एक दिन अचानक उन की त़बीअ़त ख़राब हो गई उन्हें हस्पताल में दाख़िल करवा दिया गया, कषरते क़ै व इस्हाल (दस्त) की वजह से निढ़ाल हो गए। उन की हालत देख कर येही मह़सूस होता था कि शायद अब **सिह़्ह़त याब** न हो सकें। शाम के वक़्त अचानक बुलन्द आवाज़ से **कलिमए त़य्यिबा** لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ पढ़ा और उन की रूह़ क़-फ़से उ़नसूरी से **परवाज़** कर गई। जब इन्तिक़ाल की ख़बर अ़लाक़े में पहुंची तो उन से मह़ब्बत रखने वाला हर इस्लामी भाई उदास और **मग़मूम** दिखाई देने लगा। उस मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी के जनाज़े में कषीर इस्लामी भाई शरीक हुए। उन की नमाज़े जनाज़ा उन के पीरो मुर्शिद, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने पढ़ाई। इस्लामी भाई **मुरीद** के **जनाज़े पर मुर्शिद की आमद** पर फ़र्ते रश्क से अश्कबार हो गए।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इ़ल्मे दीन की इशाअ़त

अह़ादीष की तदवीन व तरतीब के बा'द दूसरा काम येह था कि उन की तरवीज व इशाअ़त का एहतिमाम किया जाए, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ने अपने दौर में इ़ल्म की इशाअ़त पर ख़ुसूसी तवज्जोह दी । आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہ ने एक पैग़ाम में क़ाज़ी अबू बक्र बिन ह़ज़्म को इस त़रफ़ भी तवज्जोह दिलाई और लिखा :

وَلْتُفْشُوا الْعِلْمَ وَلْتَجْلِسُوا حَتّٰى يُعَلَّمَ مَنْ لَا يَعْلَمُ فَإِنَّ الْعِلْمَ لَا يَهْلِكُ حَتّٰى يَكُونَ سِرًّا

या'नी लोगों को चाहिये कि इ़ल्म की इशाअ़त करें और ता'लीम के लिये ह़ल्क़ए दर्स में बैठें ताकि जो लोग नहीं जानते वोह जान लें क्यूंकि इ़ल्म उस वक़्त तक नहीं बरबाद होता जब तक कि वोह मख़्फ़ी न रखा जाए ।

(فتح الباری، باب کیف یقبض العلم، ج۲،ص۱۷۶)

ख़लीफ़ा का पैग़ाम उ़-लमा के नाम

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ने जा'फ़र बिन बुरक़ान को ख़त़ के ज़रीए़ हुक्म फ़रमाया : अपने अ़लाक़े के फु-क़हा व उ़-लमा की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ करो कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप को जो इ़ल्म अ़त़ा किया उसे अपने इजतिमाआ़त और मसाजिद में फैलाएं । (جامع بیان العلم وفضلہ لابن عبدالبر،ج۱،ص۱۲۸،رقم۵۵۶)

इ़ल्म के बिग़ैर अ़मल ख़त़रनाक है

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز फ़रमाते हैं :

مَنْ عَمِلَ عَلٰى غَيْرِ عِلْمٍ كَانَ مَايُفْسِدُ اَكْثَرَمِمَّايُصْلِحُ

"या'नी जो कोई इ़ल्म के बिग़ैर अ़मल करता है, वोह संवारता कम, बिगाड़ता ज़ियादा है।" (مُصَنَّف ابن اَبِی شَیبہ ج ۸ ص ۲۴۲ رقم ۱۹)

इ़ल्म सीखने के लिये सुवाल करने से न शरमाओ

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز फ़रमाया करते थे : "बहुत कुछ इ़ल्म मुझे ह़ासिल है, लेकिन जिन बातों के बारे में सुवाल करने से मैं शरमाया था उन से आज भी ला इ़ल्म हूं।" (بیان العلم وفضلہ لابن عبد البر ج ۱ ص ۱۲۱ رقم ۳۱۴) या'नी पूछने से इ़ल्म बढ़ता है लिहाज़ा इ़ल्म के बारे में सुवाल करने से शरमाना नहीं चाहिये।

मुह़द्दिषीन की ख़िदमत

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ने तदरीस व इशाअ़ते इ़ल्म में मशगूल उ़-लमाए किराम के लिये बैतुल माल से भारी वज़ीफ़े मुक़र्रर कर के उन को फ़िक्रे मआ़श से आज़ाद कर दिया। हज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन मुख़ैमरा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ एक मुह़द्दिष थे, जो निहायत तंग दस्ती की ज़िन्दगी बसर करते थे, जब वोह हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز के पास आए तो उन की जानिब से 90 दीनार क़र्ज़ अदा किया, रहने का मकान और एक ख़ादिम दिया और 60 दीनार वज़ीफ़ा मुक़र्रर कर दिया ताकि वोह यक्सूई के साथ ख़िदमते दीन कर सकें। (طبقات ابن سعد، ج ۵، ص ۲۶۹ ملخصًا)

30 दिरहम पेश किये

एक बार हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز की ख़िदमत में

ह़ाज़िर हुए, तो उन को तीस दिरहम पेश किये और कहा कि येह रक़म मैं ने अपनी जैब से दी है। (طبقات ابن سعد، ج۵، ص ۳۱۲)

हर एक को सो दीनार पेश कीजिये

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने ह़िम्स के गवर्नर को ख़त़ लिखा कि "आप अ़वाम में उन लोगों को तलाश कीजिये जिन्हों ने खु़द को फ़िक़्ह की ता'लीम ह़ासिल करने के लिये वक़्फ़ कर रखा है और त़-लबे दुन्या से मुंह मोड़ कर मस्जिदों की ज़ीनत बने हुए हैं, जैसे ही मेरा येह ख़त़ मिले तो उन में से हर एक को बैतुल माल से सो सो दीनार दे दीजिये ताकि फ़िक़्ह की ता'लीम ह़ासिल करने में उन्हें कोई मुश्किल न हो।"

(تاریخ دمشق ج ۴۶ ص ۳۲۰)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

इल्मी मराकिज़ क़ाइम किये

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने बहुत से ममालिक के लोगों की ता'लीम के लिये खु़द मु-तअ़द्दिद उ़-लमाए किराम को रवाना किया, चुनान्चे

❁ ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَيه जो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تعالٰی عَنْهُما के गुलाम और मदीने के फ़क़ीह थे, उन को मिस्र भेजा कि वहां के लोगों को ह़दीष की ता'लीम दें, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَيه ने वहां मुद्दतों क़ियाम किया (حسن المحاضرة، ج۱، ص ۲۵۸)

❁ ह़ज़रते सय्यिदुना जुअ़षुल बिन हाआ़न رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَيه जो कुर्रा में से थे, उन को मिस्र से मग़रिब (या'नी यूरोप) भेजा कि वहां जा कर लोगों को क़िराअत की ता'लीम दें। (حسن المحاضرة، ج۱، ص ۲۵۸)

❁ बदूओं की ता'लीम व तरबिय्यत के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अबी मालिक दिमिश्क़ी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिष बिन मजीद अश्अ़री رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को मु-तअ़य्यिन किया, और उन के वज़ीफ़े मुक़र्रर किये। (سیرت ابن جوزی ص ۹۲) ❁ ता'लीम के इ़लावा लोगों की इस्लाह़ के लिये तमाम ममालिके मह़रूसा में वा'ज़ और मुफ़्ती मुक़र्रर किये चुनान्चे ह़ज़रते ह़लाज अबू कषीर उ़-मवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को जो उन के बाप के मौला (या'नी आज़ाद कर्दा गुलाम) थे , इस्कन्दरिया का वाइज़ मुक़र्रर किया। (حسن المحاضرۃ ج۱ ص ۲۲۲) ❁ ह़जाज़ में जो वाइज़ इस ख़िदमत पर मामूर थे उन को हिदायत थी कि तीसरे दिन लोगों को वा'ज़ व नसीह़त किया करे। (سیرت ابن جوزی ص ۹۰) ❁ इफ़्ता की ख़िदमत पर मु-तअ़द्दद लोग मा'मूर थे जो यक्ताए रोज़गार थे, म-षलन मिस्र में येह ज़िम्मादारी ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अबी ह़बीब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की थी, और येह वोह बुज़ुर्ग हैं जिन्हों ने सब से पहले अहले मिस्र को फ़ीक़्ह व ह़दीष से आश्ना किया चुनान्चे अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی ह़-सनुल मह़ाज़िरा में लिखते हैं :

هُـوَاَوَّلُ مَنْ اَظْهَرَ الْعِلْمَ بِمِصْرٍوَالْمَسَائِلَ فِی الْحَلَالِ وَالْحَرَامِ وَقَبْلَ ذٰلِكَ كَانُوْا يَتَحَدَّثُوْنَ فِـی الـتَّـرْغِـيْـبِ وَالْـمَلَاحِـمِ وَالْـفِتَنِ وَهُوَ اَحَدُ ثَلَاثَةٍ جَعَلَ اِلَيْهِمْ عُمَرَ بْنُ عَبْدِالْعَزِيْزِ اَلْفُتيَا

या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अबी ह़बीब (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) वोह पहले शख़्स हैं जिन्हो ने मिस्र में इ़ल्म को शाएअ़ किया और ह़लाल व ह़राम के मसाइल आ़म किये, इस से पहले वहां के लोग सिर्फ़ तरग़ीब और जंग वग़ैरा के मु-तअ़ल्लिक़ बयानात करते थे और येह उन तीन अश्ख़ास में से हैं जिन को ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ الْعَزِیز ने इफ़्ता की ख़िदमत के लिये भेजा था। (حسن المحاضرۃ، ج۱، ص۲۵۹)

उ़-लमा का अ-षरो रुसूख़

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز के दौरे हुकूमत की एक ख़ुसूसिय्यत येह भी है कि उन के ज़माने में उ़-लमा का रुसूख़ व इक्तिदार बहुत ज़ियादा तरक़्क़ी कर गया, वोह हमेशा उ़-लमा से मश्वरा लेते थे, उ़-लमा से सोह़बत रखते थे और उ़-लमा को मुक़र्रबे बारगाह बनाते थे, मु-तअ़द्दद उ़-लमा उन के ख़्वास में थे, चुनान्चे अ़दी बिन अरत़ात को जो हमेशा शरई उमूर में उन से मश्वरा लिया करते थे, लिखा : "गर्मी और सर्दी में तुम हमेशा एक मुसलमान को तक्लीफ़ देते हो कि मुझ से सुन्नत के मु-तअ़ल्लिक़ इस्तिफ़्सार करे, तुम इस त़रीक़े से मेरी ता'ज़ीम करते हो, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ह़ज़रते हसन ब-सरी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه तुम्हारे लिये काफ़ी हैं, जब येह ख़त़ पहुंचे तो मेरे लिये, अपने लिये और आ़म मुसलमानों के लिये उन्ही से इस्तिफ़्सार किया करो, ख़ुदावन्दे तआ़ला ह़ज़रते ह़सन बसरी (رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه) पर रह़म करे कि वोह इस्लाम में एक बड़े द-रजे के शख़्स हैं, लेकिन उन को मेरा येह ख़त़ न दिखाना। (سیرتِ ابن جوزی ص١٢١)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

फ़न्ने मग़ाज़ी और मनाक़िबे सह़ाबा की ता'लीम व इशाअ़त

बयाने मग़ाज़ी (या'नी ग़ज़्वात के बयान) और मनाक़िबे सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की त़रफ़ अब तक इ़ल्मी हैषिय्यत से किसी ने तवज्जोह नहीं दी थी, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز

ने ख़ास तौर पर उन की तरफ़ तवज्जोह की और ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन उ़मर बिन क़तादा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को जो मग़ाज़ी और सीरत में कमाल रखते थे, उन को दरख़्वास्त की, कि मस्जिदे दिमिश्क़ में बेठ कर मग़ाज़ी और मनाक़िब का दर्स दें। (تاریخ دمشق، ج۲۵ص۲۷۷)

यूनानी तसनीफ़ात की इशाअ़त

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِیز का मक़्सूदे अस्ली अगर्चे किताब व सुन्नत की इशाअ़त करना था और उन्हों ने हर मुमकिन तदबीर से इस की इशाअत भी की, ता हम ग़ैर क़ौमों के मुफ़ीद उ़लूम व फ़ुनून से भी उन्हों ने मुसलमानों को बिलकुल बैगाना नहीं रखा। तिब में एक यूनानी ह़कीम "अहरन लोंक़्स" की एक मश्हूर किताब थी जिस का तर्जमा "मासिर जेस" ने मरवान बिन ह़कम के ज़माने में अ़-रबी ज़बान में किया था। येह किताब शामी कुतुब ख़ाने में मह़फ़ूज़ थी, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِیز ने इस को देखा तो चालीस रोज़ तक इस्तिख़ारा किया फिर इस को मुल्क में शाएअ़ किया। (عیون الانباء فی طبقات الاطباء، جز۱ص۱۴۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰهُ تعالٰی علٰی محمّد

नमाज़ की ताकीद

अ़क़ाइद के बा'द आ'माल का द-रजा है, जिन में सब से मुक़द्दम नमाज़ है, पहले के हुक्कामे बाला ने नमाज़ के साथ जो ग़फ़लत बरती उस का नतीजा येह हुवा कि अवक़ाते नमाज़ की पाबन्दी

जो सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان के ज़माने में निहायत ज़रूरी चीज़ ख़याल की जाती थी बिलकुल जाती रही लेकिन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ الۡعَزِيز ने तमाम उ़म्माल के नाम एक फ़रमान भेजा :

اِجۡتَنِبُوا الۡاَشۡغَالَ عِنۡدَ حُضُوۡرِ الصَّلٰوةِ فَمَنۡ اَضَاعَهَا فَهُوَ لِمَا سِوَاهَا مِنۡ شَرَائِعِ الۡاِسۡلَامِ اَشَدُّ تَضۡيِيۡعاً

नमाज़ के वक़्त तमाम काम छोड़ दो क्यूंकि जिस शख़्स ने नमाज़ को ज़ाएअ़ कर दिया वोह इस के इ़लावा दीगर फ़राइज़े इस्लाम का भी बहुत ज़ियादा ज़ाएअ़ करने वाला होगा। (حلیۃ الاولیاء ج ۵ ص ۳۴۹)

कुरआन में 90 से ज़ियादा बार नमाज़ का तज़किरा है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नमाज़ इस्लाम की तमाम इ़बादात की जामेअ़ है क्यूंकि नमाज़ में तौह़ीद व रिसालत की गवाही है, क़िब्ले की त़रफ़ मुंह करना है, दौराने नमाज़ खाने पीने को तर्क करना और नफ़्सानी ख़्वाहिशों से बा'ज़ रहना है और इन उमूर में ह़ज और रोज़े की त़रफ़ इशारा है, कुरआने करीम की तिलावत है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द व तस्बीह़ और उस की ता'ज़ीम है। **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर सलातो सलाम और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व तकरीम है, आख़िर में सलाम के ज़रीए मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही है, अपने और दूसरे मुसलमानों के लिये दुआ़ है, इख़्लास है, **ख़ौफ़े ख़ुदा** है, तमाम बुरे कामों से बचना है, शैत़ान से, नफ़्स की ख़्वाहिशों से और अपने बदन से जिहाद है, ए'तिकाफ़ है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों का बयान है, अपने गुनाहों का ए'तिराफ़ और तौबा व इस्तिग़फ़ार है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

की बारगाह में ह़ाज़िर होना है, मुराक़बा है, मुजाहिदा है, मुशाहिदा है और मोमिन की मे'राज है । **क़ुरआने करीम में नव्वे (90) से ज़ियादा मरतबा नमाज़ का ज़िक्र किया गया है,** इस्लाम में सब से पहली इ़बादत नमाज़ है, येह सिर्फ़ नमाज़ की ख़ुसूसिय्यत है कि वोह अमीर व ग़रीब, बूढ़े और जवान, मर्द और औ़रत, सिह़ह़त मन्द और बीमार हर एक पर यक्सां **फ़र्ज़** है, येही वोह इ़बादत है जो किसी ह़ाल में साक़ित़ नहीं होती, अगर खड़े हो कर **नमाज़** नहीं पढ़ सकते तो बैठ कर, अगर बैठ कर भी नहीं पढ़ सकते तो लेट कर पढ़ना होगी, ह़ालते जंग या सफ़र में अगर सुवारी से उतर नहीं सकते तो सुवारी पर पढ़ने का हुक्म है ।

नमाज़ सैंकड़ो बीमारियों का इलाज है

नमाज़ इन्सान की हर ह़ालत दुरुस्त करती है, बुरे कामों से बचाती है, येह तो आज़माई हुई बात है कि बड़े बड़े फ़ासिक़ व बद कार लोगों ने जब सिद्क़ दिल से नमाज़ पढ़नी शुरूअ़ कर दी तो रब عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल से सारे गुनाहों से बच गए । नमाज़ सद हा बीमारियों का इ़लाज है इस वक़्त के अत़िब्बा भी कहते हैं कि वुज़ू करने वाला आदमी दिमाग़ी बीमारियों में बहुत कम मुब्तला होता है । नमाज़ी आदमी अकषर तिल्ली की बीमारियों और जुनून (या'नी पागल पन) वग़ैरा से मह़फ़ूज़ रहता है नीज पंज वक़्ता नमाज़ी के आ'ज़ा धूलते रहते हैं, कपड़े पाक रहते हैं, घर भी उस का पाक रहता है, इस लिये वोह गन्दगी से बचा रहता है और गन्दगी बहुत सी बीमारियों की जड़ है । नमाज़ हर मुसीबत का इलाज है इसी लिये इस्लाम ने हर मुसीबत के वक़्त नमाज़ पढ़ने का

हुक्म दिया, बारिश न हो तो नमाज़े इस्तिस्क़ा पढ़ो, सूरज या चांद को ग-रहन लगे तो नमाज़े कुसूफ़ (या'नी नमाज़े ख़ुसूफ़) पढ़ो, कोई ह़ाजत दरपेश हो तो नमाज़े ह़ाजत पढ़ो, ग़रज़े कि नमाज़ हर मुसीबत में काम आने वाली चीज़ है। (تفسیرِ نعیمی ج۱ص۱۲۷)

अ़मल का हो जज़्बा अ़त़ा या इलाही गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही
मैं पांचो नमाज़ें पढ़ूं बा जमाअ़त हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़त़ा या इलाही
पढ़ूं सुन्नते क़ब्लिय्या वक़्त ही पर
हों सारे नवाफ़िल अदा या इलाही

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

नमाज़े जुमुआ़ पढ़ कर जाना

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ने **इन्फ़िरादी** तौर पर लोगों को नमाज़ की पाबन्दी की त़रफ़ तवज्जोह दिलाई, चुनान्चे एक शख़्स को कोई ज़िम्मादारी दे कर मिस्र रवाना करना चाहा, उस ने जाने में देर की तो आदमी भेज कर बुलवाया वोह आया तो इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए फ़रमाया : घबराओ नहीं, आज जुमुआ़ का दिन है, जुमुआ़ पढ़े बिग़ैर यहां से न जाना, हम ने तुम्हें एक फ़ौरी काम के लिये भेजा था, लेकिन येह उ़जलत तुम को इस पर न आमादा करे कि नमाज़ को वक़्त गुज़ार कर पढ़ो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस क़ौम के बारे में जिस ने नमाज़ को बरबाद कर दिया और शहवत परस्ती की, फ़रमाया,

فَسَوْفَ یَلْقَوْنَ غَیًّا ﴿۵۹﴾
(پ۱۶،مریم:۵۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अ़न क़रीब वोह दोज़ख़ में ग़य्य का जंगल पाएंगे।

उन लोगों ने नमाज़ को बिलकुल तर्क नहीं कर दिया था बल्कि उस के वक़्त की पाबन्दी छोड़ दी थी। (سیرت ابن جوزی ص۱۰۶)

मोअज़्ज़िनीन के वज़ाइफ़ मुक़र्रर किये

इन हिदायात के इ़लावा मुल्क में हर जगह **अ़-मली त़ौर** पर नमाज़ का एहतिमाम किया और मुअज़्ज़िनीन की तनख़्वाहें मुक़र्रर कीं, त़ारीख़े दिमिश्क़ में कषीर बिन ज़ैद से रिवायत है :

قَدِمْتُ خَنَاصِرَةَ فِیْ خِلَافَةِ عُمَرَ بْنِ عَبْدِالْعَزِیْزِ فَرَأَیْتُہٗ یَرْزُقُ الْمُؤَذِّنِیْنَ مِنْ بَیْتِ الْمَال

मैं हज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز के दौरे ख़िलाफ़त में ख़नासिरा आया तो देखा कि वोह मोअज़्ज़िनीन को बैतुल माल से वज़ीफ़ा देते हैं।

(تاریخ دمشق ج۵۰ ص۲۱)

ज़कात व स-दक़ा

अगर्चे हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز की ख़िलाफ़त की येह ब-रकत थी कि जब लोगों को उन के ख़लीफ़ा होने की ख़बर हुई तो निहायत सुरअ़त व दियानत से स-दक़ए फ़ित्र अदा करना शुरूअ़ किया यहां तक कि उन के एक आ़मिल ने लिखा कि अब बहुत सा स-दक़ए फ़ित्र जम्अ़ हो गया है अपनी राय से इत्तिलाअ़ दीजिये कि इस को क्या किया जाए। (سیرت ابن جوزی، ص۱۰۵) ता हम आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ख़ुद भी निहायत शिद्दत के साथ लोगों को इस की तरग़ीब देते रहते थे, एक बार ख़नासिरा में ईद से एक दिन पहले जुमुआ़ के रोज़ ख़ुत़्बा दिया जिस में लोगों को नमाज़े ईद से पहले ही स-दक़ए फ़ित्र देने की तरग़ीब दी तो लोग स-दक़ए फ़ित्र के त़ौर पर सत्तू लाते और हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز क़बूल करते जाते थे। (طبقات ابن سعد، ج۵ ص۲۸۱)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

लह्वो लअ़ब और नौह़ा की मुमा-नअ़त

शरीअ़त ने जिन चीज़ों की मुमा-नअ़त की है, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने उन की सख़्ती से रोक थाम की। एक बार उन को मा'लूम हुवा कि बहुत से मुसलमान लह्वो लअ़ब में मसरूफ़ हो गए हैं और औ़रतें जनाज़े के साथ बाल खोले हुए नौह़ा करती हुई निकलती हैं तो उ़म्माल के नाम एक फ़रमान भेजा, जिस का खुलासा येह है : "मुझे मा'लूम हुवा है कि सु-फ़हा (या'नी बे वुक़ूफ़ों) की औ़रतें मुर्दे की वफ़ात के वक़्त बाल खोले हुए अहले जाहिलिय्यत की त़रह़ नौह़ा करती हुई निकलती हैं, ह़ालां कि जब से औ़रतों को आंचल डालने का हुक्म दिया गया उन को दूपट्टा उतारने की इजाज़त नहीं दी गई, पस इस नौह़ा व मातम की रोक थाम करो और मुसलमानों को लह्वो लअ़ब और रागबाजे वग़ैरा से रोको, फिर भी जो बाज़ न आए उस को ए'तिदाल के साथ सज़ा दो।" (سیرت ابن عبدالحکم ص۸۹)

इनसिदादे शराब नोशी

शराब को हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उम्मुल ख़बाइष या'नी तमाम गुनाहों की जड़ फ़रमाया है और **अल्लाह** तआ़ला ने क़ुरआने मजीद में इस को ह़राम फ़रमाया और ह़दीषों में भी कषरत से इस की हुरमत और मुख़ालिफ़त का ज़िक्र आया है। क़ुरआने मजीद में है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۹۰﴾ اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿۹۱﴾

(پ۷، المائدۃ: ۹۰، ۹۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो शराब और जूआ और बुत और पांसे नापाक ही हैं शैत़ानी काम तो इन से बचते रहना कि तुम फ़लाह़ पाओ शैत़ान येही चाहता है कि तुम में बैर और दुश्मनी डलवावे शराब और जूए में और तुम्हें ***अल्लाह*** *की याद और नमाज़ से रोके तो क्या तुम बाज़ आए ।*

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने शराब के बारे में दस आदमियों पर ला'नत फ़रमाई {1} शराब निचोड़ने वाले पर {2} शराब निचोड़वाने वाले पर {3} शराब पीने वाले पर {4} शराब उठाने वाले पर {5} उस पर जिस की त़रफ़ शराब उठा कर ले जाई गई । {6} शराब पिलाने वाले पर {7} शराब की क़ीमत खाने वाले पर {8} शराब बेचने वाले पर {9} शराब ख़रीदने वाले पर {10} उस पर जिस के लिये शराब ख़रीदी गई हो ।

(سنن الترمذی، کتاب البیوع، باب النھی ان یتخذ الخمر خلا، الحدیث ۱۲۹۹، ج۳، ص۴۷۔
سنن ابن ماجہ، کتاب الاشربۃ، باب لعنت الخمر علی عشرۃ اوجہ، الحدیث ۳۳۸۱، ج۴، ص۲۵)

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने शराब नोशी के इनसिदाद के लिये मुख़्तलिफ़ तदबीरें इख़्तियार कीं म–षलन शराबियों को सज़ाएं दीं, ज़िम्मियों को शहरों में शराब लाने से रोक दिया। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۸۶)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمّد

औ़रतों को ह़म्माम में जाने से रोक दिया

मज़हब और अख़्लाक़ के मु–तअ़ल्लिक़ और भी बहुत से अह़काम थे जिन की ख़िलाफ़ वर्ज़ी ग़लत़ नताइज पैदा कर सकती थी, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने इन तमाम जुज़इय्यात की त़रफ़ तवज्जोह की और इन से मुसलमानों को रोका म–षलन : अजमियों की आमेज़िश व इख़्तिलात़ से ममालिके इस्लामिया में ह़म्मामों का रवाज हो गया था और इस में मर्द व औ़रत बे बाकाना जाते और ग़ुस्ल करते थे लेकिन इस में सित्रे औ़रत का इन्तिज़ाम नहीं किया जाता था। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने औ़रतों को ह़म्माम में जाने से बिलकुल रोक दिया और मर्दों की निस्बत आ़म हुक्म दिया कि बिग़ैर तहबन्द के ह़म्माम में ग़ुस्ल न करें, चुनान्चे इस हुक्म पर इस शिद्दत के साथ अ़मल हुवा कि एक शख़्स का बयान है कि मैं ने ह़म्माम के मालिक और ह़म्माम में जाने वाली दोनों को देखा कि उन को सज़ा दी जा रही है। इसी त़रह़ ह़म्मामों की दीवारों पर तस्वीरें बनाई जाती थीं जो उसूले शरीअ़त के ख़िलाफ़ थीं, एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने एक ह़म्माम में इस क़िस्म की तस्वीर देखी तो मिटाने का हुक्म दिया और फ़रमाया :

لَوۡعَلِمۡتُ مَنۡ عَمِلَ ھٰذا لَاَوۡجَعۡتُه‘ ضَرۡبًا या'नी अगर मुझे पता होता कि येह किस ने बनाई है तो मैं उस को सज़ा देता। (سیرت ابن جوزی ص ۹۸)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी बे हि़साब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تَعالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعالٰی عَلٰی محمَّد

अमीरुल मोअमिनीन और दा'वते इस्लाम

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ الۡعَزِیۡز ने अपनी ज़िन्दगी का एक अहम मक़्सद दा'वते इस्लाम को क़रार दिया और इस पर हर क़िस्म की माद्दी और अख़्लाक़ी त़ाक़त सर्फ़ की जो अफ़्सर कुफ़्फ़ार के साथ मा'रका आरा थे उन को हिदायत की :

لَا تَقۡتُلَنَّ حِصنًامِّنۡ حُصُوۡنِ الرُّوۡمِ وَلَا جَمَاعَۃً مِّنۡ جَمَاعَاتِھِمۡ حَتّٰی تَدۡعُوۡھُمۡ اِلَی الۡاِسۡلَامِ

रूमियों के किसी क़लए़ और किसी जमाअ़त से उस वक़्त तक जंग न करो जब तक उन को इस्लाम की दा'वत न दे लो। (طبقات ابن سعد ج ۵ ص ۲۷۴)

लोगों को तालीफ़े क़ल्बी के लिये बड़ी बड़ी रक़में दे कर इस्लाम की त़रफ़ माइल किया, चुनान्चे एक बार किसी शख़्स को इस ग़र्ज़ से हज़ार अशरफ़ियां दीं। (طبقات ابن سعد، ج ۵، ص ۲۷۰)

दीगर बादशाहों को दा'वते इस्लाम

शाहाने मा-वरा अन्नहर को इस्लाम की दा'वत दी और उन में बा'ज़ ने इस्लाम क़बूल किया, चुनान्चे फ़ुतूहुल बलदान में है :

کَتَبَ اِلٰی مُلُوۡكِ مَاوَرَاءَ النَّھۡرِ یَدۡعُوۡھُمۡ اِلَی الۡاِسۡلَامِ فَاَسۡلَمَ بَعۡضُھُمۡ

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने मा-वरा अन्नहर के बादशाहों को दा'वते इस्लाम दी और उन में बा'ज़ इस्लाम लाए। (فتوح البلدان، ج ٣ ص ٥٣٤)

सिन्धी हुक्मरान को इस्लाम की दा'वत पेश की

सिन्ध के हुक्मरानों के नाम भी दा'वत नामा रवाना किया, चूंकि वोह लोग उन के हुस्ने अख़्लाक़ की शोहरत पहले से सुन चुके थे इस लिये बहुत से बादशाहों ने इस्लाम क़बूल कर लिया, अ़ल्लामा इब्ने अषीर लिखते हैं : उन्हों ने बादशाहों को इस्लाम की इस शर्त़ पर दा'वत दी कि उन की बादशाही में कोई ख़लल न आएगा और जो हुक़ूक़ मुसलमानों के हैं उन को मिलेंगे और जो ज़िम्मादारियां मुसलमानों पर आ़इद होती हैं वोह उन पर आ़इद होंगी। चूंकि तमाम बादशाहों को उन के किरदार का ह़ाल मा'लूम हो चुका था, इस लिये जैश्बा और दूसरे बादशाह इस्लाम लाए और अपना नाम अ़-रबी रखा। (الکامل فی التاریخ، ج ٤، ص ٣٢٣)

चार हज़ार ज़िम्मियों ने इस्लाम क़बूल कर लिया

जराह़ बिन अ़ब्दुल्लाह ह़-कमी को जो ख़ुरासान के आ़मिल थे, लिखा कि ज़िम्मियों को इस्लाम की दा'वत दें और वोह इस्लाम लाएं तो उन का जिज़्या मुआ़फ़ कर दें। उन्हों ने इस हुक्म की ता'मील की और उन के हाथ पर चार हज़ार ज़िम्मी इस्लाम लाए, जराह़ के हुस्ने अख़्लाक़ की शोहरत फैली, तो उन के पास तिब्बत से वफ़्द आए कि उन के यहां मुबल्लिग़ीन रवाना करें, चुनान्चे इस ग़रज़ से उन्हों ने सलीत़ इब्ने अ़ब्दुल्लाह अल मुन्क़ी को रवाना किया।

मग़रिब वालों को दा'वते इस्लाम

इस्माइल बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबिल मुहाजिर जो मग़रिब के आ़मिल थे, अगर्चे वोह खुद भी इस ख़िदमत में मसरूफ़ थे और मुसलसल ग़ैर मुस्लिमों को इस्लाम की दा'वत देते थे, लेकिन जब हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز का दा'वत नामा पहुंचा और इस्माइल ने पढ़ कर सुनाया तो उस का इस क़दर अषर हुवा कि इस्लाम तमाम मग़रिब के उफ़ुक़ पर छा गया, अ़ल्लामा बिलाज़री लिखते हैं : फिर जब हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز का दौर आया तो उन्हों ने इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी अल मुहाजिर को मग़रिब का गवर्नर मुक़र्रर किया, उन्हों ने निहायत उ़म्दा रविश इख़्तियार की और बरबर को इस्लाम की दा'वत दी, इस के बा'द खुद हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ने उन के नाम दा'वत नामा रवाना किया, इस्माइल ने येह दा'वत नामा उन को पढ़ कर सुनाया तो इस्लाम मग़रिब पर ग़ालिब हो गया। (فتوح البلدان،ج۱،ص۲۷۳) उन के ज़माने में इशाअ़ते इस्लाम का सब से ज़ियादा मोअष्षर सबब येह हुवा कि ह़ज्जाज की ज़ालिमाना रविश के मुत़ाबिक़ नौ मुस्लिमों से अब तक जो जिज़्या वुसूल किया जाता था, उन्हों ने इस से उन को बिलकुल बरी कर दिया जिस का नतीजा येह हुवा कि लोग ब कषरत इस्लाम लाए।

हमारी हैषिय्यत काश्तकार की सी रह जाए

एक बार अ़दी बिन अरत़ात ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز को लिखा कि इस कषरत से लोग

इस्लाम ला रहे हैं कि मुझे ख़राज में कमी वाके़अ़ होने का अन्देशा है, उन्हों ने उन को जवाब दिया कि मेरी येह ख़्वाहिश है कि तमाम लोग मुसलमान हो जाएं और हमारी और तुम्हारी हैषिय्यत सिर्फ़ एक काश्त कार की रह जाए कि अपने हाथ की कमाई खाएं। (سیرتِ ابن جوزی ص ۱۲۰)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी बे हि़साब मग़्फ़िरत हो।* اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

हुस्ने ज़न रखो

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمةُ اللّٰہِ العَزِیز फ़रमाया करते : اَحسِنُ بِصَاحِبِكَ الظَّنَّ مَالَمْ يَغلِبُكَ *या'नी अपने भाई के बारे में इस वक़्त तक हुस्ने ज़न रखो जब तक तुम्हें ज़न्ने ग़ालिब न हो जाए।*

(سیرت ابن جوزی ص ۲۴۵)

शरीअ़त पर अ़मल की तरग़ीब

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمةُ اللّٰہِ العَزِیز ने एक मकतूब में लिखा : बेशक इस्लाम की कुछ हुदूद हैं और कुछ अह़काम और सुन्नतें, तो जिस ने इन सब पर अ़मल कर लिया उस ने अपना ईमान कामिल कर लिया और जिस ने अ़मल नहीं किया उस का ईमान ना मुकम्मल रहा, पस अगर मैं ज़िन्दा रहा तो येह सब चीज़ें तुम्हें सिखाऊंगा भी और अ़मल की तरग़ीब भी दूंगा लेकिन अगर इस से पहले मेंरा वक़्ते रुख़्सत आ पहुंचा तो मैं तुम्हारी सोह़बत का ह़रीस नहीं हूं। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۵۴)

इस्लाह़ का अन्दाज़

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز के शहज़ादे हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡخَالِق ने एक मरतबा अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! मैं देखता हूं कि आप ने कई ऐसे काम मुअख़्ख़र कर दिये हैं जिन के बारे में मेरा ख़याल था कि अगर आप को एक घड़ी के लिये भी हुकूमत मिली तो उन्हें कर डालेंगे, मेरा मश्वरा है कि चाहे नताइज कुछ भी निकलें आप इन कामों को हाथों हाथ कर डालिये। इस मुख़्लिसाना मश्वरे पर हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने अपने शहज़ादे की हौसला अफ़ज़ाई की और फ़रमाया : दर अस्ल बात यैह है कि लोगों को दीन की बात पर आमादा करना मेरे बस में नहीं जब तक मैं इस के साथ थोड़ी सी दुन्या न मिला दूं, मैं उन के दिलों को नर्म कर के इस्लाह़ करना चाहता हूं वरना मुझे डर है कि ऐसे फ़ितने खड़े हो जाएंगे जिन्हें दूर करना मेरे लिये मुमकिन न होगा। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۵۱)

दूसरों की इस्लाह़ के लिये अपनी आख़िरत बरबाद न करो

यूं ही एक मरतबा इरशाद फ़रमाया :

مَنۡ لَّمۡ يُصۡلِحۡهُ اِلَّا الۡغَشۡمُ فَلَا يُصۡلَحۡ ، وَاللّٰهِ لَا اُصۡلِحُ النَّاسَ بِهَلَاكِ دِيۡنِى

या'नी जिस शख़्स की इस्लाह़ ज़ुल्म किये बिग़ैर नहीं हो सकती, चाहे उस की इस्लाह़ न हो मगर मैं अपना दीन बरबाद कर के लोगों की इस्लाह़ के दर पै नहीं होऊंगा। (سیرتِ ابن عبدالحکم ص ۱۱۲)

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز के इस इरशादे पाक में नेकी की दा'वत आ़म करने का जज़्बा रखने वाले मुबल्लिग़ीन के लिये ज़बर दस्त म-दनी फूल है कि किसी की इस्लाह़ की कोशिश के दौरान ख़ुद को गुनाह में पड़ने से बचाना चाहिये जैसा कि अगर कोई इस के बार बार तरग़ीब दिलाने पर भी नमाज़ नहीं पढ़ता तो अब वोह दूसरों के सामने इस की ग़ीबतें कर के गुनाहगार और नारे जहन्नम का ह़क़ दार न बने म-षलन यूं न कहे कि "फ़ुलां बहुत ढ़ीट है हज़ार बार समझाया कि नमाज़ पढ़ा करो मानता ही नहीं," वग़ैरा।

इस्लाह़ में रुकावटें

हज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन दावूद ख़ौलानी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡغَنِی का बयान है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز फ़रमाया करते थे : काश ! मैं तुम्हारे मुआ़-मले में किताबुल्लाह पर मुकम्मल तौ़र पर अ़मल कर सकता और तुम लोग भी इस पर अ़मल करते, अभी तो येह ह़ाल है कि मैं तुम्हारे दरमियान एक सुन्नत को नाफ़िज़ करता हूं तो गोया मेरे जिस्म का एक उ़ज़्व झड़ जाता है, बिल आख़िर इसी में मेरी जान निकल जाएगी। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۲۵)

चुग़ल ख़ोर की इस्लाह़

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز की ख़िदमते बा ब-रकत में एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा और उस ने किसी के बारे में कोई मन्फ़ी (NAGATIVE) बात की। आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने फ़रमाया : अगर तुम चाहो तो हम तुम्हारे मुआ़-मले की तह़क़ीक़ करें ! अगर तुम **झूटे** निकले तो इस

आयते मुबा-रका के मिस्दाक़ क़रार पाओगे :

اِنۡ جَآءَكُمۡ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوۡۤا

(پ ٢٦، الحجرات ٦)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अगर कोई फ़ासिक़ तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो तह्क़ीक़ कर लो।

और अगर तुम **सच्चे** हुए तो येह आयते करीमा तुम पर सादिक़ आएगी :

هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۢ بِنَمِيۡمٍ ۙ﴿۱۱﴾

(پ ٢٩، القلم ١١)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बहुत ता'ने देने वाला बहुत इधर की उधर लगाता फिरने वाला।

और अगर तुम चाहो तो हम तुम्हें मुआ़फ़ कर दें ! उस ने अ़र्ज़ की : या **अमीरल मोअमिनीन** ! मुआ़फ़ कर दीजिये आइन्दा मैं ऐसा (या'नी ग़ीबतें और चुग़ल ख़ोरियां) नहीं करूंगा। (احیاء العلوم ج ٣ ص ٣٩١)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हि़साब मग़्फ़िरत हो।* اٰمین بجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मह़ब्बतों के चोर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! लोगों में फ़साद करवाने के लिये उन की बाते एक दूसरे तक पहुंचाना **चुग़ली** है।

(شرح مسلم للنووی ج ١، ص ١١٣)

चुग़ुल ख़ोर मह़ब्बतों का चोर है, बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِين फ़रमाते हैं : अ़क़्लों के दुश्मनों और मह़ब्बतों के चोरों से बचो, येह चोर **बदगोई** करने वाले और **चुग़ली** खाने वाले हैं और

चोर तो माल चुराते हैं जब कि **येह** (ग़ीबतें और चुग़लियां करने वाले) **लोग महब्बतें चुराते हैं ।** (اَلْمُسْتَطْرَف ج ا ص ۱۵۱) आज हमारे मुआशरे में महब्बतों की फ़ज़ा आलूदा होने का एक बड़ा सबब चुग़ल ख़ोरी भी है, लोगों के दरमियान चुगलियां खा कर फ़साद बर पा कर के अपने कलेजे में ठंडक महसूस करने वाले को कल जहन्नम की भड़कती हुई आग में जलना पड़ेगा, जैसा कि नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान, शहनशाहे कौनो मकान صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : चार त़रह़ के जहन्नमी जो कि **ह़मीम** और **जह़ीम** (या'नी खोलते पानी और आग) के दरमियान भागते फिरते वैल व षुबूर (या'नी हलाकत) मांगते होंगे । उन में से एक शख़्स वोह होगा कि जो अपना गोश्त खाता होगा । जहन्नमी कहेंगे : इस बद बख़्त को क्या हुवा हमारी तक्लीफ़ में इज़ाफ़ा किये देता है ? कहा जाएगा : येह "बद बख़्त" लोगों का गोश्त खाता (या'नी ग़ीबत करता) और **चुग़ली** करता था । (ذَمُّ الْغِيبَةِ لِابْنِ اَبِی الدُّنْیا ص ۸۹ رقم ۴۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर कभी ज़िन्दगी में येह गुनाह हुवा हो तो तौबा कर के येह निय्यत कर लीजिये कि हम चुग़ली खाएंगे न सुनेंगे, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

सुनूं न फ़ोह़श कलामी न ग़ीबतो चुग़ली
तेरी पसन्द की बातें फ़क़त़ सुना या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 93)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दीवार पर कुरआन लिखना

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیْز रिवायत करते हैं कि एक मरतबा रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم किसी

जगह से गुज़रे तो ज़मीन पर कुछ लिखा हुवा देखा तो एक नौ जवान से दरयाफ़्त किया कि येह क्या है ? उस ने अ़र्ज़ की : "येह किताबुल्लाह है, एक यहूदी ने यहां लिखा है । आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐसा करने वाले पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत हो, किताबुल्लाह को इस के मक़ाम व मर्तबे पर ही रखो । मुह़म्मद बिन ज़ुबेर का बयान है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ الْعَزِیز ने अपने एक बेटे को दीवार पर क़ुरआन लिखते हुए देखा तो उस की पिटाई लगाई ।" (تفسیر قرطبی ج۱ص ۳۰)

म-दनी फूल : फ़क़ीहे मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती जलालुद्दीन अह़मद अमजदी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "मस्जिद की दीवारों पर क़ुरआने मजीद की आयतें लिखना जाइज़ है लेकिन न लिखना बेहतर है इस लिये कि इन आयाते क़ुरआनिया पर नजिस जगह से उड़ती हुई धूल वग़ैरा आएगी नीज़ मिट्टी, चूना जो इस के ऊपर लगा हुवा है ज़मीन पर गिरेगा और पाऊं के नीचे गिरेगा जिस से बे अ-दबी होगी ।" (फ़तावा फ़क़ीहे मिल्लत, जि. 1 स. 192)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

अपने अहलो इ़याल को रिज़्के ह़लाल ही खिलाओ

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ الْعَزِیز ने जऊ़ना बिन ह़ारिष से फ़रमाया : क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे घर वाले तुम से क्या चाहते हैं ? अ़र्ज़ की : वोह मेरा भला चाहते हैं । इरशाद फ़रमाया : नहीं ! वोह तुम्हारे माल से मह़ब्बत करते हैं, जिसे वोह खाते

हैं मगर उस का बोझ तुम्हारे सर आएगा, लिहाज़ा रब عَزَّوَجَلَّ से डरो और उन्हें सिर्फ़ ह़लाल व पाकीज़ा रोज़ी खिलाओ। (سیرت ابن جوزی ص ۲۴۶ ملتقطاً)

क्यूं रोते हो ?

एक शख़्स शदीद बीमार था, ऐसा लगता था कि दुन्या में कुछ ही देर का मेहमान है। उस के बच्चे, ज़ौजा, और मां बाप इर्द गिर्द खड़े आंसू बहा रहे थे। उस ने अपने वालिद से पूछा : "अब्बा जान ! आप को किस चीज़ ने रुलाया ?" कहने लगे : "मेरे जिगर के टुकड़े ! जुदाई का ग़म रुला रहा है, तुम्हारे मरने के बा'द हमारा क्या बनेगा ?" उस शख़्स ने अपनी वालिदा से पूछा : "प्यारी अम्मी जान ! आप क्यू रो रही हैं ?" मां ने जवाब दिया : "मेरे लाल ! दुन्या से तेरी रुख़्सती का सोच कर रो रही हूं, मैं तेरे बिग़ैर कैसे रह पाऊंगी।" फिर अपनी बीवी से पूछा : "तुम्हें किस चीज़ ने रोने पर मजबूर किया ?" उस ने भी कहा : "मेरे सरताज ! आप के बिग़ैर हमारी ज़िन्दगी अजीरन हो जाएगी, जुदाई का ग़म मेरे दिल को घाइल कर रहा है, आप के बा'द मेरा क्या बनेगा ?" फिर अपने रोते हुए बच्चों को क़रीब बुलाया और पूछा : "मेरे बच्चो ! तुम्हे किस चीज़ ने रुलाया है ?" बच्चे कहने लगे : "आप के विसाल के बा'द हम यतीम हो जाएंगे, हमारे सर से बाप का साया उठ जाएगा, आप के बा'द हमारा क्या बनेगा ?" इन सब की येह बातें सुन कर वोह शख़्स कहने लगा : "तुम सब अपनी दुन्या के लिये रो रहे हो, तुम में से हर शख़्स मेरे लिये नहीं बल्कि अपना नफ़्अ़ ख़त्म हो जाने के ख़ौफ़ से रो रहा है, क्या तुम में से कोई ऐसा भी है जिसे इस बात ने रुलाया हो कि मरने

के बा'द क़ब्र में मेरा क्या ह़ाल होगा, अ़न क़रीब मुझे वहशत नाक तंगो तारीक क़ब्र में छोड़ दिया जाएगा, क्या तुम में से कोई इस बात पर भी रोया कि मुझे मरने के बा'द मुन्कर नकीर (या'नी क़ब्र में सुवालात करने वाले फ़िरिश्तों) से वासित़ा पड़ेगा ! क्या तुम में से कोई इस ख़ौफ़ से भी रोया कि मुझे मेरे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ के सामने ह़िसाबो किताब के लिये खड़ा किया जाएगा ! आह ! तुम में से कोई भी मेरी उख़रवी परेशानियों की वजह से नहीं रोया बल्कि हर एक अपनी दुन्या की वजह से रो रहा है।" इस गुफ़्त-गू के कुछ ही देर बा'द उस की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। (عیون الحکایات ص ۹۸ ملخصًا)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत में हमारे लिये इ़ब्रत ही इ़ब्रत है कि वोह अहलो इ़याल जिन के ऐ़शो आराम के लिये हम अपनी नींदें कुरबान कर देते हैं, जिन्हें आसाइशें देने के किये हम बड़ी ख़ुशी से मशक़्क़तें बरदाश्त करते हैं, जिन की राह़तों के लिये हम ख़ुद को ग़मों के ह़वाले कर देते हैं, जवाबन येह भी दुन्या में हमारा बड़ा ख़याल रखते हैं मगर जूं ही हमारा सफ़रे ज़िन्दगी ख़त्म होता है उन्हें हमारी नहीं अपनी फ़िक्र सताने लगती है कि इस के जाने के बा'द हमारा क्या बनेगा ? काश वोह येह भी सोचते कि मरने के बा'द इस का क्या बनेगा ? और हमारे लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत व ईसाले षवाब की कषरत करते।

जब कि पैके अजल रूह़ ले जाएगा — जिस्मे बे जां तड़प कर ठहर जाएगा
लह़द में कोई तेरी नहीं आएगा — तुझ को दफ़्ना के हर इक पलट जाएगा

(वसाइले बख़्शिश, स. 629)

अ़मल ने काम आना है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दूसरो की दुन्या रोशन करने के लिये अपनी क़ब्र में अंधेरा मत कीजिये, दौलत व माल और अहलो इयाल की मह़ब्बत में नेकियां छोड़िये न गुनाहों में पड़िये कि इन सब का साथ तो आंख बन्द होते ही छूट जाएगा जब कि नेकियां اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ क़ब्रो आख़िरत बल्कि दुन्या में भी काम आएंगी, इस लिये जल्दी कीजिये और ख़ौफ़े ख़ुदा व इश्क़े **मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم पाने, दिल में सह़ाबए किराम व औलियाए उ़ज़्ज़ाम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن की मह़ब्बत जगाने, नेक सोह़बतों से फ़ैज़ उठाने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत बनाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, **आ़शिक़ाने रसूल** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र इख़्तियार कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और अपनी आख़िरत संवारने के लिये रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए़ **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह के इब्तिदाई 10 दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में शिर्कत कीजिये और **दा'वते इस्लामी** के हर दिल अ़ज़ीज़ **म-दनी चेनल** के सिल्सिले देखिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप अपने दिल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुक़र्रबीन व सालिह़ीन की मह़ब्बत को दिन ब दिन बढ़ता हुवा मह़सूस फ़रमाएंगे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से इन नुफ़ूसे क़ुदसिया का फ़ैज़ान और इन की नज़रे शफ़्क़त शामिले ह़ाल होगी। तरग़ीब के लिये एक **म-दनी बहार** पेश की जाती है, चुनान्चे अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ लिखते हैं :

आक़ा ने अपने मुश्ताक़ को सीने से लगा लिया

षना ख़्वाने रसूले मक़्बूल, बुलबुले रौज़ए रसूल, मद्दाहे सह़ाबा व आले बतूल, गुलज़ारे **अ़त्तार** के मुश्कबार फूल, मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी अलह़ाज क़ारी ह़ाजी अबू उ़बैद **मुश्ताक़ अह़मद अ़त्तारी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی की वफ़ात से चन्द माह क़ब्ल मुझे (सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ को) किसी इस्लामी भाई ने एक मकतूब इरसाल किया था, उस में उन्हों ने ब क़सम अपना वाक़ेआ़ कुछ यूं तह़रीर किया था : मैं ने ख़्वाब में अपने आप को **सुनहरी जालियों** के **रू ब रू पाया,** जाली मुबारक में बने हुए तीन सुराख़ में से एक सुराख़ में जब झांका तो एक दिल रुबा मन्ज़र नज़र आया, क्या देखता हूं कि **सरकारे मदीना,** राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा हैं और साथ ही शैख़ैने करीमैन या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا भी ह़ाज़िरे ख़िदमत हैं। इतने में **ह़ाजी मुश्ताक़ अ़त्तारी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی **बारगाहे मह़बूबे बारी** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हुए सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ाजी मुश्ताक़ अ़त्तारी को सीने से लगा लिया और फिर कुछ इरशाद फ़रमाया मगर वोह मुझे याद नहीं फिर आंख खुल गई।

*आप के क़दमों से लग कर मौत की या **मुस्त़फ़ा***
आरज़ू कब आएगी बर बे कसो मजबूर की

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बोहतान तराशने वालों का अन्जाम

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ने वलीद बिन हिशाम मोईती़ को क़िन्नसरीन का अमीरे लश्कर और फ़ुरात बिन मुस्लिम को वहां का अमीरे ख़िराज मुक़र्रर किया। इन दोनों के दरमियान कुछ अन बन हो गई। यहां तक नौबत पहुंच गई कि वलीद ने अ़लाक़े के चार मअ़म्मर अफ़राद को इस बात पर तय्यार कर लिया कि वोह आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ के पास फ़ुरात के ख़िलाफ़ येह झूटी गवाही दें कि (1) वोह नमाज़ नहीं पढ़ता (2) सिह़्ह़त व इक़ामत की ह़ालत में भी र–मज़ान के रोज़े नहीं रखता (3) ग़ुस्ले जनाबत तक नहीं करता (4) माहवारी की ह़ालत में बीवी के पास जाता है। वोह लोग ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز के पास आए और इन चारों बातों की गवाही दी। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : येह तो तुम लोगों ने अपनी आंखों से देखा होगा कि फ़ुरात ने नमाज़ नहीं पढ़ी अब येह ख़ुदा जाने कि जान बूझ कर हुवा या सह्व व निस्यान की वजह से, और येह भी देखा होगा कि ब ज़ाहिर कोई मरज़ न होने के बा वुजूद उस ने रोज़ा नहीं रखा मगर येह बताओ कि तुम्हें येह कैसे पता चला कि वोह ग़ुस्ले जनाबत नहीं करता या बीवी के पास माहवारी की ह़ालत में जाता है ? येह सुवाल सुन कर उन लोगों को सांप सूंघ गया, फिर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "**वल्लाह** ! फ़ुरात जैसे पाक दामन और अमानत दार शख़्स से इन बातों का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता।" और उन बद किरदार बूढ़ों को पूलीस अफ़सर के ह़वाले कर दिया, हर एक को बीस कोड़े लगवाए, फिर उन की ज़मानतें इस शर्त़

पर लीं कि फ़ुरात ख़ुद उन से अपना ह़क़ वुसूल करें या मुआ़फ़ कर दें। इस वाक़िए़ के बा'द आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने भरपूर कोशिश कर के वलीद और फ़ुरात के दरमियान सुल्ह़ करवा दी। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۳۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ने बोहतान तराशने वालों की कैसी गिरिफ़्त फ़रमाई, **किसी** शख़्स की मौजूदगी या ग़ैर मौजूदगी में उस पर झूट बांधना **बोहतान** कहलाता है। (اَلْحدِیْقَۃُ النَّدِیَّۃ ج ۲ ص ۲۰۰) इस को आसान लफ़्ज़ों में यूं समझिये कि **बुराई** न होने के बा वुजूद अगर पीठ पीछे या रू ब रू वोह बुराई उस की त़रफ़ मन्सूब कर दी तो येह **बोहतान** हुवा म-षलन पीछे या मुंह के सामने **रियाकार** कह दिया और वोह रियाकार न हो या अगर हो भी तो आप के पास कोई षुबूत न हो क्यूंकि **रियाकारी** का ता'ल्लुक़ बात़िनी अमराज़ से है लिहाज़ा इस त़रह़ किसी को रियाकार कहना **बोहतान** हुवा। तोहमत धरने और बोहतान तराशने वाले को दुन्या व आख़िरत में रुस्वाई का सामना होगा, चुनान्चे

दोज़ख़ियों की पीप में रहना पड़ेगा

नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

مَنْ قَالَ فِی مُؤْمِنٍ مَا لَیْسَ فِیہِ أَسْکَنَہُ اللَّہُ رَدْغَۃَ الْخَبَالِ حَتَّی یَخْرُجَ مِمَّا قَالَ

या'नी जो किसी मुसलमान की बुराई बयान करे जो उस में नहीं पाई जाती तो उस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस वक़्त तक दोज़ख़ियों के कीचड़, पीप और ख़ून में रखेगा जब तक कि वोह अपनी कही हुई बात से न निकल आए। (سُنَنِ ابوداؤد ج ۳ ص ۴۲۷ حدیث ۳۵۹۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता कभी बोहतान तराशी का गुनाह सरज़द हुवा हो तो फ़ौरन से पेश तर तौबा कर लीजिये, **बोहतान** से तौबा के लिये तीन बातों का पाया जाना ज़रूरी है : {1} आइन्दा बोहतान को तर्क करने का पक्का इरादा करना {2} **जिस का हक़ ज़ाएअ़ किया, मुमकिन हो तो** उस से मुआ़फ़ी चाहना म-षलन साहिबे हक़ ज़िन्दा और मौजूद है नीज़ मुआ़फ़ी मांगने से कोई झगड़ा या अ़दावत पैदा नहीं होगी {3} (जिन) लोगों (के सामने बोहतान लगाया उन) के सामने अपने **झूट** (या'नी बोहतान) का इक़रार करना या'नी येह कहना कि जो मैं ने **बोहतान** लगाया था उस की कोई ह़क़ीक़त नहीं। (اَلْحَدِيْقَةُ النَّدِيَّة وَ الطَّرِيْقَةُ الْمُحَمَّدِيَّة ج ٢ ص ٢٠٩)

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"बहारे शरीअ़त"** हि़स्सा 16 सफ़्हा 181 पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : **बोहतान** की सूरत में तौबा करना और मुआ़फ़ी मागना ज़रूरी है बल्कि जिन के सामने **बोहतान** बांधा है उन के पास जा कर येह कहना ज़रूरी है कि मैं ने झूट कहा था जो फुलां पर मैं ने **बोहतान** बांधा था। (बहारे शरीअ़त जि. 16, स. 181) नफ़्स के लिये यक़ीनन येह सख़्त गिरां है मगर दुन्या की थोड़ी सी ज़िल्लत उठानी आसान मगर आख़िरत का मुआ़-मला इन्तिहाई संगीन है, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! दोज़ख़ का अ़ज़ाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा। (माख़ूज़ ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 295)

जहन्नम का हल्का तरीन अ़ज़ाब

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا रिवायत करते हैं कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "दोज़ख़ियों में सब से हल्का अ़ज़ाब जिस को होगा उसे आग के जूते पहनाए जाएंगे जिन से उस का दिमाग़ खोलने लगेगा।"

(صحیح البخاری، باب صفۃ الجنۃ والنار، الحدیث ۶۵۶۱، ج ۴، ص ۲۶۲)

हमारा नाज़ुक वुजूद

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़रा तसव्वुर तो कीजिये कि अगर हमें सज़ा के तौर पर जहन्नम का सिर्फ़ येही अ़ज़ाब दिया जाए तो भी हम से बरदाश्त न हो सकेगा क्यूंकि हमारे पाऊं इतने नाज़ुक हैं कि किसी गर्म अंगारे पर जा पड़ें तो पूरे वुजूद को उछाल कर रख दें, मा'मूली सा सर दर्द हमारे होश गुम कर देता है तो फिर वोह अ़ज़ाब जिस से दिमाग़ खोलने लगे, बरदाश्त करने की किस में हिम्मत है ? हम जहन्नम के अ़ज़ाब से **अल्लाह** तआ़ला की पनाह मांगते हैं।

मुझे नारे दोज़ख़ से डर लग रहा है

हो मुझ ना तुवां पर करम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 82)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़त्ए रेह़्मी करने वाले से दूर रहो

हज़रते मैमून बिन मेहरान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان का बयान है कि हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ الْعَزِیز ने मुझ से फ़रमाया :

اَ تُوَاخِيَنَّ قَاطِعَ رحم فَاِنِّیْ سَمِعْتُ اللّٰہُ لَعَنَھُمْ

فِیْ سُوْرَتَیْنِ فِیْ سُوْرَۃِ الرَّعْدِ وَسُوْرَۃِ مُحَمَّدٍ

या'नी क़त़ूए़ रेह़्मी करने वाले से कभी भाई चारा क़ाइम न कीजियेगा क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ *ने सूरए रअ़्द और सूरए मुह़म्मद में क़त़ूए़ रेह़्मी करने वाले पर ला'नत की है ।*

(درمنثور ج ۴ ص ۶۴۱)

अफ्ज़ल अ़मल कौन सा है ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू रबीआ़ رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیْه का बयान है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ने फ़रमाया اَفْضَلُ الْاَعْمَالِ مَاا كُرِهَتْ عَلَيْهِ النُّفُوْسُ *या'नी अफ्ज़ल तरीन अ़मल वोह है जो नफ़्स पर भारी हो ।* (سیرت ابن جوزی ص ۲۴۷)

दाढ़ी के बाल उखेड़ने वाले की गवाही मुस्तरद कर दी

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز के पास एक ऐसा शख़्स गवाही देने के लिये ह़ाज़िर हुवा जिस ने अपनी बुच्ची (या'नी ठोड़ी और नीचले होंट की दरमियानी जगह) के बाल उखाड़े हुए थे, येह देख कर आप ने उस की गवाही रद कर दी ।

(احیاء العلوم، ج ۱ ص ۱۹۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! कि बिला ह़ाजते शरई बुच्ची के मक़ाम से दाढ़ी के थोड़े से बाल उखाड़ने वाले की गवाही मुस्तरद कर दी गई, इस से ज़ैबो ज़ीनत के उन मतवालों को इ़ब्रत पकड़नी चाहिये, जो مَعَاذَاللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ पूरी दाढ़ी ही मूंडा डालते हैं ।

दाढ़ियां बढ़ाओ

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान बार बार पढ़िये :

"اَحْفُوا الشَّوَارِبَ ، وَاَعْفُوا اللِّحٰی وَلَا تَشَبَّھُوا بِالْیَھُوْدِ" *या'नी मूंछें ख़ूब पस्त (या'नी छोटी) करो और दाढ़ियों को मुआ़फ़ी दो (या'नी बढ़ाओ) यहूदियों की सी सूरत न बनाओ।"* (شرح معانی الآثار للطّحاوی ج۴ ص۲۸)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मोह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ अपने रिसाले "**काले बिच्छू**" में येह ह़दीषे पाक नक़्ल करने के बा'द समझाते हुए लिखते हैं :

मरने के बा'द की होशरुबा मन्ज़र कशी

ऐ ग़ाफ़िल इस्लामी भाई ! ज़रा होश कर !! मरने के बा'द तेरी एक न चलेगी, **तेरे नाज़ उठाने वाले** तेरे कपड़े भी उतार लेंगे। तू कितना ही बड़ा सरमाया दार सही, तुझे वोह **कोरे लट्ठे का कफ़न** पहनाएंगे जो फ़ूट पाथ पर दम तोड़ देने वाले लावारिष को पहनाया जाता है। तेरी कार है तो वोह भी गेरेज में खड़ी रह जाएगी। तेरे बेश क़ीमत लिबास सन्दूक़ में धरे रह जाएंगे। तेरे मालो मताअ़ और ख़ून पसीने की कमाई पर वु-रषा क़ाबिज़ हो जाएंगे। "**अपने**" अश्क बहा रहे होंगे। "**बेग़ाने**" ख़ुशियां मना रहे होंगे। तेरे नाज़ उठाने वाले तुझे अपने कंधों पर लाद कर चल देंगे और एक ऐसे वीराने में ले आएंगे कि तू कभी इस होलनाक सन्नाटे में ख़ुसूसन रात के वक़्त एक

घड़ी भी तन्हा न आया था, न आ सकता था बल्कि इस के तसव्वुर से ही कांप जाया करता था। अब घड़ा खोद कर तुझे **मनो मिट्टी तले** दफ़्न कर के तेरे सारे अ़ज़ीज़ चले जाएंगे। तेरे पास एक रात कुजा एक घंटा भी ठहरने के लिये कोई राज़ी न होगा। ख़्वाह तेरा **चहीता बेटा** ही क्यूं न हो, वोह भी भाग खड़ा होगा। अब इस तंगो तारीक क़ब्र में न जाने कितने हज़ार साल तेरा क़ियाम होगा। तू हैरान व परेशान होगा, अफ़्सुर्दगी छाई होगी, क़ब्र भीच रही होगी, तू चिल्ला रहा होगा, ह़सरत भरी निगाहों से अ़ज़ीज़ों को निगाहों से औझल होता हुवा देख रहा होगा, दिल डूबता जा रहा होगा। इतने में क़ब्र की दीवारें हिलना शुरूअ़ होंगी और देखते ही देखते **दो ख़ौफ़नाक शक्लों वाले फ़िरिश्ते** (मुन्कर नकीर) अपने लम्बे लम्बे दांतों से क़ब्र की दीवार को चीरते हुए तेरे सामने मौजूद होंगे, उन की आंखों से आग के शो'ले निकल रहे होंगे, काले काले मुहीब (या'नी हैबतनाक) बाल सर से पाऊं तक लटक रहे होंगे, तुझे झिड़क कर बिठाएंगे। करख़्त (या'नी निहायत ही सख़्त) लहजे में इस त़रह़ **सुवालात** करेंगे : "مَنْ رَّبُّكَ؟"(या'नी तेरा रब कौन है ?) "مَا دِيْنُكَ؟"(या'नी तेरा दीन क्या है ?) इतने में तेरे और मदीने के दरमियान जितने पर्दे ह़ाइल होंगे, सब उठा दिये जाएंगे किसी की मोहनी, दिलरुबा और प्यारी प्यारी सूरत सामने आ जाएगी। या वोह अ़ज़ीम और प्यारी हस्ती खुद तशरीफ़ ले आएगी। क्या अ़जब ! तेरी आंखें शर्म से झुक जाएं। हो सकता है कि तू सोच में पड़ जाए कि निगाहें उठाऊं तो कैसै उठाऊं ! अपनी बिगड़ी हुई सूरत दिखाऊं तो कैसे दिखाऊं ! येह

वोह तो **मेरे आक़ा** صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हैं जिन का मैं कलिमा पढ़ा करता था । अपने आप को इन صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का गुलाम भी कहता था । लेकिन मैं ने येह क्या किया ! मीठे मीठे आक़ा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने तो येह फ़रमाया : **"मूंछें खूब पस्त करो और दाढ़ियों को मुआफ़ी दो, यहूदियों जैसी सूरत मत बनाओ ।"** लेकिन हाए मेरी बद बख़्ती ! मैं चन्द रोज़ा दुन्या की ज़ीनत में खो गया। **फ़ैशन** ने मेरा सत्तियानास (سَت-تیا-ناس) कर दिया । आक़ा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सख़्ती से मन्अ़ करने के बा वुजूद मैं ने चेहरा यहूदियों या'नी म-दनी आक़ा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दुश्मनों जैसा ही बनाया। **हाए** ! अब क्या होगा ? कहीं ऐसा न हो कि मेरी बिगड़ी हुई शक्ल देख कर **सरकारे आ़ली वक़ार** صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुंह फैर लें और येह फ़रमा दें कि **"येह तो मेरे दुश्मनों वाला चेहरा है मेरे गुलामो वाला नहीं !!"** अगर खुदा न ख़्वास्ता ऐसा हुवा तो सोच उस वक़्त तुझ पर क्या गुज़रेगी।

न उठ सकेगा क़ियामत तलक खुदा की क़सम
अगर नबी ने नज़र से गिरा के छोड़ दिया

ऐसा नहीं होगा, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ हरगिज़ नहीं होगा । अभी तू ज़िन्दा है, मान जा ! अपने कमज़ोर बदन पर तरस खा ! झट हिम्मत कर ! अंग्रेज़ी फ़ैशन, फ़िरंगी तहज़ीब को तीन त़लाकें दे डाल और अपना चेहरा मीठे मीठे आक़ा मक्की म-दनी **मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की पाकीज़ा **सुन्नत** से आरास्ता कर ले और **एक**

मुठ्ठी दाढ़ी सजा ले। हरगिज़ हरगिज़ शैतान के इस फ़रेब में न आ और इस वसाविस की त़रफ़ तवज्जोह मत ला, कि **अभी तो मैं इस क़ाबिल नहीं हुवा, मेरी तो उ़म्र ही क्या है ? मेरा इ़ल्म भी इतना कहां है ? अगर किसी ने दीन के बारे में सुवाल कर दिया तो मुझे जवाब नहीं आएगा मैं तो जब क़ाबिल हो जाऊंगा उस वक़्त दाढ़ी रखूंगा।"** याद रख ! येह शैत़ान का काम्याब तरीन वार है कि इन्सान अपने बारे में येह समझ बैठे कि "**हां, अब मैं क़ाबिल हो गया हूं।"** याद रखिये ! अपने आप को क़ाबिल समझना येही ना क़ाबिलिय्यत की सब से बड़ी दलील है। आ़जिज़ी इख़्तियार कर ! बड़े बड़े **उ़-लमाए किराम** भी हर सुवाल का जवाब नहीं देते तो क्या हर सुवाल का जवाब देने की तूने ज़िम्मादारी ली हुई है ? नफ़्स की हीला बाज़ियों में मत आ ! और मान जा ! ख़्वाह मां रोके, बाप मन्अ़ करे, मुआ़शरा आड़े आए, शादी में रुकावट खड़ी हो। कुछ ही हो जाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे **रसूल** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का हुक्म मानना ही पड़ेगा। **तसल्ली रख** ! अगर जोड़ा लौहे मह़फ़ूज़ पर लिखा हुवा है तो तेरी **शादी ज़रूर** हो जाएगी और अगर नहीं लिखा तो दुन्या की कोई त़ाक़त तेरी **शादी** नहीं करवा सकती। ज़िन्दगी का क्या भरोसा ?

दाढ़ी मुंडवाते ही मौत

किसी ने सगे मदीना (राक़िमुल हुरूफ़) को कुछ इस त़रह़ का वाक़ेआ़ सुनाया था कि **बंगला देश** में एक नौ जवान ने दाढ़ी रखी थी, जब उस की **शादी** का वक़्त क़रीब आया तो वालिदैन ने **दाढ़ी** मुंडवाने पर मजबूर किया। बा दिले ना ख़्वास्ता नाई के पास जा कर **दाढ़ी**

मुंडवा कर घर की तरफ़ आते हुए सड़क उबूर कर रहा था कि किसी तेज़ रफ़्तार गाड़ी ने कुचल कर रख दिया, उस का दम निकल गया और उस की **शादी** के अरमान ख़ाक में मिल गए। मां बाप क्या काम आए ? न **शादी** हुई न **दाढ़ी** रही। तो **प्यारे इस्लामी भाई !** होश में आ ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा कर के आज ही अहद कर ले कि अब ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत में गरदन तो कट सकती है मगर मेरी **दाढ़ी** अब दुन्या की कोई ताक़त मुझ से जुदा नहीं कर सकती।

शाबाश..... मुबारक...... मुबारक...... मुबारक.......

(काले बिच्छू, स 4 ता 10)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सरदार कौन होता है ?

हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने एक शख़्स से पूछा : مَنْ سَيِّدُ قَوْمِكَ *या'नी तुम्हारी क़ौम का सरदार कौन है ?* उस ने कहा : **अना** या'नी मैं। तो इरशाद फ़रमाया : لو كُنْتَ سَيِّدَهُمْ مَاقُلْتَ *या'नी अगर तुम वाक़ेई उन के सरदार होते तो हां न कहते* (या'नी आजिज़ी करते हुए ख़ामोश रहते) (سیرت ابن جوزی ص ۲۷۸)

इस हिकायत में उन इस्लामी भाइयों के लिये दर्से अज़ीम है जिन्हें कोई बड़ी ज़िम्मादारी या ओ-हदा हासिल हो जाए तो कोई पूछे न पूछे वोह अपने तआरुफ़ में बिला ज़रूरत व मस्लहत अपने ओ-हदे को ज़रूर ज़िक्र करते हैं, होना तो येह चाहिये कि अगर कोई

निगरान भी हो तो इन्दज़्ज़रूरत खु़द को ख़ादिम कह कर तआ़रुफ़ करवाए, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی की आ़जिज़ी मरह़बा ! कि लोग आप को **अमीरे अहले सुन्नत** कहते हैं लेकिन आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ खु़द को ह़स्बे मोक़अ़ **फ़क़ीरे अहले सुन्नत** कहते हैं और इस की वज़ाह़त यूं फ़रमाते हैं : **"मैं अहले सुन्नत में से नेकियों के मुआ़-मले में सब से ग़रीब हूं इस लिये फ़क़ीरे अहले सुन्नत हूं।"** **अल्लाह** तआ़ला हमें भी ह़क़ीक़ी आ़जिज़ी नसीब फ़रमाए।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।* اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

रिज़्क़ पहुंच कर रहेगा

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز ने फ़रमाया :

اَیُّھَا النَّاسُ ! اِتَّقُوا اللّٰہَ وَاَجْمِلُوْا فِی الطَّلَبِ فَاِنَّہٗ اِنْ کَانَ لِاَحَدِکُمْ رِزْقٌ فِی رَأْسِ جَبَلٍ اَوْحَضِیْضِ اَرْضٍ یَاْتِیْہِ

*या'नी लोगो ! **अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *से डरो और ह़लाल ज़रीए़ से रिज़्क़ तलाश करो क्यूंकि अगर तुम्हारा रिज़्क़ किसी पहाड़ की चोटी पर रखा है या ज़मीन की तह में, तुम्हें मिल कर रहेगा।* (سیرت ابن جوزی ص ۲۳۴)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस फ़रमाने अ़ज़ीम में हमारे लिये तवक्कुल का दर्स पोशीदा है, आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं :

तवक्कुल तर्के अस्बाब का नाम नहीं बल्कि ए'तिमाद अ़लल अस्बाब का तर्क है। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 379) या'नी असबाब ही को छोड़ देना तवक्कुल नहीं है, तवक्कुल तो येह है कि असबाब पर भरोसा न करे। म-षलन मरीज़ दवाई खाना न छोड़े बल्कि दवाई खाए और नज़र ख़ालिके़ असबाब की त़रफ़ रखे कि मेरा रब عَزَّوَجَلَّ चाहेगा तो ही इस दवाई से शिफ़ा मिलेगी।

तवक्कुल कैसा होना चाहिये?

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम, मह़बूबे रब्बे अ़ज़ीम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने राह़त निशान है :

لَوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَوَكَّلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ حَقَّ تَوَكُّلِهٖ لَرُزِقْتُمْ كَمَا يُرْزَقُ الطَّيْرُ تَغْدُو خِمَاصًا وَتَرُوحُ بِطَانًا

या'नी अगर तुम ***अल्लाह*** *عَزَّوَجَلَّ पर ऐसा तवक्कुल करो जैसा कि उस पर तवक्कुल करने का ह़क़ है तो तुम को ऐसे रिज़्क़ दे जैसे परन्दों को देता है कि वोह (परन्दे) सुब्ह़ को भूके जाते हैं और शाम को शिकम सैर लौटते हैं।*

(سُنَنُ التِّرْمِذِی ج ۴ ص ۱۵۴ حديث ۲۳۵۱)

इस फ़रमाने **मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से उन नादानों को होश के नाख़ुन लेने चाहिये जो रोज़ी कमाने के लिये ह़राम ज़रीए अपनाने में कोई झिझक मह़सूस नहीं करते, ऐ काश हमें ह़क़ीक़ी तवक्कुल नसीब हो जाए। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلَّى الله تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

बद मज़हबों की सोह़बत से बचो

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمةُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने फ़रमाया : لَا تُجَالِسْ ذَاهَوٰى فَيُلْقِيَ فِيْ نَفْسِكَ شَيْئًا يَسْخَطُ اللّٰهُ بِهٖ عَلَيْكَ

या'नी बद मज़्हबों की सोहबत से बचो क्यूंकि वोह तुम्हें भी ऐसे कामों में लगा देगा जिन से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नाराज़ होता है। (سیرت ابن جوزی ص ۲۴۶)

अच्छे और बुरे मुसाहिब की मिषाल

प्यारे आक़ा, मक्की म-दनी सुल्तान, रह़मते आ़-लमियान صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अच्छे और बुरे मुसाहिब की मिषाल, मुश्क उठाने वाले और भट्टी झोंकने वाले की त़रह़ है, कस्तूरी उठाने वाला तुम्हें तोह़्फ़ा देगा या तुम उस से ख़रीदोगे या तुम्हें उस से उ़म्दा खुश्बू आएगी, जब कि भट्टी झोंकने वाला या तुम्हारे कपड़े जलाएगा या तुम्हें इस से ना गवार बू आएगी।" (مسلم، ص ۱۱۱۶، رقم الحدیث ۲۶۲۸)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई ! हर सोह़बत अपना अषर रखती है, मिषाल के त़ौर पर अगर आप को कभी किसी मय्यित वाले घर जाने का इत्तिफ़ाक़ हुवा हो तो वहां का उदास माह़ोल कुछ देर के लिये आप को भी ग़मगीन कर देगा और अगर किसी शादी पर जाने का इत्तिफ़ाक़ हुवा हो तो खुशियों भरा माह़ोल आप को भी कुछ देर के लिये मसरूर कर देगा। बिलकुल इसी त़रह़ अगर कोई शख़्स ग़फ़लत का शिकार हो कर गुनाहों पर दिलेर हो जाने वाले लोगों की सोह़बत में बैठेगा, तो ग़ालिब गुमान है कि वोह भी बहुत जल्द उन्ही की मानिन्द हो जाएगा और अगर कोई शख़्स ऐसे खुश अ़क़ीदा लोगों की सोह़बत इख़्तियार करेगा जिन के दिल ख़ौफ़े ख़ुदा से मा'मूर हों, उन की आंखें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के डर से रोएं तो यक़ीनी त़ौर पर येही कैफ़िय्यात उस शख़्स के दिल में भी सरायत कर जाएगी। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ

صُحْبَتِ صَالِح تُرَا صَالِح کُنَدْ

صُحْبَتِ طَالِح تُرَا طَالِح کُنَدْ

(या'नी अच्छों की सोह़बत तुझे अच्छा और बुरों की सोह़बत तुझे बुरा बना देगी)

हमें क्या करना चाहिये ?

हमें चाहिये कि **दीनी** मश्ग़लों और दुन्या के ज़रूरी कामों से फ़रागत के बा'द ख़ल्वत या'नी तन्हाई इख़्तियार करें या सिर्फ़ ऐसे सन्जीदा और सुन्नतों के पाबन्द इस्लामी भाइयों की सोह़बत ह़ासिल करें जिन की बातें ख़ौफ़े खु़दा व इश्क़े **मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم में इज़ाफ़े का बाइ़ष बनें और वोह वक़्तन फ़ वक़्तन ज़ाहिरी बुराइयों और बात़िनी बीमारियों की निशान देही करते और इन का इ़लाज तजवीज़ फ़रमाते हों। अच्छी सोह़बत के मु-तअ़ल्लिक़ दो फ़रामैने **मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मुला-ह़ज़ा हों :

(1) अच्छा रफ़ीक़ वोह है कि जब तू खु़दा عَزَّوَجَلَّ को याद करे तो वोह तेरी मदद करे और जब तू भूले तो वोह याद दिलाए।

(موسوعة الامام لِابْنِ اَبِی الدُّنیا،ج ۸،ص ۱۶۱ رقم ۴۲)

(2) अच्छा रफ़ीक़ वोह है कि उस के देखने से तुम्हें खु़दा عَزَّوَجَلَّ याद आए और उस की गुफ़्त-गू से तुम्हारे अ़मल में ज़ियादती हो और उस का अ़मल तुम्हें आख़िरत की याद दिलाए।

(شُعَبُ الْاِیمان ج ۷ ص ۵۷ حدیث ۹۴۴۶) (माख़ूज़ अज़ ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 257)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

ज़ल्ज़ला, स-दक़ा और दुआएं

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने तमाम अ़लाक़ों में तह़रीरी पैग़ाम भेजा कि ज़ल्ज़ला एक ऐसी चीज़ है जिस के ज़रीए **अल्लाह** तआ़ला बन्दों पर इ़ताब फ़रमाता है, आप लोग फ़ुलां दिन बाहर निकलें और तौबा इस्तिग़्फ़ार करें, जो शख़्स स-दक़ा कर सकता हो वो स-दक़ा करे क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है :

"قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ﴿۱۴﴾ *(बे शक मुराद को पहुंचा जो सुथरा हुवा)* (پ۳۰، الاعلٰی:۱۴)"

और अपने बाप ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की येह दुआ़ पढ़ा करो :

رَبَّنَا ظَلَمْنَاۤ اَنْفُسَنَا ٚ وَ اِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَ تَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ ﴿۲۳﴾ (پ۸، الاعراف:۲۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे हम ने अपना आप बुरा किया तो अगर तू हमें न बख़्शे और हम पर रह़्म न करे तो हम ज़रूर नुक़्सान वालों में हुए

और ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की दुआ़ पढ़ा करो :

وَ اِلَّا تَغْفِرْ لِیْ وَ تَرْحَمْنِیْۤ اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِیْنَ ﴿۴۷﴾ (پ۱۲، ھود:۴۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अगर तू मुझे न बख़्शे और रह़्म न करे तो मैं ज़ियां कार हो जाऊं।

और ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की दुआ़ पढ़ा करो :

رَبِّ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ فَاغْفِرْ لِیْ (پ۲۰، قصص:۱۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरे रब मैं ने अपनी जान पर ज़ियादती की तो मुझे बख़्श दे।

(سیرت ابن عبدالحکم ص۵۸)

ज़ल्ज़ला कैसे आता है ?

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के 80 सफ़्हात पर मुश्तमिल रिसाले "**ज़ल्ज़ला और उस के असबाब**" के सफ़्हा 13 पर है : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-रकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शमए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़षे ख़ैरो ब-रकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलहाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तमाम ज़मीन को मुह़ीत़ (या'नी घेरे में लिया हुवा) एक पहाड़ पैदा किया, जिस का नाम **कोहे क़ाफ़** है, ज़मीन में कोई जगह ऐसी नहीं जहां **कोहे क़ाफ़** के रेशे फैले हुए न हों। जिस त़रह़ दरख़्त की जड़ें ज़मीन के अन्दर फैल जाती हैं और उन जड़ों के सबब दरख़्त खड़ा रहता है और आंधी या हवा आए तो येह नहीं गिरता। अब उसूल येह है कि दरख़्त जितना बड़ा होगा उतनी ही दूर तक उस की जड़ों के रैशे फैलते हैं चूंकि **कोहे क़ाफ़** बहुत बड़ा है, इतना बड़ा है, इतना बड़ा है, इतना बड़ा है कि सारी ज़मीन को घेरे हुए है। लिहाज़ा उस को खड़े रहने के लिये जगह भी बहुत ही बडी दरकार है, चुनान्चे उस के रैशे हुक्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ से सारी ज़मीन में फैले हुए हैं। कहीं येह रैशे ज़मीन की ऊपरी सत़्ह़ पर ज़ाहिर हैं जैसा कि बरगद के दरख़्त की जड़ें कहीं कहीं ज़मीन पर उभरी हुई होती हैं। जहां जहां इस **कोहे क़ाफ़** के रैशे उभरे वहां पहाड़ियां और पहाड़ खड़े हो

गए, कहीं कहीं ज़मीन की सत्ह़ तक आ कर रुके रहे तो इस को संगलाख (या'नी पथरीली) ज़मीन कहते हैं। बहर हाल येह रैशे कहीं ज़मीन के ऊपर तो कहीं ज़मीन के नीचे यहां तक कि समुन्दर के अन्दर भी हैं। समुन्दर में भी ज़ल्ज़ला आ सकता है, पहले हम ने कभी नहीं सुना था मगर अब **सूनामी या'नी समुन्दरी ज़ल्ज़ला** भी सुन लिया, जो 26.12.04 को बरपा हुवा था, इस ने सब से ज़ियादा तबाही इन्डोनेशिया के सूबे "आचे" के दारुल हुकूमत "बान्दा आचे" में मचाई, ग़ालिबन सिर्फ़ इसी एक शहर में एक लाख से ज़ियादा अफ़राद मौत के घाट उतर गए ! सुना येही है कि खुसूसन वोह अ़लाक़े इस की ज़द में आए थे जहां गुनाहों की ह़द हो गई थी, समुन्दर की चिंगाड़ती हुई लहरों ने उन बस्तियों को अपनी लपेट में ले लिया और तह्स नह्स कर के रख दिया। बहर हाल **कोहे क़ाफ़** के रैशे ज़मीन की नीचली सत्ह़ में भी दूर दूर तक फैले हुए हैं, जहां जहां वोह रैशे होते हैं उस की ऊपरी ज़मीन बहुत नर्म होती है। जिस जगह **ज़ल्ज़ला** भेजने का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इरादा होता है, (**अल्लाह** और उस के रसूल की पनाह) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **कोहे क़ाफ़** को हुक्म देता है कि वोह अपने वहां के रैशे को जुम्बिश दे, सिर्फ़ वहीं **ज़ल्ज़ला** आएगा जिस जगह के रैशे को ह़-रकत दी गई फिर जहां ख़फ़ीफ़ या'नी हल्के **ज़ल्ज़ले** का हुक्म है तो येह वहां के रैशे को हल्का सा हिलाता है और जहां हुक्म है कि शदीद झटका दे तो वहां **कोहे क़ाफ़** बहुत ज़ोर से अपना रैशा हिलाता है। बा'ज़ जगह सिर्फ़ हल्का सा झटका आता है और ख़त्म हो जाता है उस में भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मशिय्यतें (مَشِیّتیں) कार फ़रमा हैं कि कहीं हल्का सा झटका आता है तो

कहीं ज़ोरदार, कहीं मकानात सिर्फ़ हिल जाते हैं तो कहीं इस की खिड़कियां और कांच वग़ैरा भी टूट फूट जाते हैं, कहीं مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ज़मीन फट जाती है और उस से पानी निकल आता है तो कहीं مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ शो'ले निकल पड़ते और चीख़ने की आवाज़ें बुलन्द होती है। कहीं से बुख़ारात व धूएं बरआमद होते हैं। (अज़ इफ़ादात : फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 27, स. 96 ता 97)

ज़ल्ज़ला गुनाहों के सबब आता है

मेरे आक़ाए ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-रकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवाने शमए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, **मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن की बारगाह में सुवाल किया गया कि ज़ल्ज़ले का सबब क्या है ? इरशाद फ़रमाया : "**सबबे ह़क़ीक़ी**" तो वोही इरा-दतुल्लाह (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इरादा फ़रमाना) है और आ़लमे अस्बाब में "बाइ़षे अस्ली" बन्दों के मआ़सी (या'नी गुनाह) [1]

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 27, स. 96)

नीम जां कर दिया गुनाहों ने
मर्ज़े इस्या से दे शिफ़ा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 87)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़राइज़ की अदाएगी की अहम्मिय्यत

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने फ़रमाया : तक़्वा मह़ज़ दिन को रोज़ा रखने और रातों को क़ियाम

1 : ज़ल्ज़ले के बारे में मज़ीद तफ़सीलात पढ़ने के लिये मक-त-बतुल मदीना के 80 सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाले "ज़ल्ज़ला और उस के अस्बाब" का ज़रूर मुता-लआ़ कीजिये

करने का नाम नहीं बल्कि फ़राइज़ को अदा करने और ह़राम को छोड़ देने का नाम है। (سیرت ابن جوزی ص ۲۳۹)

तक़्वा से अ़क़्ल बढ़ती है

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने फ़रमाया : तक़्वा से अ़क़्ल में इज़ाफ़ा होता है। (سیرت ابن جوزی ص ۲۳۹)

अफ़्ज़ल इबादत

एक मरतबा फ़रमाया : اِنَّ اَفْضَلَ الْعِبَادَةِ اَدَاءُ الْفَرَائِضِ وَاجْتِنَابُ الْمَحَارِمِ *या'नी फ़राइज़ को अदा करना और ह़राम से बचना अफ़्ज़ल इबादत है।*

(سیرت ابن جوزی ص ۲۳۶)

गुनाह की तीन जड़ें

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلام फ़रमाते हैं कि **गुनाहों की अस्ल** (या'नी जड़) तीन चीज़ें हैं :

(1) ह़िर्स (2) ह़सद और (3) तकब्बुर।

ग़फ़लत पैदा करने वाली 6 चीज़ें हैं : (1) ज़ियादा खाना (2)ज़ियादा सोना (3) हर त़रह़ आराम से रहने की ख़्वाहिश करना (4) माल की मह़ब्बत (5) इ़ज़्ज़त (पाने) की रग़बत (6) ह़ुकूमत की ख़्वाहिश, बसा अवक़ात माल व ह़ुकूमत की त़लब में इन्सान काफ़िर (भी) बन जाता है और वोह (या'नी उ़-लमाए किराम) येह भी फ़रमाते हैं कि गुनाह दिल में सियाही पैदा करता है और कुरआने पाक की तिलावत, दुरूद शरीफ़, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र, मौत का याद

करना । येह सब चीज़ें दिल की सैक़ल (या'नी दिल की सफ़ाई करने वाली) हैं, जिन से वोह सियाही दूर होती है । इसी त़रह़ **ज़ियादा हंसना** दिल को बीमार कर देता है और ख़ौफ़े इलाही से **रोना** इस का इलाज है । जो शख़्स गुनाहों के साथ नेकियां भी करता रहे तो उस का क़ल्ब मैला हो कर धुलता रहेगा (जब कि इस निय्यत से गुनाह न करता हो कि बा'द में नेकी कर के गुनाह धो डाला करूंगा) लेकिन जो गुनाहों में मश्गूल रहे, नेकी की त़रफ़ मु-तवज्जेह न हो उस के क़ल्ब की सियाही बढ़ते बढ़ते एक दिन सारे क़ल्ब को सियाह कर देगी । जिस के मु-तअ़ल्लिक़ ह़दीष शरीफ़ में आता है की : "इन दिलों पर लोहे की त़रह़ ज़ंग आता रहता है और इन की सफ़ाई तिलावते कुरआन है ।" इस सियाह क़ल्ब को साफ़ करने के लिये एक अ़र्सा और काफ़ी मेह़नत चाहिये, हां अगर किसी **अल्लाह** वाले की इस पर **निगाहे करम** पड़ जाए तो वोह आनन फ़ानन इस क़ल्ब को साफ़ कर देती है । **ख़याल** रहे कि गुनाहों से आहिस्तगी से दिल मैला होता है और मैला दिल इ़बादात के ज़रीए़ आहिस्ता आहिस्ता साफ़ होता है मगर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़दावत से कभी एक दम मुहर लग जाती है । शैत़ान के दिल पर हज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बुग़्ज़ से अचानक **मुहर** लग गई और हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के जादूगरों का मैला दिल निगाहे कलीमी से अचानक **उजला** हो गया । मा'लूम हुवा कि **अ़दावते नबी बद तरीन कुफ़्र** है और निगाहे वली बेहतरीन ने'मत है । (तफ़्सीरे नईमी, जि.1, स. 151)

गुनाहों की आ़दत बढ़ी जा रही है

करम या इलाही, करम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 83)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

दुन्या फ़ाएदा कम नुक़्सान ज़ियादा देती है

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیْز ने एक ख़ुत़्बे में इरशाद फ़रमाया : اِنَّ الدُّنْیَا لَاتُسِرُّبِقَدْرِ مَاتَضُرُّ اِنَّھَاتُسِرُّ قَلِیْلاً وَتَجُرُّ حُزْناً طَوِیْلاً *या'नी बिला शुबा दुन्या इतनी ख़ुशी नहीं देती जितना नुक़्सान पहुंचाती है, येह मुख़्तसर ख़ुशी देती है और त़वील ग़म में मुब्तला कर देती है।* (سیرت ابن جوزی ص ۲۳۳)

दस त़रह़ के अफ़राद धोके में हैं

बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن फ़रमाते हैं : दस त़रह़ के अफ़राद बहुत धोके में हैं : (1) एक वोह जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को **ख़ालिक़** जान कर (या'नी पैदा करने वाला जानने के बा वुजूद भी) उस की इ़बादत नहीं करता (2) वोह जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को **रज़्ज़ाक़** मानने के बा वुजूद उस पर भरोसा नहीं रखता (3) वोह जो दुन्या को **फ़ानी** जानने के बा वुजूद इस पर भरोसा करता है (4) वोह जो जानता है कि मेरे वारिष मेरे **दुश्मन** (या'नी वि-रषे की हि़र्स में मेरी मौत के मुन्तज़िर) हैं फिर भी उन के लिये माल जम्अ़ करता है (5) वोह जो **मौत** को अटल मान कर भी उस की तय्यारी नहीं करता (6) वोह जो जानता है कि क़ब्र मेरी मन्ज़िल है और फिर भी उस को आबाद (करने वाले आ'माल) नहीं

करता (7) वोह जो जानता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **हिसाब** लेगा मगर फिर भी अपना हिसाब साफ़ नहीं रखता (8) वोह जो जानता है कि **पुल सिरात़** पर चलना पड़ेगा मगर अपना (गुनाहों का) बोझ हल्का नहीं करता (9) वोह जो जानता है कि **जहन्नम** बदकारों की जगह है मगर उस से (या'नी बदकारियों और गुनाहों से) नहीं भागता (10) और वोह जो जानता है कि जन्नत अबरार (या'नी नेको कारों) की जगह है मगर इस की त़रफ़ नहीं आता। ह़क़ तआ़ला हम सब को अ़मल की तौफ़ीक़ दे। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(روح البیان ج ۱ ص ۲۰۴ ملخصًا)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

ना मह़रम औ़रत के साथ तन्हाई इख़्तियार करने से बचो

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने एक शख़्स को नसीह़त फ़रमाई :

اِیَّاكَ اَنْ تَخْلُوَ بِامْرَاَۃٍ غَیْرِ ذَاتِ مَحْرَمٍ وَاِنْ حَدَّثَتْكَ نَفْسُكَ اَنْ تُعَلِّمَھَا الْقُرْاٰنَ

या'नी ना मह़रम औ़रत के साथ तन्हाई इख़्तियार करने से बचना अगर्चे तुम्हारा नफ़्स तुम्हें येह पट्टी पढ़ाए कि तुम तो उस औ़रत को कु़रआने पाक की ता'लीम दे रहे हो। (سیرت ابن جوزی ص ۲۲۰)

तीसरा शैत़ान होता है

ख़ा-तमुल मुर्सलीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

لَا يَخْلُوَنَّ رَجلٌ بِامْرَأَةٍ اِلَّا كَانَ ثَالِثَهُمَا الشَّيْطٰنُ

"या'नी कोई शख़्स किसी औ़रत (अज्नबिय्या) के साथ तन्हाई में नहीं होता मगर उन के साथ तीसरा शैत़ान होता है।" (سُنَنُ التِّرمِذِی ج۴ ص۶۷ حدیث ۲۱۷۲)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَّان इस ह़दीषे पाक के तह़त मिरआत जिल्द 5 सफ़्ह़ा 21 पर फ़रमाते हैं : या'नी जब कोई शख़्स अजनबी औ़रत के साथ तन्हाई में होता है ख़्वाह वोह दोनों कैसे ही पाकबाज़ हों और किसी (नेक) मक़्सद के लिये (ही) जम्अ़ हों (मगर) शैत़ान दोनों को बुराई पर ज़रूर उभारता है और दोनों के दिलों में ज़रूर हैजान पैदा करता है, ख़त़रा है कि ज़िना वाक़ेअ़ करा दे ! इस लिये ऐसी ख़ल्वत (या'नी तन्हाई में जम्अ़ होने) से बहुत ही एहतियात़ चाहिये गुनाह के अस्बाब से भी बचना लाज़िम है, बुख़ार रोकने के लिये नज़्ला व ज़ुकाम (को) रोको।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5 स. 21)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی इस ह़दीषे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : "जब कोई औ़रत किसी अजनबी मर्द के साथ तन्हाई में इकठ्ठी होती है तो शैत़ान के लिये येह एक नफ़ीस मौक़अ़ होता है, वोह उन दोनों के दिलों में गन्दे वस्वसे डालता है, उन की शहवत को भड़काता है, ह़या तर्क करने और गुनाहों में मुलव्वष हो जाने की तरग़ीब देता है।" (فیض القدیر شرح الجامع الصغیر ج۳ ص۱۰۲ تحتَ الحدیث ۲۷۹۵)

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द 3 हिस्सा 16 सफ़्ह़ा 449 पर है :

अज्नबिय्या औ़रत के साथ ख़ल्वत या'नी दोनों का एक मकान में तन्हा होना ह़राम है, हां ! अगर वोह बिलकुल बूढ़ी है कि शहवत के क़ाबिल न हो तो ख़ल्वत हो सकती है। औ़रत को त़लाक़े बाइन दे दी तो उस के साथ तन्हा मकान में रहना ना जाइज़ है और अगर दूसरा मकान न हो तो दोनों के माबैन पर्दा लगा दिया जाए, ताकि दोनों अपने अपने हि़स्से में रहें येह उस वक़्त है कि शौहर फ़ासिक़ न हो और अगर फ़ासिक़ हो तो ज़रूरी है कि वहां कोई ऐसी औ़रत भी रहे जो शोहर को औ़रत से रोकने पर क़ादिर हो। जब कि मह़ारिम के साथ ख़ल्वत जाइज़ है या'नी दोनों एक मकान में तन्हा हो सकते हैं मगर रज़ाई बहन और सास के साथ तन्हाई जाइज़ नहीं जब कि येह जवान हों। येही हुक्म औ़रत की जवान लड़की का है जो दूसरे शोहर से है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 3, हि़स्सा :16, स. 449)

जहालत से बढ़ कर कोई दर्द और गुनाहों से बढ़ कर कोई बीमारी नहीं

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز एक दिन मिम्बर पर जल्वा अफ़रोज़ हुए और ह़म्दो षना के बा'द फ़रमाया : लोगो ! जहालत से बढ़ कर कोई दर्द, गुनाहों से बड़ी कोई बीमारी नहीं और ख़ौफ़े मौत से बढ़ कर कोई ख़ौफ़ नहीं है।

(سیرت ابن جوزی ص ۲۴۴)

गुनाहों पर इसरार हलाकत है

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने एक ख़ुत़्बे में फ़रमाया : लोगो ! जिस ने किसी गुनाह का इरतिकाब

किया हो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुआ़फ़ी मांगे और तौबा करे, दोबारा गुनाह हो जाए तो फिर तौबा करे, फिर गुनाह हो जाए तो फिर तौबा करे मगर याद रखो कि गुनाह पर इसरार बद तरीन हलाकत है।

(سیرت ابن جوزی ص ۲۳۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गुनाहों का अन्जाम हलाकत व रुस्वाई के सिवा कुछ नहीं, लिहाज़ा ! इस से पहले कि पयामें अजल आन पहुंचे और हम अपने अज़ीज़ो अक़रिबा को रोता छोड़ कर और दुन्या की रौनक़ों से मुंह मोड़ कर, क़ब्र के होलनाक और तारीक गढ़े में तन्हा जा सोएं, हमें चाहिये कि इन गुनाहों से छुटकारे की कोई तदबीर करें। इस के लिये ज़रूरी है कि हम अपने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सच्ची तौबा करें क्यूंकि सच्ची तौबा ऐसी चीज़ है जो हर क़िस्म के गुनाह को इन्सान के नामए आ'माल से धो डालती है, सरवरे आ़लम, नूरे मुजसस्म صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

"اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنۡبِ کَمَنۡ لَّا ذَنۡبَ لَہٗ या'नी गुनाहों से तौबा करने वाला ऐसा है कि गोया उस ने गुनाह किया ही नहीं।"

(السنن الکبری، کتاب الشہادات، باب شہادۃ القاذف، رقم ۲۰۵۶۱، ج ۱۰، ص ۲۵۹)

तौबा का दरवाज़ा बन्द नहीं होता

किसी ने हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُ से पूछा कि एक आदमी ने गुनाह किया क्या उस की तौबा की कोई सूरत है ? हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُ ने मुंह दूसरी त़रफ़ कर लिया। फिर दोबारा इधर तवज्जोह की तो उन की आंखें डबडबा रही थीं। फ़रमाया : "जन्नत के आठ दरवाज़े हैं, सब खुलते और बन्द होते

हैं, सिवाए तौबा के इस लिये कि तौबा के दरवाज़े पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर है इस लिये नेक अ़मल करो और मायूस न हो।" 1

(مکاشفۃ القلوب، الباب السابع عشر فی بیان الامانۃ والتوبۃ ص ۶۱، ۶۲)

गुनाहों से भर पूर नामा है मेरा
मुझे बख़्श दे, कर करम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 83)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

ने'मतों में ग़ौर उ़म्दा इ़बादत है

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबू दावूद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से फ़रमाया : اَلْفِکْرَۃُ فِیْ نِعَمِ اللّٰہِ اَفْضَلُ الْعِبَادَۃِ *या'नी* **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ *की ने'मतों में ग़ौरो तफ़क्कुर उ़म्दा इ़बादत है।* (سیرت ابن جوزی ص ۲۳۷)

ग़ुर्बत का रोना रोने वाले को उ़म्दा नसीह़त

एक शख़्स ने किसी बुज़ुर्ग की ख़िदमत में अपनी ग़ुर्बत की शिकायत की तो उन्हों ने उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इनायत कर्दा ने'मतों का एह़सास दिलाने के लिये इरशाद फ़रमाया : "क्या तू इस बात के लिये तय्यार है कि अपनी **आंख दे दे और दस हज़ार दिरहम ले ले** ?" उस ने अ़र्ज़ की : "हरगिज़ नहीं।" फ़रमाया : "अच्छा, अ़क़्ल दे दे और दस हज़ार दिरहम ले ले।" अ़र्ज़ की :

مدینہ

1 : तौबा के बारे में तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना के मत़बूआ़ रिसाले "**नहर की सदाएं**" और 132 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**तौबा की रिवायात और ह़िकायात**" का ज़रूर मुत़ा-लआ़ कीजिये।

"कभी नहीं।" फ़रमाया : "अच्छा, अपने **हाथ** दे दे और दस हज़ार दिरहम ले ले।" अ़र्ज़ की : "किसी सूरत में नहीं।" फ़रमाया : "अच्छा, अपने **कान** दे दे और दस हज़ार दिरहम ले ले।" उस ने अ़र्ज़ की "येह भी गवारा नहीं।" फ़रमाया : "अच्छा, अपने **पाऊं** दे दे और दस हज़ार दिरहम ले ले।" उस ने अर्ज़ की : "येह भी क़बूल नहीं।" इस पर उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : "50 हज़ार दिरहम का माल तेरे पास मौजूद है और तू फिर भी मुफ़्लिसी (या'नी ग़ुर्बत) का शिक्वा कर रहा है ?" (کیمیائے سعادت ج۲ ص۸۰۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई अगर हम अपने वुजूद और इर्द गिर्द के माह़ोल पर ग़ौरो फ़िक्र करें तो हमें एह़सास होगा कि हमें रब तआ़ला ने कितनी ने'मतों से नवाज़ रखा है।

कौन किस को देखे ?

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, शहनशाहे अबरार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस में दो आदतें हों उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ शाकिर साबिर लिखता है जो अपने दीन में अपने से ऊपर वाले को देखे तो उस की पैरवी करे और अपनी दुन्या में अपने से नीचे वाले को देखे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का **शुक्र** करे इस पर कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे इस शख़्स पर बुज़ुर्गी दी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे शाकिर साबिर लिखेगा और जो अपने दीन में अपने से कम को देखे और अपनी दुन्या में अपने से ऊपर को देखे तो फ़ौत शुदा दुन्या पर ग़म करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे न शाकिर लिखे न साबिर।

(ترمذی ج۴ ص۲۲۹ حدیث۲۵۲۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो नेकियों में कमज़ोर हैं वोह नेकियों में आगे बढ़े हुओं पर रश्क कर के उन की त़रह़ नेकियां बढ़ाने की जुस्त–जू करें और मरीज़ वग़ैरा अपने से बड़े मरीज़ की त़रफ़ नज़र रखते हुए शुक्र अदा करें कि मुझे फ़ुलां के मुक़ाबले में तकलीफ़ कम है। म–षलन जोड़ों के दर्द वाला पेट के दर्द वाले को देखे कि येह मुझ से ज़ियादा अज़िय्यत में है, **T.B** वाला केन्सर वाले की त़रफ़ देखे कि वोह बे चारा ज़ियादा तकलीफ़ में है। जिस का एक हाथ कट गया वोह उस की त़रफ़ देखे जिस के दोनों हाथ कट चुके हैं, जिस की एक आंख ज़ाएअ़ हो गई हो वोह नाबीना की त़रफ़ नज़र करे। कम तनख़्वाह वाला बे रोज़गार की त़रफ़, फ़्लेट में रहने वाला कोठी वाले को देखने के बजाए बे घर को देखे। शायद कोई सोचे कि नाबीना और केन्सर वाला किस की त़रफ़ देखें ? वोह भी अपने से ज़ियादा तकलीफ़ वालों की त़रफ़ देखें म–षलन नाबीना इस पर ग़ौर करे जो नाबीना होने के साथ हाथ पाऊं से भी मा'ज़ूर हो, इसी त़रह़ केन्सर वाला ग़ौर करे कि फ़ुलां को केन्सर के साथ साथ दिल का मरज़ या फ़ालिज भी है। बहर ह़ाल दुन्या में हर आफ़त से बड़ी आफ़त मिल जाएगी। **ख़ुदा की क़सम !** सब से बड़ी मुसीबत कुफ़्र है हर वोह मुसलमान जो कितना ही बड़ा मरीज़ व ग़मज़दा हो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करे कि उस ने मुझे **ईमान** की ने'मत से नवाज़ा और **कुफ़्र** की मुसीबत से मह़फ़ूज़ रखा है।

अस्ल बरबाद कुन अमराज़ गुनाहों के हैं
भाई क्यूं इस को फ़रामोश किया जाता है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अपने बुज़ुर्गों का दामन थामे रखो

इमाम औज़ाई رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه का बयान है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزیز ने फ़रमाया : अपने बुज़ुर्गों की राय को मज़बूती से थाम लो और उस के ख़िलाफ़ चलने से बचो क्यूंकि वोह तुम से बेहतर और ज़ियादा इ़ल्म वाले थे।

(سیرت ابن جوزی ص ۲۷۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन बुज़ुर्गाने दीन के दामन को मज़बूती से पकड़े रहने में दुन्या व आख़िरत की भलाइयां पोशीदा हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-रकत निशान है : اَلبَرَكَةُ مَع اَكابِرِكُم *या'नी ब-रकत तुम्हारे बुज़ुर्गों के साथ है।* (المستدرک للحاکم، کتاب الایمان، ج۱، ص ۲۳۸، الحدیث ۲۱۸)

तीन नसीह़तें

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزیز ने शाम में मिट्टी के बने हुए मिम्बर पर ख़ुत़्बा दिया जिस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो षना के बा'द इरशाद फ़रमाया : (1) ऐ लोगो ! तुम अपने बात़िन की इस्लाह़ कर लो तो तुम्हारे ज़ाहिर की इस्लाह़ ख़ुद ब ख़ुद हो जाएगी (2) तुम अपनी आख़िरत के लिये काम करो तुम्हारी दुन्या के लिये भी येही किफ़ायत करेगा और (3) येह बात जान लो कि हर वोह शख़्स जिस के बाप और ह़ज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तक कोई ज़िन्दा नहीं रहा उसे मौत ज़रूर आएगी।

(حلیۃ الاولیاء ج ۵ ص ۳۰۰)

दिल की इस्लाह़ की ज़रूरत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : ''आगाह रहो कि जिस्म में एक लोथड़ा गोश्त का है जब वोह **संवरे** तो पूरा जिस्म **संवर** जाता है, अगर वोह **बिगड़े** तो पूरा जिस्म **बिगड़** जाता है, सुनो ! वोह **दिल** है।''

(صحیح البخاری ،کتاب الایمان ،باب فضل من استبراء لدینه ،الحدیث ۵۲،ج ۱ ،ص ۳۳)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَنَّان इस ह़दीषे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी दिल बादशाह है जिस्म इस की रिआ़या, जैसे बादशाह के दुरुस्त हो जाने से तमाम मुल्क ठीक हो जाता है, ऐसे ही दिल संभल जाने से तमाम जिस्म ठीक हो जाता है, दिल इरादा करता है जिस्म उस पर अ़मल की कोशिश, इस लिये सूफ़ियाए किराम दिल की इस्लाह़ पर बहुत ज़ोर देते हैं।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 4 स. 231)

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद गज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی लिखते हैं : तुम पर दिल की ह़िफ़ाज़त, इस की इस्लाह़ और इसे दुरुस्त रखने की कोशिश करना भी ज़रूरी है क्यूंकि दिल का मुआ़-मला बाक़ी आ'ज़ा से ज़ियादा ख़त़रनाक है, और इस का अषर बाक़ी आ'ज़ा से ज़ियादा है। (मज़ीद लिखते हैं) ज़ाहिरी आ'माल का बात़िनी औसाफ़ के साथ एक ख़ास ता'ल्लुक़ है। अगर बात़िन ख़राब हो तो ज़ाहिरी आ'माल भी ख़राब होंगे और अगर बात़िन ह़सद, रिया और तकब्बुर वग़ैरा उ़यूब से पाक हो तो ज़ाहिरी आ'माल भी दुरुस्त होते है, इसी त़रह़ अगर कोई अपने आ'माले सालिह़ा को रब तआ़ला का

फ़ज़्लो करम समझे तो ठीक है और अगर इन्हें अपना ज़ाती कमाल तसव्वुर करे तो खुद सिताई (خُود ستائی) के बाइ़ष वोह आ'माल बरबाद हो जाते हैं, इस लिये जब तक बातिनी उमूर का ज़ाहिरी आ'माल से ता'ल्लुक़, बातिनी औसाफ़ की ज़ाहिरी आ'माल में ताषीर और औसाफ़े बातिनी के ज़रीए ज़ाहिरी आ'माल की हिफ़ाज़त की कैफ़िय्यत वग़ैरा का पता न चले, ज़ाहिरी आ'माल भी दुरुस्त नहीं हो सकते।

(منہاج العابدین،ص ٦٧، ١٣)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मा'ज़िरत करने वाले कामों से बचो

हज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ الْعَزِیز ने मुझ से फ़रमाया : اِیَّاکَ وَمَایُعْتَذَرُ مِنْہُ *या'नी उस काम से बचो जिस पर मा'ज़िरत करनी पड़े।* (سیرت ابن جوزی ص ٢٤٦)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! वाक़ेई हर काम से पहले उस के नताइज पर ग़ौरो फ़िक्र करना हमें बहुत सी ना कामियों और शरमिन्दगियों से बचा सकता है।

नसीह़त का शुक्रिया अदा किया

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ الْعَزِیز को किसी शख़्स ने कोई नासिह़ाना ख़त़ लिखा था, इस के जवाब में तह़रीर फ़रमाया : "**अम्मा बा'द**! आप का गिरामी नामा मुझे मिला, जिस में आप ने नसीह़तें फ़रमाई थीं और उस चीज़ का ज़िक्र किया था जो मेरा हिस्सा है (या'नी नसीह़त को तवज्जोह से सुनना) और जो आप के ज़िम्में ह़क़ है (या'नी नसीह़त करना) आप ने इस नसीह़त नामे के

ज़रीए़ सब से अफ़्ज़ल अज्र पा लिया, बिला शुबा नसीह़त स-दक़े की मिष्ल है बल्कि अज्रो षवाब में इस से बढ़ कर है कि इस का नफ़्अ़ ज़ियादा पाएदार है और येह इस से बेहतर ज़ख़ीरा भी है और मर्दे मोमिन के ज़िम्मे इस से बड़ा ह़क़ भी। एक मोमिन का अपने भाई से बत़ौरे नसीह़त एक बात कह देना जिस से उस की हिदायत त़-लबी में इज़ाफ़ा हो, उस माल से यक़ीनन बेहतर है जिस का अपने भाई पर स-दक़ा करे, ख़्वाह वोह इस स-दक़े का ज़रूरत मन्द भी हो और तुम्हारे भाई को वा'ज़ व नसीह़त से जो हिदायत मिलेगी वोह इस दुन्या से बदर जहा बेहतर है जो तुम्हारे माल से उसे ह़ासिल होगी और तुम्हारा भाई तुम्हारे वा'ज़ व नसीह़त के ज़रीए़ हलाकत से नजात पाए येह इस के लिये कहीं ज़ियादा बेहतर है इस बात से कि वोह तुम्हारे स-दक़े के ज़रीए़ अपनी ग़ुर्बत का मुदावा करे। लिहाज़ा जिस को नसीह़त कीजिये अपने ऊपर ह़क़ समझते हुए कीजिये, मगर जब आप किसी दूसरे को नसीह़त करें तो उस पर खुद भी अ़मल कीजिये, आप की मिषाल उस तबीबे ह़ाज़िक़ की सी होनी चाहिये जो खूब जानता है कि अगर दवा का बे मोक़अ़ इस्ति'माल करेगा तो मरीज़ को भी परेशान करेगा और खुद भी परेशान होगा और अगर मुनासिब जगह पर दवा लगाने में कोताही करेगा तो जहालत व ह़िमाक़त का मुर्तकिब होगा और जब वोह किसी मजनून का इलाज करेगा तो यूंही खुले बन्दों इलाज शुरूअ़ नहीं कर देगा, बल्कि उस के हाथ पाऊं बन्धवा कर इत़्मीनान करेगा क्यूंकि उसे ख़त़रा होगा कि कहीं इस "कारे ख़ैर" के ज़रीए़ इस से बड़ा शर पैदा न हो जाए गोया उस का इ़ल्म व तजरिबा उस के अ़मल की कुंजी है, याद रहे कि दरवाज़े पर ताला इस लिये नहीं लगाया जाता कि वोह हमेशा बन्द रहे,

कभी न खुले, न इस के लिये कि हमेशा खुला रहे, कभी बन्द न हो ! बल्कि इस लिये लगाया जाता है कि उसे अपने वक़्त पर बन्द किया जाए और अपने वक़्त पर खोला भी जाए।" वस्सलाम। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۱۳)

अ़मल का हो जज़्बा अ़ता या इलाही

गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 84)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दिल हिला देने वाली नसीह़त

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز को किसी के इन्तिक़ाल की ख़बर मिली फिर इत्तिलाअ मिली कि पहली ख़बर ग़लत़ थी (या'नी वोह शख़्स ज़िन्दा है) इस पर आप ने उन्हें ख़त़ लिखा : "**अम्मा बा'द,** हमें एक ख़बर पहुंची थी जिस पर तुम्हारे तमाम भाई घबरा गए थे बा'द अज़ां ख़बर मिली की पहली इत्ति़लाअ़ ग़लत़ है, इस ख़बर से हमें ख़ुशी हुई ! अगर्चे येह ख़ुशी बहुत जल्द ही ख़त्म होने वाली है और कुछ ही दिन बा'द वोह ख़बर भी आएगी जिस से पहली खबर की तस्दीक़ हो जाएगी (या'नी जल्द या ब देर मौत तो आ कर ही रहेगी) मेरे भाई ! तुम्हारी मिषाल उस शख़्स की सी है जिस ने मौत का मज़ा चख लिया हो फिर (दुन्या में) वापसी की दरख़्वास्त की हो और उसे (ज़िन्दा रहने की) इजाज़त मिल गई हो, ज़ाहिर है कि ऐसा शख़्स हाथों हाथ (आख़िरत की) तय्यारी में लग जाएगा और जहां तक मुमकिन होगा अपने कम से कम ख़ुश कुन माल से भी दारे क़रार (या'नी आख़िरत) का सामान मुहय्या करने की कोशिश करेगा और वोह येह समझेगा कि उस के माल में से उस की चीज़ें सिर्फ़ वोही हैं जो उस

ने आगे भेज दीं क्यूंकि ऐसे शख़्स के पल्ले तो दुन्या व आख़िरत का ख़सारा ही ख़सारा पड़ता है जिस के पास थोड़ा बहुत माल हो मगर उस के बा वुजूद उस की अपनी कोई चीज़ न हो (या'नी आख़िरत के लिये कुछ न भेजा हो) रात और दिन हमेशा से ज़िन्दगी ख़त्म करते (इन्सानों की) बिसाते़ ह़यात को लपेटते और शीराज़ए उ़म्र को बिखेरते हुए दोड़े चले जा रहे हैं और येह दोनों (या'नी रात और दिन) इसी त़रह़ दौड़ते रहेंगे और इन्सान को बोसीदा और फ़ना कर के छोड़ेंगे, येह दिन और रात बहुत सी उम्मतों के मुसाह़िब रहे मगर येह सब लोग अपने रब عَزَّوَجَلَّ से जा मिले और अपने अच्छे या बुरे को पा लिया मगर रात और दिन इसी त़रह़ तरो ताज़ा हैं जिन को इन्हों ने फ़ना किया उन में से कोई भी इन को बोसीदा न कर सका और जिन पर से येह गुज़रे उन में से कोई भी इन को फ़ना न कर सका, येह ब दस्तूर गुज़श्ता लोगों की त़रह़ बाक़ी मान्दा लोगों के साथ वोही करने के लिये पूरी त़रह़ चुस्त और तय्यार हैं जो पहले लोगों के साथ कर चुके हैं। तुम आज अपने बहुत से हम अ़स्र और हमसर लोगों में शरीफ़ इन्सान हो मगर तुम्हारी मिषाल उस शख़्स की सी है जिस का एक एक जोड़ बन्द काट दिया गया हो और उस में सिर्फ़ ज़िन्दगी की रमक़ रह गई हो और वोह सुब्ह़ शाम बुलावे का मुन्तज़िर हो, इस लिये हम (सब) अपनी बद आ'मालियों पर तौबा व इस्तिग़फ़ार करते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब से पनाह मांगते हैं। काश ! हमारे नफ़्सों को इ़ब्रत हो। **वस्सलाम**। (سیرت ابن عبد الحکم ص۱۰۷)

तू अपनी मौत को मत भूल कर सामान चलने का
ज़मीं की ख़ाक पर सोना है ईंटों का सिरहाना है
न बेली हो सके भाई न बेटा बाप ते माई
तू क्यूं फिरता है सौदाई अ़मल ने काम आना है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

अमीरुल मोअमिनीन की बेटे को नसीह़त

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने ख़लीफ़ा बनने के बा'द अपने शहज़ादे हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق को एक ख़त़ में लिखा : "अपने बा'द में अपनी वसिय्यत और नसीह़त का सब से ज़ियादा मुस्तह़िक़ तुम को समझता हूं और तुम ही इन को मह़फ़ूज़ रखने के सब से ज़ियादा अहल हो, ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ ने हम पर बहुत बड़ा एह़सान किया है और जो ने'मतें रह गई हैं वोह भी अ़त़ा करेगा, तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के वोह एह़सानात याद करो जो तुम पर और तुम्हारे बाप पर हैं और अपने बाप को हर उस मुआ़-मले में जिस पर वोह क़ादिर है और जिस से तुम्हारे ख़याल में वोह आ़जिज़ है मदद दो।" (سیرت ابن جوزی ۲۹۸ ملخصًا) मुलख़्ख़सन हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق ने इस नसीह़त पर शिद्दत के साथ अ़मल किया और हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ को ख़िलाफ़त के अहम मुआ़-मलात में हमेशा मदद दी म-षलन हज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز अमवाले मग़सूबा को बनू उमय्या के फ़ितना व फ़साद के ख़ौफ़ से ब तदरीज उस के अस्ल मालिकों को वापस करना चाहते थे लेकिन हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق ही के मश्वरे से उन्हों ने इस काम को सब से पहले अन्जाम दिया। (سیرت ابن جوزی ص ۱۲۶ ملتقطًا)

साहिबज़ादे की वफ़ात से इ़ब्रत

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز को अपनी अवलाद में से ज़ियादा मह़ब्बत हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल

मलिक عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡخَالِق से थी, बल्कि शाम के बा'ज़ मशाइख़ का कहना है कि हमारे ख़याल में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز का ज़ौक़े इबादत अपने बेटे अ़ब्दुल मलिक رَحۡمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيۡه की इबादत व रियाज़त से मु–तअष्षिर हो कर बढ़ा था। (سیرت ابن جوزی ص۲۹۷) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक رَحۡمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيۡه ताऊ़न के मरज़ में मुब्तला हुए और मरज़ नाज़ुक सूरत इख़्तियार कर गया तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز को इत्तिलाअ़ दी गई। आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيۡه तशरीफ़ लाए और उन से दरयाफ़्त फ़रमाया : "बेटा ! कैसे हो।" उन्हों ने सरसरी तौर पर अ़र्ज़ की : "अच्छा हूं।" मगर अपनी हालत का इज़्हार नहीं किया ताकि आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيۡه परेशान न हों। फ़रमाया : "बेटा ! अपनी ह़ालत ठीक से बताओ, तुम जानते ही हो कि मैं तुम्हारे मुआ़–मले में रिज़ाए इलाही पर राज़ी हूं।" अ़र्ज़ की : "अब्बा जान ! सच्ची बात तो येह है कि मैं ख़ुद को दुन्या से रुख़्सत होता हुवा मह़सूस कर रहा हूं।" मिज़ाज पुर्सी कर के ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز अपनी जाए नमाज़ में तशरीफ़ ले गए। आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيۡه अभी नमाज़ में थे कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡخَالِق का इन्तिक़ाल हो गया। मुज़ाहिम ने आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيۡه को इत्तिलाअ़ दी तो गश खा कर गिर पड़े। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने मुज़ाहिम को ताकीद कर रखी थी कि मुझ से कोई बात ख़िलाफ़े मा'मूल सादिर होती हुई देखो तो टोक दिया करो। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक رَحۡمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيۡه के कफ़न दफ़्न से फ़राग़त हुई तो मुज़ाहिम

ने कहा : "**अमीरुल मोअमिनीन** ! आज मैं ने आप से एक अ़जीब बात देखी वोह येह कि आप अ़ब्दुल मलिक के पास आए और उन की मिज़ाज पुर्सी की तो उन्हों ने अपनी ह़ालत को छुपाना चाहा मगर आप ने इसरार किया कि वोह अपनी ह़ालत आप को ठीक ठीक बताएं क्यूंकि उन के ह़क़ में तक़दीर का जो फ़ैसला होगा आप उस पर दिलो जान से राज़ी रहेंगे, फिर जब उन का इन्तिक़ाल हुवा और मैं ने आप को इस की इत्तिलाअ़ की तो आप ग़श खा कर गिर गए, अगर आप तक़्दीर के फ़ैसले पर राज़ी थे तो येह ग़शी क्यूं त़ारी हुई ?" **अमीरुल मोअमिनीन** رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "बात तो येही थी कि मैं तक़्दीरे इलाही के फ़ैसले पर राज़ी हूं मगर जब मुझे मा'लूम हुवा कि म-लकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام मेरे घर आ कर मेरे जिगर के टुकड़े को ले कर गए हैं तो मैं डर गया जिस की वजह से वोह ह़ालत पेश आई जो तुम ने देखी, लिहाज़ा येह ग़म की नहीं ख़ौफ़े मौत की ग़शी थी।" (سیرت ابن عبدالحکم ص ۹۶)

हम भी तुम्हारे पीछे आने वाले हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई येह समझना नादानी है कि हम हमेशा दूसरों के जनाज़े ही देखते रहेंगे, याद रखिये ! एक दिन वोह भी आएगा कि हमारा भी जनाज़ा उठाया जाएगा। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कोई जनाज़ा देखते तो फ़रमाते : "رُوحُوا فَاِنَّا غَادُوْنَ ***या'नी चलो हम भी तुम्हारे पीछे आने वाले हैं।***" (البدایة والنھایة، سنة ستین من الھجرة، ج۵، ص۲۱۶) वाक़ेई आए दिन उठने वाले जनाज़े हमारे लिये **ख़ामोश मुबल्लिग़** की ह़ैषिय्यत रखते हैं।

जनाज़ा आगे आगे कह रहा है ऐ जहां वालो

मेरे पीछे चले आओ तुम्हारा रहनुमा मैं हूं

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

धोके में न रहिये

जूं जूं दिन, महीने और साल गुज़रते जा रहे हैं दुन्या हम से दूर भाग रही है और आख़िरत क़रीब आ रही है मगर हम हैं कि दूर भागने वालों की आओ भगत में लगे हैं और आने वाली के इस्तिक़्बाल की कोई तय्यारी नहीं करते, अपनी सांसों को ग़नीमत जानिये और गुनाहों से तौबा कर के नेकियां कमाने में मसरूफ़ हो जाइये, कितने ही लोग ऐसे हैं जो आने वाले कल के मुन्तज़िर होते हैं कि येह करेंगे वोह करेंगे, फिर वोह "कल" तो आता है मगर उस का इन्तिज़ार करने वाले अपनी क़ब्र में उतर चुके होते हैं, जैसा कि हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने एक नौ जवान को नसीहत करते हुए कहा : "ऐ नौ जवान ! तुझे तेरी जवानी धोके में न डाले, कितने ही जवान ऐसे थे जिन्हों ने तौबा में ताख़ीर की और लम्बी लम्बी उम्मीदें बाध लीं, **मौत** को भुला कर येह कहते रहे कि कल **तौबा** कर लेंगे, परसो तौबा कर लेंगे यहां तक कि इसी ग़फ़्लत की हालत में उन्हें मौत आ गई और वोह अन्धेरी क़ब्र में जा सोए, उन्हें उन के माल, गुलामों, अवलाद और मां बाप ने कोई फ़ाएदा न दिया, ।"

फ़रमाने इलाही है :

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ﴿۸۸﴾ اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿۸۹﴾ (پ۱۹، الشعراء، آیت:۸۸،۸۹)

*तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन न माल काम आएगा न बेटे मगर वोह जो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के हुज़ूर हाज़िर हुवा सलामत दिल ले कर*

(مکاشفۃ القلوب، باب فی العشق، ص ۳۴)

आह ! हर लम्हा गुनह की कषरतो भरामर है ग़-ल-बए शैतान है और नफ़्से बद अत़्वार है

ज़िन्दगी की शाम ढ़लती जा रही है हाए नफ़्स ! गर्म रोज़ो शब गुनाहों का ही बस बाज़ार है

(वसाइले बख़्शिश, स. 128)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सब्र का मिषाली मुज़ाहिरा

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने बेटे के इन्तिक़ाल पर भी सब्र का ऐसा मिषाली मुज़ाहिरा किया कि लोग दंग रह गए । चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق की वफ़ात के बा'द जो ख़ुत़्बा दिया उस में फ़रमाया : "अ़ब्दुल मलिक बचपन से ले कर वफ़ात तक मेरे दिल का चैन और आंखों की ठन्डक थे लेकिन आज से बढ़ कर उन्हों ने मेरी आंखों को कभी ठन्डक नहीं पहुंचाई ।" इस के बा'द तमाम सल्त़नत में पैग़ाम भेजा कि किसी क़िस्म का नौह़ा न किया जाए । फिर जब हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق को दफ़्न किया जा रहा था तो एक शख़्स ने बाएं हाथ का इशारा कर के कहा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **अमीरुल मोअमिनीन** को इस सब्र पर अज्र दे । फ़रमाया : गुफ़्त-गू

में बाएं हाथ से इशारा न करो, दाहिने से करो। वोह शख़्स बे इख़्तियार बोल उठा : मैं ने आज तक इस से हैरत अंगेज वाक़ेआ़ नहीं देखा कि एक शख़्स अपने अ़ज़ीज़ तरीन बेटे को दफ़्न कर रहा है, इस रन्जो ग़म की ह़ालत में भी उसे दाएं बाएं हाथ का ख़याल है !

(سیرت ابن عبدالحکم، ص ۳۰۳، ۳۰۴ملخصًا)

बेटे के दफ़्न के बा'द बयान

जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز के शहज़ादे को दफ़्न किया जा चुका तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه उन की क़ब्र के पास क़िब्ला रुख़ हो कर बैठ गए, लोगों ने आप के गिर्द ह़ल्क़ा बना लिया आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه ने फरमाया : बेटा ! **अल्लाह** तआ़ला तुम पर रह़्म करे बेशक तुम अपने बाप के साथ अच्छा सुलूक करने वाले थे, **अल्लाह** की क़सम ! जब से तुम **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से मुझे अ़त़ा हुए मैं तुम से ख़ुश रहा और इस से ज़ियादा ख़ुश और **अल्लाह** तआ़ला से अपना ह़िस्सा पाने का उम्मीद वार आज इस वक़्त हूं जब मैं ने तुम्हें इस मन्ज़िल व घर में रखा है जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हारे लिये बनाया है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म करे, तुम्हें बख़्शे और तुम्हें तुम्हारे अ़मल का अच्छा बदला इनायत करे, हम **अल्लाह** तआ़ला के फ़ैसले पर राज़ी और उस के हुक्म को तस्लीम करते हैं, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن फिर आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه क़ब्रिस्तान से लौट आए।

(حلیۃ الاولیاء ج۵ ص۳۹۱)

ता'ज़िय्यत पर रद्दे अ़मल

लोग ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق की वफ़ात पर ता'ज़िय्यत के कैसे ही रिक्क़त खेज़ जुम्ले इस्ति'माल करते

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز उन के जवाब में सब्र व शुक्र का ही इज़्हार फ़रमाते। रबीअ़ बिन समुरा आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास आए और कहा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को अज्रे अ़ज़ीम दे, आप के सिवा मुझे ऐसा कोई शख़्स नहीं नज़र आया कि चन्द रोज़ के वक़्फ़े में इतनी बड़ी आज़माइश का शिकार हुवा हो कि उस के बेटे, भाई और अ़ज़ीज़ तरीन गुलाम ने यके बा'द दीगरे वफ़ात पाई हो, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने आप के बेटे का सा बेटा, भाई जैसा भाई और गुलाम जैसा गुलाम नहीं देखा। येह सुन कर हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने सर झुका लिया। लोगों ने रबीअ़ से कहा : तुम ने **अमीरुल मोअमिनीन** को बे क़रार कर दिया। थोड़ी देर बा'द आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सर उठाया और फ़रमाया : रबीअ़ ! फिर से कहना तुम ने क्या कहा था ? उन्हों ने दोबारा वोही जुम्ले बोल दिये तो फ़रमाया : मुझे येह पसन्द नहीं है कि येह अमवात न होतीं (या'नी मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी हूं) (سیرت ابن عبدالحکم ص ۳۰۴)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से हमें येह म-दनी फूल मिला कि हमें भी ता'ज़िय्यत के जवाब में सब्र, सब्र और सिर्फ़ सब्र का मुज़ाहिरा करना चाहिये। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه हमें समझाते हुए लिखते हैं : यक़ीनन इन्सान की मौत उस के पसमन्द गान के लिये ज़बर दस्त इम्तिह़ान का बाइ़ष होती है। ऐसे मोक़अ़ पर सब्र करना और बिल ख़ुसूस ज़बान को क़ाबू में रखना ज़रूरी है, बे सब्री से सब्र का अज्र तो ज़ाएअ़ हो सकता है मगर

मरने वाला पलट कर नहीं आ सकता। मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن "**हदाइके बख़्शिश शरीफ़**" में फ़रमाते हैं :

आंखें रो रो के सुजाने वाले

जाने वाले नहीं आने वाले

(कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 492)

मगर क्या कीजिये ऐसे नादान भी इस जहान में मौजूद हैं जो अपने किसी क़रीबी अज़ीज़ म-षलन बाप, बेटे, भाई या वालिदा वग़ैरा की वफ़ात पर दामने सब्र हाथों से छोड़ देते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ या उस के मोहतरम फ़िरिश्तों के लिये ऐसे तौहीन आमेज़ कलिमात बक देते हैं जिन की वजह से उन के हाथों से ईमान भी जाता रहता है, ऐसी ही चन्द मिषालें मुला-हज़ा हों : चुनान्चे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 692 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "**कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब**" के सफ़हा 489 पर है :

फ़ौतगी में बके जाने वाले कुफ़्रिय्यात के बारे में सुवाल जवाब

"अल्लाह को ऐसा नहीं करना चाहिये" कहना कैसा ?

सुवाल : छोटे भाई की फ़ौतगी पर बड़े भाई ने सदमे की वजह से कहा कि "**अल्लाह** तआला को ऐसा नहीं करना चाहिये था।" बड़े भाई के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : येह कहना कुफ़्र है। क्यूंकि कहने वाले ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ए'तिराज़ किया।

"नेक लोगों की अल्लाह को भी ज़रूरत पड़ती है" कहना कैसा ?

सुवाल : एक नेक नमाज़ी आदमी फ़ौत हो गया, इस पर पड़ोसी ने कहा : "नेक लोगों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जल्दी उठा लेता है क्यूंकि ऐसों की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को भी ज़रूरत पड़ती है।" पड़ोसी का येह क़ौल कैसा है ?

जवबा : पड़ोसी का **क़ौल कुफ़्रिय्या** है। इस्लामी अक़ीदा येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी का भी मोह़ताज नहीं, वोह बे नियाज़ है। चुनान्चे **फु-क़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلام फ़रमाते हैं : किसी ने मुर्दे के बारे में कहा : "ऐ लोगो ! **अल्लाह** तआ़ला तुम से ज़ियादा इस का ह़ाजत मन्द है।" येह कहना **कुफ़्र** है। (مِنَحُ الرَّوْض ص۳۱۸)

"येह अल्लाह को चाहिये होगा" कहना कैसा है ?

सुवाल : एक नन्हा मुन्ना बच्चा छत से गिर कर फ़ौत हो गया, ता'ज़िय्यत करने वाली एक औ़रत बोली : "आप का फूल जैसा बच्चा **अल्लाह** पाक को चाहिये होगा इसी वास्ते उस ने ले लिया होगा।" उस औ़रत का येह कहना कैसा है ?

जवाब : उस औ़रत ने कुफ़्र बक दिया। **फु-क़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلام फ़रमाते हैं : किसी का बेटा फ़ौत हो गया, उस ने कहा : "**अल्लाह** तआ़ला को इस की ह़ाजत होगी।" येह क़ौल **कुफ़्र** है। क्यूंकि कहने वाले ने **अल्लाह** तआ़ला को मोह़ताज क़रार दिया।

(اَلْبَزَّازِيَّة على هامِش الْفَتاوَى الْهِندِيَّة ج۶ ص۳۴۹)

या अल्लाह ! तुझे बच्चों पर भी तरस नहीं आया ! कहना कैसा ?

सुवाल : एक आदमी का इन्तिक़ाल हो गया। उस की बेवा ने खूब वावेला मचाया और चीख़ चीख़ कर कहने लगी : "या **अल्लाह** ! तुझे मेरे छोटे छोटे बच्चों पर भी तरस नहीं आया !" बेवा के लिये क्या हुक्मे शरई है ?

जवाब : बेवा पर हुक्मे **कुफ़्र** है, क्यूंकि उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ज़ालिम करार दिया।

"या अल्लाह तुझे भरी जवानी पर भी रहूम न आया" कहना

सुवाल : एक नौ जवान का इन्तिक़ाल हो गया। इस की सोगवार मां ने ग़म से निढ़ाल हो कर रो कर पुकारा ! "या **अल्लाह** ! इस की भरी जवानी पर भी तुझे रहूम न आया ! अगर तुझे लेना ही था तो इस की बुढ़ी दादी या बुढ़े नाना को ले लेता !" सोगवार मां के येह कलिमात कैसे हैं ?

जवाब : येह कलिमात, **कुफ़्रिय्यात** से भर पूर हैं।

"या अल्लाह ! हम ने तेरा क्या बिगाड़ा है" कहने का हुक्मे शरई

सुवाल : एक घर में थोड़े थोड़े वक़्फ़े से दो अमवात हो गई। इस पर घर की बड़ी बी रोते हुए बड़बुडाने लगी : "या **अल्लाह** ! हम ने तेरा क्या बिगाड़ा है ! आख़िर म-लकुल मौत को हमारे ही घर वालों के पीछे क्यूं लगा दिया है !" बड़ी बी के येह अल्फ़ाज़ क्या हुक्म रखते हैं ?

जवाब : मज़्कूरा बुढ़िया की बकवास रब्बे काइनात की तौहीन और उस पर ए'तिराज़ात से भरपूर है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तौहीन और उस पर ए'तिराज़ करना **कुफ़्र** है। (कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 489)

महब्बत का मे'यार

जब हज़रते सय्यिदुना अब्दुल मलिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق के इन्तिक़ाल के बा'द एक मरतबा **अमीरुल मोअमिनीन** की ज़बान से उन के मु-तअ़ल्लिक़ तहसीन आमेज़ कलिमात निकले तो मस्लमा ने कहा : या **अमीरल मोअमिनीन** अगर वोह ज़िन्दा रहते तो आप उन्ही को वली अ़हद मुक़र्रर करते ? फ़रमाया : "नहीं।" उन्हों ने कहा : वोह क्यूं ! उन की ता'रीफ़ तो आप बहुत करते हैं ! फ़रमाया : मुझे ख़ौफ़ है कि कहीं वोह मह्ज़ महब्बते पि-दरी की वजह से महबूब न नज़र आते हों। (تاریخ الخلفاء ص ۱۹۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सिर्फ़ ख़ूनी रिश्ते के जोश के सबब मां बाप, अवलाद या किसी रिश्तेदार से महब्बत करना भी कारे षवाब नहीं, जब तक रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पाने की निय्यत न हो। मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : किसी बन्दे से सिर्फ़ इस लिये महब्बत करे कि रब तआला इस से राज़ी हो जाए, इस (महब्बत) में दुन्यावी ग़रज़ (और) रिया (या'नी दिखावा) न हो। इस महब्बत में मां बाप, अवलाद (और) अहले क़राबत (या'नी रिश्तेदार) मुसलमानों से महब्बत सब दाख़िल हैं जब कि रिज़ाए इलाही (عَزَّوَجَلَّ) के लिये (येह महब्बतें) हों।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 6 स. 584)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

म-दनी आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का पैग़ाम

अबू हम्माम नामी शख़्स का बयान है कि मैं हज के इरादे से घर से चला, हरम शरीफ़ पहुंच कर मनासिके हज अदा किये। ह-रमैन

तय्यिबैन से जुदाई का वक्त क़रीब आया तो मैं नवाफ़िल अदा करने "अबत़ह़" की जानिब गया। नवाफ़िल पढ़ने के बा'द वहां कुछ देर आराम के लिये बैठा तो ऊंघ आ गई, सर की आंखें बन्द हुईं तो दिल की आंखें खुल रही थी और **नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपना नूरानी चेहरा चमकाते मुस्कराते हुए मेरे ख़्वाब में तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया : "ऐ खुशबख़्त ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेरी सअ़्य (या'नी कोशिश) को क़बूल फरमा लिया है, तुम उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ के पास जाना और उस से कहना : "हमारे हां तुम्हारे तीन नाम हैं : (1) उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (2) अमीरुल मोअमिनीन (3) अबूल यतामा (या'नी यतीमों का वाली)। ऐ उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ! क़ौम के सरदारों और टेक्स वुसूल करने वालों पर अपना हाथ सख़्त रखना।" इतना फ़रमा कर **सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वापस तशरीफ़ ले गए। मैं बेदार हुवा और अपने रु-फ़क़ा के पास पहुंच कर कहा : "जाओ ! **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला की ब-रकत के साथ अपने वत़न लौट जाओ ! मैं किसी वजह से तुम्हारे साथ नहीं जा सकता।" फिर मैं "शाम" जाने वाले क़ाफ़िले में शामिल हो गया। दिमिश्क़ पहुंच कर **अमीरुल मोअमिनीन** का घर मा'लूम किया और ज़वाल से कुछ देर पहले वहां पहुंच गया। बाहरी दरवाज़े के पास एक शख़्स बैठा हुवा था मैं ने उस से कहा : "**अमीरुल मोअमिनीन** से मेरे लिये ह़ाज़िरी की इजाज़त त़लब करो।" वोह बोला : "उन के पास जाने से तुम्हें कोई नहीं रोकेगा, लेकिन अभी वोह लोगों के मसाइल ह़ल फ़रमा रहे हैं। बेहतर येही है कि

तुम कुछ देर इन्तिज़ार कर लो जैसे ही वोह फ़ारिग़ होंगे मैं तुम्हें बता दूंगा और अगर अभी ह़ाज़िर होना चाहो तो तुम्हारी मर्ज़ी।'' मैं इन्तिज़ार करने लगा। कुछ देर बा'द बताया गया : ''**अमीरुल मोअमिनीन** लोगों के मसाइल से फ़ारिग़ हो चुके हैं।'' चुनान्चे मैं ने ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर सलाम पेश किया। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه ने पूछा : ''तुम कौन हो ?'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''**मैं रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **का क़ासिद हूं और आप की त़रफ़ पैग़ाम ले कर आया हूं।**'' येह सुनते ही आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه ने मेरी त़रफ़ देखा उस वक़्त आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه पानी पी रहे थे। फ़ौरन पियाला एक त़रफ़ रखा, मुझे सलामती की दुआ़ दी फिर अपने पास बिठाया और पूछा : ''तुम कहां से आए हो ?'' मैं ने कहा : ब-सरा का रहने वाला हूं, पूछा : ''किस क़बीले से ता'ल्लुक़ रखते हो ?'' मैं ने कहा : ''फुलां क़बीले से।'' फ़रमाया : ''वहां इस साल गन्दुम कैसी हुई है ?'' तुम्हारी जव की फ़स्लें कैसी हुई हैं ? वहां के अंगूर कैसे हैं ? वहां की खजूरें कैसी हैं ? घी कैसा है ? वहां के हथियार और बीज की क्या ह़ालत है ?'' अल ग़रज़ ! आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه ने ख़रीदो फ़रोख़्त से मु-तअ़ल्लिक़ा तमाम चीज़ों के बारे में सुवाल किया। जब इन तमाम चीज़ों के मु-तअ़ल्लिक़ पूछ चुके तो पहली बात की त़रफ़ आए और कहा : ''तुम्हारा भला हो कि तुम बहुत अ़ज़ीम मुआ़-मला ले कर आए हो।'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''ह़ुज़ूर ! मुझे ख़्वाब में जो पैग़ाम मिला मैं वोही ले कर ह़ाज़िर हुवा हूं।'' फिर मैं ने ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से यहां पहुंचने तक तमाम वाक़ेआ़त आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه को कह सुनाए, मुझे ऐसा मह़सूस हुवा जैसे उन्हें मुझ पर ए'तिमात हो गया है और उन के नज़्दीक़ मेरी तमाम बातें

षाबित हो चुकी हैं। फ़रमाया : "तुम हमारे पास ठहरो, हम तुम्हारी ख़ैर ख़्वाही करेंगे।" मैं ने कहा : "हुज़ूर ! मैं पैग़ाम ले कर हाज़िर हुवा था, अब मैं अपने क़र्ज़ से सुबुक दोश हो चुका हूं, मुझे इजाज़त अ़ता फ़रमाइये।" आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه मुझे वहां छोड़ कर अन्दर तशरीफ़ ले गए। वापसी पर चालीस दीनारों से भरी एक थेली मेरी त़रफ़ बढ़ाते हुए फ़रमाया : "इस वक़्त मेरे पास इन दीनारों के इ़लावा कोई और चीज़ नहीं तुम बत़ौरे तोह़फ़ा येह क़बूल कर लो।"

मैं ने कहा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं कभी भी हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का पैग़ाम पहुंचाने के इ़वज़ कोई चीज़ नहीं लूंगा। बेह़द इसरार के बा वुजूद मैं ने उन दीनारों को हाथ तक न लगाया। मैं नें वापसी की इजाज़त चाही और अल वदाई सलाम ले कर उठने लगा तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने मुझे सीने से लगा लिया और दरवाज़े तक छोड़ने आए और अश्क बार आंखों से मुझे रुख़्सत किया। उस वलिय्ये कामिल से मुलाक़ात के बा'द दिल में उन की मह़ब्बत व ता'ज़ीम मज़ीद बढ़ गई थी। बसरा पहुंचने के कुछ ही दिन बा'द मुझे येह रूह़ फ़रसा ख़बर मिली कि वलिय्ये कामिल, **अमीरुल मोअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز हज़ारों आंखों को सोगवार छोड़ कर इस दुन्या से पर्दा फ़रमा गए हैं।" اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رَاجِعُوْن आप की जुदाई पर हर आंख अश्क बार थी,

अ़र्श पर धूमें मचीं, वोह मोमिने सालेह़ मिला
फ़र्श से मातम उठे, वोह त़य्यिबो त़ाहिर गया

फिर मैं मुजाहिदीन के हमराह जिहाद के लिये रूम चला गया। वहां मुझे वोही शख़्स मिला जो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز के दरवाज़े पर बैठा हुवा था और जिस के ज़रीए़ मैंने इजाज़त तलब की थी। मैं उसे पहचान न सका लेकिन उस ने मुझे पहचान लिया मेरे क़रीब आ कर सलाम किया और कहा : ऐ बन्दए ख़ुदा ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप का ख़्वाब सच्चा कर दिया है। **अमीरुल मोअमिनीन** के बेटे अ़ब्दुल मलिक बीमार हो गए थे। मैं रात के वक़्त उन की ख़िदमत पर मामूर था। जब मैं उन के पास होता तो **अमीरुल मोअमिनीन** चले जाते और नमाज़ पढ़ते रहते। जब वोह अपने बेटे के पास आ जाते तो मैं जा कर सो जाता। मेरे जाते ही आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه दरवाज़ा बन्द कर लेते और नमाज़ में मशग़ूल हो जाते। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! एक रात मैं ने अचानक **अमीरुल मोअमिनीन** के रोने की आवाज़ सुनी, आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه बड़े दर्द भरे अन्दाज़ में बुलन्द आवाज़ से रो रहे थे। मैं घबरा कर दरवाज़े की त़रफ़ लपका। दरवाज़ा अन्दर से बन्द था। मैं ने कहा : "ऐ **अमीरुल मोअमिनीन** ! क्या अ़ब्दुल मलिक को कोई ह़ादिषा पेश आ गया है ?" आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه मुसल्सल रोते रहे और मेरी बात की त़रफ़ बिलकुल तवज्जोह न दी। जब आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه को कुछ इफ़ाक़ा हुवा तो दरवाज़ा खोल कर फ़रमाया : "ऐ बन्दए ख़ुदा ! जान ले ! बे शक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस ब-सरी का ख़्वाब सच्चा कर दिखाया।" अभी अभी मुझे ख़्वाब में **हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबिय्यों के ताजवर, महबूबे रब्बे अकबर** صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नसीब हुई। आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से वोही इरशाद फ़रमाया जो उस ब-सरी ने पैग़ाम दिया था। (عیون الحکایات، ص ۳۲۶)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अमीरुल मोअमिनीन की फ़िक्रे मौत

हज़रते सय्यिदुना सालिम علیہ رحمۃ اللہ الحاکم फ़रमाते हैं : "एक मरतबा मुल्के रूम से कुछ क़ासिद हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز के पास आए तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "जब तुम लोग किसी को अपना बादशाह बनाते हो तो उस का क्या ह़ाल होता है ?" कहा : "जब हम किसी को अपना बादशाह बनाते हैं तो उस के पास एक गोरकन (या'नी क़ब्र खोदने वाला) आ कर कहता है : ऐ बादशाह ! जब तुझ से पहला बादशाह तख़्त नशीन हुवा तो उस ने मुझे हुक्म दिया : मेरी क़ब्र इस इस त़रह़ बनाना और मुझे इस त़रह़ दफ़्न करना । चुनान्चे क़ब्र तय्यार कर ली गई । फिर उस के पास कफ़न फ़रोश आ कर कहता है : ऐ बादशाह जब तुझ से पहला बादशाह तख़्त नशीन हुवा तो उस ने मरने से क़ब्ल ही अपना कफ़न, ख़ुश्बू और काफ़ूर वग़ैरा ख़रीद लिया फिर कफ़न को ऐसी जगह लटका दिया गया जहां हर वक़्त नज़र पड़ती रहे और मौत की याद आती रहे । ऐ मुसलमानों के अमीर ! हमारे बादशाह तो इस त़रह़ मौत को याद करते हैं ।" रूमी क़ासिद की येह बात सुन कर हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने फ़रमाया : "देखो ! जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मिलने की उम्मीद भी नहीं रखता वोह मौत को किस त़रह़ याद करता है, उसे भी मौत की कितनी फ़िक्र है ? " इस वाक़िए के बा'द आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बहुत ज़ियादा बीमार हो गए ।" (عیون الحکایات، ص۴۲۷)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى علٰى محمَّد

मौत की दुआ़ करवाई

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने शामी बुज़ुर्ग हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह अबी ज़-करिया رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه को अपने हां तशरीफ़ आवरी की दा'वत दी। जब वोह आए तो कहने लगे : "आप जानते हैं कि मैं ने आप को क्यूं ज़ह़मत दी है ? जवाब दिया : जी नहीं। फ़रमाया : एक ज़रूरी काम है, मगर मैं उस वक़्त तक नहीं बताऊंगा जब तक आप क़सम न उठा लें कि वोह काम ज़रूर करेंगे।" उन्हों ने बोहतैरा कहा : "या **अमीरल मोअमिनीन** जो हुक्म हो बजा लाऊंगा।" मगर फ़रमाया : "नहीं ! पहले क़सम उठाइये।" जब उन्हों ने क़सम उठा ली तो फ़रमाया : "दुआ़ कीजिये कि **अल्लाह** तआ़ला मुझे मौत दे दे।" हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह अबी ज़-करिया رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه ने तड़प कर फ़रमाया : तब तो मैं मुसलमानों का बद तरीन नुमाइन्दा हुवा और उम्मते मुह़म्मदिया علٰی صاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلام का बद तरीन दुश्मन ! फ़रमाया : बहुत ख़ूब ! ह़ज़रत ! आप ह़लफ़ उठा चुके हैं। ना चारा उन्हों ने आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه के लिये मौत की दुआ़ की लेकिन उस के फ़ौरन बा'द कहा : "ऐ **अल्लाह** इन के बा'द मुझे भी न रखना।" हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز का एक छोटा बच्चा वहां आ निकला, फ़रमाया : "और इस को भी,

क्यूंकि मुझे इस से मह़ब्बत है।" उन्हों ने बच्चे के लिये भी दुआ़ कर दी, चुनान्चे कुछ ही अ़र्से में उन तीनों का इन्तिक़ाल हो गया।

(سیرت ابن عبد الحکم ص ۹۵)

मौत की रग़बत

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِیْر की वफ़ात से कुछ पहले आप के भाई सहल, साहि़बज़ादे अ़ब्दुल मलिक और ख़ादिम मुज़ाहि़म का इन्तिक़ाल हो गया था। येह ह़ज़रात उमूरे ख़िलाफ़त में आप के मोईन व मददगार थे। एक जुमुआ़ आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ख़ुत़्बे के लिये तशरीफ़ लाए और लोगों को उन की सलाह़ व फ़लाह़ का हुक्म फ़रमाया, मगर लोगों ने इस से गिरानी मह़सूस की, आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को इस का बड़ा रंज हुवा, आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه घर तशरीफ़ ले गए, मा'मूल था कि जुमुआ़ के बा'द आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के साहि़ब ज़ादगान आप से क़ुरआने मजीद पढ़ा करते थे, चुनान्चे ह़स्बे मा'मूल वोह क़ुरआने मजीद पढ़ने के लिये आए, सब से पहले जिस ने तिलावत शुरूअ़ की उस ने येह आयतें पढ़ीं :

تِلْكَ اٰیٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِیْنِ ۝۲ لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا یَكُوْنُوْا مُؤْمِنِیْنَ ۝۳ اِنْ نَّشَاْ نُنَزِّلْ عَلَیْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ اٰیَةً فَظَلَّتْ اَعْنَاقُهُمْ لَهَا خٰضِعِیْنَ ۝۴

(پ۱۹،الشعرا:۲تا۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : येह आयतें हैं रोशन किताब की, कहीं तुम अपनी जान पर खेल जाओगे उन के ग़म में कि वोह ईमान नहीं लाए, अगर हम चाहें तो आसमान से उन पर कोई निशानी उतारें कि उन के ऊंचे ऊंचे उस के हुज़ूर झुके रह जाएं।

आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : मेरे इस बेटे की ज़बानी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने मुझे तसल्ली दी है। इस से आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعالٰى عَلَيْه का ग़म किसी क़दर हल्का हो गया, आप ने दुआ़ की : या **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ येह लोग मुझ से उक्ता गए हैं और मैं इन से उक्ता गया हूं, बस मुझे इन से और इन्हें मुझ से राह़त दिला दे । इस वाक़िए़ के बा'द आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعالٰى عَلَيْه को दोबारा मिम्बर पर जाना नसीब नहीं हुवा यहां तक कि दारे आख़िरत को रवाना हो गए। (سیرت ابن عبد الحکم ص ۹۵)

मुजा़हि़म बेहतरीन वजी़र

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر अपने साहि़बज़ादे अ़ब्दुल मलिक, भाई सहल और अपने ख़ादिम मुज़ाहि़म को थोड़े ही अ़र्से में सिपुर्दे ख़ाक कर चुके तो एक शामी ने आप से कहा : "**अमीरुल मोअमिनीन** को साहि़बज़ादे की वफ़ात का सदमा पहुंचा, **वल्लाह** ! मैं ने कोई बेटा नहीं देखा जो बाप का इतना फ़रमां बरदार और ख़ि़दमत गुज़ार हो फिर **अमीरुल मोअमिनीन** को भाई की वफ़ात का हादिषा पेश आया, **वल्लाह** ! मैं ने कोई भाई ऐसा नहीं देखा जो इस से बढ़ कर अपने भाई का ख़ैर ख़्वाह और नफ़्अ़ रसां हो।" मगर उन साहि़ब ने "मुज़ाहि़म" का ज़िक्र नहीं किया। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر ने फ़रमाया : क्या बात है आप ने "मुज़ाहि़म" का ज़िक्र नहीं किया ? ह़ालांकि वोह मेरे नज़दीक इन दोनों से कुछ कम रुत्बा नहीं रखता था। फिर दो या तीन मरतबा येह फ़रमाया : "मुज़ाहि़म ! **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तुम पर रह़्म करे, तुम ने मेरी बहुत सी दुन्यवी फ़िक्रों से किफ़ायत की और आख़िरत के मुआ़-मले में तुम मेरे बेहतरीन वज़ीर थे।" (سیرت ابن عبد الحکم ص ۱۰۲)

आ़फ़िय्यत की मौत की दुआ़

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز म-रज़ुल वफ़ात में मुब्तला हुए तो रेंगते हुए पानी के मश्कीज़े तक पहुंचे, खूब अच्छी त़रह़ वुज़ू किया फिर अपनी जाए नमाज़ में पहुंचे, दो नफ़्ल अदा किये फिर येह दुआ़ की : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तूने मेरे मददगारों "सहल, अ़ब्दुल मलिक और मुज़ाहिम" को उठा लिया, मगर इस से मेरी तुझ से मह़ब्बत बढ़ी है कम नहीं हुई, और मैं तेरी ने'मतों को पाने का मुश्ताक़ हो गया हूं, अब मुझे भी आ़फ़िय्यत के साथ मौत दे कि मैं न तो हुक़ूक़ व फ़राइज़ को ज़ाएअ़ करने वाला हूं न इन में कोताही करने वाला।" चुनान्चे आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस मरज़ से जांबर न हो सके यहां तक कि आप का विसाल हो गया। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۹۷)

मौत की दुआ़ करना कैसा ?

ह़दीषे पाक में है कोई दुन्यवी मुसीबत से परेशान हो कर मौत की तमन्ना न करे। (بخاری،ج۴،ص۱۳،الحدیث ۵۶۷۱) और दर ह़क़ीक़त दुन्यावी परेशानियों से तंग आ कर मौत की दुआ़ करना सब्रो रिज़ा व तस्लीमो तवक्कुल के ख़िलाफ़ है और ना जाइज़ है जब कि दीनी नुक़्सान के ख़ौफ़ से **जाइज़** है। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस की तफ़्सील बयान करते हुए लिखते हैं : मौत का खुशी के साथ इन्तिज़ार करना कि आते वक़्त ना गवारी न हो, उस वक़्त की ना गवारी مَعَاذَاللّٰہ बहुत सख़्त है, عِیاذاً باللّٰہ इस में सूए ख़ातिमा (या'नी बुरे ख़ातिमे) का ख़ौफ़ है, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

مَنْ اَحَبَّ لِقَاءَ اللّٰهِ اَحَبَّ اللّٰهُ لِقَاءَهٗ وَمَنْ كَرِهَ لِقَاءَ اللّٰهِ كَرِهَ لِقَاءَهٗ

या'नी जो अल्लाह से मिलना पसन्द करेगा अल्लाह उस का मिलना पसन्द फ़रमाएगा और जो अल्लाह से मिलने को मकरूह (या'नी ना पसन्द) रखेगा अल्लाह उस का मिलना मकरूह (या'नी ना पसन्द) रखेगा। हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम में कौन ऐसा है कि मौत को मकरूह न रखे ! फ़रमाया : येह मुराद नहीं बल्कि जिस वक़्त दम सीने पर आए उस वक़्त का ए'तिबार है उस वक़्त जो अल्लाह से मिलने को पसन्द रखेगा अल्लाह तआ़ला उस से मिलने को दोस्त रखेगा, और ना पसन्द तो ना पसन्द ।(ترمذی،ج٢ص٣٣٦،الحدیث١٠٦٩)(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 9, स.81)

ह़दीष में है : "कोई तुम से मौत की आरज़ू न करे मगर जब कि ए'तिमाद नेकी करने पर न रखता हो ।" (مسند احمد،ج٣ص٢٦٣،الحدیث٨٦١٥)

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه मज़ीद फ़रमाते हैं : ख़ुलासा येह कि दुन्यवी मुज़र्रतों (नुक़्सानात व परेशानियों) से बचने के लिये मौत की तमन्ना **ना जाइज़** है और दीनी मुज़र्रत (दीनी नुक़्सान) के ख़ौफ़ से **जाइज़** । (درمختار،ج٩ص٦٩١) (फ़ज़ाइले दुआ़, स. 183)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क्या आप पर जादू किया गया था ?

इब्तिदाए मरज़ में आ़म ख़याल येही था कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِیز पर जादू किया गया है लेकिन ख़ुद आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को अपनी बीमारी का अस्ली राज़ मा'लूम हो चुका था, चुनान्चे एक बार ह़ज़रते मुजाहिद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه

से पूछा कि मेरी निस्बत लोगों का क्या ख़याल है ? उन्हों ने जवाब दिया : "लोग समझते हैं कि आप पर जादू किया गया है।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने उस की तरदीद की : नहीं ! मैं मसहूर नहीं हूं (या'नी मुझ पर जादू नहीं किया गया), मुझे वोह वक़्त याद है जब मुझे ज़ह्र दिया गया। उस के बा'द एक ग़ुलाम को बुला कर पूछा तो उस ने ज़ह्र देने का इक़रार कर लिया। फ़रमाया : तुम मुझे ज़ह्र देने पर क्यूं कर आमादा हुए ? उस ने कहा : "मुझे हज़ार दीनार दे कर आज़ाद करने का वा'दा किया गया था।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने वोह दीनार मंगवा कर बैतुल माल में जम्अ़ करवा दिये और अपने क़ातिल से कह दिया : "तुम ऐसी जगह चले जाओ जहां कोई तुम तक पहुंच न सके।" (تاریخ الخلفاء ص۱۹۷)

जब त़बीब आया तो उस ने भी मरज़ की येही वजह बताई और इ़लाज की त़रफ़ तवज्जोह दिलाई लेकिन आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने इ़लाज करवाने से इन्कार कर दिया। (سیرت ابن جوزی ۱۷۳ ملخصًا)

आप को ज़ह्र क्यूं दिया गया ?

त़ाक़तवर अफ़राद ने ग़ासिबाना त़ौर पर मुसलमानों की जो जाएदादें अपने क़ब्ज़े में कर ली थीं, उन को ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने ख़लीफ़ा बनते ही निहायत सख़्ती के साथ वापस कर दिया, जिस ने उन लोगों में आ़म बरहमी फैला दी, लेकिन येह नाराज़ी सिर्फ़ ज़बान व क़लम तक मह़दूद नहीं रही, बल्कि उस ने एक ख़त़रनाक साज़िश की सूरत इख़्तियार कर ली और ह़ज़रते

सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز की वफ़ात इसी साज़िश का नतीजा है। चुनान्चे आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه के एक ख़ादिम को एक हज़ार अशरफियां दे कर आप को ज़हर दिलवाया गया।

लोगों की हमदर्दी

अ़ब्दुल ह़मीद बिन सुहैल का बयान है कि मेरी ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز के त़बीब से मुलाक़ात हुई तो मैं ने उस से पूछा : क्या आज तुम ने उन का पेशाब टेस्ट किया है ? तो कहने लगा : हां ! मगर मुझे उस में लोगों के दुख दर्द के इलावा कोई बीमारी दिखाई नहीं देती। (سیرت ابن جوزی ص ۳۱۶)

बिग़ैर क़मीस के रहना होगा

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز बीमार थे। मस्लमा बिन अ़ब्दुल मलिक इ़यादत के लिये आए देखा कि कुर्ता बहुत मैला हो रहा है, अपनी हमशीरा और आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه की ज़ौजा फ़ातिमा बिन्ते अ़ब्दुल मलिक से कहा : "उन की क़मीस धो दो।" अगले दिन उन्हों ने देखा तो क़मीस उसी त़रह़ थी तो अपनी बहन से नाराज़ हुए और कहा : "फ़ातिमा ! क्या मैं ने तुम्हें **अमीरुल मोअमिनीन** की क़मीस धोने का नहीं कहा था ? लोग इ़यादत करने आते हैं।" बहन ने जवाब दिया : "وَاللّٰهِ! مَالَهٗ قَمِيْصٌ غَيْرُهٗ" *या'नी **अल्लाह** तआ़ला की क़सम ! इन के पास बस येही एक क़मीस है।"* या'नी अगर इसे उतार कर धोएं तो उतनी देर इन को बिग़ैर क़मीस के रहना होगा। (سیرت ابن جوزی ص ۱۸۲)

अवलाद को वसिय्यत

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز बीमार हुए तो आप के बरादरे निस्बती हज़रते सय्यिदुना मस्लमा बिन अ़ब्दुल मलिक عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْمَلِك आए और अ़र्ज़ की : **अमीरुल मोअमिनीन** ! आप ने इस माल से अपनी ज़िन्दगी में तो अपनी अवलाद का मुंह बन्द ही रखा, कम अज़ कम उन के बारे में मुझे और दीगर लोगों को वसिय्यत ही कर जाते ताकि हम लोग आप के बा'द उन की गुज़र बसर का इन्तिज़ाम कर सकते, येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : मुझे बिठा दो। आप को बिठा दिया गया तो फ़रमाया : "मस्लमा ! मैं ने तुम्हारी बात सुनी, तुम ने जो येह कहा कि मैं ने इस माल से उन के मुंह बन्द किये रखे, खुदा गवाह है कि मैं ने अपनी अवलाद का ह़क़ कभी नहीं रोका मगर मैं येह नहीं कर सकता था कि दूसरों का ह़क़ छीन छीन कर इन्हें देता रहता, रही येह बात कि मैं इन की निगहदाश्त के लिये किसी को वसी बनाऊं तो उ़मर की अवलाद में दो ही क़िस्म के आदमी हो सकते हैं : नेक या बद, अगर वोह नेक हैं तो मुझे इस की फ़िक्र की ज़रूरत नहीं क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला खुद ही इसे मुस्तग़नी कर देगा, और अगर वोह बद है तो मैं क्यूं उसे माल दे कर **अल्लाह** की ना फ़रमानी पर इस की मदद करूं।"

फिर फ़रमाया : "मेरे बेटों को मेरे पास लाओ।" वोह आए तो उन्हें देख कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تعَالٰى عَلَيْه की आंखें डबडबा गईं और फ़रमाया : "मैं कुरबान जाऊं, येह बे चारे नौ उ़म्र हैं जिन्हें कंगाल छोड़ कर जा रहा हूं इन के पास कुछ भी तो नहीं।" फिर रोते हुए फ़रमाया : "मेरे बेटो !

मैं दो राहे पर खड़ा था, या तुम मालदार हो जाते और मैं जहन्नम का इंधन बन जाता, या तुम हमेशा के लिये फ़क़्रो क़ल्लाश हो जाते और मैं जन्नत में चला जाता, मेरे ख़याल में मेरे लिये येही दूसरा रास्ता बेहतर था, जाओ ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारा ह़ाफ़िज़ व निगहबान हो, जाओ ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारा ह़ाफ़िज़ व निगहबान हो, जाओ ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें रिज़्क़ देगा।" (سیرت ابن عبدالحکم ص۹۸ وسیرت ابن جوزی ص۳۲۱)

अमीरुल मोअमिनीन की म-दनी सोच

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! अवलाद के बारे में हमारे बुज़ुर्गाने दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن का कैसा म-दनी ज़ेह्न था ! मगर अफ़सोस कि आज हमारे मुआ़शरे में अकषर लोगों के ज़ेह्नों पर **दौलतों** और **ख़ज़ानों** के **अम्बार** जम्अ़ करने की धुन सुवार है और इस राहे पुर ख़ार में ख़्वाह कितनी ही तकलीफ़ से दो चार होना पड़े, परवाह नहीं, बस ! हर वक़्त दौलते दुन्या जम्अ़ करने की ह़िर्स है, अगर कभी आख़िरत की भलाई के लिये नेकियों की दौलत इकठ्ठी करने की त़रफ़ तवज्जोह दिलाई भी जाए तो मुला-ज़मत या कारोबारी मसरूफ़िय्यत वग़ैरा के बहाने आड़े आ जाते हैं, बाल बच्चों का दुन्यवी मुस्तक़्बिल संवारने की कोशिशों में अपना उख़रवी मुस्तक़्बिल भूल जाते हैं, अवलाद की दुन्यवी पढ़ाई फिर उन की शादी की फ़िक्र किसी और त़रफ़ ज़ेह्न जाने ही नहीं देती। **अल्लाह** तआ़ला हमारी इस्लाह़ फ़रमाए।

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

ब-रकत के नज़ारे

ख़लीफ़ा मन्सूर ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन क़ासिम बिन अबी बक्र से दरख़्वास्त की, कि मुझे नसीह़त कीजिये तो फ़रमाया : उस चीज़ की नसीह़त करूं जो मैं ने देखी है या उस चीज़ की जो मैं ने सुनी है ? उस ने कहा : जो आप ने देखी है। फ़रमाया : ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने ग्यारह बेटे छोड़ कर वफ़ात पाई और उन का कुल तर्का 17 दीनार था जिस में से कुछ दीनार उन के कफ़न दफ़्न में सर्फ़ हुए और बक़िय्या बेटों पर तक़्सीम हुवा और हर बेटे को 19 दिरहम मिले, हिशाम बिन अ़ब्दुल मलिक भी 11 बेटे छोड़ कर मरा और जब उस का तर्का तक़्सीम हुवा तो सब ने दस दस लाख पाया लेकिन मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز के एक बेटे को देखा कि एक दिन में सो घोड़े जिहाद के लिये पेश किये और हिशाम की अवलाद में से एक शख़्स को देखा कि लोग उस बेचारे को स-दक़ा दे रहे हैं। (سیرت ابن جوزی ص ۳۳۸)

वहीं लौटा दो

मस्लमा बिन अ़ब्दुल मलिक म-रज़े वफ़ात में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه ने उन को वसिय्यत फ़रमाई : "मेरी वफ़ात के वक़्त मेरे पास मौजूद रहना, तजहीज़ व तकफ़ीन का इन्तिज़ाम खुद करना, क़ब्र तक मेरे साथ जाना और लह़द में खुद उतारना।" फिर मस्लमा की त़रफ़ देखा और फ़रमाया : "ज़रा ग़ौर करो मस्लमा ! तुम मुझे कहां छोड़ कर आओगे और दुन्या मुझे किन ह़ालात में क़ब्र के

हवाले करेगी ?" मस्लमा ने अ़र्ज़ की : "**अमीरुल मोअमिनीन** ! कोई (माली) वसिय्यत फ़रमाइये।" फ़रमाया : "मेर पास माल ही नहीं जिस की वसिय्यत करूं।" अ़र्ज़ की : "मेरे पास एक लाख दीनार हैं आप जो चाहें वसिय्यत फ़रमाइये।" फ़रमाया : "येह जहां से लिये हैं, वहीं लौटा दो।" मस्लमा ने अश्कबार आंखों से कहा : या **अमीरल मोअमिनीन** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को जज़ाए ख़ैर अ़ता फ़रमाए, **वल्लाह** ! आप ने हमारे सख़्त दिलों को नर्म कर दिया।

(سیرت ابن عبدالحکم ص۱۰۵ و سیرت ابن جوزی ص۳۲۰)

बा'द के ख़लीफ़ा को वसिय्यत

किसी ने अ़र्ज़ की : या **अमीरल मोअमिनीन** ! अपने बा'द के ख़लीफ़ा "यज़ीद बिन अ़ब्दुल मलिक" के लिये वसिय्यत व नसीहत की कोई तह़रीर लिखवा दीजिये। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने कातिब को हुक्म फ़रमाया लिखो : **अम्मा बा'द** ! ऐ यज़ीद ! ग़फ़लत के वक़्त की लग़्ज़िश से बच कर रहना क्यूंकि उस का इज़ाला नहीं हो सकता, न रुजूअ़ ही की तौफ़ीक़ होती है, देखो ! तुम इन सारी चीज़ों को उन लोगों के लिये छोड़ जाओगे जो तुम्हें कलिमए ख़ैर से भी याद नहीं करेंगे और उस ज़ात (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) की त़रफ़ लौट कर जाना है जिस के यहां तुम्हारे उ़ज़्र व मा'ज़िरत की कोई शुनवाइ नहीं होगी। **वस्सलाम**। (سیرت ابن عبدالحکم ص۱۰۳) येह भी लिखा : "तुम जानते हो कि उमूरे ख़िलाफ़त के मु-तअ़ल्लिक़ मुझ से सुवाल किया जाएगा, और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ मुझ से इस का ह़िसाब लेगा और मैं इस से अपना कोई काम न छुपा सकूंगा, अगर ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ मुझ से राज़ी

हो गया तो मैं काम्याब रहूंगा और एक त़वील अ़ज़ाब से बचूंगा और अगर मुझ से नाराज़ हुवा तो अफ़सोस है मेरे अन्जाम पर, मैं ख़ुदाए वह्‌दहू ला शरी-क-लहू से येह दुआ़ करता हूं कि वोह मुझे अपनी रह़मत के तुफ़ैल आग से नजात दे और अपनी रिज़ा मन्दी से जन्नत अ़त़ा करे। तुम्हें चाहिये कि तक़्वा इख़्तियार करो और रिआ़या का ख़याल रखो क्यूंकि तुम भी कुछ अ़र्से बा'द क़ब्र में उतर जाओगे लिहाज़ा तुम्हें ग़फ़लत में डूब कर ऐसी ग़-लत़ी नहीं करनी चाहिये जिस की तुम कोई तलाफ़ी न कर सको। सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का एक बन्दा था जिस ने इन्तिक़ाल से पहले मुझे ख़लीफ़ा बनाया और मेरे लिये ख़ुद बैअ़त ली और मेरे बा'द तुम को वली अ़हद मुक़र्रर किया, मुझे **अमीरुल मोअमिनीन** का मन्सब इस लिये नहीं मिला था कि मैं बहुत सी बीबियों का इन्तिख़ाब करूं और मालो दौलत जम्अ़ करूं क्यूंकि ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ने (ख़िलाफ़त से पहले ही) मुझ को इस से बेहतर सामान दिये थे लेकिन मैं सख़्त ह़िसाब और नाज़ुक सुवाल से डरता हूं।" (سیرت ابن جوزی ۳۱۷ ملخصًا)

एक दिन तुम्हें भी इसी त़रह़ होना है

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز का वक़्ते विसाल क़रीब आया तो ह़ाज़िरीन को वसिय्यत फ़रमाई : "मैं तुम्हें अपने इस (वक़्ते नज़्अ़ के) ह़ाल से डराता हूं कि एक दिन तुम्हें भी इसी त़रह़ होना है।" (اِحیاءُ العُلوم ج ۴ ص ۵۸۲)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ने अपनी इस वसिय्यत में कई फ़वाइद व फ़ज़ाइल के हुसूल का नुस्ख़ा बताया कि मौत की याद गुनाहों से बचाती, दिलों को चमकाती, हुब्बे दुन्या से बचाती, अ़क़्ल मन्दी दिलाती और लज़्ज़ाते दुन्या को मिटाती है काश ! हम हर दम मौत को याद रखने और उस के लिये तय्यारी करने वाले बन जाएं। मौत की आमद का यक़ीन तो हर एक को है लेकिन इस के लिये तय्यारी कोई कोई करता है। हज़रते सय्यिदुना शफ़ीक़ बिन इब्राहीम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَظِيْم फ़रमाते हैं : लोग येह तो कहते हैं कि मौत आ कर ही रहेगी लेकिन उन के आ'माल ऐसे हैं जैसे उन्हों ने कभी मरना ही न हो। (تنبيهُ الغَافِلِين ص١٧)

मैं अपने आप को इस क़ाबिल नहीं समझता

म-रज़ुल मौत में लोगों ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز को मश्वरा दिया कि अगर आप मदीने में जा कर वफ़ात पाते तो **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم, हज़रते सय्यिदैना अबू बक्र व उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعالٰی عَنْهُمَا के साथ दफ़्न होते, इस मदफ़ने पाक में एक क़ब्र की जगह और है। फ़रमाया : मैं अपने आप को **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पहलू में दफ़्न होने के क़ाबिल नहीं समझता।

(سیرت ابن جوزی ص ٢٠٥)

क़ब्र में तबर्रुकात रखने की वसिय्यत

नूर वाले आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के चन्द मूए मुबारक और नाख़ुन मंगवा कर कफ़न में रखने की वसिय्यत भी फ़रमाई।

(طبقات ابن سعد، ج ٥، ص ٣١٨)

क़ब्र की जगह ख़रीदी

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِيْر ने अपनी क़ब्र की जगह बीस दीनार में और बा'ज़ों के बक़ौल दस दीनार में ख़रीदी थी। (سیرت ابن جوزی ص ۳۲۳ وسیرت ابن عبدالحکم ص ۹۵) चुनान्चे अबू उमय्या का बयान है कि **अमीरुल मोअमिनीन** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن ने इन्तिक़ाल से पहले कुछ दीनार दिये मुझे फ़रमाया : जाओ गाऊं के लोगों से मेरी क़ब्र की ज़मीन ख़रीद लो और अगर वोह इन्कार करें तो वापस आ जाना। मैं लोगों के पास पहुंचा और ज़मीन ख़रीदना चाही तो उन्हों ने कहा : **वल्लाह** ! अगर हमें तुम्हारे वापस लौट जाने का अन्देशा न होता तो हम येह दीनार क़बूल न करते। (تاریخ الخلفاء ص ۱۸۸)

सादा कफ़न

जब हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ الْعَزِيز की बीमारी बढ़ गई तो आप رَحْمَةُ اللهِ تعَالٰی عَلَیْه ने मस्लमा बिन अ़ब्दुल मलिक को हुक्म फ़रमाया : "मेरे माल में से दो दीनार ले कर मेरे लिये कफ़न ख़रीद लाओ।" उस ने अ़र्ज़ की : "ऐ **अमीरुल मोअमिनीन** ! आप जैसी शख़्सिय्यत को दो दीनार का कफ़न दिया जाएगा !" तो इरशाद फ़रमाया : "ऐ मस्लमा ! अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझ से राज़ी हुवा तो इस कम क़ीमत कफ़न को इस से बेहतर से बदल देगा और अगर नाराज़ हुवा तो येह आग का ईंधन बन जाएगा।" मन्क़ूल है कि आप رَحْمَةُ اللهِ تعَالٰی عَلَیْه को कच्चे धागे से बुने हुए कपड़े का कफ़न पहनाया गया। एक क़ौल के मुताबिक़ वोह य-मनी चादर का था। (الروض الفائق، ص ۲۰۵)

दुन्या से क्या ले कर जा रहा हूं ?

अ़म्र बिन कै़स का बयान है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَدِيۡر ने विसाल से क़ब्ल वहां पर मौजूद लोगों से फ़रमाया : मेरी ह़ालत से इ़ब्रत पकड़ो क्यूंकि एक दिन तुम्हें भी मौत का सामना करना है और जब तुम मुझे क़ब्र में उतार चुको तो देख लेना कि मैं तुम्हारी दुन्या से क्या ले कर जा रहा हूं। (سیرت ابن جوزی ص ۳۲۲)

मौत की सख़्तियों का फ़ाएदा

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَحۡمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَيۡه फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رحمة اللّٰهِ العَزِيز ने इरशाद फ़रमाया : "मैं पसन्द नहीं करता कि मुझ पर मौत की सख़्तियों को आसान कर दिया जाए क्यूंकि येही तो वोह आख़िरी चीज़ है जो बन्दए मोमिन को अज्रो षवाब अ़त़ा करती है।" (سیرت ابن جوزی ص ۳۲۴)

वक़्ते वफ़ात रोने लगे

म-रज़ुल मौत में आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَيۡه रोने लगे तो अ़र्ज़ की गई : या **अमीरल मोअमिनीन** आप क्यूं रोते हैं ? आप को तो ख़ुश होना चाहिये कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप के ज़रीए़ बहुत सी सुन्नतों को ज़िन्दा फ़रमाया है और इन्साफ़ का बोल बाला किया है, येह सुन कर आप ख़ौफ़े ख़ुदा की वजह से और ज़ियादा रोए और फ़रमाया : क्या मुझे इस मख़्लूक़ के मुआ-मले की जवाब देही के लिये खड़ा नहीं किया जाएगा ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मुझ पर अ़द्ल किया गया तो मैं डरता हूं कि फंस जाऊंगा और उन के दलाइल के सामने कुछ नहीं कह पाऊंगा। (تاریخِ دِمشق، ج ۴۵،ص ۲۵۴)

कलिमा शरीफ़ पढ़ा

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز रोज़ाना येह दुआ़ मांगा करते थे : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी मौत को मुझ पर आसान कर दे । चुनान्चे उन की ज़ौजए मोह़तरमा ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा बिन्ते अ़ब्दुल मलिक رحمۃ اللہ تعالی علیہا का बयान है कि उन की वफ़ात के वक़्त मैं उन के ख़ैमे से निकल कर मकान में बैठ गई तो मैं ने उन को येह आयत पढ़ते हुए सुना :

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِیْنَ لَا یُرِیْدُوْنَ عُلُوًّا فِی الْاَرْضِ وَ لَا فَسَادًا ؕ وَ الْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِیْنَ ﴿۸۳﴾ (پ۲۰،القصص:۸۳)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : येह आख़िरत का घर हम उन के लिये करते हैं जो ज़मीन में तकब्बुर और फ़साद नहीं चाहते और आख़िरत की भलाई परहेज़ गारों के लिये है ।

इस के बा'द वोह बिलकुल ही पुर सुकून हो गए, न कुछ बोले, न कोई ह़-रकत की । तो मैं ने कनीज़ से कहा कि ज़रा देखना ! **अमीरुल मोअमिनीन** का क्या ह़ाल है ? वोह दौड़ कर गई तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه वफ़ात पा चुके थे । (سیرت ابن جوزی ص ۳۲۵) और बा'ज़ लोगों का बयान है कि ऐन वफ़ात के वक़्त आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया कि मुझे बिठा दो जब लोगों ने उन्हे बिठाया तो बैठ कर उन्हों ने येह कहा : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू ने मुझे कुछ बातों का हुक्म फ़रमाया तो मैं ने कोताही की और तू ने मुझे कुछ बातों से मन्अ़ फरमाया तो मैं ने ना फ़रमानी की । तीन

मरतबा येही कहा फिर कलिमए त़य्यिबा لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ पढ़ा और नज़र जमा कर देखा तो लोगों ने कहा कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ क्या देख रहे हैं ? तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया कि मैं कुछ सब्ज़ पोश लोगों को देख रहा हूं जो न इन्सान है न जिन्न, येह कहा और उन की रूह़ परवाज़ कर गई। (احیاء العلوم ج ۴ ص ۸۰۴ و ۹۰۴)

मरते वक़्त कलिमए त़य्यिबा पढ़ने की फ़ज़ीलत

ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ **की क़सम !** ख़ुश क़िस्मत है वोह मुसलमान जिस को मरते वक़्त कलिमा नसीब हो जाए उस का आख़िरत में बेड़ा पार है। चुनान्चे **नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, मालिके जन्नत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस का आख़िरी कलाम لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ हो वोह दाख़िले जन्नत होगा। (ابوداؤد شریف، الحدیث ۳۱۱۶، ج ۳ ص ۱۳۲)

फ़ज़्लो करम जिस पर भी हुवा लब पर मरते दम कलिमा
जारी हुवा जन्नत में गया لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दमे रुख़्सत तिलावते क़ुरआन की

उ़बैद बिन ह़स्सान कहते हैं कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ العَزِیز की वफ़ात का वक़्त बिलकुल ही क़रीब आ पहुंचा तो उन्हों ने हर शख़्स को घर में से निकल जाने का हुक्म दिया। उन की ज़ौजए मोह़तरमा ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा बिन्ते

अ़ब्दुल मलिक رحمۃاللہ تعالی علیہا और बरादरे निस्बती मस्लमा दरवाज़े पर बैठ गए, उन्हों ने सुना कि आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बुलन्द आवाज़ से कह रहे हैं : **मरहबा** ! खुश आमदीद है उन चेहरों के लिये जो न आदमी हैं न जिन्न फिर येह आयत पढ़ी :

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِى الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ٥

फिर लोगों ने घर में दाखि़ल हो कर देखा तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ वफ़ात पा चुके थे। (تاریخ الخلفاء ص ۱۹۶)

वफ़ात के वक़्त उ़म्रे मुबारक

तक़रीबन 20 दिन बीमार रहने के बा'द 25 रजब, 101 हि. बुध के दिन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ العَزِیز ने अपना सफ़रे ह़यात मुकम्मल कर लिया और अपने ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी से जा मिले। उस वक़्त आप की उ़म्र सिर्फ़ 39 साल थी और आप तक़रीबन अढ़ाई साल ख़लीफ़ा रहे। आप को ह़लब के क़रीब दैर सिमआ़न में सिपुर्दे ख़ाक किया गया जो शाम में है। (बा'ज़ रिवयतों में तारीखे़ वफ़ात 20 रजब और उ़म्र 40 साल भी बयान की गई है)

(طبقات ابن سعد، ج ۵، ص ۳۱۹)

ख़ैरुन्नास का इन्तिक़ाल हो गया

जब ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन ब-सरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ القَوِی को ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃ اللّٰہِ العَزِیز की वफ़ात की ख़बर मिली तो फ़रमाया : مَاتَ خَيْرُ النَّاس *या'नी बेहतरीन आदमी का इन्तिक़ाल हो गया है।* (سیرت ابن جوزی ص ۳۵)

ख़ूबियां बयान करने वाले के लिये इमाम अह़मद बिन ह़म्बल की बिशारत

हज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं :

اذا رَأَيتَ الرَّجُلَ يُحِبُّ عُمَرَ بنِ عَبدِ العَزِيزِ وَيَذكُرُ مَحَاسِنَهٗ وَيَنشُرُهَا فَاعلَمْ اَنَّ مِنْ وَّرَاءِ ذٰلِكَ خَيرًا اِنْ شَاءَ اللّٰهُ

या'नी जब तुम देखो कि कोई शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز से मह़ब्बत रखता है और उन की ख़ूबियों को बयान करने और उन्हें आ़म करने का एहतिमाम करता है तो उस का नतीजा ख़ैर ही ख़ैर है, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ (سیرت ابن جوزی ص ۷۴)

अख़्लाक़ी ख़ूबियां

अ़ब्दुल मलिक बिन उ़मैर ने एक मोक़अ़ पर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز की अख़्लाक़ी ख़ूबियां इस त़रह़ गिनवाई : **अमीरुल मोअमिनीन** ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़म करे, आप निगाहों को झुकाए रहते थे, पाक दामन थे, फ़य्याज़ थे, ठठ्ठा मज़ाक़ नहीं करते थे, किसी पर ऐ़ब लगाते थे न किसी की ग़ीबत करते थे। (سیرت ابن جوزی ص ۳۳۰)

नजीबे क़ौम

मुह़म्मद बिन अ़ली बिन हुसैन से ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز के बारे में पूछा गया तो फ़रमाया : तुम्हें मा'लूम नहीं कि हर क़ौम में एक नजीब[1] होता है

مدینہ

1 : विलायत का एक मन्सब

और बनी उमय्या के नजीब शख़्स उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ العَزِيز) हैं। (حلیۃ الاولیاء ج۵ ص ۲۸۸)

बा'दे विसाल चेहरा जगमगा उठा

हज़रते सय्यिदुना रजा बिन हैवत رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْہ का बयान है कि हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ العَزِيز ने अपने म-रज़े विसाल में मुझ से फ़रमाया : "आप मुझे ग़ुस्ल देने, कफ़न पहानाने और लह़द में उतारने वालों में रहियेगा। जब लोग मुझे लह़द में उतार दें तो कफ़न की गिरह खोल कर मेरा चेहरा देख लीजियेगा। जब आप عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ العَزِيز ने इन्तिक़ाल फ़रमाया तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْہ को ग़ुस्ल देने वालों में मैं भी शामिल था। आप को क़ब्र में उतारे जाने के बा'द जब मैं ने गिरह खोल कर आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْہ का चेहरए अन्वर देखा तो वोह क़िब्ला रुख़ था और चौदहवीं के चांद की त़रह़ चमक दमक रहा था। येह देख कर मुझे बेह़द ख़ुशी हुई।" (الروض الفائق ص ۲۰۴)

आसमानी रुक़्आ़

हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन माहक़ رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْہ का बयान है कि जब हम हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمة اللّٰهِ العَزِيز की क़ब्रे मुबारक की मिट्टी बराबर कर रहे थे तो एक आमसानी रुक़्आ़ हम पर गिरा जिस पर लिखा था :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ، اَمَانٌ مِّنَ اللّٰهِ لِعُمَرَبْنِ عَبْدِالْعَزِيْزِ مِنَ النَّارِ

*या'नी येह **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ के लिये जहन्नम से अमान का परवाना है।* (سیرت ابن جوزی ص ۳۲۸)

अज़ाब से छुटकारे का बिशारत नामा

मुआ़ज़ मौला ज़ैद बिन तमीम का बयान है कि बनू तमीम के एक शख़्स ने ख़्वाब में आसमान से उतरने वाली एक खुली किताब को देखा जिस में वाजेह़ अल्फ़ाज़ में लिखा था :

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ येह ग़ालिब हिक्मत वाले रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब से छुटकारे का परवाना है।

(حلیۃ الاولیاء ج۵ ص ۳۷۰)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہُ تَعالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

बूढ़े राहिब की अ़क़ीदत

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ العَزِیز के साहिबज़ादे अ़ब्दुल्लाह एक जज़ीरे में एक बूढ़े राहिब के सोमए़ के पास किसी झोंपडी में ठहरे तो वोह उन से मुलाक़ात के लिये नीचे उतर आया, इस से पहले उसे किसी के लिये उतरते हुए न देखा गया था। बुढ़े राहिब ने कहा : क्या तुम जानते हो में नीचे क्यूं उतरा हूं ? अ़ब्दुल्लाह ने कहा : नहीं। राहिब कहने लगा :

لِحَقِّ اَبِیۡكَ اِنَّا نَجِدُہٗ مِنۡ اَئِمَّۃِ الۡعَدۡلِ بِمَوۡضِعِ رَجَبٍ مِنَ الۡاَشۡھُرِ الۡحُرُمِ

या'नी तुम्हारे वालिद के ह़क़ की वजह से, बे शक हम उन्हें आ़दिल अइम्मा में से इसी त़रह़ पाते हैं जैसे रजब के महीने को हु़रमत वाले महीनों में।

(سیرت ابن جوزی ص ۵۷)

सिद्दीक़ की क़ब्र

ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ बिन अ़ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی का बयान है कि मैं शाम गया तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز के मज़ार शरीफ़ पर ह़ाज़िरी का इरादा किया मगर मुझे कोई ऐसा शख़्स न मिल सका जो उन के मज़ार शरीफ़ का पता बताता, बिल आख़िर एक राहिब से मुलाक़ात हुई, उस से पूछा तो कहने लगा : तुम "**सिद्दीक़**" की क़ब्र तलाश कर रहे हो, वोह फ़ुलां जगह पर है।

(سیرت ابن جوزی ص ۳۳۱)

सर ज़मीने सिमआ़न की ख़ुश नसीबी

ह़ज़रते अबू बक्र बिन इयाश رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि दैर सिमआ़न की सर ज़मीन से एक ऐसे मर्दे कलन्दर (या'नी ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़) का ह़श्र होगा जो अपने रब عَزَّوَجَلَّ से बहुत ज़ियादा डरने वाला था। (طبقات ابن سعد، ج۵، ص۳۲۰)

ख़िलाफ़त से वफ़ात तक का सफ़र

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने ख़िलाफ़त के बा'द न कोई नई सुवारी ख़रीदी, न किसी औ़रत से निकाह़ किया, न नई बांदी रखी, यहां तक कि आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْہ का विसाल हो गया और ख़िलाफ़त से वफ़ात तक कभी आप को खुल कर हंसते नहीं देखा गया। आप की अहलियए मोह़्तरमा फ़रमाती हैं कि ख़िलाफ़त से वफ़ात तक आप ने तीन मरतबा के सिवा कभी ग़ुस्ले जनाबत नहीं किया। (سیرت ابن عبد الحکم ص ۴۴)

ख़िलाफ़त से पहले और ख़िलाफ़त के बा'द

हज़रते सय्यिदुना अबू ह़ाज़िम عليه رحمة الله المُنعم फ़रमाते हैं : "जब हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز ख़लीफ़ा बन गए तो एक दिन मैं उन से मुलाक़ात के लिये गया। वोह लोगों के दरमियान तशरीफ़ फरमा थे। इस लिये मैं उन्हें न पहचान सका लेकिन उन्हों ने मुझे पहचान लिया और फ़रमाया : "ऐ अबू ह़ाज़िम ! मेरे क़रीब आओ।" मैं उन के क़रीब गया और ह़ैरत से पूछा : "क्या आप ही **अमीरुल मोअमिनीन** उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيهِ رحمةُ اللّٰهِ العَزِيز हैं ?" फ़रमाया : "हां ! मैं ही उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ हूं।" मैं ने कहा : "जिस वक़्त आप **मदीनए मुनव्वरा** زادَهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّ تعظِيماً وَّ تَكرِيماً में हमारे अमीर थे उस वक़्त आप का ह़ुस्नो जमाल उ़रूज पर था, चेहरा इन्तिहाई ताबां और रोशन था, आप के पास बेहतरीन लिबास और बहुत ही उ़म्दा सुवारियां थीं, आप के कषीर ख़ुद्दाम थे और आप की रिहाइश गाह बहुत ही उ़म्दा थी, अब आप को किस चीज़ ने इस ह़ाल में पहुंचा दिया ? ह़ालांकि अब तो आप **अमीरुल मोअमिनीन** हैं, अब तो आप के पास ज़ियादा आसाइशें होनी चाहियें थीं !" येह सुन कर वोह रोने लगे और फ़रमाया : "अबू ह़ाज़िम ! उस वक़्त मेरा क्या ह़ाल होगा जब मैं अन्धेरी क़ब्र में पहुंच जाऊंगा और मेरी आंखें बह कर मेरे रुख़्सारों पर आ जाएंगी, मेरा पेट फट जाएगा, ज़बान ख़ुश्क हो जाएगी और कीड़े मेरे जिस्म पर रेंग रहे होंगे !" फिर रोते हुए फ़रमाने लगे : "मुझे वोही ह़दीष सुनाइये जो **मदीनए मुनव्वरा** में सुनाई थी। तो मैं ने कहा : "या **अमीरल मोअमिनीन** मैं ने हज़रते सय्यिदुना

अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को येह फ़रमाते हुए सुना कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**तुम्हारे सामने दुश्वार गुज़ार घाटी है जिस से सिर्फ़ कमज़ोर और नह़ीफ़ लोग ही गुज़र सकेंगे।**" (حلیۃ الاولیاء،مسند عمر بن عبدالعزیز،رقم:۸۹۲۷،ج۵،ص۳۳۳)

येह ह़दीषे पाक सुन कर **अमीरुल मोअमिनीन** बहुत देर तक रोते रहे, फिर फ़रमाया : "ऐ अबू ह़ाज़िम ! क्या मेरे लिये येह बेहतर नहीं कि मैं अपने जिस्म को कमज़ोर व नह़ीफ़ बना लूं ताकि उस होलनाक वादी से गुज़र सकूं ! लेकिन मुझे इस ख़िलाफ़त की आज़माइश में मुब्तला कर दिया गया है, मैं नहीं जानता कि मुझे नजात मिलेगी या नहीं ?"

इतना कहने के बा'द आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पर ग़शी त़ारी हो गई, इस पर लोगों ने अपनी अपनी राय देना शुरूअ़ कर दी लेकिन मैं ने लोगों से कहा : "तुम्हें क्या मा'लूम ! येह किस आज़माइश से दो चार हैं।" अचानक **अमीरुल मोअमिनीन** ने रोना शुरूअ़ कर दिया और इतना ज़ोर से रोए कि हम सब ने उन की आवाज़ सुनी फिर यक दम आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मुस्कराने लगे। मैं ने पूछा : "**अमीरुल मोअमिनीन** ! हम ने आप को बड़ी तअ़ज्जुब खेज़ ह़ालत में देखा, पहले तो खूब रोए फिर मुस्कराना शुरूअ़ कर दिया, इस में क्या राज़ है ?" उन्हों ने पूछा : "क्या तुम ने मुझे इस ह़ालत में देख लिया ?" मैं ने कहा : "जी हां ! हम सब ने आप की येह तअ़ज्जुब खेज़ ह़ालत देखी है।" फ़रमाने लगे : "बात दर अस्ल येह है कि जब मुझ पर ग़शी त़ारी हुई तो मैं ने ख़्वाब देखा कि क़ियामत क़ाइम हो चुकी है और

मख़्लूक़ हि़साबो किताब के लिये मैदाने मह़शर में जम्अ़ है, तमाम उम्मतों की 120 सफ़ें हैं जिन में से अस्सी (80) सफ़ें उम्मते मुह़म्मदिया على صاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلام की हैं, निदा दी गई : "अ़ब्दुल्लाह बिन उ़ष्मान अबू बक्र सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) कहां हैं ?" चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को फ़िरिश्तों ने बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में ह़ाज़िर किया। उन से मुख़्तसर हि़साब लिया गया और उन्हें दाईं जानिब जन्नत की त़रफ़ जाने का हुक्म हुवा। फिर हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को आवाज़ दी गई। वोह भी बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ में ह़ाज़िर किये गए और मुख़्तसर हि़साब के बा'द उन्हें भी जन्नत का मुज़्दा सुना दिया गया, फिर हज़रते सय्यिदुना उ़ष्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को भी मुख़्तसर हि़साब के बा'द जन्नत में जाने का हुक्म सुनाया गया फिर हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم को निदा दी गई। चुनान्चे वोह भी बारगाहे अह़्-कमुल ह़ाकिमीन عَزَّوَجَلَّ में ह़ाज़िर हो गए और उन्हे भी मुख़्तसर हि़साब के बा'द जन्नत का परवाना मिल गया। जब मैं ने देखा कि जल्द ही मेरी भी बारी आने वाली है तो मैं मुंह के बल गिर पड़ा, मुझे मा'लूम नहीं कि ख़ु-लफ़ाए अ-रबआ़ رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के बा'द वालों के साथ किया मुआ़-मला पेश आया ? फिर निदा दी गई : उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ कहां है ? मेरी ह़ालत ग़ैर हो गई और मैं पसीने में शराबोर हो गया, बहर ह़ाल मुझे बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में ह़ाज़िर किया गया और मुझ से हि़साब किताब शुरूअ़ हुवा और हर उस फ़ैसले के बारे में पूछा गया जो मैं ने किया ह़त्ता कि घुटली और उस के छिलके

तक के बारे में पुछगछ की गई, फिर मुझे बख़्श दिया गया।''

(عیون الحکایات،ص۱۷)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।* اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

परन्दे की त़रह़ फड़फड़ाने लगते

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز की वफ़ात के बा'द कुछ फु-क़हाए किराम ता'ज़िय्यत की ग़रज़ से आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ौजए मोह़्तरमा ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा बिन्ते अ़ब्दुल मलिक رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہا के पास आए और बा'दे दुआ़ए मग़्फ़िरत उन की घरेलू ज़िन्दगी के बारे में दरयाफ़्त किया तो आप رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہا ने फ़रमाया : **वल्लाह** ! वोह आप ह़ज़रात से ज़ियादा नमाज़ें पढ़ने वाले या रोज़े रखने वाले तो नहीं थे मगर मैं ने उन से बढ़ कर ख़ौफ़े खुदा रखने वाला किसी को नहीं देखा, कभी ऐसा भी होता कि हम दोनों एक लिह़ाफ़ में होते, अचानक उन के दिल पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ऐसा ख़ौफ़ त़ारी होता कि वोह उस परन्दे की त़रह़ फड़फड़ाने लगते जो पानी में गिर गया हो, फिर वोह आहो बुका करने लगते और मुझे छोड़ कर लिह़ाफ़ से निकल जाते, मैं घबरा कर कहती : काश इस ओ़-हदे (या'नी ख़िलाफ़त) और हमारे दरमियान मशरिक़ व मग़रिब जितना फ़ासिला होता क्यूंकि येह जब से हमें मिला है, हम ने सुरूर का एक लम्ह़ा नहीं देखा। (طبقات ابن سعد،ج۵،ص۳۲۰)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

ग़रीब इस्लामी बहन की ख़ैर ख़्वाही

जो लोग मदद के मोहताज होते थे हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز हर मुमकिन त़रीक़े से उन की मदद फ़रमाते थे चुनान्चे एक इराक़ी औ़रत हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز के घर आई, जब वोह आप के दरवाज़े पर पहुंची तो हैरान हो कर पूछने लगी : क्या **अमीरुल मोअमिनीन** के दरवाज़े पर दरबान नहीं होता ? उसे बताया गया : "यहां कोई दरबान नही, अन्दर जाना चाहती हो तो जा सकती हो।" येह औरत ज़नान ख़ाने में हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز की ज़ौजए मोह़तरमा हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा बिन्ते अ़ब्दुल मलिक رحمۃاللہ تعالٰی علیھا के पास गईं। वोह घर में रूई ठीक कर रही थीं, सलाम दुआ के बा'द उन्हों ने बैठने को कहा। थोड़ी देर में हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز घर आए और घर के कुएं से पानी के डोल निकाल निकाल कर मिट्टी पर जो घर में पड़ी थी डालने लगे और आप की नज़र बार बार अपनी ज़ौजए मोह़तरमा पर पड़ रही थी, उसी औ़रत ने फ़ातिमा से कहा : इस मज़दूर से पर्दा तो कर लो, येह तुम्हारी त़रफ़ ही देखे जा रहा है। फ़ातिमा ने बताया : येह मज़दूर नहीं **अमीरुल मोअमिनीन** हैं ! हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز इस काम से फ़ारिग़ हो कर हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा बिन्ते अ़ब्दुल मलिक رحمۃاللہ تعالٰی علیھا की त़रफ़ आए, सलाम किया और उन से उस औ़रत का ह़ाल दरयाफ़्त किया। उन्हों ने बताया कि फुलां

औ़रत है। आप ने तोशादान उठाया, उस में कुछ अंगूर थे, चुन चुन कर उस ख़ातून को दिये फिर दरयाफ़्त फ़रमाया तुम किस ज़रूरत से आई ? उस ने बताया : मैं इराक़ से आई हूं, मेरी पांच बेकस व बे सहारा लड़कियां हैं, मैं आप से मदद मांगने आई हूं।" आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه बे कस व बे सहारा का लफ़्ज़ दोहरा दोहरा कर रोने लगे। फिर आप ने काग़ज़ क़लम लिया और वालिये इराक़ के नाम ख़त़ लिखना शुरूअ़ किया, औ़रत से उस की बड़ी बेटी का नाम पूछा, उस ने बताया तो आप ने उस का वज़ीफ़ा मुक़र्रर कर दिया, औ़रत ने कहा : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ फिर दूसरी, तीसरी और चोथी का नाम दरयाफ़्त किया और एक एक का वज़ीफ़ा मुक़र्रर फ़रमाते गए। औ़रत हर एक वज़ीफ़े पर اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ कहती जाती, जब चोथी लड़की का वज़ीफ़ा मुक़र्रर हुवा तो औ़रत खुशी से बे क़रार हो गई और आप को दुआ़एं देने लगी और शुक्रिया के तौ़र पर جَزَاكَ اللّٰه कहा। इस पर आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने हाथ रोक लिया और फ़रमाया : जब तक तुम मुस्तहि़क़े ह़म्द या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र करती रहीं हम वज़ीफ़ा लगाते रहे मगर अब जब कि तुम ने मेरा शुक्रिया अदा किया तो इस के बा'द का वज़ीफ़ा नफ़्सानिय्यत पर मब्नी होगा पस इन चारों लड़कियों को कहना कि इसी में से पांचवीं को भी दे दिया करें। औ़रत येह तह़रीर ले कर इराक़ पहुंची और उसे वालिये इराक़ के सामने पेश किया। उस ने ख़त़ पढ़ा तो रोते रोते उस की हिचकी बन्ध गई, कुछ संभला तो बोला : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ साहि़बे ख़त़ पर रह़्म फ़रमाए। औ़रत बोली : क्या हुवा ? क्या उन का इन्तिक़ाल हो गया ? जवाब

मिला : जी हां ! येह सुन कर औ़रत चीख़ने और वावेला करने लगी और वापसी का इरादा किया, वालिये इ़राक़ ने कहा : ठहरो, फ़िक्र की बात नहीं, मैं किसी भी मुआ़-मले में उन की तह़रीर को रद नहीं कर सकता, फिर उस की ता'मील की, उस की लडकियों का वज़ीफ़ा अदा करने का हुक्म दे दिया। (سیرت ابن عبد الحکم ص ۱۴۶)

अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

एक मुसलमान क़ैदी का वाक़िआ़

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز ने शाहे रूम के पास एक क़ासिद भेजा। येह क़ासिद एक दिन बादशाह के पास से उठा तो घूमते फिरते एक ऐसी जगह पहुंचा जहां एक शख़्स के क़ुरआन पढ़ने और चक्की पीसने की आवाज़ आ रही थी। येह उस के पास गया और सलाम करने के बा'द उस के ह़ालात दरयाफ़्त किये तो उस ने बताया कि मुझे फ़ुलां जगह से क़ैद किया गया था और शाहे रूम के सामने पेश किया गया, बादशाह ने मुझे दा'वत दी कि मैं नसरानी (क्रिस्चेन) हो जाऊं मगर मैं ने इन्कार कर दिया, बादशाह ने धमकी दी कि अगर ऐसा नहीं करोगे तो आंखें निकाल दी जाएंगी मगर मैं ने दीन को आंखों पर तरजीह़ दी चुनान्चे गर्म सलाइयों से मेरी आंखें ज़ाएअ़ कर दी गईं और यहां क़ैद ख़ाने में पहुंचा दिया गया, रोज़ाना कुछ गन्दुम पीस लेता हूं जिस के इवज़ मुझे खाना दिया जाता है। जब क़ासिद हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ الْعَزِیز के पास

पहुंचा तो उस क़ैदी का माजरा भी बयान किया। क़ासिद का कहना है कि मैं अभी पूरा क़िस्सा बयान नहीं कर पाया था कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की आंखों से आंसूओं का चश्मा उबल पड़ा, जिस से उन के आगे की जगह तर हो गई, उसी वक़्त शाहे रूम के नाम ख़त़ लिखा : "**अम्मा बा'द !** मुझे फ़ुलां क़ैदी के बारे में ख़बर मिली है, मैं **अल्लाह** की क़सम खाता हूं कि अगर तुम ने उसे रिहा कर के मेरे पास नहीं भेजा तो मैं मुक़ाबले के लिये ऐसा लश्कर भेजूंगा जिस का अगला सिरा तुम्हारे पास होगा और पिछला मेरे पास।"

क़ासिद फिर शाहे रूम के यहां गया तो उस ने कहा : "बड़ी जल्दी दोबारा आए !" क़ासिद ने ह़ज़रते उ़मर का ख़त़ पेश किया, उस ने पढ़ कर कहा : हम नेक आदमी को लश्कर कुशी की ज़ह़मत नहीं देंगे और उस क़ैदी को वापस कर देंगे। क़ासिद का बयान है कि मुझे क़ैदी की रिहाई के इन्तिज़ार में चन्द दिन वहां ठहरना पड़ा एक दिन बादशाह के दरबार में गया तो अ़जीब मन्ज़र देखा कि बादशाह अपने तख़्त से नीचे बैठा है और चेहरे पर ह़ुज़्नो मलाल के आषार हैं। मुझे देखते ही कहा : जानते हो मैं इस त़रह़ क्यूं बैठा हुवा हूं ? मैं ने कहा : मुझे पता नहीं मगर मैं बहुत ह़ैरान हुवा हूं। बादशाह ने कहा : मुझे बा'ज़ अ़लाक़ों से ख़बर पहुंची है कि इस नेक आदमी (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللهِ العَزِيز) का इन्तिक़ाल हो गया, इस के ग़म में मेरी येह ह़ालत हुई है। क़ासिद कहता है : मुझे इस इत्तिलाअ़ से उस क़ैदी की रिहाई से मायूसी हो गई, मैंने बादशाह से कहा : मुझे वापसी की इजाज़त हो। वोह कहने लगा : येह नहीं हो सकता कि हम ज़िन्दगी में उन की बात मान लें और उन की मौत के बा'द इस से फिर जाएं,

चुनान्चे उस क़ैदी को रिहा कर के मेरे साथ भेज दिया। (سیرت ابن عبدالحکم ص ۱۴۴)

जब ख़लीफ़ा का क़ासिद मौत की ख़बर ले कर पहुंचा

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز का क़ासिद जब ब-सरा आता तो जूं ही लोगों को उस की आमद की इत्तिलाअ़ होती वोह जौक़ दर जौक़ इस्तिक़्बाल के लिये निकल आते, क़ासिद की आमद उ़मूमन वज़ीफ़े की ज़ियादती, माल की तक़्सीम, किसी भलाई के हुक्म या किसी बुराई से मुमा-नअ़त का पैग़ाम लाया करती। लोग क़ासिद के साथ चल कर मस्जिद पहुंचते जहां वोह ख़लीफ़ा का फ़रमान पढ़ कर सुना देता। जिस दिन क़ासिद हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز के इन्तिक़ाल की ख़बर लाया लोग हस्बे मा'मूल उस के इस्तिक़्बाल के लिये निकले, मगर आज वोह किसी खुश ख़बरी के बजाए रो रो कर आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के इन्तिक़ाल के बारे में बता रहा था, लोग इस अ़ज़ीम ह़ादिषे और मुसीबत पर रोते हुए मस्जिद में दाख़िल हुए और क़ासिद ने वहां आप की वफ़ात की ख़बर बा काइदा पढ़ कर सुनाई।

(سیرت ابن عبدالحکم ص ۵۷)

शाहे रूम का रन्जो ग़म

मुह़म्मद बिन मो'बद का बयान है कि मैं शाहे रूम के पास गया तो उस को ज़मीन पर निहायत रन्जो ग़म की ह़ालत में बैठा हुवा पाया, मैं ने पूछा : क्या ह़ाल है ? कहने लगा : जो कुछ हुवा तुम को ख़बर नहीं ? मैं ने कहा : क्या हुवा ? बोला : मर्दे सालेह़ का इन्तिक़ाल हो गया। मैं ने कहा : वोह कौन ? बोला **"उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़"**

फिर कहा : मुझे उस राहिब की ह़ालत पर कोई ता'ज्जुब नहीं जिस ने अपने दरवाज़े को बन्द कर के दुन्या को छोड़ दिया और इबादत में मश्गूल हो गया मुझे उस शख़्स की ह़ालत पर ता'ज्जुब है जिस के क़दमों के नीचे दुन्या थी और उस ने उस को पामाल कर के राहिबाना ज़िन्दगी इख़्तियार की। (سیرت ابن جوزی ص ۳۳۱)

न-बती के आंसू

हज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَیْه का बयान है कि मैं हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمةُ اللّٰہِ العَزِیز के जनाज़े में शिर्कत के बा'द जब वापस जा रहा था कि एक राहिब ने मुझ से पूछा : क्या तुम हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمةُ اللّٰہِ العَزِیز की वफ़ात के वक़्त मौजूद थे ? मैं ने कहा : "हां।" येह सुन कर उस की आंखें भर आईं। मैं ने कहा : तुम उन के लिये क्यूं रो रहे हो ? वोह तो तुम्हारे हम मज़हब न थे ! उस ने कहा :

اِنِّیْ لَسْتُ اَبْکِیْ عَلَیْهِ وَلٰکِنْ اَبْکِیْ عَلٰی نُوْرٍ کَانَ فِی الْاَرْضِ فَطُفِیَٔ

या'नी मैं उन पर नहीं रोता उस नूर पर रोता हूं जो ज़मीन पर था और बुझा दिया गया। (سیرت ابن جوزی ص ۳۳۱)

वफ़ात पर जिन्नात का इज़्हारे ग़म

एक रात कूफ़ा में एक औ़रत अपनी बेटी के हमराह बाला ख़ाने में चर्ख़ा कात रही थी, अचानक उस की बेटी की कोई चीज़ नीचे गिर गई, उस ने बाहर देखा तो नीचे चन्द औ़रतों का ह़ल्क़ए ग़म बर्पा था। दरमियान में खड़ी एक औरत शे'र पढ़ रही थी जिन का तर्जमा येह है : "हां जिन्नात की औ़रतों से कहो कि अब वोह फ़र्ते ग़म से रोया करे, रेशमी लिबास में नाज़ो अन्दाज़ से चलने के बजाए टाट पहना करें और

बर्क़ रफ़्तार घोड़ों की सुवारी के बजाए सुस्त रफ़्तार जानवरों पर सुवार हुवा करें।"

वोह औ़रत येह शे'र पढ़ती और हाज़िरीने मजलिस "हाए **अमीरुल मोअमिनीन** ! हाए **अमीरुल मोअमिनीन** !" कह कर उस की ताईद करते, लड़की ने घबरा कर वालिदा से कहा : "अम्मी देखो तो नीचे क्या है ?" बुढ़िया ने नीचे झांका तो अ़जीब मन्ज़र देखा। बा'द में मा'लूम हुवा कि उसी रात **अमीरुल मोअमिनीन** हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِيْر का इन्तिक़ाल हुवा था। (سیرت ابن عبدالحکم ص۹۹)

एक जिन्न के अश्आ़र

एक जिन्न ने इन अल्फ़ाज़ में आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की वफ़ात पर इज़्हारे ग़म के लिये येह अश्आ़र कहे :

عَنَّا جَزَاكَ مَلِيْكُ النَّاسِ صَالِحَةً   فِیْ جَنَّةِ الْخُلْدِ وَالفِرْدَوسِ يَا عُمَرُ!

اَنْتَ الَّذِیْ لَا نَرٰی عَدْلاً نُسَرُّ بِهٖ   مِنْ بَعْدِهٖ مَا جَرٰی شَمْسٌ وَّلَا قَمَرُ

तर्जमा : (1)...... *ऐ सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه! लोगों का अ़ज़ीम बादशाह عَزَّوَجَلَّ आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को हमारी त़रफ़ से जन्नतुल ख़ुल्द और जन्नतुल फ़िरदौस में बेहतरीन जज़ा अ़त़ा फ़रमाए। (आमीन)*

(2)...... *जब तक सूरज चांद तुलूअ़ होते रहेंगे, हम आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के बा'द ऐसा आ़दिल ख़लीफ़ा कभी न पाएंगे जिस से हम ख़ुश हो सकें।*

(اخبار مكة للفاكهى، ذكر السمر والحديث فى المسجد الحرام، الحديث ١٣٣٩، ج٢، ص ١٥١)

शु-हदा की जनाज़े में शिर्कत

किसी बुज़ुर्ग का लड़का शहीद हो गया, वोह अपने बाप को कभी ख़्वाब में नज़र न आया। सिर्फ़ उस दिन ख़्वाब में बाप से मिला जिस दिन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने विसाल फ़रमाया। बाप ने देख कर फ़रमाया : मेरे बेटे ! क्या तुम पर मौत वाके़अ़ नहीं हो चुकी ? तो उस ने जवाब दिया : मैं मुर्दा नहीं हूं, बल्कि मुझे शहादत नसीब हुई है और मैं **अल्लाह** तआ़ला के कुर्ब में ज़िन्दा हूं, और मुझे अन्वाओ़ अक़्साम की रोज़ी मिलती है। बाप ने पूछा : फिर आज तुम इधर कैसे आ गए ? तो उस ने कहा : आज तमाम आस्मान वालों को आवाज़ दी गई कि आज अम्बिया व शु-हदा सब उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ के जनाज़े में शरीक हों, तो मैं भी उन की नमाज़े जनाज़ा में शिर्कत के लिये इधर आया था।

(تاریخ دمشق، ج۴۵،ص۲۵۷ ملخصًا)

आज़ादी का परवाना

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز एक मरतबा शा'बानुल मोअ़ज़्ज़म की पन्दरहवीं रात या'नी शबे बराअत इबादत में मसरूफ़ थे। सर उठाया तो एक "**सब्ज़ पर्चा**" मिला जिस का नूर आसमान तक फैला हुवा था, उस पर लिखा था, "هٰذِهٖ بَرَاءَةٌ مِّنَ النَّارِ مِنَ الْمَلِكِ الْعَزِيْزِ لِعَبْدِهٖ عُمَرَ بْنِ عَبْدِالْعَزِيْزِ" *या'नी खुदाए मालिक व ग़ालिब की त़रफ़ से येह "जहन्नम की आग से आज़ादी का पर्वाना" है जो उस के बन्दे उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ को अ़त़ा हुवा है।*

(تفسیر روح البیان ج۸ص۴۰۲)

जन्नत के दरवाज़े पर परवानए नजात

एक शख़्स ने ख़्वाब में देखा कि जन्नत के दरवाज़े पर लिखा हुवा है : بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ لِعُمَرَبْنِ عَبْدِالْعَزِيْزِمِنْ عَذَابِ يَوْمٍ اَلِيْمٍ *या'नी खुदाए ग़ालिब व रहीम की त़रफ़ से उस के बन्दे उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ के लिये दर्दनाक दिन (या'नी यौमे क़ियामत) के अ़ज़ाब से नजात है।* (سیرت ابن جوزی ص ۲۹۰)

मैं जन्नते अ़दन में हूं

हज़रते सय्यिदुना मस्लमा बिन अ़ब्दुल मलिक رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز को ख़्वाब में देखा तो पूछा : काश ! मुझे पता चल जाए के बा'दे वफ़ात आप किन ह़ालात से गुज़रे ! फ़रमाया : **वल्लाह** ! मैं बहुत आराम में हूं। पूछा : या **अमीरुल मोअमिनीन** ! आप कहां पर हैं ? फ़रमाया : अइम्मए हुदी के साथ जन्नाते अ़दन में। (سیرت ابن جوزی ص ۲۸۷)

अल्लाह *عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।* اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلهٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰى علٰى محمَّد

हज़रते मकहूल के तअष्षुरात

एक बार हज़रते सय्यिदुना मकहूल رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه मक़ामें दाबुक़ से पलट कर एक मन्ज़िल में कूच के वक़्त उतरे और एक त़रफ़ दूर निकल गए, लोगों ने पूछा : ह़ज़रत ! कहां तशरीफ़ ले गए थे ?

फ़रमाया : पांच मील के फ़ासिले पर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ الۡعَزِیۡز की क़ब्र थी मैं वहीं गया था, ख़ुदा की क़सम ! उन के ज़माने में उन से ज़ियादा कोई ख़ुदा तर्स न था, ख़ुदा की क़सम उन के ज़माने में उन से ज़ियादा कोई ज़ाहिद न था। (سیرت ابن جوزی ص ۴۷)

तक़्वा व परहेज़ गारी की क़सम उठाई जा सकती है

ह़ज़रते सय्यिदुना मकह़ूल رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का ही बयान है कि अगर मैं इस बात पर क़सम खाऊं कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ الۡعَزِیۡز निहायत ज़ाहिद, पाकबाज़ और ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले थे तो मेरी क़सम झूटी नहीं होगी। (تاریخ الخلفاء ص ۱۹۱)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का इन्आ़म

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं :

فَلَمَّا کَانَ فِیۡ رَأۡسِ الۡمِاَۃِ مَنَّ اللّٰہُ عَلٰی ھٰذِہِ الۡاُمَّۃِ بِعُمَرَ بۡنِ عَبۡدِ الۡعَزِیۡزِ

या'नी जब सदी इख़्तिताम पज़ीर हुई तो ***अल्लाह*** *عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رحمۃُ اللّٰہِ الۡعَزِیۡز की सूरत में इस उम्मत पर एह़सान फ़रमाया।* (درمنثور ج ا ص ۷۶۸)

मरने के बा'द भी एह़तिराम

हिशाम बिन अ़ब्दुल मलिक जब ख़लीफ़ा बना तो उस के पास एक आदमी आ कर कहने लगा : **अमीरुल मोअमिनीन** ! अ़ब्दुल मलिक ने मेरे दादा को एक जागीर दी जिसे वलीद और

सुलैमान ने बर क़रार रखा और जब उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رحمه الله ख़लीफ़ा बने तो उन्हों ने वापस ले ली। हिशाम ने उस से कहा : अपनी बात दोहराओ, उस ने कहा : **अमीरुल मोअमिनीन** ! अ़ब्दुल मलिक ने मेरे दादा को एक जागीर दी जिसे वलीद और सुलैमान ने बर क़रार रखा, और जब उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رحمه الله ख़लीफ़ा बने तो उन्हों ने ले ली, हिशाम ने कहा : तुम भी अ़जीब आदमी हो ? जिन्हों ने तुम्हारे दादा को जागीर दी उन का तज़्किरा बिग़ैर किसी ता'ज़ीम के करते हो और जिस ने छीनी उन के लिये दुआ़ए रह़मत कर रहे हो, अलबत्ता हम ने वोही हुक्म सादिर किया जो उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رحمه الله ने किया था। (حلیۃ الاولیاء،ج۵،ص۳۸۰،رقم۷۴۷۶)

बारगाहे मुस्त़फ़ा में ह़ाज़िरी

हज़रते माजिशून رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه का बयान है कि मैं ने (ख़्वाब में) नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत का शरबत पिया, उन के दाएं बाएं शैख़ैन करीमैन या'नी हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُمَا थे और एक नौ जवान आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने था। मैं ने किसी से पूछा : येह कौन हैं ? जवाब मिला : येह उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه) हैं। मैं ने कहा : येह हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के इतने क़रीब है ! जवाब दिया : क्यूं न हो क्यूंकि इन्हों ने ज़ुल्मो सितम के ज़माने में भी ह़क़ व इन्साफ़ का बोल बाला किया है। (شرح الصدور،ص۸۴)

निज़ामे हुकूमत की तब्दीली

हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने जो आदिलाना निज़ामें हुकूमत क़ाइम किया था यज़ीद बिन अब्दुल मलिक ने जो उन का जा नशीन हुवा सिर्फ़ चालीस दिन तक इस को क़ाइम रखा उस के बा'द इस राहे अद्ल से अलग हो गया। ग़र्ज़ेकि हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز ने जो निज़ामें सल्तनत क़ाइम किया था वोह आप के विसाल के चन्द ही रोज़ में दरहम बरहम हो गया और दुन्या ने कमो बेश अढ़ाई बरस ही हज़रते उमर बिन अल ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के तर्ज़े हुकूमत से फ़ाइदा उठाया।

अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

ग़ीबत के ख़िलाफ़ जंग जारी रहेगी

न ग़ीबत करेंगे न सुनेंगे

اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

ماخذ و مراجع

نام کتاب	مصنف	مطبوعه
(1)کنز الایمان ترجمۂ قرآن	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا بن نقی علی خان	برکات رضا ھند
(2)تفسیر الکبیر	امام محمد بن عمر فخر الدین رازی	دار احیاء التراث العربی بیروت
(3)تفسیر الدر المنثور	امام جلال الدین عبدالرحمٰن بن ابی بکر سیوطی	دار الفکر بیروت
(4)تفسیر روح البیان	شیخ اسماعیل حقی بروسی	کوئٹہ
(5)تفسیر قرطبی	امام ابو عبد اللّٰہ محمد بن احمد القرطبی	دار الفکر بیروت
(6)تفسیر الحسن البصری	مرتبین	باب المدینہ کراچی
(7)تفسیر نعیمی	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاھور
(8)تفسیر خزائن العرفان	صدر الافاضل سید محمد نعیم الدین مراد آبادی	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاھور
(9)صحیح البخاری	امام ابوعبد اللّٰہ محمد بن اسماعیل بخاری	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(10)صحیح مسلم	امام ابو الحسین مسلم بن الحجاج القشیری	دار ابن حزم بیروت
(11)سنن الترمذی	امام ابو عیسٰی محمد بن عیسٰی ترمذی	دار الفکر بیروت
(12)سنن ابی داود	امام ابو داود سلیمان بن اشعث سجستانی	دار احیاء التراث العربی بیروت
(13)سنن ابن ماجہ	امام ابو عبد اللّٰہ محمد بن یزید ابن ماجہ	دار المعرفۃ بیروت
(14)سنن النسائی	امام ابو عبد الرحمن بن احمد شعیب نسائی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(15)المسند	امام احمد بن حنبل	دار الفکر بیروت،مؤسسۃ الرسالۃ
(16)الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان	علامہ امیر علاء الدین علی بن بلبان فارسی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(17)المعجم الکبیر	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد الطبرانی	داراحیاء التراث العربی بیروت
(18)المعجم الاوسط	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد الطبرانی	دار الفکر بیروت
(19)المستدرک	امام محمد بن عبد اللّٰہ الحاکم النیشاپوری	دار المعرفۃ بیروت
(20)السنن الکبریٰ	امام ابو بکر احمد بن حسین البیھقی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(21)مصنف ابن ابی شیبۃ	امام ابو بکرعبد اللّٰہ بن محمد بن ابی شیبۃ	دار الفکر بیروت
(22)المسند	امام ابو یعلی احمد بن علی الموصلی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(23)جمع الجوامع	امام جلال الدین عبد الرحمٰن بن ابی بکر السیوطی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(24)شعب الایمان	امام ابو بکر احمد بن الحسین البیھقی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(25)الترغیب و الترھیب	امام زکی الدین عبد العظیم بن عبد القوی منذری	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(26)الموسوعۃ لابن ابی الدنیا	حافظ امام ابوبکرعبد اللّٰہ بن محمد قرشی	مکتبۃ العصریۃ بیروت
(27)مجمع الزوائد	امام نور الدین علی بن ابی بکر	دار الفکر بیروت
(28)کشف الخفاء	شیخ اسماعیل بن محمد عجلونی	دارالکتب العلمیۃ بیروت
(29)کنز العمال	علی بن حسام الدین الھندی	دارالکتب العلمیۃ بیروت
(30)مشکاۃ المصابیح	امام محمد بن عبد اللّٰہ الخطیب التبریزی	دار الکتب العلمیۃ بیروت

(31)شرح معانی الآثار	امام ابو جعفر احمد بن محمد طحاوی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(32)شرح صحیح مسلم	امام یحیی بن شرف النووی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(33)عمدۃ القاری شرح صحیح البخاری	امام بدر الدین ابو محمد محمود بن احمد عینی	دار الفکر بیروت
(34)فتح الباری شرح صحیح البخاری	امام احمد بن علی بن حجر العسقلانی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(35)فیض القدیر شرح الجامع الصغیر	امام محمد عبد الرؤف مناوی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(36)مراۃ المناجیح شرح مشکاۃ المصابیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاھور
(37) جامع العلوم و الحکم	ابو الفرج عبد الرحمن بن شھاب الدین	مکۃ المکرمۃ
(38)الدر المختار	علامہ علاء الدین محمد بن علی حصکفی	دار المعرفۃ بیروت
(39)رد المحتار	علامہ سید محمد امین ابن عابدین شامی	دار المعرفۃ بیروت
(40)البزازیۃ علی ھامش الفتاوی الھندیۃ	علامہ محمد شھاب الدین بن بزاز کردری	دار الفکر بیروت
(41)الفتاوی الھندیۃ	ملا نظام الدین و علمائے ھند	دار الفکر بیروت
(42)الفتاوی الرضویۃ	اعلی حضرت امام احمد رضا ابن نقی علی خان	رضا فاؤنڈیشن لاھور
(43)بہار شریعت	علامہ مفتی محمد امجد علی اعظمی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
(44)فتاوی فقیہ ملت	مفتی جلال الدین احمد امجدی	شبیر برادرز لاھور
(45)حلیۃ الاولیاء	امام ابو نعیم احمد بن عبد اللّٰہ اصبھانی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(46)العقد الفرید	امام احمد بن محمد بن عبد ربہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(47) المستطرف	امام محمد بن ابو احمد الابشیھی	دار الفکر بیروت
(48)تذکرۃ الحفاظ	امام محمد بن احمد الذھبی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(49)تدریب الراوی فی شرح تقریب النووی	امام جلال الدین عبدالرحمن بن ابی بکر سیوطی	دار الفکر بیروت
(50)الاصابۃ فی تمیز الصحابۃ	امام احمد بن علی بن حجر عسقلانی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(51)الطبقات الکبری	امام محمد بن سعد البصری	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(52)دلائل النبوۃ	امام ابو بکر احمد بن الحسین البیھقی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(53)نصب الرایۃ فی تخریج احادیث الھدایۃ	امام ابو محمد عبد اللّٰہ بن یوسف الحنفی	پشاور
(54)مسالک الحنفاء	امام قسطلانی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(55)بدائع السلک فی طبائع الملک	ابن الازرق	المکتبۃ الشاملۃ
(56) جامع بیان العلم و فضلہ	امام ابو عمر یوسف بن عبد اللّٰہ القرطبی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(57)التبر المسبوک فی نصیحۃ الملوک	امام ابو حامد محمد بن محمد الشافعی الغزالی	المکتبۃ الشاملۃ
(58)سیرت ابن عبد الحکم	علامہ عبداللہ بن عبدالحکم	المکتبۃ الوھبہ
(59)سیرت ابن جوزی	علامہ عبدالرحمن بن جوزی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(60)تاریخ دمشق	ابو القاسم علی بن الحسن المعروف بابن عساکر	دار الفکر بیروت
(61)تاریخ الخلفاء	امام جلال الدین عبد الرحمان بن ابی بکر السیوطی	باب المدینہ کراچی
(62)تاریخ طبری	امام ابو جعفر محمد بن جریر الطبری	دار ابن کثیر بیروت
(63)الکامل فی التاریخ	امام ابو الحسن علی بن محمد	دار الکتب العلمیہ بیروت

(64) تاریخ یعقوبی	احمد بن اسحاق	المکتبۃ الشاملۃ
(65) المعرفۃ و التاریخ	ابو یوسف یعقوب بن سفیان الفسوی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(66) الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب	امام ابو عمر یوسف بن عبد اللّٰہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(67) اسد الغابۃ	امام ابو الحسن علی بن محمد الجزری	دار احیاء التراث العربی بیروت
(68) تذکرۃ الاولیاء	شیخ فرید الدین عطار نیشاپوری	انتشارات گنجینہ تہران
(69) التحفۃ اللطیفۃ فی تاریخ المدینۃ الشریفۃ	محمد بن عبد الرحمن بن محمد السخاوی	المکتبۃ الشاملۃ
(70) اخبار مکۃ	امام ابو عبد اللّٰہ محمد بن اسحاق الفاکہی	دار خضر بیروت
(71) البدایۃ و النہایۃ	امام ابو الفداء اسماعیل بن عمر ابن کثیر	دار الفکر بیروت
(72) عیون الانباء فی طبقات الاطباء	احمد بن القاسم ابن ابی اصیبعۃ	المکتبۃ الشاملۃ
(73) الرسالۃ القشیریۃ	امام ابو القاسم عبد الکریم بن ہوازن القشیری	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(74) تنبیہ المغترین	امام عبد الوہاب بن احمد شعرانی	دار البشائر، دار المعرفۃ بیروت
(75) تنبیہ الغافلین	امام ابو اللیث نصر بن محمد السمرقندی	پشاور
(76) روض الریاحین	امام ابو السعادات عبد اللّٰہ بن اسعد	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(77) الروض الفائق	مبلغ اسلام شیخ شعیب حریفیش	دار احیاء التراث العربی بیروت
(78) منح الروض	علی بن سلطان (المعروف ملا علی قاری)	دار البشائر الاسلامیۃ بیروت
(79) عیون الحکایات	ابو الفرج عبد الرحمن بن علی ابن الجوزی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(80) حسن المحاضرۃ	امام جلال الدین عبد الرحمٰن بن ابی بکر السیوطی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(81) قوت القلوب	امام ابو طالب محمد بن علی المکی	مرکز اہل السنۃ الہند
(82) الحدیقۃ الندیۃ	عارف باللّٰہ سیدی عبد الغنی نابلسی حنفی	پشاور
(83) احیاء علوم الدین	امام ابو حامد محمد بن محمد الشافعی الغزالی	دار صادر بیروت
(84) مکاشفۃ القلوب	امام ابو حامد محمد بن محمد الشافعی الغزالی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(85) کیمیائے سعادت	امام ابو حامد محمد بن محمد الشافعی الغزالی	تہران ایران
(86) منہاج العابدین	امام ابو حامد محمد بن محمد الشافعی الغزالی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(87) منہاج القاصدین	علامہ عبد الرحمٰن بن جوزی	
(88) شرح الصدور	امام جلال الدین عبد الرحمٰن بن ابی بکر السیوطی	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند
(89) معدن اخلاق	علامہ ڈاکٹر خلیل احمد قادری	ضیاء الدین پبلیکیشنز کراچی
(90) مغنی الواعظین		
(91) المواعظ و الاعتبار	احمد بن علی بن عبد القادر المقریزی	المکتبۃ الشاملۃ
(92) اتحاف السادۃ المتقین	سید محمد بن محمد حسینی زبیدی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(93) ذم الغیبۃ (الموسوعۃ)	الحافظ ابی بکر عبد اللّٰہ محمد المعروف بابن ابی الدنیا	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(94) کتاب الزہد الکبیر	امام ابو بکر احمد بن حسین البیہقی	مؤسسۃ الکتب الثقافیۃ بیروت
(95) کتاب الزہد	امام عبد اللّٰہ بن مبارک	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(96) آکام المرجان فی احکام الجان	علامہ بدر الدین شبلی	دار الکتب العلمیۃ بیروت

(97)ملفوظاتِ اعلیٰ حضرت	شہزادۂ اعلیٰ حضرت محمد مصطفیٰ رضا خان	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
(98)تعلیم المتعلم	امام برہان الاسلام زرنوجی	باب المدینہ کراچی
(99)آداب الشرعیۃ	محمد بن مفلح حنبلی	
(100)معجم البلدان	امام ابو عبد اللّٰہ یاقوت بن عبد اللّٰہ	دار احیاء التراث العربی بیروت
(101)فتوح البلدان	احمد بن یحیی بن جابر بن داود البلاذری	المکتبۃ الشاملۃ
(102)التعریفات	علامہ علی بن محمد بن علی الجرجانی	باب المدینہ کراچی
(103)فضائلِ دعا	مصنف:رئیس المتکلمین مولانا نقی علی خان شارح:اعلیٰ حضرت امام احمد رضا بن نقی علی خان	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
(104)حیاتِ اعلیٰ حضرت	ملک العلماء مولانا محمد ظفر الدین بہاری	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
(105)فیضانِ سنت (جلد اول)	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطارقادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
(106)کفریہ کلمات کے بارے میں سوال جواب	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطارقادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
(107)غیبت کی تباہ کاریاں	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطارقادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
(108)پردے کے بارے میں سوال جواب	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطارقادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
(109)زلزلہ اور اس کے اسباب	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطارقادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
(110)ظلم کا انجام	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطارقادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
(111)پراسرار بھکاری	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطارقادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
(112)کراماتِ فاروقِ اعظم	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطارقادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
(113)پل صراط کی دہشت	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطارقادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
(114)101 مدنی پھول	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطارقادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
(115)قیامت کا امتحان	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطارقادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
(116)اشکوں کی برسات	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطارقادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
(117)کالے بچھو	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطارقادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
(118)جنتی محل کا سودا	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطارقادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
(119)تذکرۂ امیرِ اہلسنّت (حصہ5)	المدینۃ العلمیۃ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
(120)حدائقِ بخشش	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا بن نقی علی خان	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
(121)وسائلِ بخشش	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطارقادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या शो'बए इस्लाही कुतुब की त़रफ़ से पेश कर्दा 33 कुतुबो रसाइल

01...... गौषे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ह़ालात (कुल सफ़्ह़ात : 106)
02...... तकब्बुर (कुल सफ़्ह़ात : 97)
03...... फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم (कुल सफ़्ह़ात : 87)
04...... बद गुमानी (कुल सफ़्ह़ात : 57)
05...... तंग दस्ती के अस्बाब (कुल सफ़्ह़ात : 33)
06...... नूर का खिलौना (कुल सफ़्ह़ात : 32)
07...... आ'ला ह़ज़रत की इन्फ़िरादी कोशिश (कुल सफ़्ह़ात : 49)
08...... फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़्ह़ात : 164)
09...... इम्तिह़ान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़्ह़ात :32)
10......रियाकारी (कुल सफ़्ह़ात : 170)
11...... क़ौमे जिन्नात और अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़्ह़ात : 262)
12...... उ़श्र के अह़काम (कुल सफ़्ह़ात : 48)
13...... तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल सफ़्ह़ात : 124)
14...... फ़ैज़ाने ज़कात (कुल सफ़्ह़ात : 150)
15...... अह़ादीषे मुबा-रका के अन्वार (कुल सफ़्ह़ात : 66)
16...... तरबिय्यते अवलाद (कुल सफ़्ह़ात : 187)
17...... काम्याब त़ालिबे इ़ल्म कौन ? (कुल सफ़्ह़ात : 63)
18...... टीवी और मूवी (कुल सफ़्ह़ात : 32)
19...... त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़्ह़ात : 30)
20...... मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़्ह़ात : 96)
21..... फ़ैज़ाने चहल अह़ादीष (कुल सफ़्ह़ात : 120)
22...... शर्ह़ श-ज-रए क़ादिरिय्या (कुल सफ़्ह़ात : 215)
23...... नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल (कुल सफ़्ह़ात : 39)
24...... ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ (कुल सफ़्ह़ात : 160)
25...... तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़्ह़ात : 100)
26...... **इन्फ़िरादी** कोशिश (कुल सफ़्ह़ात : 200)
27...... आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़्ह़ात : 62)
28...... क़ब्र में आने वाला दोस्त (कुल सफ़्ह़ात : 115)
29...... फ़ैज़ाने एह़याउल उ़लूम (कुल सफ़्ह़ात : 325)
30...... ज़ियाए स-दक़ात (कुल सफ़्ह़ात : 408)
31...... जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़्ह़ात : 152)
32...... काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़्ह़ात : 43)
33...... आदाबे मुर्शिदे कामिल (कुल सफ़्ह़ात : 275)

याद दाश्त

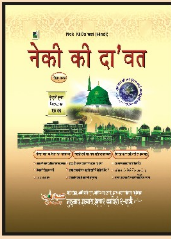
दौराने मुता-लआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। إِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

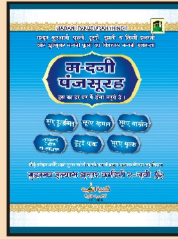
उ़न्वान	सफ़्ह़ा	उ़न्वान	सफ़्ह़ा

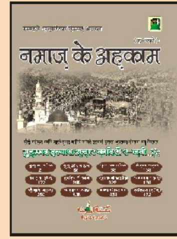
याद दाश्त

दौराने मुता–लआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा









सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तह्रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है, आशिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना **"फ़िक्रे मदीना"** के ज़रीए म-दनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के अपने यहां के ज़िम्मादार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।"** اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह के लिये **"म-दनी इन्आमात"** पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये **"म-दनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाख़ें

(1) **अह्मद आबाद :** सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह्मद आबाद-1, (M) 09327168200

(2) **मुम्बई :** 19, 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

(3) **नागपूर :** ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

(4) **अजमेर शरीफ़ :** 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

(5) **हैदरआबाद :** पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

मक-त-बतुल मदीना
दा'वते इस्लामी



421, उर्दू मार्केट, मटया महल, जामेअ मस्जिद, देहली - 6

फ़ोन : (011) 23284560 E-Mail : Maktabadehli@gmail.com